तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

हिंदी कोर

कक्षा XII
2026-27

विद्यार्थी सहायक सामग्री
Student Support Material

केन्द्रीय विद्यालय संगठन~Kendriya Vidyalaya Sangathan

विकास गुप्ता, भा.प्र.से.
आयुक्त
Vikas Gupta, IAS
Commissioner

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
18, संस्थागत क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110016
Kendriya Vidyalaya Sangathan
18, Institutional Area, Shaheed Jeet Singh Marg, New Delhi-110016

संदेश

शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित ज्ञान नहीं है; यह स्वयं को पहचानने, अपने विचारों को विस्तार देने और जीवन की चुनौतियों का आत्मविश्वास से सामना करने की सतत् यात्रा है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन का सदैव यह प्रयास रहा है कि प्रत्येक विद्यार्थी के लिए ऐसा शिक्षण वातावरण हो, जहाँ जिज्ञासा को प्रोत्साहन मिले, सीखना आनंददायी बने और प्रत्येक बालक अपनी अंतर्निहित क्षमताओं को पहचानकर उन्हें विकसित कर सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा को सिर्फ रटने से समझने, सूचना से ज्ञान और ज्ञान से जीवनोपयोगी दक्षताओं की ओर अग्रसर किया है। आज का समय कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence – AI), डिजिटल नवाचार और निरंतर बदलती तकनीकों का है। ऐसे युग में केवल तथ्यों का ज्ञान पर्याप्त नहीं है; आवश्यक है कि विद्यार्थी मनन- चिंतन करना सीखें, प्रश्न पूछें, समस्याओं का समाधान खोजें और नए विचारों के साथ आगे बढ़ें। यही क्षमताएँ उन्हें भविष्य के लिए तैयार करेंगी।

इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए केन्द्रीय विद्यालय संगठन के पाँचों आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों (ZIETs) के माध्यम से, समर्पित एवं अनुभवी शिक्षकों द्वारा कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों के लिए यह विद्यार्थी सहायक सामग्री तैयार की गई है। यह केवल परीक्षा की तैयारी की संकलन सामग्री नहीं है, बल्कि विषयों को सरलता से समझने, अवधारणाओं को स्पष्ट करने, नियमित अभ्यास करने और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने का एक विश्वसनीय साथी है।

इस सामग्री में विषय-वस्तु को विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप सरल, व्यवस्थित एवं दक्षता-आधारित दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। मुझे प्रसन्नता है कि इसे हमारे शिक्षकों के अनुभव, नवाचार और विद्यार्थियों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने समृद्ध बनाया है। मुझे विश्वास है कि यह सामग्री विद्यार्थियों की सीखने की यात्रा को अधिक सहज, रोचक और प्रभावी बनाएगी तथा उन्हें बोर्ड परीक्षाओं के साथ-साथ जीवन की व्यापक चुनौतियों के लिए भी तैयार करेगी।

मेरा विश्वास है कि जब एक जिज्ञासु विद्यार्थी, प्रेरित शिक्षक और सार्थक शिक्षण संसाधन एक साथ आते हैं, तब शिक्षा केवल उपलब्धि का माध्यम नहीं रहती, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण की एक सशक्त प्रक्रिया बन जाती है। यही भावना इस विद्यार्थी सहायक सामग्री के केंद्र में है।

मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ है कि आप सभी सीखने की इस यात्रा में निरंतर आगे बढ़ें, अपने सपनों को नए आयाम दें और ज्ञान, संवेदनशीलता तथा नवाचार के साथ राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें।

शुभकामनाओं सहित।

(विकास गुप्ता)

संरक्षक

श्री विकास गुप्ता, आयुक्त, केविसं

सह-संरक्षक

सुश्री चंदना मंडल, अपर आयुक्त (शैक्षिक), केविसं (मु.)

समन्वयक

श्री सोमित श्रीवास्तव, संयुक्त आयुक्त (शैक्षिक), केविसं (मु.)

एवं

सुश्री पी बी एस उषा, संयुक्त आयुक्त (प्रशिक्षण), केविसं (मु.)

कवर डिज़ाइन

केविसं प्रकाशन विभाग

संपादक

1. श्री सरदार सिंह चौहान, निदेशक, केविसं जीट भुवनेश्वर (अतिरिक्त प्रभार)
2. श्री बी.एल. मोरोडिया, निदेशक, केविसं जीट ग्वालियर
3. श्रीमती श्रुति भार्गव, निदेशक, केविसं जीट चंडीगढ़
4. श्री पी आई टी राजा, निदेशक, केविसं जीट मैसूर
5. श्री टी प्रभुदास, निदेशक, केविसं जीट मुंबई

कक्षा बारहवीं
विषय- हिन्दी (केन्द्रिक) कोड सं.- 302
सत्र 2026-27

अध्ययन सामग्री तैयारकर्ता शिक्षक (Content Creators):

क्र.सं.	शिक्षक का नाम	पदनाम	केन्द्रीय विद्यालय का नाम	संभाग
1.	डॉ. (सुश्री) पंकज कपूर	स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)	पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय जाखू हिल्स, शिमला	गुरुग्राम
2.	श्री संजय कुमार	स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)	पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-1, उधमपुर	जम्मू
3.	डॉ. केशव देव	स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)	पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय रि. उ., फतेहगढ़ साहिब	चंडीगढ़
4.	डॉ. अश्विनी कुमार शिवहरे	स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)	पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय मुंगावली, अशोक नगर	भोपाल

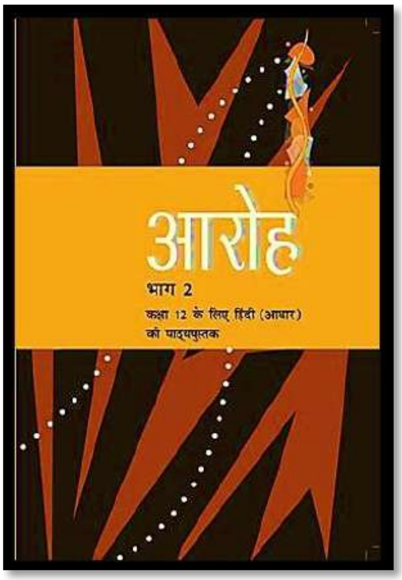

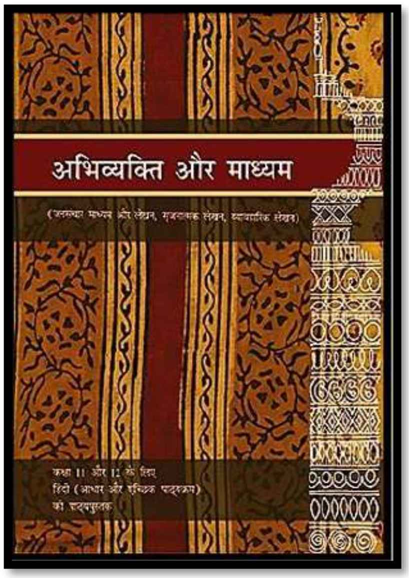

विषय-सूची

क्र.स.	पाठ्यवस्तु	पृष्ठ संख्या
1.	सी.बी.एस.ई. वार्षिक परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन (ब्लू प्रिंट)	03
2.	05 अपठित गद्यांश (हल सहित)	05
3.	05 अपठित काव्यांश (हल सहित)	13
	अभिव्यक्ति और माध्यम	
4.	अप्रत्याशित विषयों पर रचनात्मक लेखन	19
5.	विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन	21
6.	पत्रकारीय लेखन के विविध रूप और लेखन प्रक्रिया	26
7.	विशेष लेखन- स्वरूप और प्रकार	31
8.	कैसे करें कहानी का नाट्य रूपांतरण	34
9.	कैसे बनता है रेडियो नाटक	36
10.	नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन	38
	आरोह भाग-2 (पद्य खंड)	
11.	आत्मपरिचय, एक गीत	41
12.	पतंग	47
13.	कविता के बहानेबात सीधी थी , पर	51
14.	कैमरे में बंद अपाहिज	55
15.	उषा	58
16.	बादल राग	60
17.	कवितावली (उत्तर कांड से) लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप (लंका कांड से)	64
18.	रुबाइयाँ	70
19.	छोटा मेरा खेत बगुलों के पंख ,	73
	आरोह भाग-2 (गद्य खंड)	
20.	भक्तिन	77
21.	बाज़ार दर्शन	84
22.	काले मेघा पानी दे	91
23.	पहलवान की ढोलक	97
24.	शिरीष के फूल	103
25.	श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा, मेरी कल्पना का आदर्श समाज	110
	वितान भाग-2 (पद्य खंड)	
26.	सिल्वर वैडिंग	118
27.	जूझ	123
28.	अतीत में दबे पाँव	128
	बोर्ड परीक्षा की तैयारी हेतु प्रश्नपत्र	
29.	सीबीएसई प्रतिदर्श प्रश्नपत्र	132
30.	अंक-योजना	138
31.	अभ्यास प्रश्न-पत्र	163
32.	आभार / सन्दर्भ	168

हिंदी (आधार)
विषय कोड – 302
कक्षा 12वी (2026-27)
परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन

- प्रश्न -पत्र तीन खण्डों – खंड- क, ख और ग में होगा।
- खंड- क में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे जाएँगे I सभी प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।
- खंड- ख में अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे ।
- खंड- ग में आरोह भाग – 2 एवं वितान भाग – 2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे ।

भारांक–80 निर्धारित समय - 03 घंटे

वार्षिक परीक्षा हेतु भार विभाजन

	खंड-क (अपठित बोध)	18 अंक
1	01 अपठित गद्यांश (लगभग 250 शब्दों का) पर आधारित बोध, चिंतन, विश्लेषण पर बहुविकल्पीय प्रश्न, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न, लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे I (बहुविकल्पीय प्रश्न 01 अंक x 03 प्रश्न = 03 अंक, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 01 अंक x 01 प्रश्न = 01 अंक, लघूत्तरात्मक प्रश्न 02 अंक x 03 प्रश्न = 06 अंक)	10 अंक
2	01 अपठित पद्यांश (लगभग 100 शब्दों का) पर आधारित बोध, सराहना, सौंदर्य, चिंतन, विश्लेषण आदि पर बहुविकल्पीय प्रश्न, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे I (बहुविकल्पीय प्रश्न 01 अंक x 03 प्रश्न = 03 अंक, अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 01 अंक x 01 प्रश्न = 01 अंक, लघूत्तरात्मक प्रश्न 02 अंक x 02 प्रश्न = 04 अंक)	08 अंक
	खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर) **पाठ संख्या 3, 4, 5, 11, 12 तथा 13 पर आधारित**	22 अंक
3	दिए गए 03 अप्रत्याशित विषयों में से किसी 01 विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन (06 अंक x 01 प्रश्न)	06 अंक
4	**पाठ संख्या 3, 4, 5, 11 तथा 13 पर आधारित** (02 अंक x 04 प्रश्न= 08 अंक) (लगभग 40 शब्दों में), (04 अंक x 02 प्रश्न = 08 अंक) (लगभग 80 शब्दों में) (विकल्प सहित)	16 अंक
	खंड- ग (आरोह भाग – 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)	40 अंक
5	पठित काव्यांश पर आधारित 05 बहुविकल्पी प्रश्न (01 अंक x 05 प्रश्न)	05 अंक
6	काव्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में)	06 अंक

	(03 अंक x 02 प्रश्न)	
7	काव्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (02 अंक x 02 प्रश्न)	04 अंक
8	पठित गद्यांश पर आधारित 05 बहुविकल्पी प्रश्न (01 अंक x 05 प्रश्न)	05 अंक
9	गद्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (03 अंक x 02 प्रश्न)	06 अंक
10	गद्य खंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (02 अंक x 02 प्रश्न)	04 अंक
11	वितान के पाठों पर आधारित 03 में से 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (05 अंक x 02 प्रश्न)	10 अंक
13	**(अ) श्रवण तथा वाचन** **(ब) परियोजना कार्य**	10+10 = 20 अंक
कुल अंक		**100 अंक**

निर्धारित पुस्तकें :

1. **आरोह**, **भाग**–2, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
2. **वितान**, **भाग**–2, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
3. **'अभिव्यक्ति और माध्यम'**, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

नोट – पाठ्यक्रम के निम्नलिखित पाठ हटा दिए गए हैं

आरोह भाग - 2	काव्य खंड	• गजानन माधव मुक्तिबोध – सहर्ष स्वीकारा है (पूरा पाठ) • फ़िराक गोरखपुरी – गज़ल
	गद्य खंड	• विष्णु खरे – चार्ली चैप्लिन यानी हम सब (पूरा पाठ) • रज़िया सज्जाद ज़हीर - नमक (पूरा पाठ)
वितान भाग - 2		• एन फ्रैंक - डायरी के पन्ने

कक्षा बारहवीं हेतु प्रश्नपत्र का विस्तृत प्रारूप जानने के लिए कृपया बोर्ड द्वारा जारी प्रतिदर्श प्रश्नपत्र देखें।

खण्ड 'क' (अपठित बोध)

अपठित गद्यांश व काव्यांश के प्रश्नों को हल करते समय ध्यान रखने योग्य बातें-

1. दिए गए अवतरण को कम से कम दो बार ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए।इसे जब दूसरी बार पढ़ा जाए तो प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए पढ़ा जाए।
2. गद्यांश/काव्यांश के मूल भाव को उचित प्रकार समझना चाहिए तथा प्रश्नों के उत्तर गद्यांश/ काव्यांश में ही ढूँढने चाहिए। इसी आधार पर उपयुक्त विकल्प का चयन करना चाहिए।
3. गद्यांश/काव्यांश में सूचनाओं के माध्यम से किसी बात का वर्णन किया जाता है। उन सूचनाओं पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
4. शीर्षक गद्यांश/काव्यांश के मूल भाव को प्रकट करता हो।शीर्षक का चयन करते समय आरंभिक या अंतिम पंक्तियों पर विशेष ध्यान देना चाहिए, लेकिन उसी आधार पर अंतिम निष्कर्ष नहीं निकाल लेना चाहिए।
5. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर गद्यांश/काव्यांश के अनुरूप और लेखक/कवि के विचार के अनुरूप ही होना चाहिए। इसी आधार पर उपयुक्त विकल्प चुनना चाहिए।

अपठित गद्यांश-1

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (10) (सी.बी.एस.ई.2026)

निःशब्द धीमी चाल और सदियों का साक्षी- जब कोई प्राणी हमारी धरती पर प्रकृति का सबसे शांत लेकिन मज़बूत प्रहरी बनकर खड़ा होता है, तो उसका महत्त्व केवल जैव-विविधता तक सीमित नहीं रह जाता, वह हमारी संस्कृति, चेतना और पर्यावरण की आत्मा बन जाता है। कछुआ, जो समय की रेत पर अपने धैर्य और दीर्घायु के पदचिह्न छोड़ता आया है, आज खतरे में है। 23 मई को मनाया जाने वाला विश्व कछुआ दिवस केवल एक दिन नहीं, बल्कि पुकार है उस मौन जीवन के लिए, जिसे हमने वर्षों तक नज़रअंदाज़किया और जो आज हमसे बचाव की गुहार कर रहा है।

मान्यता है कि कछुए धरती पर करोड़ों वर्षों से अस्तित्व में हैं। उन्होंने हिमयुगों, महाविनाशों और भूगर्भीय परिवर्तनों को झेला है। उनके अस्तित्व की स्थिरता, उनकी धीमी लेकिन स्थायी जीवन-शैली का प्रमाण है। मगर दुखद है कि आज जिन संकटों का वे सामना कर रहे हैं, वे किसी प्राकृतिक आपदा के नहीं, बल्कि मानवीय लालच और लापरवाही के कारण हैं। विश्व में ज्ञात 350 से अधिक कछुआ प्रजातियों में से लगभग 60 प्रतिशत प्रजातियां संकटग्रस्त या विलुप्ति के कगार पर हैं। समुद्री कछुए- जैसे मादा ऑलिव रिडले, जो हजारों किलोमीटर तैरकर अंडे देने के लिए ओडिशा तट पर आती है, को जल और प्रकाश प्रदूषण तथा मानवीय हस्तक्षेप से भारी खतरा है।इन मूक प्राणियों के लिए संकट के प्रमुख कारणों में प्लास्टिक प्रदूषण, समुद्री तटों का अतिक्रमण, अवैध व्यापार और जलवायु परिवर्तन शामिल हैं।

कछुआ हमें सिखाता है कि दौड़ना ज़रूरी नहीं, टिके रहना ज़्यादाज़रूरी है। यह भी कि मौन शक्ति की एक अलग भाषा है, जो शब्दों से नहीं बल्कि कर्म से बोलती है। उनकी धीमी चाल से हमें भविष्य की गूंज सुनाई देती है कि यदि हम उन्हें बचा पाए, तो खुद को बचा पाएंगे।

(i) गद्यांश के आधार पर कछुए की महत्ता का मुख्य आधार है: (1)

(अ) निःशब्द मंद गति (ब) उसका शांत स्वभाव
(स) जैव-विविधता का अंग (द) संस्कृति, चेतना और पर्यावरण की आत्मा

(ii) जैव-विविधता से अभिप्राय है: (1)
(अ) सभी प्रकार के जीवन की विविधता (ब) पेड़-पौधों की विभिन्न प्रजातियाँ
(स) सूक्ष्म जीवों की विभिन्न प्रजातियाँ (द) पशु-पक्षियों के जीवन की विविधता

(iii) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए: (1)

कथन: समय की रेत पर अपने धैर्य और दीर्घायु के चिह्न छोड़ने वाले कछुओं का जीवन आज संकट में है।

कारण: उन्होंने हिमयुगों, महाविनाशों और भूगर्भीय परिवर्तनों को झेला है।
(अ) कथन तथा कारण दोनों ग़लत हैं।
(ब) कारण सही है, कथन ग़लत है।
(स) कथन सही है, किंतु कारण कथन की ग़लत व्याख्या करता है।
(द) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(iv) "मौन शक्ति की एक अलग भाषा है"– आशय स्पष्ट कीजिए। (2)
(v) "दौड़ना ज़रूरी नहीं, टिके रहना ज़्यादाज़रूरी है"– से क्या अभिप्राय है? (2)
(vi) कछुओं के संरक्षण हेतु किन्हीं दो उपायों का उल्लेख कीजिए। (1)
(vii) प्रवासी कछुए भारत में क्यों आते हैं? इन्हें किससे खतरा है? (2)

उत्तर- (i) (द) (ii) (अ) (iii) (स)

(iv) इस पंक्ति का आशय यह है कि शक्ति का प्रदर्शन हमेशा शोर-शराबे, शब्दों या आक्रामक व्यवहार के माध्यम से ही नहीं होता। कछुआ जैसे शांत और धीमे जीव की 'शक्ति' उसकी सहनशीलता, धैर्य, विपरीत परिस्थितियों को झेलने की क्षमता और अस्तित्व को बनाए रखने के उसके मौन प्रयासों (कर्म) में झलकती है। यह शक्ति शब्दों से नहीं, बल्कि टिके रहने के उसके 'कर्म' से बोलती है।

(v) इस पंक्ति से अभिप्राय यह है कि जीवन में केवल गति, जल्दबाजी या 'दौड़' (ऊपरी सफलता) ही महत्वपूर्ण नहीं होती; बल्कि धैर्य, निरंतरता और स्थिरता के साथ अस्तित्व बनाए रखना (अर्थात किसी भी परिस्थिति में 'टिके रहना') अधिक महत्त्वपूर्ण है। कछुए की धीमी चाल हमें सिखाती है कि स्थिर और स्थायी जीवन शैली ही दीर्घायु और अस्तित्व की कुंजी है।

(vi) संरक्षण दो उपाय-

1. प्लास्टिक प्रदूषण को रोकना (ताकि वे इसे न खाएँ या इसमें न फँसें)।
2. समुद्री तटों पर मानवीय हस्तक्षेप और प्रकाश प्रदूषण को नियंत्रित करना (विशेषकर उनके प्रजनन काल के दौरान)।

(vii) प्रवासी कछुए (जैसे मादा ऑलिव रिडले) हजारों किलोमीटर तैरकर अंडे देने के लिए (ओडिशा जैसे) भारतीय तटों पर आते हैं। इन्हें प्रमुख रूप सेजल और प्रकाश प्रदूषण तथा मानवीय हस्तक्षेप (जैसे तटों का अतिक्रमण, अवैध व्यापार) से खतरा है।

अपठित गद्यांश-2

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (10)

तकनीकी क्रांति के इस दौर में जहाँ मानव ने सभ्यता के नए शिखरों को छुआ है, वहीं उसकी अंतस की चेतना और मौलिक संवेदनाओं पर एक अनजाना संकट भी गहराया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और डिजिटल आभासी दुनिया ने हमारे जीवन को सुगम तो बना दिया है, लेकिन इसने मनुष्य की 'एकांत की संस्कृति' को छीन लिया है। एकांत केवल अकेले रहने का नाम नहीं है; यह वह उर्वर भूमि है जहाँ विचार अंकुरित होते हैं, जहाँ आत्म-मंथन से सृजनात्मकता का जन्म होता है। आज का युवा वर्ग हर क्षण 'स्क्रीन्स' से जुड़ा हुआ है। वह भीड़ में तो है, पर वह भीड़ आभासी है। इस निरंतर जुड़ाव (कॉन्स्टेंट कनेक्टिविटी) ने हमारे मस्तिष्क को विश्राम देने और गहरे चिंतन करने की क्षमता को संकुचित कर दिया है।

प्राचीन काल से ही भारतीय दर्शन में 'चित्त की स्थिरता' और 'मौन' को एक महान शक्ति के रूप में स्वीकारा गया है। महान वैज्ञानिक और विचारक भी मानते आए हैं कि जीवन की सबसे अनमोल खोजें एकांत के क्षणों में ही हुई हैं। परंतु, आज की सूचनाओं की इस अंतहीन बौछार ने मानव को एक 'सूचना उपभोक्ता' (इन्फॉर्मेशन कंज्यूमर) बना दिया है, न कि ज्ञान का सर्जक। हम तथ्यों को तो जानते हैं, पर सत्य की अनुभूति से दूर होते जा रहे हैं।

मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि इस डिजिटल अति-उपभोग के कारण समाज में अवसाद, एकाकीपन और ध्यान की कमी (एडीएचडी) जैसी समस्याएँ तेज़ी से बढ़ी हैं। विडंबना यह है कि सामाजिक माध्यमों (सोशल मीडिया) पर हज़ारों 'मित्रों' और 'लाइक' के होने के बाद भी व्यक्ति भीतर से अकेला महसूस करता है। यह संकट केवल मानसिक नहीं, बल्कि सामाजिक भी है, क्योंकि यह हमारी पारस्परिक सहानुभूति (एम्पैथी) को कम कर रहा है। जब तक हम स्क्रीन से परे हटकर वास्तविक चेहरों के भावों को पढ़ना नहीं सीखेंगे, तब तक हमारी मानवीय संवेदनाएँ अधूरी ही रहेंगी।

(i) गद्यांश के अनुसार 'एकांत' की वास्तविक महत्ता क्या है? (1)

(अ) समाज से पूरी तरह कट जाना

(ब) विचार और सृजनात्मकता को अंकुरित करने की उर्वर भूमि होना

(स) डिजिटल दुनिया से दूरी बनाना

(द) अकेलेपन के अवसाद से मुक्ति पाना

(ii) 'सूचना उपभोक्ता' बनने से मनुष्य को क्या हानि हुई है? (1)

(अ) वह तकनीक से दूर हो गया है।

(ब) उसके पास तथ्यों की कमी हो गई है।

(स) वह ज्ञान का सर्जक बनने के बजाय केवल तथ्यों के जाल में उलझ गया है।

(द) वह सामाजिक माध्यमों का उपयोग नहीं कर पा रहा है।

(iii) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए: (1)

कथन: आज का मनुष्य हज़ारों आभासी मित्रों के बीच रहकर भी गहरे एकाकीपन का शिकार है।

कारण: निरंतर डिजिटल जुड़ाव ने मनुष्य की वास्तविक पारस्परिक सहानुभूति और मानवीय संवेदनाओं को संकुचित कर दिया है।

(अ) कथन तथा कारण दोनों ग़लत हैं।

(ब) कारण सही है, कथन ग़लत है।

(स) कथन सही है, किंतु कारण कथन की ग़लत व्याख्या करता है।

(द) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(iv) "हम तथ्यों को तो जानते हैं, पर सत्य की अनुभूति से दूर होते जा रहे हैं" आशय स्पष्ट कीजिए। (2)

(v) डिजिटल अति-उपभोग के कारण होने वाले किन्हीं दो मनोवैज्ञानिक संकटों का उल्लेख कीजिए। (2)

(vi) गद्यांश के आधार पर बताइए कि हमारी मानवीय संवेदनाएँ कब तक अधूरी रहेंगी? (1)

(vii) भारतीय दर्शन में 'मौन और चित्त की स्थिरता' को क्यों महत्त्वपूर्ण माना गया है? स्पष्ट कीजिए। (2)

उत्तर- (i) ब (ii) स (iii) द

(iv) सूचनाओं की अधिकता के कारण हम गहरी समझ को छोड़कर ऊपरी तथ्यों तक सीमित हैं।

(v) अवसाद, एकाकीपन, ध्यान की कमी।

(vi) जब तक हम स्क्रीन छोड़कर वास्तविक चेहरों के भाव पढ़ना नहीं सीखेंगे।

(vii) क्योंकि यह सृजनात्मकता और आत्म-मंथन को जन्म देता है।

अपठित गद्यांश-3

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (10) **(सी.बी.एस.ई.2026)**

मानव के संवाद करने, जानकारी प्राप्त करने और बाह्य दुनिया के समक्ष स्वयं को अभिनीत करने की शैली में परिवर्तन लाकर सोशल मीडिया आधुनिक युग का सर्वव्यापी पहलू बन गया है। इसने सूचना के प्रसार को अत्यंत त्वरित बना दिया है और यह सभी आयु समूहों के लिए एक आसान माध्यम बन चुका है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, लिंक्डइन, यूट्यूब, आदि उपयोगकर्ता को अपनी रचनात्मकता प्रदर्शित करने और सामाजिक तौर पर सक्रिय रहने का अवसर प्रदान करते हैं। इसका महत्त्व समय के साथ बढ़ता ही जा रहा है। यह न केवल व्यक्तिगत जीवन के लिए एक प्रभावी माध्यम है, बल्कि यह शिक्षा, व्यापार और यहाँ तक कि राजनीति में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसने सूचना के प्रसार को अत्यधिक तेज़ और सस्ता बना दिया है। इसके जरिए लोग घटनाओं का सीधा प्रसारण विश्व के किसी भी कोने से देख सकते हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षा के क्षेत्र में तो इसने एक क्रांति-सी ला दी है। छात्रों के लिए यह किसी वरदान से कम नहीं है। व्यावसायिक गतिविधियाँ- जैसे उत्पादों और सेवाओं का प्रचार करना, ग्राहकों से जुड़ना, विपणन अभियानों को तेज़ी से फैलाने में भी यह मदद करता है।

सोशल मीडिया जहाँ सकारात्मक भूमिका अदा कर रहा है वहीं समाज पर इसका दुष्प्रभाव भी देखने को मिल रहा है। लोग तनाव और अवसाद से प्रभावित हो रहे हैं, अकेलापन बढ़ रहा है, अनिद्रा की समस्या बढ़ रही है। इसने आत्ममुग्धता को बढ़ाया है। अपनी निजी ज़िंदगी के बारे में लिखना, अपनी आत्मीय तस्वीरें शेयर करना, चौबीसों घंटे सोशल मीडिया पर उपस्थित रहना बेचैनी को बढ़ा सकता है। आपको याद रखना चाहिए कि इस मंच पर आने वाले आपके आभासी मित्र, सच्चे मित्र या हितैषी नहीं होते। लोग आपकी उपस्थिति का लाभ उठाकर आपको धोखा-धड़ी का शिकार बना लेते हैं। 'लाइक' और 'कमेंट' की अपेक्षा हमारे मस्तिष्क की लय बिगाड़ देते हैं। वैज्ञानिक इसकी लत को खराब जीवन-शैली से होने वाली बीमारियों में सबसे ऊपर रखते हैं।

यद्यपि यह लोगों से जुड़ने, सूचना के प्रचार-प्रसार, समुदाय में अहम भूमिका निभा रहा है लेकिन इसके अति प्रयोग से बचना चाहिए।

(i) निम्नलिखित में से सोशल मीडिया का प्रकार नहीं है: 1

(अ) इंस्टाग्राम (ब) व्हाट्सऐप (स) ट्विटर (द) फेसबुक

(ii) सोशल मीडिया की लोकप्रियता का नकारात्मक प्रभाव क्या है: 1

(अ) सूचनाओं का त्वरित प्रसारण (ब) दुनिया भर से जुड़ने का अवसर

(स) आत्ममोह की संस्कृति को बढ़ावा (द) व्यावसायिक गतिविधियों में योगदान

(iii) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए: 1

कथन : सोशल मीडिया का महत्त्व समय के साथ बढ़ता ही जा रहा है।

कारण : सामाजिक संरचना के सुदृढ़ीकरण और रचनात्मक क्षमता के प्रदर्शन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

(अ) कथन तथा कारण दोनों ग़लत हैं।

(ब) कारण सही है, किंतु कथन ग़लत है।

(स) कथन सही है, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(द) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(iv) सोशल मीडिया से क्या अभिप्राय है? 1

(v) सोशल मीडिया के दो सकारात्मक पहलुओं का उल्लेख कीजिए। 2

(vi) सोशल मीडिया पर 'लाइक' और 'कमेंट' की अपेक्षा हमारे मस्तिष्क की लय बिगाड़ देते हैं। कैसे? स्पष्ट कीजिए। 2

(vii) सोशल मीडिया की लत का खराब जीवन-शैली से होने वाली बीमारियों से क्या संबंध है? तर्क पूर्ण उत्तर दीजिए। 2

उत्तर- (i) ब (ii) स (iii) द

(iv) सोशल मीडिया से अभिप्राय इंटरनेट पर आधारित उन डिजिटल मंचों से है, जो लोगों को आपस में जुड़ने, संवाद करने और सूचनाओं व विचारों को साझा करने की सुविधा देते हैं।

(v) दो प्रमुख सकारात्मक पहलू हैं: पहला, इसके माध्यम से दुनिया भर के लोगों से त्वरित संपर्क और सूचनाओं का आदान-प्रदान आसान हो जाता है। दूसरा, यह शिक्षा, ज्ञान-प्रसार और रचनात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करने का एक सशक्त माध्यम है।

(vi) 'लाइक' और 'कमेंट' पाने की चाहत आत्ममुग्धता को बढ़ाती है, जिससे क्षणिक खुशी मिलती है। बार-बार इसकी लालसा होने से ध्यान केंद्रित करने की क्षमता घटती है, मानसिक भटकाव बढ़ता है और मस्तिष्क की प्राकृतिक कार्य-प्रणाली की लय बिगड़ जाती है।

(vii) सोशल मीडिया की लत के कारण व्यक्ति घंटों एक ही जगह बैठा रहता है, जिससे शारीरिक सक्रियता कम हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप अनिद्रा, मोटापा, अवसाद (डिप्रेशन) और आँखों की कमजोरी जैसी खराब जीवन-शैली से जुड़ी बीमारियाँ शरीर को घेर लेती हैं।

अपठित गद्यांश-4

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (10) **(सी.बी.एस.ई.2026)**

जीवन के लिए जागना जितना ज़रूरी है, उतना ही ज़रूरी सोना है। दोनों क्रियाएँ एक-दूसरे के सहारे पर हैं। नींद का न आना भी एक विकार है, जिससे अनेक प्रकार की बाधाएँ आ सकती हैं और जो प्राणी रात-दिन सोता ही रहे, वह तो निष्क्रिय ही है। यदि दोनों क्रियाएँ एक-दूसरे की सहायता करती रहें- आदमी जागे कर्म करने के लिए, सोये विश्राम के लिए- तो जीवन सुखी होता है, लेकिन जागना जीवन का मुख्य लक्षण है, सोना अर्थात्- विश्राम, तो केवल उसका सहायक है। इसलिए, जागृति जीवन और अभ्युदय का चिह्न है और निद्रा पतन तथा ह्रास का। जागृति रजोगुण-प्रधान क्रिया है, निद्रा में तमोगुण की प्रधानता होती है। कम-से-कम सोने के लिए अनेक उपाय और साधन बताए गए हैं। अधिक-से-अधिक सोने के लिए आज तक किसी ने कोई उपाय नहीं बताया- उसी तरह, जैसे स्वस्थ रहने के लिए तरह-तरह के प्रयत्न किए जाते हैं, पर बीमारी के लिए भी किसी ने कोई प्रयत्न किया है, ऐसा कभी सुनने में नहीं आया। वास्तव में स्वास्थ्य का न होना ही बीमारी है- उसी तरह, जैसे प्रकाश का न होना ही अंधकार है। आदमी जितना ही कम सोये उतना ही जागरूक है, यहाँ तक कि कई विद्वानों का मत है, सोना कोई आवश्यक क्रिया नहीं। संभव है तपस्वियों के लिए सोना आवश्यक न हो, उनकी प्रकृति में रज और सत ही रह जाता हो, तम की सर्वथा हानि हो जाती हो, पर साधारण प्राणियों के लिए भी यही नियम लागू है कि मात्रा से अधिक सोने में हानि है, अतएव जब हम किसी राष्ट्र के विषय में जागृति की कामना करते हैं, तो इसका बोध यह होता है कि वह राष्ट्र मात्रा से अधिक तमोगुणी हो गया और उसमें जीवन की मात्रा ज़रूरत से कम है।

(i) 'जागृति' और 'निद्रा' किन गुणों से संबंधित हैं? 1

(अ) सत और तम (ब) रज और सत (स) सत और रज (द) रज और तम

(ii) गद्यांश के अनुसार सोना अर्थात् निद्रा किसकी सहायक है? 1

(अ) स्वास्थ्य की (ब) जागने की (स) विश्राम की (द) मृत्यु की

(iii) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए: 1

कथन : जागना जीवन के लिए आवश्यक है।

कारण : जाग्रत हो ध्यानपूर्वक कर्म करने से ही, व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति संभव है

(अ) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।

(ब) कथन सही है, किंतु कारण गलत है

(स) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(द) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्यान हीं करता है।

(iv) 'जागृति' और 'निद्रा' किसके प्रतीक हैं? गद्यांश के आधार पर बताइए। 1

(v) 'जागना' और 'सोना' दोनों क्रियाएँ एक-दूसरे की पूरक कैसे हैं? स्पष्ट कीजिए। 2

(vi) लेखक के अनुसार 'किसी राष्ट्र की जागृति' का क्या तात्पर्य है? उल्लेख कीजिए। 2

(vii) निद्रा को किस गुण की प्रधानता से जोड़ा गया है और क्यों? 2

उत्तर- (i) (द) (ii) (स) (iii) (स)

(iv) गद्यांश के आधार पर 'जागृति' चेतना, सक्रियता और ज्ञान-प्रसार का प्रतीक है, जबकि 'निद्रा' अज्ञानता, निष्क्रियता और जड़ता का प्रतीक है।

(v) ये दोनों क्रियाएँ एक-दूसरे की पूरक हैं क्योंकि निरंतर कार्य करने के बाद शरीर और मस्तिष्क को नई ऊर्जा की आवश्यकता होती है। 'सोना' (निद्रा) मनुष्य की थकान को मिटाकर उसे पुनः स्फूर्ति देता है, जिससे वह अगली सुबह अधिक उत्साह के साथ 'जागने' (कर्म करने) के लिए तैयार हो पाता है।

(vi) लेखक के अनुसार किसी राष्ट्र की जागृति का तात्पर्य वहाँ के नागरिकों में वैचारिक चेतना, शिक्षा का प्रसार और अपने अधिकारों व कर्तव्यों के प्रति सजगता आना है। जब समाज अंधविश्वासों और आलस्य को छोड़कर प्रगति के मार्ग पर सक्रिय होता है, तब राष्ट्र जागृत कहलाता है।

(vii) निद्रा को भारतीय दर्शन के अनुसार 'तमोगुण' (तमस) की प्रधानता से जोड़ा गया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि तमस का स्वभाव ही अंधकार, आलस्य, प्रमाद और निष्क्रियता को बढ़ाना है। निद्रा की अवस्था में मनुष्य की सचेतन प्रवृत्तियाँ शिथिल हो जाती हैं और जड़ता हावी हो जाती है।

अपठित गद्यांश-5

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (10)

भारतीय संस्कृति का मूल आधार 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना में निहित है, जिसका सीधा अर्थ है– संपूर्ण पृथ्वी ही मेरा परिवार है। यह केवल एक दार्शनिक विचार नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक जीवन-पद्धति है जो समावेशन (इंक्लूजन) और सह-अस्तित्व को बढ़ावा देती है। इतिहास गवाह है कि भारत ने कभी किसी देश पर अपनी संस्कृति थोपने के लिए आक्रमण नहीं किया, बल्कि यहाँ आने वाली हर संस्कृति को अपने भीतर इस तरह आत्मसात कर लिया जैसे नदियाँ समुद्र में मिलकर अपना अलग अस्तित्व खो देती हैं और सागर को समृद्ध बनाती हैं।आज जब वैश्विक स्तर पर वैचारिक कट्टरता, युद्ध और पर्यावरण संकट जैसी विभीषिकाएँ मुँह बाए खड़ी हैं, तब यह प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण और भी प्रासंगिक हो जाता है। वर्तमान समय में वैश्वीकरण (ग्लोबलाइजेशन) ने बाज़ार को तो जोड़ दिया है, लेकिन दिलों में दूरियाँ बढ़ा दी हैं। आर्थिक प्रतिस्पर्धा ने मनुष्य को केवल एक 'आर्थिक इकाई' बना दिया है, जिससे सामूहिक कल्याण की भावना पीछे छूट गई है।

प्रकृति के साथ हमारा संबंध भी इसी पारिवारिक चेतना पर आधारित था। हमने नदियों को 'माता' और वृक्षों को 'देवता' माना। यह अंधविश्वास नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने और पारिस्थितिक संतुलन (इकोलॉजिकल बैलेंस) बनाए रखने का एक सांस्कृतिक माध्यम था। जब हम संपूर्ण चराचर जगत को एक परिवार मान लेते हैं, तो हम उसका शोषण नहीं करते, बल्कि उसका पोषण करते हैं। आज के 'सस्टेनेबल डेवलपमेंट' (सतत विकास) की अवधारणा का बीज इसी प्राचीन दर्शन में छुपा हुआ है। यदि हमें आने वाली पीढ़ियों के लिए इस ग्रह को बचाना है, तो हमें उपभोग आधारित जीवन शैली से हटकर सह-अस्तित्व आधारित चेतना को अपनाना ही होगा।

(i) 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना का व्यावहारिक संदेश क्या है? (1)

(अ) अपनी संस्कृति को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करना

(ब) संपूर्ण पृथ्वी के जीवों के प्रति समावेशन और सह-अस्तित्व की भावना रखना

(स) केवल अपने परिवार का भरण-पोषण करना

(द) वैश्विक स्तर पर व्यापारिक एकाधिकार स्थापित करना

(ii) वर्तमान वैश्वीकरण ने समाज पर क्या नकारात्मक प्रभाव डाला है? (1)

(अ) इसने बाज़ारों को पूरी तरह बंद कर दिया है।

(ब) इसने मनुष्य को एक आर्थिक इकाई बनाकर सामूहिक कल्याण को कम कर दिया है।

(स) इसके कारण वैज्ञानिक प्रगति पूरी तरह रुक गई है।

(द) यह अंधविश्वास को बढ़ावा दे रहा है।

(iii) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए: (1)

कथन: भारतीय संस्कृति में नदियों को माता और वृक्षों को देवता के रूप में पूजा गया है।

कारण: यह परंपरा अंधविश्वास पर आधारित थी और इसका विज्ञान से कोई संबंध नहीं था।

(अ) कथन तथा कारण दोनों ग़लत हैं।

(ब) कथन सही है, कारण ग़लत है।

(स) कथन ग़लत है, कारण सही है।

(द) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(iv) "भारत में संस्कृतियों का आगमन नदियों का समुद्र में मिलने जैसा है"– इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए। (2)

(v) वर्तमान वैश्विक संकटों के दौर में भारतीय दृष्टिकोण किस प्रकार प्रासंगिक हो जाता है? (2)

(vi) गद्यांश के अनुसार 'सतत विकास' का बीज कहाँ छुपा हुआ है? (1)

(vii) आने वाली पीढ़ियों के लिए पृथ्वी को सुरक्षित रखने हेतु क्या उपाय सुझाया गया है? (2)

उत्तर- (i) ब (ii) ब (iii) ब

(iv) विभिन्न संस्कृतियों का भारत में आकर अपना अहंकार खोकर विलीन हो जाना।

(v) वैचारिक कट्टरता और युद्ध के माहौल में सह-अस्तित्व सिखाने के कारण।

(vi) संपूर्ण चराचर को परिवार मानने के दर्शन में।

(vii) उपभोग आधारित जीवन शैली छोड़कर सह-अस्तित्व को अपनाना।

अवधारणा मानचित्र

अपठित काव्यांश-1

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (8)   (सी.बी.एस.ई.2026)

धूप चमकती है चाँदी की साड़ी पहने
मैके में आई बेटी की तरह मगन है
फूली सरसों से आके लिपट गई है
जैसे दो हमजोली सखियाँ गले मिली हैं
सारंगी बजती है खेतों की गोदी में
दल-के-दल पक्षी उड़ते हैं मीठे स्वर के
अनावरण यह प्राकृत छवि की अमर भारती
रंग-बिरंगी पंखुरियों की खोल चेतना
सौरभ से मह-मह महकाता है दिगंत को
मानव-मन कोभर देता है दिव्य दीप्ति से
शिव के नंदी-सा पानी पीता नदिका में
निर्मल नभ अवनी के ऊपर बिसुध खड़ा है
काल काग की तरह ठूँठ पर गुमसुम बैठा
सोई आँखों देख रहा है दिवावसान को।

(i) काव्यांश में धूप को किस रूप में चित्रित किया गया है? 1

(अ) चाँदी की साड़ी के रूपमें   (ब) फूली सरसोंकेरूप में
(स) मैकेमें आई बेटी के रूप में   (द) हमजोलीसखी केरूप में

(ii) फूली हुई सरसों से आकर कौन लिपट गई? 1

(अ) धूप   (ब) हवा   (स) बेटी   (द) चाँदनी

(iii) खेतों की गोदी में सारंगी बजती है-

(अ) खेतों के बीच से गुजरती हवा की ध्वनि की
(ब) खेतों के ऊपर उड़ते पक्षियों के मीठे स्वरों की
(स) पक्षियों को उड़ाने के लिए किसान की बाँसुरी की
(द) पक्षियों को बुलाने के लिए छो टेबच्चों की

(iv) ठूँठ पर बैठे काल की तुलनाकिससेऔर किस आधार पर की गई है? 1

(v) नदी में पड़ते आकाश के प्रतिबिंब के बारे में कवि ने क्या कल्पना की है?स्पष्ट कीजिए। 2

(vi) काव्यांश के आधार पर ग्रामीण प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन कीजिए। 2

उत्तर- (i) (स)   (ii) (अ)   (iii) (ब)

(iv) ठूँठ पर बैठे 'काल' (समय/मृत्यु) की तुलना 'काग' (कौए)से की गई है। दोनों में वर्ण की समानता इसका आधार है। जिस तरह एक कौआ पेड़ के सूखे ठूँठ पर शांत बैठकर सब कुछ देखता रहता है, उसी तरह काल भी शांत और मूक होकर चुपचाप दिन के ढलने (दिवावसान) को देख रहा है।

(v) नदी के स्वच्छ जल में आकाश के पड़ते प्रतिबिंब को देखकर कवि ने यह दिव्य कल्पना की है कि साक्षात् 'शिव के नंदी' (बैल)के समान निर्मल आकाश झुककर नदी में पानी पी रहा है। नदी

का जल इतना स्वच्छ है कि ऊपर फैला असीम और निश्चल आकाश उसमें पूरी तरह समाया हुआ दिखाई दे रहा है।

(vi) काव्यांश में ग्रामीण प्रकृति का अत्यंत जीवंत वर्णन है। यहाँ धूप चाँदी की साड़ी पहने मायके आई प्रसन्न बेटी जैसी दिखती है, सरसों सखी की तरह लिपटी है और खेतों में सारंगी जैसी मधुर ध्वनि गूँज रही है। नदी में पानी पीता बैल और उड़ते पक्षी इस सौंदर्य को दिव्य बनाते हैं।

अपठित काव्यांश-2

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तरलिखिए: (8) (सी.बी.एस.ई.2026)

फूल से बोली कली
क्यों व्यस्त मुरझाने में है
फ़ायदा क्या गंध औ मकरंद बिखराने में है
तूने अपनी उम्र क्यों वातावरण में घोल दी
अपनी मनमोहक पँखुरियों की छटा क्यों खोल दी
तू स्वयं को बाँटता है जिस घड़ी से तू खिला
किन्तु इस उपकार के बदले में तुझको क्या मिला
मुझको देखो मेरी सब ख़ुशबू मुझमें ही बंद है
मेरी सुंदरता है अक्षय, अछूता मकरंद है
मैं पली काँटों में जब थी दुनिया तब सोती रही
मेरी ही क्या, ये कभी किसी की भी कभी होती नहीं
ऐसी दुनिया के लिए सौरभ लुटाऊँ किसलिए
स्वार्थी समुदाय का मैं मेला लगाऊँ किसलिए
फूल उस नादान की वाचालता पर चुप रहा
फिर स्वयं को देखकर भोली कली से ये कहा
ज़िंदगी सिद्धांत की सीमाओं में बँटती नहीं
ये वह पूँजी है जो व्यय से बढ़ती है, घटती नहीं

(i) फूल और कली के संवाद के माध्यम से कवि ने स्पष्ट किया है: जीवन की (1)

(अ) सार्थकता को (ब) क्षणभंगुरता को (स) नश्वरता को (द) दृष्टिकोण को

(ii) काव्यांश के अनुसार कौन-सी पूँजी बाँटने से बढ़ती है? (1)

(अ) ज्ञान (ब) ज़िंदगी (स) संपत्ति (द) दुख

(iii) काव्यांश के संदर्भ में 'वाचालता' शब्द का अर्थ है: (1)

(अ) चालाकी (ब) समझदारी (स) बड़बोलापन (द) मूर्खता

(iv) कली और फूल के व्यक्तित्व में क्या अंतर है? (2)

(v) कली अपना सौंदर्य और महक किसी के साथ क्यों नहीं बाँटना चाहती? (2)

(vi) कली अथवा फूल, आप किसके विचारों से सहमत हैं? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। (1)

उत्तर- (i) (अ) जीवन की सार्थकता को (ii) (ब) ज़िंदगी (iii) (स) बड़बोलापन

(iv) कली और फूल के व्यक्तित्व में मुख्य अंतरस्वार्थ और परमार्थ (परोपकार)का है। कली संकुचित और स्वार्थी विचारधारा की प्रतीक है, जो अपनी ख़ुशबू और सुंदरता को सिर्फ़ अपने तक सीमित

रखना चाहती है। इसके विपरीत, फूल उदार और परोपकारी व्यक्तित्व का प्रतीक है, जो दूसरों को खुशी देने के लिए खुद को पूरी तरह समर्पित कर देता है और ख़ुशबू बिखेरता है।

(v) कली इस संसार को स्वार्थी मानती है। उसका सोचना है कि जब वह काँटों के बीच पल रही थी और कष्ट झेल रही थी, तब दुनिया सो रही थी और किसी ने उसकी सुध नहीं ली। उसे लगता है कि उपकार के बदले दुनिया से कुछ नहीं मिलता, इसलिए वह इस स्वार्थी समाज के लिए अपना सौंदर्य और महक (सौरभ) लुटाकर खुद को खत्म नहीं करना चाहती।

(vi) हम फूल के विचारों से सहमत हैं, क्योंकि जीवन की सार्थकता दूसरों के काम आने और परोपकार करने में ही है। जिस प्रकार फूल खिलकर और अपनी ख़ुशबू बिखेरकर वातावरण को आनंदित करता है, उसी प्रकार मानव जीवन भी तभी सार्थक है जब वह समाज के कल्याण में योगदान दे। केवल अपने लिए जीना जीवन नहीं, बल्कि दूसरों के जीवन में खुशियाँ घोलना ही वास्तविक 'ज़िंदगी' है, जो बाँटने से और बढ़ती है।

अपठित काव्यांश-3

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 8

मैं शून्य में विलीन होना नहीं चाहता,
मैं तो इस माटी का अंतहीन गान हूँ।
जिसने मुझे गढ़ा, अपनी साँसों से सींचा,
मैं उसी धरा के आँसुओं का विधान हूँ।
कहते हैं लोग कि आकाश महान है,
शून्य की असीमता ही उसका प्राण है,
पर सोचो, उस नीलिमा का वैभव क्या,
यदि नीचे न फैली यह हरी-भरी छाँह है?
अम्बर का गरजना केवल एक दंभ है,
धरती का सहना ही सृष्टि का प्रस्थान है।
यहाँ काँटों की चुभन में भी एक सत्य है,
और फूलों की मुस्कान में कोई रहस्य है।
मैं देवत्व की सीढ़ियाँ चढ़कर क्या करूँगा?
जहाँ मनुष्यता का कोई नाम-ओ-निशान न हो।
मुझे स्वीकार है इस मर्त्य लोक का क्रंदन,
यदि इसके पीछे छिपा कोई नव-विहान हो।

(i) 'धरती का सहना ही सृष्टि का प्रस्थान है' पंक्ति द्वारा कवि क्या रेखांकित करना चाहता है? (1)

(अ) अम्बर की सर्वोच्चता को
(ब) धरती के धैर्य और सृजन की मूल शक्ति को
(स) शून्य की असीमता को
(द) मनुष्यों के आपसी संघर्ष को

(ii) कवि देवत्व की सीढ़ियाँ क्यों नहीं चढ़ना चाहता? (1)

(अ) क्योंकि वह ऊँचाई से डरता है।
(ब) क्योंकि वहाँ उसे भौतिक सुख नहीं मिलेंगे।
(स) क्योंकि जहाँ मनुष्यता न हो, वह स्थान उसके लिए व्यर्थ है।
(द) क्योंकि देवत्व केवल एक कोरी कल्पना है।

(iii) काव्यांश के संदर्भ में 'नव-विहान' शब्द का सटीक अर्थ है: (1)

(अ) पुरानी परंपरा (ब) घोर अंधकार

(स) नई सुबह या वैचारिक जागृति (द) रात्रि का अवसान

(iv) कवि ने अम्बर और धरती के व्यवहार में क्या अंतर स्पष्ट किया है? (2)

(v) 'नीलिमा का वैभव' कब निरर्थक हो जाता है? काव्यांश के आलोक में स्पष्ट कीजिए। (2)

(vi) कवि स्वयं को 'इस माटी का अंतहीन गान' क्यों मानता है? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। (1)

उत्तर- (i) ब (ii) स (iii) स

(iv) कवि के अनुसार अम्बर (आकाश) केवल अपनी ऊँचाई और शून्यता पर गर्व करता है, वह मनुष्यों के सुख-दुख के प्रति संवेदनहीन और तटस्थ रहता है। इसके विपरीत, धरती अत्यंत उदार और करुणामयी है; वह मनुष्य के हर सुख-दुख को सहती है और उसे संबल व जीवन देती है।

(v) आकाश की विस्तृत नीलिमा का सौंदर्य और वैभव तब निरर्थक हो जाता है, जब वह किसी पीड़ित या अभावग्रस्त व्यक्ति के आँसू पोंछने में असमर्थ रहता है। यदि वह किसी रोते हुए मनुष्य को सांत्वना और सहारा नहीं दे सकता, तो उसकी वह असीम ऊँचाई और चमक पूरी तरह व्यर्थ है।

(vi) कवि स्वयं को इस माटी का अंतहीन गान इसलिए मानता है क्योंकि उसका अस्तित्व, उसकी चेतना और उसकी रचनाएँ इसी मिट्टी से उपजी हैं, जो मानव-मूल्यों के रूप में सदैव जीवित रहेंगी।

अपठित काव्यांश- 4

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 8

नदी ने जब छोड़ दिया अपना किनारा,
तो सबने कहा- यह उसका उच्छृंखल स्वभाव है।
पर किसी ने न देखा उसके भीतर का वह दर्द,
जो पत्थरों के निरंतर प्रहार का प्रभाव है।
बाँधते रहे उसे सीमाओं के पाश में जो लोग,
आज वही उसकी स्वतंत्रता को संहार कहते हैं।
सभ्यता के नाम पर जिसने कंक्रीट उड़ेला उसकी छाती पर,
आज वही उसके वेग को हाहाकार कहते हैं।
मौन बहना ही क्या सरिता की एकमात्र नियति है?
क्या अपनी रक्षा में उठना उसकी अवनति है?
वह प्यास बुझाती रही सदियों से चराचर की,
पर जब स्वयं के अस्तित्व पर बन आई,
तो उसने चंडी का रूप धर लिया।
दोष मत दो उसकी इस विनाशलीला को,
यह तो इंसानी लालच के विरुद्ध प्रकृति का न्याय है।

(i) नदी द्वारा किनारा छोड़ने को समाज क्या नाम देता है? (1)

(अ) उसका परोपकारी स्वभाव (ब) उसकी उच्छृंखलता

(स) उसकी गतिशीलता (द) उसका सौंदर्य

(ii) 'यह तो इंसानी लालच के विरुद्ध प्रकृति का न्याय है',इस पंक्ति से क्या अभिप्राय है? (1)

(अ) प्रकृति हमेशा मनुष्यों से बदला लेती है।

(ब) मनुष्य द्वारा प्रकृति का अत्यधिक दोहन ही प्राकृतिक आपदाएँ बढ़ती जाती हैं।

(स) नदी का स्वभाव केवल विनाश करना है।

(द) इंसानी लालच को प्रकृति बढ़ावा देती है।

(iii) काव्यांश के संदर्भ में 'पाश' शब्द का अर्थ है: (1)

(अ) पशु (ब) निकट (स) बंधन या जाल (द) रास्ता

(iv) नदी के 'हाहाकार' (बाढ़/विनाश) के पीछे वास्तविक उत्तरदायी कारक क्या हैं? (2)

(v) "मौन बहना ही क्या सरिता की एकमात्र नियति है?"- इस प्रश्नवाचक पंक्ति के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है? (2)

(vi) नदी के इस रूपांतरण (शांत से चंडीरूप) के संबंध में आपका क्या दृष्टिकोण है?तर्क दीजिए।(1)

उत्तर- (i) ब (ii) ब (iii) स

(iv) नदी के इस विनाश के पीछे वास्तविक जिम्मेदार कारक मानवीय लालच और प्रकृति का अत्यधिक दोहन है। मनुष्यों ने सभ्यता के नाम पर नदी के किनारों पर कंक्रीट का निर्माण (अतिक्रमण) करके उसकी प्राकृतिक स्वतंत्रता को बाधित किया है, जिससे उसका वेग विकराल रूप ले लेता है।

(v) इस पंक्ति के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहता है कि अत्यधिक शोषण या अत्याचार होने पर मूक सहनशीलता ही एकमात्र विकल्प नहीं होना चाहिए। जब किसी के अस्तित्व पर संकट आ जाए, तो अपनी रक्षा के लिए प्रतिवाद (विरोध) करना और आवाज़ उठाना स्वाभाविक और न्यायसंगत है।

(vi) नदी का यह रूपांतरण बिल्कुल उचित है, क्योंकि जब इंसानी स्वार्थ और अतिक्रमण अपनी सीमाएं लांघ जाता है, तब प्रकृति संतुलन बनाने के लिए ऐसा कठोर कदम उठाने पर विवश हो जाती है।

अपठित काव्यांश- 5

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (8) (सी.बी.एस.ई.2026)

सबकी पीड़ा के साथ व्यथा अपने मन की जो जोड़ सके,
मुड़ सके जहाँ तक समय, उसे निर्दिष्ट दिशा में मोड़ सके।
युग पुरुष वही सारे समाज का विहित धर्मगुरु होता है,
सबके मन का जो अंधकार अपने प्रकाश से धोता है।
थे जहाँ सहस्रों वर्ष पूर्व, लगता है वहीं खड़े हैं हम,
है वृथा वर्ग उन गुफावासियों से कुछ बहुत बड़े हैं हम।
अनगढ़ पत्थर से लड़ो, लड़ो किटकिटा नखों से, दाँतों से
या लड़ो ऋक्ष के रोमगुच्छ-पूरित वज्रीकृत हाथों से।
या चढ़ विमान पर नर्म मुट्ठियों से गोलों की वृष्टि करो
आ जाय लक्ष्य में जो कोई, निष्ठुर हो सबके प्राण हरो।

ये तो साधन के भेद, किन्तु भावों में तत्त्व न या क्या है?
क्या खुली प्रेम आँख अधिक? भीतर कुछ बढ़ी दया क्या है?
झर गई पूँछ, रोमान्त झरे, पशुता का झरना बाकी है,
बाहर-बाहर तन सँवर चुका, मन अभी सँवरना बाकी है।

(i) कवि को ऐसा क्यों लगता है कि हम सहस्रों वर्ष पूर्व जहाँ थे, आज भी वहीं हैं? **1**

(अ) धरती के भीतर का रहस्य जानना अभी भी बाकी है।
(ब) मानव के भीतर पशुता अभी भी शेष है।
(स) आज भी मनुष्य अपने नाखूनों का बढ़ना नहीं रोक पाया है।
(द) आज भी मनुष्य नख-दंत अवलम्बी है।

(ii) 'ये तो साधन के भेद'- पंक्ति में 'साधन' से आशय है: **1**

(अ) जीवन यापन के साधन (ब) लक्ष्य प्राप्ति के अस्त्र-शस्त्र
(स) जीविकोपार्जन के माध्यम (द) शत्रु को भयभीत करने के तरीके

(iii) 'बाहर-बाहर तन सँवर चुका'- से क्या अभिप्राय है? **1**

(अ) सौंदर्य प्रसाधनों से शारीरिक सुंदरता का बढ़ जाना
(ब) शरीर के अनावश्यक अंगों का झड़ जाना
(स) मनुष्य की शारीरिक बनावट का सुंदर हो जाना
(द) मनुष्य और पशुओं के बीच अंतर दृष्टिगत होना

(iv) 'भावों में तत्त्व नया क्या है'- पंक्ति में निहित व्यंग्य स्पष्ट कीजिए। **1**

(v) 'मन अभी सँवरना बाकी है'- कवि ने ऐसा क्यों कहा है? **2**

(vi) वज्रीकृत हाथों से या नर्म मुट्ठियों से लड़ना कवि की दृष्टि में एक समान क्यों है? **2**

उत्तर- (i) ब (ii) ब (iii) स

(iv) इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने आधुनिक मानव की तथाकथित सभ्यता पर यह तीखा व्यंग्य किया है कि आदिम युग से आज तक मनुष्य के विनाशकारी हथियारों के साधन भले बदल गए हों, परंतु उसके भीतर की हिंसक और क्रूर भावनाएँ आज भी वैसी ही हैं।

(v) क्योंकि विज्ञान और तकनीक की उन्नति से मनुष्य ने बाहरी रूप से तो भौतिक प्रगति कर ली है वह सुसंस्कृत दिखने लगा है, लेकिन आंतरिक रूप से उसका मन अब भी ईर्ष्या, द्वेष, क्रूरता, संकीर्णताग्रस्त है। उसके भीतर दूसरों के प्रति सच्ची सहानुभूति, प्रेम और दया के भावों का विकास होना अभी शेष है।

(vi) कवि की दृष्टि में दोनों तरीकों से लड़ना इसलिए एक समान है क्योंकि दोनों का मूल उद्देश्य और परिणाम केवल हिंसा तथा विनाश करना है। चाहे कोई आदिम काल के मजबूत पत्थरों और नखों से लड़े या आधुनिक काल में विमानों से कोमल (नर्म) हाथों द्वारा बम बरसाए; दोनों ही स्थितियों में दूसरों के प्राण हरने की निष्ठुर और अमानवीय प्रवृत्ति बिल्कुल एक जैसी है।

अवधारणा मानचित्र

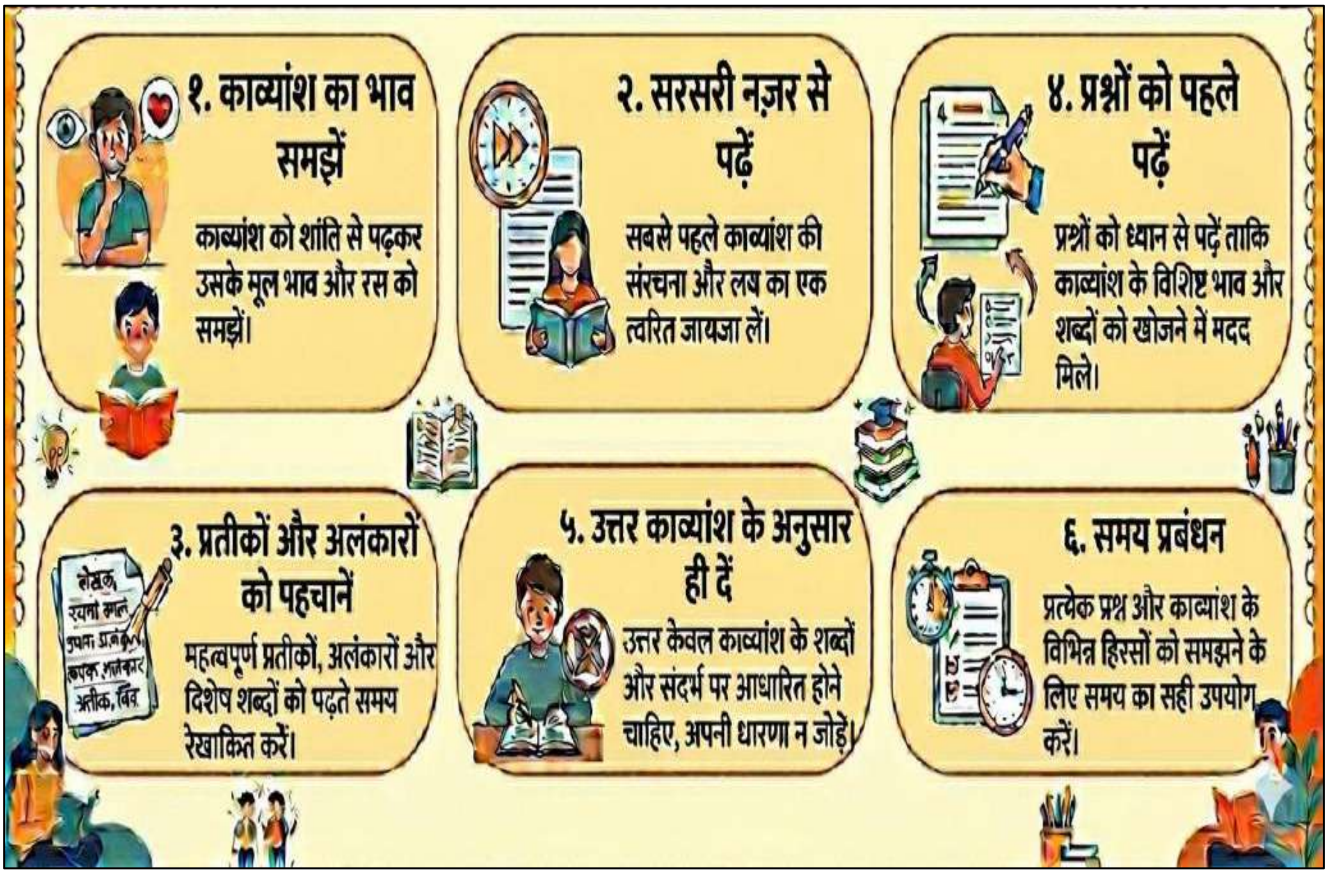

खण्ड 'ख' अभिव्यक्ति और माध्यम
(अप्रत्याशित विषयों पर रचनात्मक लेखन)

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए: (6)

1. बिन छतरी बारिश में,
2. वैज्ञानिक आविष्कारों का आधुनिक भारत
3. झरोखे के बाहर
4. प्रातःकाल योग करते लोग

1. बिन छतरी बारिश में (शैली: स्मृति आधारित)

"यादें होती हैं डाकघर की तरह, जहाँ बचपन के सावन आज भी सुरक्षित हैं।"

उस दिन दफ़्तर से निकलते ही अचानक बादलों ने घेरा डाल दिया। बस चंद कदम ही चला था कि झमाझम बारिश होने लगी। मेरी छतरी कार में ही छूट गई थी। पहले तो झुंझलाहट हुई, पर जैसे ही पहली ठंडी बूँद मेरे चेहरे पर गिरी, मैं बरसों पीछे अपने गाँव की गलियों में पहुँच गया। मैंने भागना छोड़ दिया और धीमे कदमों से भीगने लगा। मुझे याद आया अपना बचपन, जब हम जानबूझकर छतरी घर छोड़ देते थे ताकि काग़ज़ की नावें तैरा सकें। आज उस भीगते हुए बदन और शर्ट से टपकते पानी में मुझे कोई अफ़सोस नहीं था, बल्कि एक असीम तृप्ति थी। मैंने महसूस किया कि ज़िम्मेदारी के बोझ तले दबा मेरे भीतर का वह बच्चा आज फिर आज़ाद होकर मुस्कुरा रहा था।

"कुछ बूँदें तन भिगोती हैं, और कुछ सीधे रूह को छू जाती हैं।"

2. वैज्ञानिक आविष्कारों का आधुनिक भारत (शैली: दार्शनिक)

"विज्ञान सत्य की खोज है, और तकनीक उस सत्य को जीवन में ढालने का माध्यम।"

जब मैं अपने हाथ में चमकते स्मार्टफोन को देखता हूँ या अंतरिक्ष में गूंजते 'चंद्रयान' के शंखनाद को सुनता हूँ, तो मैं केवल उपकरणों को नहीं, बल्कि बदलते भारत की आत्मा को देखता हूँ। मैं सोचता हूँ कि वैज्ञानिक आविष्कार केवल हमारी भौतिक सुख-सुविधाओं के साधन नहीं हैं, बल्कि ये मानव की उस अदम्य इच्छाशक्ति के प्रतीक हैं जो सीमाओं को स्वीकार नहीं करती। आज का डिजिटल भारत, जहाँ एक सुदूर गाँव का किसान भी तकनीक से जुड़ा है, मुझे यह सोचने पर विवश करता है कि क्या हम केवल यंत्रों के स्वामी बन रहे हैं या हमारी चेतना भी व्यापक हो रही है? मेरे विचार में, सच्चा आविष्कार वही है जो मानव को मशीन बनाने के बजाय उसके भीतर की मानवीय करुणा को और अधिक विस्तार दे।

"जहाँ तकनीक इंसानी हाथों को शक्ति दे और दिलों को जोड़े, वही वास्तविक प्रगति है।"

3. झरोखे के बाहर (शैली: अवलोकन आधारित)

"खिड़की महज़ एक चौखट नहीं, पूरी कायनात को निहारने का जरिया है।"

हर सुबह चाय का कप थामे जब मैं अपने कमरे के झरोखे के पास बैठता हूँ, तो सामने एक पूरी जीवंत दुनिया घूमती हुई दिखाई देती है। मेरी नज़रें सबसे पहले सामने वाले नीम के पेड़ पर जाती हैं, जहाँ गौरैयों का एक झुंड चहचहाकर दिन की शुरुआत करता है। थोड़ा नीचे सड़क पर देखता हूँ, तो अखबार वाला साइकिल पर पैडल मारता हुआ मुस्तैदी से आगे बढ़ता है, और कुछ दूरी पर स्कूल बस के इंतज़ार में खड़े बच्चे अपनी माँ का हाथ पकड़े उनींदी आँखों से मुस्कुराते हैं। इस छोटे से झरोखे से मुझे जीवन की निरंतरता, उसकी भागदौड़ और ठहरने के खूबसूरत पल, सब एक साथ दिखाई दे जाते हैं। यह अवलोकन मुझे सिखाता है कि दुनिया अपनी धुन में कितनी सुंदर और व्यवस्थित है।

"बाहर बिखरा है जीवन का मेला, बस देखने वाली एक नज़र चाहिए।"

4. प्रातःकाल योग करते लोग (शैली: 'मैं' शैली में रचनात्मक मिश्रण)

"स्वस्थ शरीर में ही सुंदर विचारों का निवास होता है।"

मैं जब भी सुबह की सैर के लिए पास के पार्क में जाता हूँ, वहाँ का दृश्य मेरे भीतर एक नई ऊर्जा का संचार कर देता है। हरी घास पर बिछी चटाइयों पर हर उम्र के लोग—युवा से लेकर बुज़ुर्ग तक—मौन साधना में लीन दिखाई देते हैं। कोई 'अनुलोम-विलोम' करते हुए अपनी साँसों की गति को साध रहा होता है, तो कोई 'सूर्य नमस्कार' की मुद्राओं में प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है। मैं खुद भी जब उनके बीच बैठकर गहरी साँस लेता हूँ, तो मुझे महसूस होता है कि योग केवल कसरत नहीं, बल्कि अपने बिखरते जा रहे मन को समेटने का जरिया है। हवा में तैरती 'ओम्' की गूँज और लोगों के चेहरों की वह असीम शांति मुझे दिनभर की चुनौतियों से लड़ने का संबल दे जाती है।

"जो खुद को योग से जोड़ता है, वह जीवन के हर मोर्चे पर विजेता बनता है।"

गत वर्षों में सी.बी.एस.ई.परीक्षाओं में पूछे गए एवं पूछे जाने योग्य संभावित विषय अभ्यासार्थ

बाज़ारों का बदलता स्वरूप	पुस्तक मेले में पुस्तक का लोकार्पण
प्रकृति से टूटता नाता	आज की बचत, कल का सुख
तारों भरी रात का सौंदर्य	डिजिटल युग और मैं
अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत का बढ़ता वर्चस्व	जंक फूड का बढ़ता चलन
महानगरों का बढ़ता आकर्षण	मेले में अभिन्न मित्र से भेंट
स्वच्छता: आज की आवश्यकता	परीक्षा तनाव के कारण व बचने के उपाय
मोबाइल में कैद जीवन	विज्ञापनों का बढ़ता जाल
तारों भरी रात का सौंदर्य	उच्च शिक्षा हेतु छात्रों का विदेशों में पलायन
स्वाध्याय का आनंद	बदलते सामाजिक रीति-रिवाज़
झरोखे के बाहर	अचानक अतिथि-सेवा का अवसर
लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका	जब रास्ते में मेरी चप्पल टूट गई
दिया और तूफ़ान: मानव जीवन का सत्य	रेलयात्रा में अपरिचित से यादगार मुलाकात
मोटे अनाजों के प्रयोग से बदलेगा जीवन	जब मैं समुद्र की लहरों में घिर गया
एक कामकाजी औरत की शाम	"सोशल मीडिया: संवाद या एकाकीपन",
"डिजिटल क्रांति और बदलता बचपन"	"महानगरों का जीवन और हमारी संवेदनशीलता"

पाठ-3 विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन

मुख्य बिंदु-

- **प्रमुख जनसंचार माध्यम** (प्रिंट, टी.वी., रेडियो और इंटरनेट) और खूबियाँ व खामियाँ
- **प्रिंट माध्यम-** मुद्रित माध्यमों में लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें
- **रेडियो-** रेडियो समाचार की संरचना तथा समाचार लेखन की बुनियादी बातें
- **टेलीविजन-** टी.वी. खबरों के विभिन्न चरण, रेडियो व टी.वी. समाचारों की भाषा-शैली
- **इंटरनेट-** इंटरनेट पत्रकारिता व उसका इतिहास, भारत में इंटरनेट पत्रकारिता, हिंदी नेट संसार

वर्णनात्मक प्रश्न-

प्रश्न 1. प्रिंट या मुद्रित माध्यमों की विशेषताएँ व कमियाँ लिखते हुए इनके लेखन में ध्यान रखने योग्य बातें लिखें। CBSE 2025

उत्तर- प्रिंट या मुद्रित माध्यमों की विशेषताएँ-

(i) इसमें स्थायित्व होता है और इन्हें लंबे समय तक रखा जा सकता है।

(ii) इन्हें कहीं भी और कभी भी पढ़ सकते हैं।

(iii) इससे लिखित भाषा का विस्तार होता है।

(iv) यह चिंतन, विचार व विश्लेषण का माध्यम है।

<u>प्रिंट या मुद्रित माध्यमों की कमियाँ-</u>

(i) यह अनपढ़ लोगों के लिए उपयोगी नहीं है।

(ii) इससे तुरंत घटित घटनाओं की जानकारी नहीं मिलती।

(iii) इसमें गलतियों की संभावना रह जाती है।

(iv) इसमें सीमित जगह में ही लेखक लिख सकता है।

<u>प्रिंट या मुद्रित माध्यमों के लेखन में ध्यान रखने योग्य बातें-</u>

(i) प्रकाशन से पहले गलतियाँ सुधार लेनी चाहिए।

(ii) निश्चित जगह में बात पूरी लिख देनी चाहिए।

(iii) बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

(iv) भाषा में प्रवाह होना चाहिए।

प्रश्न 2. रेडियो समाचार की संरचना को स्पष्ट कीजिए। रेडियो के लिए समाचार कैसे लिखा जाता है?

अथवा

समाचार लेखन के छह ककारों से आप क्या समझते हैं? समाचार लेखन में इनकी भूमिका स्पष्ट कीजिए। CBSE 2025, 26

उत्तर- रेडियो समाचार की संरचना उलटा पिरामिड शैली पर आधारित होती है। उलटा पिरामिड शैली में समाचार के सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखा जाता है और उसके बाद घटते हुए महत्त्वक्रम में अन्य तथ्यों या सूचनाओं को लिखा या बताया जाता है। इस शैली में क्लाइमेक्स खबर के शुरू में आ जाता है।इस शैली में समाचार के तीन भाग होते हैं-

<u>इंट्रो-</u> इसे इंट्रो/ लीड/ मुखड़ा कहते हैं। इसमें खबर के मूल तत्त्व को शुरू की दो-तीन पंक्तियों में बताया जाता है। यह खबर का सबसे अहम हिस्सा होता है। इसमें चार ककार आते हैं- क्या, कौन, कहाँ, कब। ये सूचनात्मक व तथ्यात्मक होते हैं।

<u>बॉडी-</u> इस भाग में समाचार के विस्तृत ब्यौरे को घटते हुए महत्त्वक्रम में लिखा जाता है। इसमें दो ककार आते हैं- क्यों और कैसे। ये विवरणात्मक, व्याख्यात्मक व विश्लेषणात्मक होते हैं।

<u>समापन-</u> इस शैली में अलग से समापन जैसी कोई चीज नहीं होती। इसमें प्रासंगिक तथ्य और सूचनाएँ दी जाती हैं।

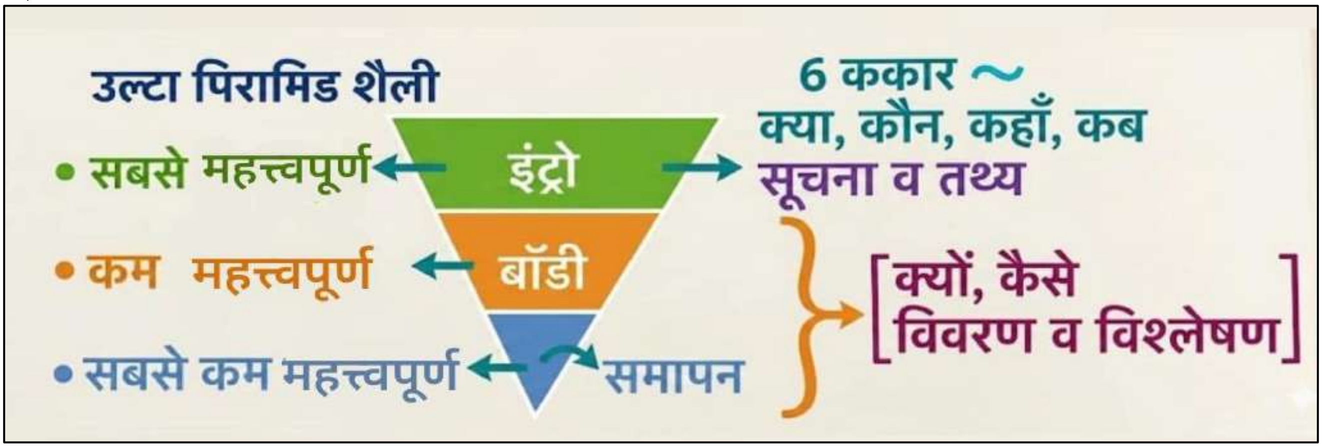

प्रश्न 3. रेडियो के लिए समाचार लेखन की बुनियादी बातें लिखिए।

उत्तर- रेडियो के लिए समाचार लेखन की बुनियादी बातें इस प्रकार हैं-

(i) कंप्यूटर पर ट्रिपल स्पेस में टाइप करना चाहिए।

(ii) पृष्ठों के दोनों ओर हाशिया छोड़ा जाना चाहिए।

(iii) एक लाइन में अधिकतम 12-13 शब्द होने चाहिए।

(iv) पंक्ति के अंत में कोई शब्द विभाजित नहीं होना चाहिए और पृष्ठ के अंत में कोई लाइन अधूरी नहीं होनी चाहिए।

(v) लोकप्रिय संक्षिप्ताक्षर ही प्रयोग किए जाएँ, अन्य नहीं।

(vi) अंकों को लिखने में सावधानी रखी जानी चाहिए। 11 से 999 तक के अंक अंकों में और अन्य सभी अंक शब्दों में लिखे जाएँ।

(vii) संकेत चिह्नों को शब्दों में लिखें, जैसे प्रतिशत, डॉलर आदि।

(viii) दशमलव में अंक नज़दीकी पूर्णांक में लिखे जाने चाहिए।

(ix) तिथियों को शब्दों में लिखा जाना चाहिए। जैसे 15 अगस्त उन्नीस सौ पचासी।

प्रश्न (4) टी.वी. खबरों के विविध चरणों को स्पष्ट कीजिए। **CBSE 2024**

उत्तर- टी.वी. खबरों के विविध चरण-

(i) फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़- बड़ी खबर कम से कम शब्दों में तुरंत दर्शकों तक पहुँचाई जाती है।

(ii) ड्राई एंकर- एंकर बिना दृश्य के दर्शकों को सीधे-सीधे समाचार की जानकारी देता है।

(iii) फोन-इन- एंकर घटनास्थल पर मौजूद रिपोर्टर से फोन पर बात कर दर्शकों को सूचनाएँ देता है।

(iv) एंकर-विज़ुअल- दृश्यों के आधार पर खबर लिखी जाती है, जिन्हें एंकर पढ़ता है और साथ में दृश्य भी दिखाए जाते हैं।

(v) एंकर बाइट- बाइट का अर्थ कथन होता है। इसमें एंकर खबर पढ़ने और दृश्य दिखाने के साथ-साथ घटना से जुड़े व्यक्तियों और प्रत्यक्षदर्शियों के कथन दिखाता और सुनाता है। यह खबर को प्रामाणिकता प्रदान करने के लिए किया जाता है।

(vi) लाइव- खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण।

(vii) एंकर-पैकेज- एंकर घटना के दृश्य, बाइट, ग्राफिक्स आदि के साथ उसे संपूर्ण रूप से प्रस्तुत करता है।

प्रश्न 5. टीवी के लिए समाचार या आलेख (स्क्रिप्ट) लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर- टीवी के लिए समाचार या स्क्रिप्ट लिखते समय इन बातों का ध्यान रखना चाहिए-

(i) हमारे शब्द परदे पर दिखने वाले दृश्य के अनुकूल होने चाहिए।

(ii) टी.वी. लेखन प्रिंट और रेडियो दोनों माध्यमों से अलग है। इसमें दृश्यों के माध्यम से कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक खबर बताने की कला का प्रयोग करना चाहिए।

(iii) टी.वी. के लिए खबर लिखने की बुनियादी शर्त 'दृश्य के साथ लेखन' है। दृश्य यानी कैमरे से लिए गए शॉट्स, जिनके आधार पर ही खबर बुनी जाती है।

प्रश्न 6. रेडियो और टेलीविजन समाचार की भाषा की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- रेडियो और टेलीविजन समाचार की भाषा की विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

(i) भाषा सरल, सुबोध किंतु स्तरीय होनी चाहिए।

(ii) आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए।

(iii) वाक्य छोटे, सीधे और स्पष्ट होने चाहिए तथा उनमें प्रवाह होना चाहिए।

(iv) गैर-ज़रूरी विशेषणों, जटिल सामासिक और तत्सम शब्दों तथा अतिरंजित उपमाओं के प्रयोग से बचना चाहिए।

(v) मुहावरों का प्रयोग केवल वहीं करना चाहिए जहाँ अत्यंत आवश्यक हो।

(vi) टी.वी. के लिए लिखे गए समाचारों के शब्द परदे पर दिखाए जा रहे दृश्य के बिल्कुल अनुकूल होने चाहिए।

(vii) रेडियो व टी.वी. में अखबारों की तरह 'निम्नलिखित', 'उपरोक्त', 'अधोहस्ताक्षरित', 'क्रमांक' आदि शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए।

प्रश्न 7. इंटरनेट व इंटरनेट पत्रकारिता का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर- इंटरनेट एक औज़ार (टूल) है, जिसे सूचना, मनोरंजन, ज्ञान तथा व्यक्तिगत व सार्वजनिक संवाद के लिए प्रयोग किया जाता है।

इंटरनेट पत्रकारिता में इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन व खबरों का आदान-प्रदान होता है, जिसे साइबर पत्रकारिता/ ऑनलाइन पत्रकारिता भीकहते हैं। इसमें रेडियो, टी.वी. और अखबार तीनों के गुण समाहित होते हैं।

यह सबसे तेज़ व ताज़ा पत्रकारिता है तथा एक अंतर-क्रियात्मक माध्यम है।यह न केवल खबरों का संप्रेषण, पुष्टि और सत्यापन करता है, बल्कि बैकग्राउंडर तैयार करने में भी सहायता करता है।

प्रश्न 8. हिन्दी नेट संसार या वेब पत्रकारिता के इतिहास पर प्रकाश डालें।

उत्तर-(i) हिंदी में नेट पत्रकारिता की शुरुआत 'वेब दुनिया' से हुई, जो हिंदी का पहला पोर्टल है।

(ii) इसके बाद जागरण, अमर उजाला, नई दुनिया, हिंदुस्तान, भास्कर, राजस्थान पत्रिका, नवभारत टाइम्स,प्रभात खबर व राष्ट्रीय सहारा जैसे समाचार पत्रों के वेब संस्करण शुरू हुए।

(iii) 'प्रभासाक्षी' ऐसा अखबार है जो केवल इंटरनेट पर उपलब्ध है और इसका प्रिंट संस्करण नहीं है।

(iv) आज पत्रकारिता के क्षेत्र में हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साइट बीबीसी हिंदी मानी जाती है।

(v) इंटरनेट पर अनुभूति, अभिव्यक्ति, हिंदी नेस्ट, सराय जैसी साहित्यिक पत्रिकाएँ भी सक्रिय हैं।

प्रश्न 9. विश्व और भारत में इंटरनेट पत्रकारिता के इतिहास और विकास का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर- विश्व स्तर पर इंटरनेट पत्रकारिता का इतिहास तीन चरणों में विभाजित किया जाता है-

पहला दौर: 1982 से 1992 तक। **दूसरा दौर: 1993 से 2001 तक।**

तीसरा दौर: 2002 से अब तक जारी है जो स्थायी और विकसित चरण माना जाता है।

इंटरनेट पत्रकारिता की वास्तविक शुरुआत एचटीएमएल (हाइपर टेक्स्ट मार्कडअप लैंग्वेज), ई-मेल और वेब ब्राउज़र (जैसे इंटरनेट एक्सप्लोरर व नेटस्केप) के विकास के साथ हुई। भारत में पहला दौर 1993 से शुरू माना जाता है जबकि दूसरा दौर 2003 से शुरू हुआ।

प्रश्न 10. जनसंचार का सबसे पुराना माध्यम कौन-सा है और इसकी शुरुआत कैसे हुई?CBSE 2025

उत्तर- जनसंचार का सबसे पुराना माध्यम प्रिंट या मुद्रित माध्यम है।छपाई की शुरुआत सबसे पहले चीन में हुई।आधुनिक प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार जर्मनी के गुटेनबर्ग ने किया।भारत में पहला छापाखाना 1556 ईस्वी में गोवा में ईसाई मिशनरियों द्वारा धर्म प्रचार की पुस्तकें छापने के लिए खोला गया।

प्रश्न 11. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए- **CBSE 2026**

(i) डेडलाइन **(ii) वॉइस ओवर** **(iii) नेट साउंड**

उत्तर-(i) <u>डेडलाइन-</u>समाचार माध्यमों में किसी समाचार के प्रकाशित या प्रसारित होने की अंतिम समय-सीमा को डेडलाइन कहते हैं। इसके बाद समाचार स्वीकार नहीं किए जाते।

(ii) <u>वॉइस ओवर -</u>जब टी.वी. में दृश्य में पीछे से एंकर या रिपोर्टर की आवाज़ उस दृश्य का विवरण देती है, तो उसे वॉइस ओवर कहते हैं।

(iii) <u>नेट साउंड-</u> शूटिंग के समय वातावरण से रिकॉर्ड होने वाली प्राकृतिक ध्वनियाँ (जैसे गाड़ियों का शोर, हवा, चिड़ियों की आवाज़) नेट साउंड कहलाती हैं, जो खबर को वास्तविकता प्रदान करती हैं।

<u>उच्चस्तरीय चिंतन कौशल व दक्षता आधारित प्रश्न-</u>

प्रश्न (1) वे कौन-सी सुविधाएँ हैं जो मुद्रित माध्यमों के पाठकों को उपलब्ध हैं लेकिन रेडियो के श्रोताओं को नहीं? **CBSE 2026**

उत्तर- (i) अपनी पसंद के समाचारों को सबसे पहले पढ़ना।

(ii) किसी शब्द का अर्थ समझ में न आने पर शब्दकोश की सहायता लेना।

(iii) सामग्री में स्थायित्व और सहेज कर रखने की सुविधा।

(iv) प्रमाण के रूप में मान्य तथा चिंतन-मनन की सुविधा।

प्रश्न (2) 'रेडियो ध्वनि, स्वर व शब्दों का खेल है'- कैसे? स्पष्ट कीजिए। **CBSE 2026**

उत्तर- (i) रेडियो श्रव्य माध्यम है।इसमें दृश्य का अभाव होता है।

(ii) इसमें सम्पूर्ण प्रभाव आवाज़ की गुणवत्ता पर निर्भर है।

(iii) श्रोताओं तक सन्देश केवल ध्वनि, स्वर और शब्दों से पहुँचता है।

(iv) स्वर से भावनाओं व अर्थ की अभिव्यक्ति होती है।

प्रश्न (3)'हिंदी वेब पत्रकारिता अभी शैशवकाल में है'- कैसे? उल्लेख करें। **CBSE 2026**

उत्तर-(i) मानकीकृत हिंदी 'की-बोर्ड' का अभाव।

(ii) हिंदी के असंगत/बेलगाम फॉन्ट्स का प्रयोग।

(iii) हिंदी की अधिकांश वेबसाइटों का सही तरीके से न खुलना।

(iv) डायनमिक फॉन्ट्स की अनुपलब्धतातथा प्रशिक्षित हिंदी पत्रकारों की कमी।

प्रश्न (4) विभिन्न जनसंचार माध्यमों की खूबियों और खामियों की तालिका तैयार कीजिए।

उत्तर-

माध्यम	खूबियाँ	कमियाँ
रेडियो	(i) यह श्रव्य माध्यम है। (ii) यह एकरेखीय माध्यम है। (iii) यह सुलभ माध्यम है। (iv) यह पढ़े-लिखे व अनपढ़ सभी के लिए उपयोगी है।	(i) समाचार एक बार में ही सुनना व समझना पड़ता है। (ii) तस्वीरों का अभाव होता है, इसलिए कम रोचक होता है।
टेलीविजन	(i) यह दृश्य-श्रव्य माध्यम है। (ii) तस्वीरों के कारण जीवन्त अनुभव मिलता है। (iii) यह एकरेखीय माध्यम है। (iv) सीधा प्रसारण देखा जा सकता है।	(i) इसे बार-बार देख-सुन नहीं सकते। (ii) यह अपेक्षाकृत खर्चीला माध्यम है।
इंटरनेट	(i) इसमें रेडियो, टीवी और अखबार तीनों के गुण होते हैं। (ii) यह तेज़, लोकप्रिय और अंतरक्रियात्मक माध्यम है।	(i) अश्लीलता व दुराचार को बढ़ावा मिल सकता है। (ii) इसका दुरूपयोग किया जा सकता है।
प्रिंट मीडिया (अखबार/पत्रिका)	(i) यह लिखित माध्यम है। (ii) इसे बार-बार पढ़ा जा सकता है। (iii) यह सस्ता व विश्वसनीय माध्यम है। (iv) इसमें समाचार, विचार और फीचर सभी प्रकाशित होते हैं।	(i) यह तुरंत अपडेट नहीं होता। (ii) इसमें दृश्य -श्रव्य प्रभाव नहीं होता। (iii) अनपढ़ लोगों के लिए उपयोगी नहीं है।

पाठ-4 पत्रकारीय लेखन के विविध रूप और लेखन प्रक्रिया

मुख्य बिंदु-

- **पत्रकारीय लेखन-** परिभाषा, पत्रकारों के प्रकार, पत्रकारीय लेखन व साहित्यिक सृजनात्मक लेखन
- **फ़ीचर लेखन-** परिभाषा, विशेषताएँ, फ़ीचर व समाचार की तुलना, फ़ीचर का प्रारूप तथा प्रकार
- **विशेष रिपोर्ट-** परिभाषा, मुख्य प्रकार
- **विचारपरक लेखन-** लेख, टिप्पणियाँ, संपादकीय, संपादकीय लेखन, स्तम्भ लेखन, संपादक के नाम पत्र, साक्षात्कार/इंटरव्यू

वर्णनात्मक प्रश्न-

प्रश्न (1) पत्रकारीय लेखन क्या है? अच्छे लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें।

उत्तर- पत्रकार अपने पाठकों, दर्शकों, श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के भिन्न रूपों का इस्तेमाल करता है। इसे पत्रकारीय लेखन कहते हैं।

अच्छे लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें-

(i) वाक्य छोटे व सरल होने चाहिए।

(ii) आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग होना चाहिए।

(iii) मुहावरे व लोकोक्तियाँ जहाँ ज़रूरी हो, प्रयोग होनी चाहिए।

(iv) विषय से संबंधित विचार व तथ्य होने चाहिए।

प्रश्न (2) पत्रकारों के तीन प्रकारों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- पत्रकारों के तीनप्रकारोंका विवरण इस प्रकार है -

(i) **पूर्णकालिक पत्रकार-** किसी समाचार संगठन के लिए काम करने वाला नियमित वेतनभोगी पत्रकार।

(ii) **अंशकालिक पत्रकार (स्ट्रिंगर)-**किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर काम करने वाला पत्रकार।

(iii) **फ्रीलांसर (फ्रीलांस पत्रकार)-**इसका संबंध किसी खास अखबार से नहीं होता और वह भुगतान के आधार पर अलग-अलग अखबारों के लिए लिखता है।

प्रश्न (3) पत्रकारीय लेखन और साहित्यिक सृजनात्मक लेखन में अंतर लिखें।

उत्तर- पत्रकारीय लेखन और साहित्यिक सृजनात्मक लेखन में अंतर इस प्रकार हैं -

पत्रकारीय लेखन	**साहित्यिक सृजनात्मक लेखन**
(i) इसका संबंध समसामयिक विषयों से होता है।	(i) यह किसी एक विषय पर भी हो सकता है।
(ii) इसमें पाठकों की रुचि का ध्यान रखा जाता है।	(ii) यह लेखक की रुचि पर आधारित होता है।
(iii) इसकी भाषा आम बोलचाल की भाषा में होती है।	(iii) इसकी भाषा आलंकारिक होती है।
(iv) इसका सम्बन्ध तथ्यों से होता है।	(iv) इसमें कल्पना को भी स्थान दिया जाता है।
(iv) उदाहरण:फ़ीचर, आलेख	(iv) उदाहरण: कविता, कहानी आदि

प्रश्न (4) फ़ीचर किसे कहते हैं? फ़ीचर लेखन की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- फ़ीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्‌देश्य पाठकों को सूचना देने के साथ उनका मनोरंजन करना है।

फ़ीचर की प्रमुख विशेषताएँ:

(i) इसकी लेखन शैली कथात्मक (सीधी पिरामिड शैली) होती है।

(ii) भाषा सरल, बिंब प्रधान व मन को छू लेने वाली होती है।

(iii) इसमें सूचना देने के साथ-साथ मनोरंजन भी होता है।

(iv) इसकी शब्द सीमा 250 शब्दों से 2500 शब्दों तक हो सकती है।

प्रश्न (5) फ़ीचर लेखन को आत्मनिष्ठ लेखन क्यों कहा जाता है? (CBSE)

उत्तर- फ़ीचर लेखन को आत्मनिष्ठ लेखन निम्नलिखित कारणों से कहा जाता है -

(i) इसमें लेखक के व्यक्तिगत विचार व भावनाएँ शामिल होती हैं।

(ii) यह लेखक केन्द्रित होता है।

(iii) इसमें लेखक की व्यक्तिगत राय महत्त्वपूर्ण होती है।

प्रश्न (6) फ़ीचर और समाचार में प्रमुख अंतर बताइए। **CBSE 2026**

उत्तर- फ़ीचर और समाचार में प्रमुख अंतर इस प्रकार हैं-

आधार	फ़ीचर	समाचार
उद्देश्य	इसका उद्देश्य सूचना के साथ मनोरंजन होता है।	इसका उद्देश्य केवल सूचना देना होता है।
शैली	यह सीधी पिरामिड शैली में लिखा जाता है।	यह उलटा पिरामिड शैली में लिखा जाता है।
विषय	इसका विषय कोई भी घटना हो सकती है।	इसमें तुरंत घटी घटनाएँ ही होती हैं।
विचार	इसमें लेखक अपने विचार व राय लिख सकता है।	इसमें रिपोर्टर तथ्यों के आधार पर लिखता है, अपने विचार नहीं लिख सकता।
शब्द-सीमा	इसकी शब्द सीमा अधिक होती है।	इसकी शब्द सीमा सीमित होती है।

प्रश्न (7) फ़ीचर कैसे लिखा जाता है? इसके ढाँचे को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- फ़ीचर लिखने का कोई निश्चित ढाँचा नहीं होता, फिर भी फ़ीचर निम्नलिखित तीन भागों में लिखा जाता है-

(i) प्रारंभ-फ़ीचर का प्रारंभ आकर्षक व उत्सुकता पैदा करने वाला होना चाहिए। अतः इसे किसी घटना से शुरू करना चाहिए।

(ii) मध्य-इसमें जानकारियों, तथ्यों तथा विशेषज्ञों की राय आदि को शामिल करना चाहिए।

(iii) अंत-इसमें भविष्य की योजनाएँ तथा चुनौतियाँ व उनके समाधान पर फोकस करना चाहिए।

प्रश्न (8) फ़ीचर के प्रकार लिखिए।

उत्तर- फ़ीचर के निम्नलिखित प्रकार हैं -

(i) रेडियो फ़ीचर- जो फ़ीचर रेडियो पर प्रसारित होता है।

(ii) समाचार फ़ीचर- इसे किसी समाचार का विश्लेषण कर लिखा जाता है।

(iii) यात्रा फ़ीचर- यह यात्रा के संस्मरण पर आधारित होता है।

(iv) व्यक्तिगत फ़ीचर- यह विशिष्ट व्यक्तियों के योगदान व जीवन पर आधारित होता है।

(v) अन्य फ़ीचर- खोजपरक फ़ीचर, साक्षात्कार फ़ीचर, जीवन शैली फ़ीचर आदि।

प्रश्न (9) विशेष रिपोर्ट से क्या अभिप्राय है? यह कैसे तैयार की जाती है? इसके प्रकारों को स्पष्ट कीजिए। **CBSE 2026**

उत्तर- अखबारों और पत्रिकाओं में घटना की गहरी छानबीन, तथ्यों के विश्लेषण व व्याख्या आदि के आधार पर जो रिपोर्ट तैयार कर प्रकाशित की जाती है, उसे विशेष रिपोर्ट कहते हैं।

विशेष रिपोर्ट के मुख्य प्रकार:

1. **खोजी रिपोर्ट-**जब रिपोर्टर मौलिक खोज कर ऐसे तथ्य सामने लाता है जो पहले से सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध न हों।
2. **इन-डेप्थ रिपोर्ट-**जब रिपोर्टर सार्वजनिक रूप से उपलब्ध तथ्यों की गहरी छानबीन कर उन्हें सबके सामने लाता है।
3. **विश्लेषणात्मक रिपोर्ट**-जब रिपोर्टर किसी घटना से जुड़े तथ्यों का विश्लेषण व व्याख्या करता है।
4. **विवरणात्मक रिपोर्ट-**जब किसी घटना का बारीक विवरण दिया जाता है।

प्रश्न (10) विचारपरक लेखन से क्या अभिप्राय है? इसके विविध रूपों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- अखबारों में समाचार और फ़ीचर के अलावा विचारपरक लेख भी प्रकाशित होते हैं। संपादकीय पृष्ठ पर छपने वाले संपादकीय लेख और टिप्पणियाँ इसी प्रकार के लेखन के अंतर्गत आते हैं।इसके विविध रूप इस प्रकार हैं -

(i) संपादकीय लेखन- संपादक मंडल द्वारा किसी घटना या समस्या पर लिखा गया लेख जिसे अखबार की आवाज माना जाता है, संपादकीय लेखन कहलाता है। इसमें किसी व्यक्ति का नाम नहीं होता।

(ii) स्तंभ लेखन- एक विचारात्मक लेख जिसे किसी लोकप्रिय लेखक द्वारा अपनी विशिष्ट शैली में लिखा जाता है तथा जो समाचार पत्र का स्थायी भाग होता है, उसे स्तंभ लेखन कहते हैं। इसमें लेखक के अपने विचार होते हैं।

(iii) संपादक के नाम पत्र- समाचार पत्रों में संपादकीय पृष्ठ तथा पत्रिकाओं के प्रारंभ मेंप्रकाशित पत्र, जिनमें पाठक अपनी राय या जनसमस्याएँ रखते हैं। इसमें नए लेखन की शुरुआत करने का अवसर होता है।

(iv) साक्षात्कार- जब पत्रकार किसी व्यक्ति विशेष से राय, तथ्य व भावनाएँ जानने के लिए प्रश्न पूछता है, उसे साक्षात्कार कहते हैं। सफल साक्षात्कार के लिए आवश्यक बातें-

(क) इसका स्पष्ट उद्देश्य व ढाँचा होना चाहिए।

(ख) साक्षात्कार लेने वाले को विषय की पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए।

(ग) साक्षात्कार लेने वाले में धैर्य, साहस व संवेदनशीलता होनी चाहिए।

(v) लेख/ आलेख- लेख अनुभवी लेखकों द्वारा समसामयिक मुद्दों पर लिखा जाता है, जो तथ्यों व सूचनाओं पर आधारित होते हैं। लेखक तर्कों द्वारा इसे स्पष्ट करता है। यह संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होता है।

प्रश्न (11) 'ऑप-एड' से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- संपादकीय पृष्ठ के सामने प्रकाशित होने वाला वह पन्ना जिसमें फ़ीचर, स्तंभ, आलेख, साक्षात्कार, विचारपूर्ण टिप्पणियाँ प्रकाशित की जाती हैं, ऑप-एड कहलाता है।

<u>उच्चस्तरीय चिंतन कौशल व दक्षता आधारित प्रश्न-</u>

प्रश्न (1) आलेख किसे कहते हैं? अच्छे आलेख की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।CBSE 2024

उत्तर- समसामयिक घटनाओं पर लिखे गए लेख आलेख कहलाते हैं। इसकी विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

(i) संपादकीय पृष्ठ पर स्थान पाना (ii) सटीक सूचनाओं, नवीनता एवं ताजगी का होना।

(iii) विचारों में स्पष्टता, बोधगम्यता होना। (iv) भाषा शैली में सरलता एवं रोचकता होना।

प्रश्न (2) व्यक्तिगत फ़ीचर को रोचक, पठनीय और प्रभावशाली रूप में किस प्रकार तैयार किया जा सकता है? CBSE 2025

उत्तर- व्यक्तिगत फ़ीचर को रोचक, पठनीय और प्रभावशाली रूप में तैयार करने के बिंदु-

(i) जीवन बदलने वाली घटना से फ़ीचर शुरू करें।

(ii) ताज़ा उपलब्धि बताकर पीछे के संघर्षों की ओर पाठकों का ध्यान ले जाना चाहिए।

(iii) व्यक्ति, परिजनों और विशेषज्ञों के रोचक कथनों को शामिल करें।

(iv) अंत में भविष्य की योजनाएँ, चुनौतियाँ और उनसे निपटने की तैयारी का उल्लेख करें।

प्रश्न (3) सीधा पिरामिड और उलटा पिरामिड शैली में क्या अंतर है? **CBSE 2026**

उत्तर- सीधा पिरामिड शैली- घटना के घटित क्रम के अनुसार लिखा जाना जिसका प्रयोग सामान्यतः कहानी व फ़ीचर में होता है।

उलटा पिरामिड शैली- समाचार लिखते समय उसका चरमोत्कर्ष प्रारंभ में तथा शेष घटनाक्रम को घटते महत्त्वक्रम में लिखा जाता है।

प्रश्न (4) आपके विद्यालय ने 'विश्व जल दिवस' के अवसर पर 'जल संरक्षण' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया। स्कूल-पत्रिका में प्रकाशन हेतु इस गोष्ठी का विवरण देते हुए दिव्य/दिव्या की ओर से एक रिपोर्ट तैयार कीजिए। **CBSE 2026**

उत्तर- शीर्षक: <u>आदर्श विद्यालय, क-ख-ग में विश्व जल दिवस पर "जल संरक्षण" विषय पर गोष्ठी</u>

दिनांक : 22 मार्च 2026

स्थान : विद्यालय सभागार

रिपोर्टर : दिव्य/दिव्या

विश्व जल दिवस के अवसर पर हमारे विद्यालय में "जल संरक्षण" विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में जल के महत्त्व के प्रति जागरूकता फैलाना और जल संरक्षण की आवश्यकता को समझाना था। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य के प्रेरणादायक उद्बोधन से हुआ, जिसमें उन्होंने जल संकट की गंभीर समस्या पर प्रकाश डाला। विषय विशेषज्ञ ने वर्षा जल संचयन, जल पुनर्चक्रण और जल बचत के उपाय बताए। विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। अंत में "जल है तो कल है" का संदेश दिया गया।

अवधारणा मानचित्र

पाठ-5 विशेष लेखन- स्वरूप और प्रकार

मुख्य बिंदु-

- विशेष लेखन से अभिप्राय
- विशेष लेखन की भाषा और शैली
- विशेष लेखन के क्षेत्र
- पत्रकारीय विशेषज्ञता

वर्णनात्मक प्रश्न-

प्रश्न (1) विशेष लेखन किसे कहते हैं?विशेष लेखन की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।CBSE 2025,26

उत्तर- किसी खास/विशेष विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन विशेष लेखन कहलाता है। इसके विषय व्यापार, खेल, राजनीति, कृषि, विज्ञान आदि होते हैं।

विशेष लेखन की भाषा शैली-

(i) इसकी भाषा शैली सामान्य लेखन से अलग होती है जो औपचारिक व विषय-केन्द्रित होती है।

(ii) इसमें संवाददाता को संबंधित विषय की तकनीकी शब्दावली का ज्ञान होना आवश्यक है। **जैसे–**

• कारोबार और व्यापार में: तेजड़िए, सोना उछला, चाँदी लुढ़की आदि।

• पर्यावरण संबंधी लेख में: आर्द्रता, टॉक्सिक कचरा, ग्लोबल वार्मिंग आदि।

(iii) इसमें विषय की गहराई तक जाना चाहिए।

(iv) इसके शीर्षक आकर्षक होने चाहिए।

प्रश्न (2) बीट से क्या तात्पर्य है? **CBSE 2024**

उत्तर- इसका अर्थ रिपोर्टिंग का विशेष क्षेत्र है। संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी रुचि और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं। जैसे- खेल, अपराध, कानून, फिल्म आदि।

प्रश्न (3) बीट रिपोर्टिंग तथा विशेषीकृत रिपोर्टिंग में अंतर लिखिए। **CBSE 2024,26**

उत्तर- बीट रिपोर्टिंग तथा विशेषीकृत रिपोर्टिंग में अंतर इस प्रकार हैं-

बीट रिपोर्टिंग	**विशेषीकृत रिपोर्टिंग**
(i) इसमें संवाददाता को बीट से जुड़ी सामान्य खबरें लिखनी होती हैं।	(i) इसमें संवाददाता को विशेष क्षेत्र से जुड़ी घटनाओं और मुद्दों का बारीकी से विश्लेषण कर पाठकों के लिए अर्थ स्पष्ट करना होता है।
(ii) इसमें संवाददाता को उस क्षेत्र की सामान्य जानकारी होनी चाहिए।	(ii) इसमें संवाददाता को उस क्षेत्र की गहरी समझ होनी चाहिए।
(iii) इसकी भाषा शैली सामान्य होती है।	(iii) इसकी भाषा शैली विशेष होती है (तकनीकी शब्दों का प्रयोग)।
(iv)बीट रिपोर्टर को संवाददाता कहते हैं।	(iv) विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले को विशेष संवाददाता कहते हैं।

प्रश्न (4) डेस्क क्या है? **CBSE 2025**

उत्तर- डेस्क का अर्थ संपादन है। डेस्क पर समाचारों को संपादित कर उन्हें छापने योग्य बनाया जाता है। समाचार माध्यमों में अलग-अलग विषयों के लिए अलग-अलग डेस्क होता है। जैसे व्यापार तथा कारोबार के लिए अलग और खेल की खबरों के लिए अलग डेस्क निर्धारित होता है।

प्रश्न (5) बीट रिपोर्टिंग किसे कहते हैं?

उत्तर- जब पत्रकार अपनी बीट यानी रिपोर्टिंग के विशेष क्षेत्र से जुड़ी सूचनाएँ एकत्र करता है, तो इसे बीट रिपोर्टिंग कहते हैं। यदि किसी संवाददाता की बीट अपराध है, तो वह केवल आपराधिक घटनाओं की रिपोर्टिंग करेगा।

प्रश्न (6) पत्रकारीय विशेषज्ञता से क्या अभिप्राय है? इसे प्राप्त करने हेतु क्या किया जा सकता है?
CBSE 2026

उत्तर- व्यावसायिक प्रशिक्षण न होने पर भी पत्रकार अपने अनुभव द्वारा सूचनाओं को सरलता से पाठक तक पहुँचा पाता है। इसे पत्रकारीय विशेषज्ञता कहते हैं।

इसे प्राप्त करने हेतु:

(i) उस विषय की पुस्तकें पढ़नी चाहिए।

(ii) उस विषय से जुड़ी रिपोर्टऔर खबरों को एकत्र करनी चाहिए।

(iii) उस विषय के विशेषज्ञों व संस्थानों से जुड़ा रहना चाहिए।

(iv) स्वयं को अपडेट रखना चाहिए।

(v) उस विषय से सम्बन्धित शब्दकोश और इनसाइक्लोपीडिया भी होनी चाहिए।

<u>उच्चस्तरीय चिंतन कौशल व दक्षता आधारित प्रश्न-</u>

प्रश्न (1) पिछले कुछ वर्षों में आर्थिक पत्रकारिता के महत्त्व के बढ़ने का कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- पिछले कुछ वर्षों में आर्थिक पत्रकारिता का महत्त्व कई कारणों से बढ़ा है–

(i) जनसामान्य का प्रत्यक्ष जुड़ाव अर्थव्यवस्था से बढ़ गया है।

(ii) लोगों में आर्थिक मुद्दों के प्रति जागरूकता बढ़ी है।

(iii) राजनीति और अर्थव्यवस्था के बीच संबंध और अधिक मजबूत हुआ है।

(iv) आर्थिक उदारीकरण और वैश्वीकरण के बाद अर्थव्यवस्था में व्यापक बदलाव आए हैं।

प्रश्न (2) खेल पत्रकारिता के महत्त्व को रेखांकित करते हुए बताएँ कि खेल पत्रकार में क्या विशेषताएँ होनी आवश्यक हैं?

उत्तर- <u>खेल पत्रकारिता का महत्त्व-</u>

(i) खेल पत्रकारिता से खेलों में करियर के अवसर बढ़ते हैं।

(ii) यह खेलों के प्रति रुचि बढ़ाकर जानकारी और परिणाम लोगों तक पहुँचाती है।

(iii) यह खेलों की त्वरित जानकारी उपलब्ध कराती है।

<u>खेल पत्रकार की विशेषताएँ-</u>

(i) खेल की तकनीक, नियमों और बारीकियों की समझ।

(ii) विभिन्न खेलों और रिकॉर्ड्स की जानकारी तथा सरल और स्पष्ट लेखन शैली।

(iii) त्वरित और सटीक रिपोर्टिंग क्षमता तथा खेलों के प्रति रुचि और उत्साह।

प्रश्न (3) विशेष लेखन के लिए सूचनाएँ एकत्र करने के स्रोत कौन-कौन से हैं? लिखिए।

उत्तर- विशेष लेखन के लिए सूचनाएँ एकत्र करने के स्रोत इस प्रकार है-

(i) मंत्रालय के सूत्र

(ii) प्रेस कॉन्फ्रेंस और विज्ञप्तियाँ

(iii) साक्षात्कार

(iv) सर्वे और जाँच समितियों की रिपोर्ट्स

(v) उस क्षेत्र में सक्रिय संस्थाएँ और व्यक्ति

(vi) संबंधित विभागों और संगठनों से जुड़े व्यक्ति

(vii) इंटरनेट और अन्य संचार माध्यम

(viii) स्थायी अध्ययन प्रक्रिया (पत्रकार को अध्ययन करते रहना चाहिए)

प्रश्न (4) न्यूज़पेग किसे कहते हैं?

उत्तर- न्यूज़पेग का अर्थ है- किसी मुद्दे पर लिखे जा रहे लेख या फ़ीचर में उस ताज़ा घटना का उल्लेख, जिसके कारण वह मुद्दा चर्चा में आ गया है। जैसे- शहर में महिलाओं के खिलाफ़ बढ़ रहे अपराध पर फ़ीचर का न्यूज़पेग सबसे ताज़ी वह घटना होगी जिसमें किसी महिला के खिलाफ़ अपराध हुआ है।

अवधारणा मानचित्र

पाठ-11 कैसे करें कहानी का नाट्य रूपांतरण

मुख्य बिंदु-

- कहानी और नाटक में समानता व अंतर
- कहानी के नाट्य रूपांतरण के बिंदु
- नाट्य रूपांतरण की चुनौतियाँ व समाधान

वर्णनात्मक प्रश्न-

प्रश्न (1) कहानी और नाटक में क्या समानताएँ हैं?

उत्तर- कहानी और नाटक में समानताएँइस प्रकार हैं-

(i) दोनों में कथावस्तु अनिवार्य रूप से होती है।

(ii) दोनों में कहानी का क्रमिक विकास होता है।

(iii) दोनों में पात्र और संवाद पाए जाते हैं।

(iv) दोनों में द्वंद्व होता है तथा चरमोत्कर्ष (क्लाइमेक्स) दिखाया जाता है।

(v) दोनों की रचना देशकाल, वातावरण एवं उद्देश्य को ध्यान में रखकर की जाती है।

प्रश्न (2) कहानी और नाटक में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कहानी और नाटक में अंतर इस प्रकार है-

(i) कहानी का संबंध लेखक और पाठकों से होता है, जबकि नाटक का संबंध लेखक, निर्देशक, दर्शक तथा श्रोताओं से होता है।

(ii) कहानी कही या पढ़ी जाती है, जबकि नाटक का संबंध मंच पर अभिनय से होता है।

(iii) कहानी में आरंभ, मध्य और अंत होते हैं, जबकि नाटक को दृश्यों में विभाजित किया जाता है।

(iv) कहानी में मंच-सज्जा, संगीत तथा प्रकाश का विशेष महत्त्व नहीं होता, जबकि नाटक में इनका विशेष महत्त्व होता है।

प्रश्न (3) कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

CBSE 2024, 25, 26

उत्तर- कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

दृश्य विभाजन -

(i) कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित करना चाहिए।

(ii) प्रत्येक भाग से दृश्य बनाने चाहिए जिसमें हर दृश्य में आरंभ, मध्य व अंत हो।

(iii) एक दृश्य का अंत दूसरे दृश्य के आरंभ से जुड़ा होना चाहिए।

(iv) दृश्य विभाजन कथाक्रम के अनुसार होना चाहिए।

संवाद -

(v) नाट्य के संवाद कहानी के मूल संवादों से मेल खाने चाहिए।

(vi) कहानी के लंबे संवादों को नाटक में छोटे-छोटे संवादों में बदला जाना चाहिए।

(vii) संवाद पर्याप्त एवं आम बोलचाल की भाषा में होने चाहिए।

पात्र व चरित्र-चित्रण-

(viii) कहानी के पात्रों की दृश्यात्मकता नाटक में दिखाई देनी चाहिए।

(ix) पात्र घटनाओं के अनुसार मनोभाव प्रकट करने वाले होने चाहिए।

(x) पात्रों के हाव-भाव एवं संवाद से प्रभाव उत्पन्न करना चाहिए।

प्रश्न (4) कहानी के नाट्य-रूपांतरण में आने वाली समस्याएँ व उनके समाधान लिखिए।

CBSE 2025,26

उत्तर- <u>कहानी के नाट्य रूपांतरण में आने वाली समस्याएँ-</u>

(i) पात्रों के मनोभावों को मंच पर प्रस्तुत करना।

(ii) पात्रों के द्वंद्व को मंच पर प्रस्तुत करना।

(iii) पात्रों के अनकहे विचारों को मंच पर प्रस्तुत करना।

<u>समाधान-</u>

(i) <u>स्वगत कथन-</u> मंच के कोने में जाकर अपने आप से संवाद करना।

(ii) <u>वॉयस ओवर-</u> मंच के पीछे से आवाज़ आती है और विचार प्रकट होते हैं।

<u>अवधारणा मानचित्र</u>

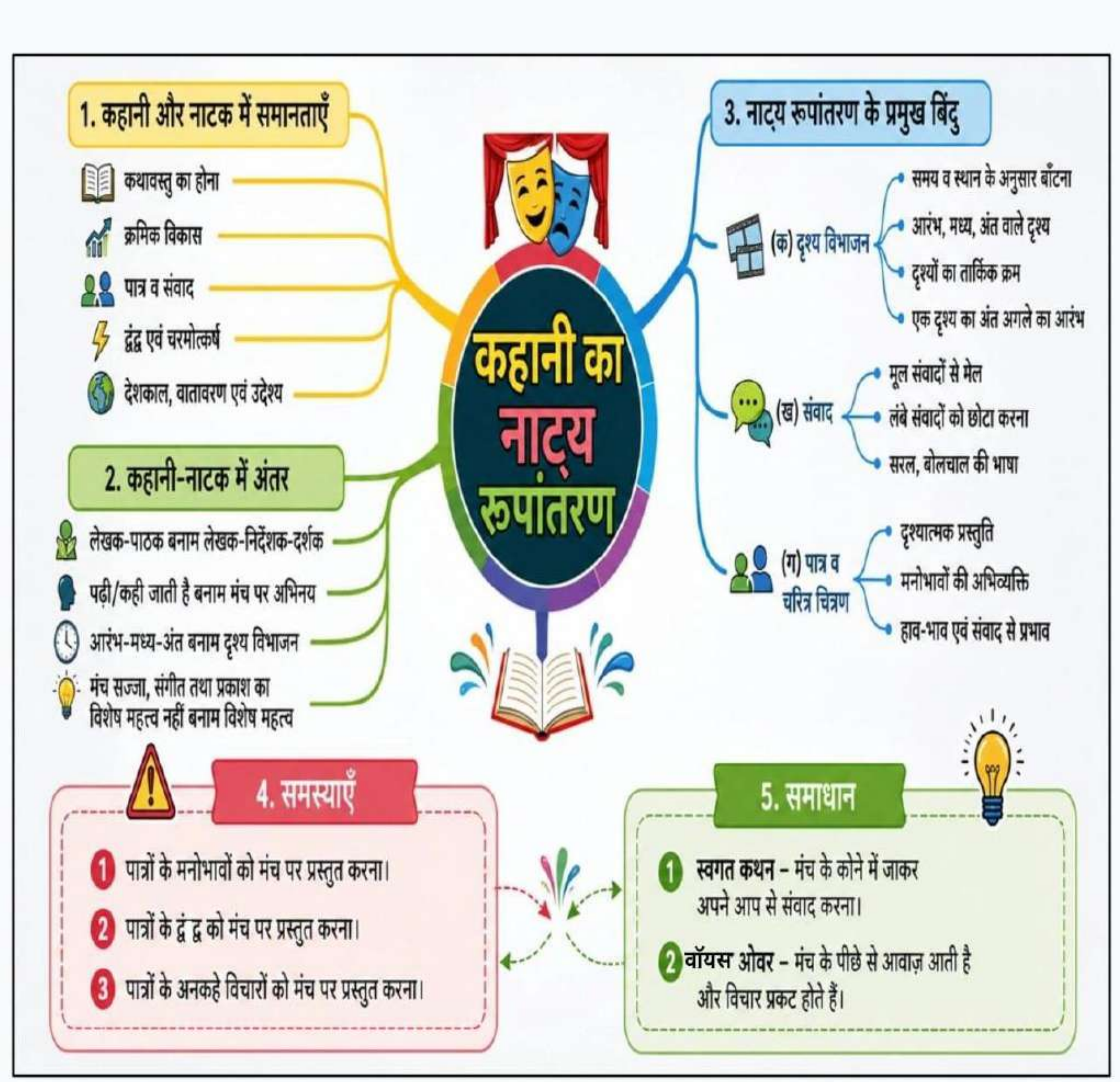

पाठ-12 कैसे बनता है रेडियो नाटक

मुख्य बिंदु-

- रेडियो नाटक की परंपरा- आरंभ, विकास
- सिनेमा, रंगमंच और रेडियो नाटक में समानता और अंतर
- रेडियो नाटक की कहानी में ध्यान रखने योग्य बातें
- रेडियो नाटक में ध्वनि संकेतों की महत्ता, रेडियो नाटक के तत्त्व

वर्णनात्मक प्रश्न-

प्रश्न (1) रेडियो नाटक का आरंभ और विकास किस प्रकार हुआ?

उत्तर- रेडियो नाटक का आरंभ और विकास इस प्रकार हुआ-

(i) पहले रेडियो ही मनोरंजन का प्रमुख माध्यम था। उस समय टीवीव कंप्यूटर उपलब्ध नहीं थे।

(ii) उस समय रेडियो एक सस्ता व सुलभ साधन था।

(iii) रेडियो पर खबरें आती थीं, फिर रेडियो नाटक व अन्य कार्यक्रम भी प्रसारित किए जाने लगे।

(iv) प्रसिद्ध हिंदी रेडियो नाटक के उदाहरण- अंधा युग (धर्मवीर भारती), आषाढ़ का एक दिन(मोहन राकेश)।

प्रश्न (2) सिनेमा-रंगमंच (दृश्य-श्रव्य) तथा रेडियो नाटक (श्रव्य) में समानताएँ व अंतर लिखिए।

CBSE 2025, 26

उत्तर- सिनेमा-रंगमंच (दृश्य-श्रव्य) तथा रेडियो नाटक (श्रव्य) में समानताएँ व अंतर इस प्रकार हैं-

(i) समानताएँ- दोनों में ही कहानी, संवाद, पात्र, चरित्र चित्रण, द्वंद्व व समाधान होते हैं।

(ii) अंतर- सिनेमा-रंगमंच में दृश्य, मंच सज्जा, पोशाक, हाव-भाव का महत्त्व होता है, जबकि रेडियो नाटक में ध्वनि, संगीत व आवाज़ का महत्त्व होता है।

प्रश्न (3) रेडियो नाटक की कहानी में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? अथवा

रेडियो नाटक के लिए कहानी का चुनाव करते समय क्या-क्या सावधानी बरतनी चाहिए और क्यों?

CBSE 2026

उत्तर- रेडियो नाटक की कहानी में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए -

(i) कहानी केवल घटना प्रधान न हो- रेडियो नाटक की कहानी में यदि एक्शन (हरकत) अधिक होगा तो वह उबाऊ बन जाएगा। जैसे पुलिस अपराधी के पीछे भागकर उसे पकड़ती है, तो उसके एक्शन को अधिक देर तक नहीं सुन पाएँगे।

(ii) अवधि ज़्यादा न हो- रेडियो नाटक की अवधि 15-30 मिनट होती है। यदि कहानी लंबी हो तो15-30 मिनट के एपिसोड बनाने चाहिए।रेडियो नाटक की अवधि ज़्यादा होगी तो हम ऊब जाएँगे और सुनने में एकाग्रता नहीं रहेगी।

(iii) पात्र सीमित हों- रेडियो नाटक में कम पात्र होने चाहिए ताकि उन्हें आसानी से पहचाना जा सके। **15 मिनट की अवधि के लिए 5-6, 30 मिनट की अवधि के लिए 8-12**तथा **60 मिनट की अवधि के लिए 15-20 पात्र होने चाहिएँ।**

प्रश्न (4) रेडियो नाटक के तत्वों का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।

उत्तर- रेडियो नाटक के तत्वों का संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार है -

(i) भाषा- भाषा रेडियो नाटक का मूल आधार होती है। सरल व आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना चाहिए। भाषा पात्रानुरूप होनी चाहिए।

(ii) <u>ध्वनि प्रभाव-</u>बिना ध्वनि प्रभावों के रेडियो नाटक संभव नहीं है। यह वातावरण निर्माण में सहायक होती है। जैसे तूफ़ान, बाज़ार आदि।

(iii) <u>संगीत-</u>संगीत रेडियो नाटक को सजीवता प्रदान करता है तथा प्रभाव को बढ़ाता है।

<u>उच्चस्तरीय चिंतन कौशल व दक्षता आधारित प्रश्न-</u>

प्रश्न (1) रेडियो नाटक में संवादों व ध्वनि प्रभावों पर विशेष ध्यान देना क्यों आवश्यक है? CBSE-26

उत्तर- रेडियो नाटक में संवादों व ध्वनि प्रभावों पर विशेष ध्यान देनाइसलिए आवश्यक है कि-

(i) बिना संवादों व प्रभावों के रेडियो नाटक नहीं बन सकता।

(ii) संवाद व ध्वनि प्रभाव कहानी के अनुसार होने चाहिए।

(iii) संवाद व ध्वनि प्रभाव पात्रों व चरित्रों के अनुसार होने चाहिए।

(iv) संवाद व ध्वनि प्रभाव कहानी के उद्देश्य के अनुसार होने चाहिए।

प्रश्न (2) 'कैप्टिव ऑडिएंस' की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।सिनेमा/नाट्यगृह और टी.वी./रेडियो दर्शक-श्रोता के व्यवहार में अंतर बताइए।

उत्तर- **'कैप्टिव ऑडिएंस'** वे दर्शक होते हैं जो सिनेमा या नाट्यगृह जैसे सार्वजनिक स्थानों पर एकत्र होकर पूरे मनोयोग से कार्यक्रम देखते हैं और आसानी से स्थान नहीं छोड़ते, भले ही थोड़ा बोर हो जाएँ। ये दर्शक एक प्रकार से नियंत्रित वातावरण में होते हैं। इसके विपरीत, टी.वी. या रेडियो के दर्शक-श्रोता अपने घरों में अपनी इच्छा से कार्यक्रम देखते-सुनते हैं। वे स्वतंत्र होते हैं और अपनी सुविधा अनुसार चैनल बदल या कार्यक्रम रोक सकते हैं।

<u>अवधारणा मानचित्र</u>

पाठ-13 नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन

मुख्य बिंदु-

- अप्रत्याशित विषयों पर लेखन का अर्थ
- रटंत- बुरी लत (कुटेव)
- अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के लाभ
- नए और अप्रत्याशित विषयों के लेखन की तकनीक
- अप्रत्याशित विषयों पर लेखन का ढाँचा व 'मैं' शैली

वर्णनात्मक प्रश्न-

प्रश्न (1) अप्रत्याशित विषयों पर लेखन किसे कहते हैं?

उत्तर- आशा से हटकर दिए गए विषय जिन पर विचार हमारे मन में पहले से न हों, उन पर किया गया लेखन अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कहलाता है।

प्रश्न (2) रटंत क्या है? इसे कुटेव (बुरी लत) क्यों कहा जाता है? CBSE 2024, 25

उत्तर- किसी दूसरे द्वारा लिखी सामग्री को याद कर ज्यों का त्यों प्रस्तुत करना रटंत है। रटंत को बुरी लत (कुटेव) इसलिए कहा जाता है कि -

(i) इससे मनुष्य दूसरों पर निर्भर हो जाता है।

(ii) इससे विचारों की मौलिकता खत्म हो जाती है।

(iii) इससे सोचने की ताकत कमज़ोर हो जाती है।

(iv) इससे लेखन कौशल का अभ्यास नहीं हो पाता।

प्रश्न (3) नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के द्वारा रटंत से कैसे बचा जा सकता है?

उत्तर- नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के द्वारा रटंत से इस प्रकार बचा जा सकता है -

(i) इससे मनुष्य दूसरों पर निर्भर नहीं रहता।

(ii) इससे विचारों की मौलिकता बढ़ जाती है।

(iii) इससे सोचने की ताकत तेज़ होती है।

(iv) इससे लेखन कौशल का अभ्यास हो पाता है।

प्रश्न (4) नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के नियम/ ध्यान रखने योग्य बातें लिखिए।

उत्तर- नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के नियम / ध्यान रखने योग्य बातेंइस प्रकार हैं -

(i) इसकी शुरुआत आकर्षक व बहुआयामी होनी चाहिए।

(ii) इसमें लिखी गई बातें आपस में जुड़ी हों और सुसंबद्धता का ध्यान रखा जाए।

(iii) इसमें "मैं" शैली का प्रयोग किया जा सकता है।

(iv) भाषायी शुद्धता पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

(v) लेखक के निजी विचार होने चाहिए और उसके व्यक्तित्व की झलक होनी चाहिए।

प्रश्न (5) अप्रत्याशित विषयों पर लेखन का ढाँचा कैसा होता है?

उत्तर- अप्रत्याशित विषयों पर लेखन का कोई निश्चित ढाँचा नहीं होता। लेखक इसे आकर्षक तरीके से

शुरू करता है। अपनी सुविधा के अनुसार प्रारंभ, मध्य और अंत तय किया जाता है। इसमें 'मैं' शैली का प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न (6) 'मैं' शैली क्या है और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में इस पर प्रतिबन्ध क्यों नहीं होता?
उत्तर- जब कोई लेखकस्वयं को 'मैं' रूप में प्रस्तुत करता है और अपने निजी विचारों, घटनाओं और प्रसंगों को लिखता है तब लेखन की इस शैली को 'मैं' शैली कहा जाता है। अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में इस पर प्रतिबन्ध इसलिए नहीं है कि इससे लेखन अधिक व्यक्तिगत और प्रभावी बनता है। इससे आत्मनिष्ठता और लेखक के व्यक्तित्त्व की छाप देखने को मिलती है।

उच्चस्तरीय चिंतन कौशल व दक्षता आधारित प्रश्न-

प्रश्न (1) नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए उल्लेख कीजिए कि अभिव्यक्ति के अधिकार में लेखन किस प्रकार सहायक है? CBSE 2026

उत्तर- **नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन का अभिप्राय है-**

(i) किसी विषय, घटना, वस्तु, व्यक्ति या स्थान के बारे में स्मृति और अनुभव के आधार पर अपने मौलिक विचारों को संकलित करना।

(ii) कम समय और कम शब्दों में व्याकरणिक शुद्धता के साथ सुसंगठित रूप में रचनात्मक अभिव्यक्ति करना।

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन अभिव्यक्ति के अधिकार में इस प्रकार सहायक है-

(i) विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है।

(ii) सामाजिक मुद्दों को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करने का साधन है।

(iii) ज्ञान और सूचना के प्रसार में सहायक है।

(iv) समाज में जागरूकता बढ़ाने में मदद करता है।

(v) व्यक्तिगत विकास और सोचने की क्षमता को बढ़ाता है।

(vi) लेखन एक प्रामाणिक स्रोत के रूप में कार्य करता है।

(vii) रचनात्मक अभिव्यक्ति केवल लेखन के माध्यम से ही संभव होती है।

प्रश्न (2) विचार करने और उसे व्यक्त करने की प्रक्रिया निबंध लेखन के परंपरागत विषयों में क्यों घटित नहीं हो पाती? CBSE 2026

उत्तर- विचार करने और उसे व्यक्त करने की प्रक्रिया निबंध लेखन के परंपरागत विषयों में घटित नहीं हो पाती क्योंकि-

(i) परंपरागत विषयों पर पहले से तैयारशुदा सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होती है।

(ii)इससे विद्यार्थियों में मौलिक चिंतन की आदत विकसित नहीं हो पाती।

(iii) विद्यार्थी आत्मनिर्भर होकर मौलिक लेखन का प्रयास और अभ्यास नहीं करते।

प्रश्न (3) अप्रत्याशित विषयों पर लिखने से लेखन पर पकड़ कैसे मजबूत होती है? CBSE 2026

उत्तर- अप्रत्याशित विषयों पर लिखने से लेखन पर पकड़ इस प्रकार मजबूत होती है-

(i) इससे सृजनात्मक शक्ति विकसित होती है तथा मौलिक अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है।

(ii) तर्क, विचार और उदाहरणों के माध्यम से अपने मत को पुष्ट करने की क्षमता बढ़ती है।

(iii) भाषा पर अच्छी पकड़ बनती है।

(iv) कम समय में अपने विचारों को संकलित कर प्रस्तुत करने की क्षमता विकसित होती है।

(v) लिखित अभिव्यक्ति की क्षमता में वृद्धि होती है।

अवधारणा मानचित्र

आरोह भाग-2 काव्य खंड

पाठ-1 आत्म-परिचय व एक गीत- हरिवंशराय बच्चन

मूलभाव-

- कवि हरिवंशराय बच्चन ने 'आत्मपरिचय' में प्रेम और मस्ती का संदेश दिया है।
- कवि अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक है परंतु प्रेम के बिना उसे यह संसार अधूरा लगता है।
- वह सांसारिक लोभ-लालच व मोह-माया के ज्ञान को भुलाना चाहता है और धन-दौलत को ठोकर मारता है।
- कवि कहता है कि दुनिया से मेरा संबंध प्रीति-कलह का है, मेरा जीवन विरुद्धों का सामंजस्य है- उन्मादों में अवसाद, रोदन में राग, शीतल वाणी में आग।

काव्यांश-1

मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ !

मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ!

(क) कवि किसका भार लेकर फिरता है?

(i) अपने जीवन का (ii) दुनिया का (iii) अपने परिवार का (iv) लोगों की उम्मीदों का

(ख) संसार किनको महत्त्व देता है?

(i) संसार के हित में काम करने वालों को (ii) संसार की अवहेलना करने वालों को
(iii) संसार की झूठी प्रशंसा करने वालों को (iv) लोक हित में काम करने वालों को

(ग) कॉलम-I को कॉलम-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कॉलम-I	कॉलम-II
A.जग	1.कवि
B.स्नेह सुरा -	2.संसार
C.अपने मन का गान	3.रूपक अलंकार

विकल्प :

(i) A (1), B (2), C (3) (ii) A (2), B (3), C (1)
(iii) A (2), B (1), C (3) (iv) A (3), B (2), C (1)

(घ) 'मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ' पंक्ति में कवि ने किसके प्रति संकेत किया है?

(i) जीवन की संगीतमयता, प्रेम और संवेदनशीलता (ii) शारीरिक मजबूती और साहस
(iii) साँसों की गिनती और मृत्यु का भय (iv) विज्ञान और तकनीकी प्रगति

(ङ.) निम्नलिखित कथन तथा कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए -

कथन : कवि संसार का भार अपने कंधों पर लिए फिरता है।

कारण : कवि स्वतंत्र चेतना का व्यक्ति है।

(i) कथन सही है, लेकिन कारण ग़लत है।
(ii) कथन ग़लत है, लेकिन कारण सही है।
(iii) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किन्तु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।
(iv) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

<u>उत्तर-</u> **क- ii** **ख- iii** **ग- ii** **घ- i** **ङ.- iii**

<u>काव्यांश-2</u>

मैं निज उर के उद्‌गार लिए फिरता हूँ
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ;
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ!

मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख-दुःख दोनों में मग्न रहा करता हूँ;
जग भव-सागर तरने को नाव बनाए,
मैं भव मौजों पर मस्त बहा करता हूँ!

(क) 'जला हृदय में अग्नि' पंक्ति का अभिप्राय क्या है?

(i) कवि केवल क्रोध में है (ii) कवि ज्ञान की ज्योति जलाए हुए है
(iii) कवि में प्रेम भाव और क्रोध की ज्वाला है (iv) कवि अग्नि-पूजा करता है

(ख) निम्नलिखित में से कौन-सा भाव काव्यांश में प्रमुख रूप से प्रकट होता है?

(i) भय और चिंता (ii) आत्मबल और स्वप्नशीलता
(iii) मोह और आसक्ति (iv) क्रोध और विद्रोह

(ग)कॉलम-I को कॉलम-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कॉलम-I	**कॉलम-II**
A.नाव बनाना	1.कल्पनाशीलता और आशावाद
B.स्वप्नों का संसार	2. आत्मबल और संघर्ष
C. हृदय में अग्नि	3. जीवन की कठिनाइयों से पार पाना

(i) A (1), B (2), C (3) (ii) A (2), B (3), C (1)

(iii) A (2), B (1), C (3) (iv) A (3),B (1),C (2)

(घ) 'मैं निज उर के उद्‌गार लिए फिरता हूँ' का क्या तात्पर्य है?

(i) कवि दूसरों के विचारों को अपनाता है। (ii) कवि अपने मन के भावों को संजोए रहता है।

(iii) कवि राजनीति में रुचि रखता है। (iv) कवि समाज के आदेशों को मानता है।

(ड.) निम्नलिखित कथन तथा कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए -

कथन : कवि जीवन के सुख-दुःख में संतुलन बनाए रखता है।

कारण : कवि हर स्थिति में मस्त और आनंदित रहता है।

(i) कथन सही है, लेकिन कारण ग़लत है।

(ii) कथन ग़लत है, लेकिन कारण सही है।

(iii) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किन्तु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(iv) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

<u>उत्तर-</u> क- iii ख- ii ग- iv घ- ii ड.- iv

एक गीत मूलभाव-

- 'निशा-निमंत्रण' से उद्‌धृत इस गीत में यह गीत समय के गुजरते जाने के एहसास में लक्ष्य-प्राप्ति के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा भी लिए हुए है। कवि प्रकृति की दैनिक परिवर्तनशीलता के संदर्भ में प्राणी-वर्ग के धड़कते हृदय को सुनने की काव्यात्मक कोशिश व्यक्त करता है।
- किसी प्रिय आलंबन से भावी साक्षात्कार का आश्वासन हीहमारे प्रयास के पगों की गति में चंचल तेजी भर सकता है, अन्यथा हम शिथिलता और फिर जड़ता को प्राप्त होने लगते हैं।

<u>काव्यांश-3</u>

बच्चे प्रत्याशा में होंगे ,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है !
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है !
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !

(क) चिड़िया के बच्चे किस आशा में अपने घोंसलों से झाँक रहे होंगे?

(i) दुनिया देखने की आशा में (ii) भोजन,प्यार व सुरक्षा पाने की आशा में

(iii) आसमान में उड़ने की आशा में (iv) घोंसले से बाहर निकलने की आशा में

(ख) कवि के कदम शिथिल क्यों पड़ जाते हैं?

(i) रास्ते में रात हो जाने के कारण (ii) कवि के बीमार हो जाने के कारण

(iii) किसी के प्रतीक्षारत न होने के कारण (iv) थका होने के कारण

(ग) कॉलम-I को कॉलम-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कॉलम-I	कॉलम-II
A. शिथिल	1. व्याकुलता
B. विह्वलता	2. हृदय
C. उर	3. धीमे

(i) A (1), B (2), C (3) (ii) A (2), B (3), C (1)

(iii) A (2), B (1), C (3) (iv) A (3), B (1), C (2)

(घ) 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' – इस पंक्ति से कवि किस बात की ओर संकेत कर रहे हैं?

(i) समय की गतिशीलता (ii) मौसम का परिवर्तन

(iii) सूरज की गति (iv) कवि की व्यस्तता

(ड.) निम्नलिखित कथन तथा कारण को पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए -

कथन : बच्चों की सुरक्षा की चिंता का भाव चिड़िया को अस्थिर कर देता है।

कारण : चिड़िया की उड़ान की गति मंद है।

(i) कथन सही है, लेकिन कारण ग़लत है।

(ii) कथन ग़लत है, लेकिन कारण सही है।

(iii) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किन्तु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(iv) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

उत्तर- क- ii ख- iii ग- iv घ- i ड.- i

<u>वर्णनात्मक प्रश्न-</u>

प्रश्न (1) जग-जीवन का भार लिए घूमने की बात और 'मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ'- विपरीत से लगने वाले इन कथनों का आशय स्पष्ट कीजिए। CBSE 2025

उत्तर- <u>जग-जीवन का भार-</u> संसार व समाज की जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक होना।

<u>कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ</u>- कवि प्रेम बढ़ाने के लिए संसार की निंदा की परवाह नहीं करता। इस प्रकार कवि संसार के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभा रहा है और संसार में प्रेम बढ़ाने के लिए वह संसार की निंदा की परवाह नहीं करता।

प्रश्न (2) जहाँ पर दाना रहते हैं, वहीं नादान भी होते हैं- कवि ने ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर- <u>दाना-</u> समझदार/ ज्ञानी जो सांसारिक लोभ-लालच, मोह-माया, धन-दौलत में नहीं पड़ते।

<u>नादान-</u> सांसारिक लोभ-लालच, मोह-माया में डूबे मूर्ख लोग।

तात्पर्य यह है कि जहाँ सांसारिक लोभ-लालच, मोह-माया है वहीं उसमें डूबने वाले मूर्ख लोग भी हैं जो प्रेम को महत्त्व नहीं देते हैं और इसी संसार में समझदार लोग भी हैं जो मोह-माया से विरक्त हैं।

प्रश्न (3) मैं और, और जग और कहाँ का नाता- पंक्ति में 'और' शब्द की विशेषता बताते हुए पंक्ति के अर्थ को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'और' शब्द की विशेषता- पहले व तीसरे 'और' का अर्थ है- अलग/भिन्न।

दूसरे 'और' का अर्थ है- तथा। इस प्रकार इसमें यमक अलंकार है।

पंक्ति का अर्थ- कवि कहता है कि मैं अलग हूँ तथा संसार अलग है क्योंकि मैं प्रेम को महत्त्व देता हूँ और संसार के लोग सांसारिकता को महत्त्व देते हैं। इसलिए संसार से मेरा कोई रिश्ता नहीं है।

प्रश्न (4) शीतल वाणी में आग- के होने का क्या अभिप्राय है?CBSE 2024

उत्तर- **<u>शीतल वाणी-</u>** कोमल शब्दों व शीतल स्वरों का प्रयोग

<u>आग-</u> प्रेम रहित संसार के प्रति क्रोध व विरोध की भावना

संसार में प्रेम की कमी देखकर कवि को क्रोध आता है और उनमें विरोध की भावना प्रबल होती है परंतु इस क्रोध को वह कोमल शब्दों और शीतल स्वरों के माध्यम से अपनी कविता में प्रकट करता है।इसे शीतल वाणी में आग कहा गया है।

प्रश्न (5) पथिक के कदम तेज़ व धीमे होने के कारण लिखिए।

उत्तर- **<u>पथिक के कदम तेज़ होने के कारण-</u>** (i) उसे लगता है कहीं रास्ते में रात न हो जाए।

(ii) उसे मंजिल नज़दीक दिखाई देती है। (iii) उसके प्रियजन उसका इंतज़ार कर रहे हैं।

<u>पथिक के कदम धीमे होने के कारण-</u>

(i) उसे लगता है कि कोई उसका इंतज़ार नहीं कर रहा। (ii) वह किसके भले के लिए जल्दी जाए?

<u>उच्चस्तरीय चिंतन कौशल व दक्षता आधारित प्रश्न-</u>

प्रश्न (1) संसार में कष्टों को सहते हुए भी ख़ुशी और मस्ती का माहौल कैसे पैदा किया जा सकता है?

उत्तर- जिस प्रकार आत्मपरिचय कविता में कवि ने संसार की परवाह न करके, सांसारिक लोभ-लालच से दूर रह कर, सभी को प्रेम का सन्देश दे कर तथा कल्पना और सपनों का संसार बना कर कष्टों में भी आनंद की अनुभूति की थी उसी प्रकार हम भी संसार में कष्टों को सहते हुए भी ख़ुशी और मस्ती का माहौल पैदा कर सकते हैं।

प्रश्न (2) 'आत्मपरिचय' कविता के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इस कविता में कवि ने स्वयं की अस्मिता को दुनिया के सामने प्रकट किया है। कवि ने अपने कोमल भाव व प्रेम भरे विचार तथा स्वप्नों के संसार को प्रकट किया है। कवि ने अपने निजी प्रेम को सबके सामने प्रकट किया है। इस प्रकार कविता की एक-एक पंक्ति कवि का परिचय दे रही है। अतः यह शीर्षक सार्थक है।

प्रश्न (3) दिन जल्दी-जल्दी ढलता है- की आवृत्ति से कविता की किस विशेषता का पता चलता है?

उत्तर- दिन जल्दी-जल्दी ढलता है की आवृत्ति से कविता की इन विशेषताओं का पता चलता है-

(i) प्रेम की आतुरता (ii) समय की गतिशीलता

(iii) कवि की बात की प्रभावशीलता (iv) प्रभावी लय

प्रश्न (4) कौन-सा विचार दिन ढलने के बाद लौट रहे कवि के कदमों को धीमा कर देता हैं? 'बच्चन' के गीत के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर- कवि एकाकी जीवन व्यतीत कर रहा है। शाम के समय उसके मन में विचार उठता है कि उसका कोई प्रिय नहीं है जो उसके आने की प्रतीक्षा करे। वह भरे मन से अपने कदम रखता है। उसे लगता है कि उसकी कोई मंजिल नहीं है जिसके लिए वह तेजी से घर जाने की कोशिश करे। शाम ढलते ही रात होने लगेगी और कवि का हृदय बेचैन हो उठेगा। इस प्रकार के करुणापूर्ण विचार दिन ढलने के बाद लौट रहे कवि के कदमों को धीमा कर देता है।

अवधारणा मानचित्र (आत्मपरिचय)

अवधारणा मानचित्र (दिन जल्दी-जल्दी ढलता है)

पाठ-2 पतंग- आलोक धन्वा

मूलभाव-

- ❖ भादों माह के बाद शरद ऋतु के सुंदर प्राकृतिक परिवर्तनों का चित्रण किया गया है।
- ❖ शरद ऋतु के सवेरे की तुलना खरगोश की लाल आँखों से की गई है।
- ❖ शरद ऋतु बच्चों को साइकिल चलाते बच्चे की तरह आकर्षित करती है।
- ❖ बच्चों के लिए पतंग सबसे हल्की, रंगीन और प्रिय वस्तु है।
- ❖ रंग-बिरंगी पतंगें उड़ाते समय बच्चों की खुशी, शोर और सीटी की ध्वनि का सुंदर वर्णन है।
- ❖ कवि के अनुसार बच्चे कपास की तरह कोमल, लचीले और पवित्र होते हैं।
- ❖ बच्चे पतंग के लिए बेसुध होकर तेज़ गति से दौड़ते हैं। पतंग के लिए दौड़ते बच्चों के पैरों की गूँज सभी दिशाओं में गूँजती है।
- ❖ पतंग से बच्चे का भावनात्मक जुड़ाव होता है; उसका मन और धड़कन भी पतंग के साथ उड़ते हैं।
- ❖ छतों के खतरनाक किनारों से गिरकर बचने पर बच्चे निडर हो जाते हैं और जीवन की चुनौतियों का सामना दृढ़तापूर्वक करते हैं।

काव्यांश-1

सबसे तेज बौछारें गयीं भादो गया
सवेरा हुआ
खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा
शरद आया पुलों कोपार करते हुए
अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए
घंटी बजाते हुए जोर-जोर से
चमकीले इशारों से बुलाते हुए
पतंग उड़ाने वाले बच्चों के झुंड को
चमकीले इशारों सेबुलाते हुए और
आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए
कि पतंग ऊपर उठ सके-
दुनिया की सबसे हलकी और रंगीन चीज उड़ सके
दुनिया का सबसे पतला कागज उड़ सके-
बाँस की सबसे पतली कमानी उड़ सके-
कि शुरू हो सके सीटियों, किलकारियों और
तितलियों की इतनी नाज़ुक दुनिया

(क) "आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए" से कवि का क्या आशय है?

(i) आसमान पर्याप्त साफ़ है (ii) आकाश कोमल है
(iii) शीतल मंद हवा चल रही है (iv) उपर्युक्त सभी

(ख) शरद की तुलना किससे की गई है?

(i) साइकिल चलाने वाले बच्चे से (ii) पतंग से
(iii) खरगोश की आँखों से (iv) तितलियों से

(ग) चमकीले इशारों का अर्थ है-

(i) चमकदार सूर्य द्वारा आकर्षित करना (ii) चमकदार चाँदनी द्वारा आकर्षित करना
(iii) बिजली चमकना (iv) पतंगों का चमकना

(घ) कॉलम-I को कॉलम-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कॉलम 1	**कॉलम 2**
A भादो	1 खेलकूद और आनंद
B शरद की साइकिल	2 अँधेरा
C बच्चों की किलकारियाँ	3 नया उत्साह

विकल्प :

(i) A (1), B (2), C (3) (ii) A (2), B (3), C (1)

(iii) A (2), B (1), C (3) (iv) A (3), B (1), C (2)

(ड.) निम्नलिखित कथन औरकारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन (A) :पतंग को पतले कागज और पतली कमानी से बनायाजाता है।

कारण (R) : पतले कागज और पतली कमानी के कारण पतंगआसानी से ऊपर उड़ जाती हैं।

(i) कथन (A) सही है, कारण (R) ग़लत है।

(ii) कथन (A) सही नहीं है, कारण (R) सही है।

(iii) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) उसकी सही व्याख्या नहींकरता।

(iv) कथन (A) सही है तथा कारण (R) दोनों सही हैं, कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

<u>उत्तर-</u> क- iv ख- i ग- i घ- ii ड.- iv

<u>काव्यांश-2</u>

जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुएचले आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अकसर
छतों के खतरनाक किनारों तक-
उस समय गिरने से बचाता है उन्हें
सिर्फ़ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत
पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ उन्हें थाम लेती हैं
महज़ एक धागे के सहारे
पतंगों के साथ साथ व ेभी उड़ रहे हैं-
अपने रंध्रों के सहारे
अगर वे कभी गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से
और बच जाते हैं तब तो
और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं

(क) "सिर्फ़ उनके रोमांचित शरीर का संगीत" का क्या अर्थ है?

(i) बच्चों का उत्साह और ऊर्जा (ii) कोई संगीत वाद्य

(iii) किसी विशेष संगीत का उल्लेख (iv) बच्चों की कोमलता

(ख) 'छतों को नरम बनाते हुए' पंक्ति का अर्थ है-

(i) बच्चों के कोमल पैरों से छतों का मुलायम महसूस होना (ii) छतों पर रूई फैलाना

(iii) छत पर पतंगें रख देना (iv) आसमान में बादलों का आना

(ग) दिशाओं को मृदंग की तरह बजाने का अर्थ है-

(i) ढोल-नगाड़ों की आवाज़ गूँजना (ii) तबलों की आवाज़ गूँजना
(iii) पैरों की आवाज़ गूँजना (iv) हवाओं की आवाज़ गूँजना

(घ) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-
कथन (A) :बच्चों में कपास की तरह नरमी, लोच और कोमलता जन्मजात होती है।
कारण (R) : पृथ्वी घूमती हुई बच्चों के बेचैन पैरों के पास आती है।

(i) कथन (A) सही है, कारण (R) ग़लत है।
(ii) कथन (A) सही नहीं है, कारण (R) सही है।
(iii) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) उसकी सही व्याख्या नहीं करता।
(iv) कथन (A) सही है तथा कारण (R) दोनों सही हैं, कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है

(ड.) कॉलम-I को कॉलम-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कॉलम 1	**कॉलम 2**
A बेचैन पैरों के पास	1 लचीलेपन के साथ गतिशीलता
B डाल की तरह लचीले वेग	2 पाँवों की गूँज
C दिशाओं को बजाना	3 तेज गति से दौड़ना

विकल्प :

(i) A (1), B (2), C (3) (ii) A (2), B (3), C (1)
(iii) A (2), B (1), C (3) (iv) A (3), B (1), C (2)

<u>उत्तर-</u> क- i ख- i ग- iii घ- iii ड.- iv

वर्णनात्मक प्रश्न-

प्रश्न (1) 'सबसे तेज़ बौछारें गयीं, भादो गया' के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है, उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। CBSE 2026

उत्तर- 'सबसे तेज़ बौछारें गयीं, भादो गया' के बाद प्रकृति में आया परिवर्तन इस प्रकार है-
(i) शरद ऋतु का आगमन वर्षा ऋतु के बाद हुआ है।
(ii) शरद ऋतु में सुबह का सूर्य लाल व चमकदार है।
(iii) शरद ऋतु में आसमान साफ़ है।
(iv) शरद ऋतु में शीतल मंद हवा चल रही है और आकाश मुलायम हो गया है।

प्रश्न (2) 'पतंग' के सन्दर्भ में बच्चों और कपास के बीच सम्बन्ध स्पष्ट कीजिए। CBSE 2026

उत्तर- कपास- कोमल, मुलायम, लचीली व साफ़
बच्चे- कोमल, मुलायम, सहनशील व पवित्र मन
जिस प्रकार कपास कोमल, मुलायम, लचीली व साफ़ होती है उसी प्रकार बच्चे जन्म से कोमल व मुलायम होते हैं। साथ ही वे सहनशील होते हैं और उनका मन पवित्र होता है।

प्रश्न (3) पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं- बच्चों का उड़ान से कैसा सम्बन्ध है? CBSE 2024

उत्तर- जब बच्चे पतंग उड़ाते हैं तो पतंग के साथ-साथ बच्चों के मन भी उड़ते हैं। जिस बच्चे की पतंग जितनी ऊँची उड़ती है, वह बच्चा भी अपने-आप को उतना ही ऊँचा उड़ता हुआ महसूस करता

है। इस प्रकार जब बच्चे अपनी आँखों से पतंग को उड़ती हुई देखते हैं तो वह खुद उड़ता हुआ महसूस करते हैं।

प्रश्न (4) दिशाओं को मृदंग की तरह बजाने का क्या तात्पर्य है?

उत्तर- जब बच्चे पतंग के लिए बेसुध होकर खुरदरी छतों पर दौड़ते हैं तो उनके पैरों की आवाज़ चारों दिशाओं में गूँजती है। यह आवाज़ इस प्रकार लगती है मानो चारों दिशाओं में ढोल-नगाड़े और मृदंग बज रहे हैं। पाँवों की इस गूँज को कवि ने दिशाओं को मृदंग की तरह बजाना माना है।

प्रश्न (5) छतों को नरम बनाने से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- जब बच्चे पतंग के लिए बेसुध होकर खुरदरी छतों पर दौड़ते हैं और बच्चों के कोमल पैरों में चुभन का अहसास नहीं होता, तो कवि या देखने वालों को ऐसा महसूस होता है कि बच्चों ने अपने कोमल पैरों से छतों को नरम बना दिया है।

उच्चस्तरीय चिंतन कौशल व दक्षता आधारित प्रश्न-

प्रश्न (1) खतरनाक परिस्थितियों का सामना करने के बाद आप दुनिया की चुनौतियों के सामने स्वयं को कैसा महसूस करते हैं?

उत्तर- खतरनाक परिस्थितियों का सामना करने के बाद हम अपने-आप को निडर और आत्मविश्वास से भरा महसूस करते हैं। हम अपने-आप को चुनौतियों का मुकाबला करने में अधिक सक्षम पाते हैं और दुगुने उत्साह से हम चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

प्रश्न (2) 'पतंग' कविता में कवि ने बाल-मनोविज्ञान को किस प्रकार चित्रित किया है? CBSE 2026

उत्तर- (i) प्रकृति के प्रतीकों के माध्यम से बाल-मन और भावनाओं की अभिव्यक्ति।

(ii) उन्मुक्तता के साथ उत्साह, उमंग और कल्पनाशीलता।

(iii) पतंग उड़ाने का रोमांच और प्रतिस्पर्धा की भावना।

(iv) बच्चों की कोमलता, निश्छलता और निडरता।

प्रश्न (3) 'रोमांचित शरीर का संगीत' का जीवन के लय से क्या सम्बन्ध है? CBSE 2026

उत्तर- पतंग के पीछे दौड़ने वाले बच्चों में उत्साह व जोश होता है। साथ ही उनके शरीरों में लचीलापन होता है। बच्चों के इस उत्साह व लचीलापन को रोमांचित शरीर का संगीत कहा है जो उन्हें छतों से गिरने से बचाता है।

अवधारणा मानचित्र

पाठ- 3 कविता के बहाने, बात सीधी थी पर - कुँवरनारायण

कविता के बहाने (मूलभाव)

- यह कविता एक यात्रा है जो चिड़िया, फूल से लेकर बच्चे तक की है।
- कवि कहता है कि चिड़िया की उड़ान की सीमा है, फूल के खिलने के साथ उसकी परिणति निश्चित है, लेकिन बच्चे के सपने असीम हैं।
- बच्चों के खेल में किसी प्रकार की सीमा का कोई स्थान नहीं होता।
- कविता भी शब्दों का खेल है और शब्दों के इस खेल में जड़, चेतन, अतीत, वर्तमान और भविष्य- सभी उपकरण मात्र हैं। इसीलिए जहाँ कहीं रचनात्मक ऊर्जा होगी, वहाँ सीमाओं के बंधन खुद-ब-खुद टूट जाते हैं।

- **बात सीधी थी पर (मूलभाव)**
- इसमें कथ्य के द्वंद्व उकेरते हुए भाषा की सहजता की बात की गई है।
- अच्छी बात का बनना सही बात का सही शब्द से जुड़ना होता है और जब ऐसा होता है तो किसी दबाव या अतिरिक्त मेहनत की ज़रूरत नहीं होती, वह सहूलियत के साथ हो जाता है।
- सही बात को सही शब्दों के माध्यम से कहने से ही रचना प्रभावशाली बनती है।
- मनुष्य अपनी भाषा को टेढ़ी तब बना देता है जब वह चमत्कारपूर्ण शब्दों के माध्यम से कथ्य को प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। शब्दों के चक्कर में कथ्य अपना अर्थ खो बैठता है।

काव्यांश-1 (कविता के बहाने)

कविता एक उड़ान है चिड़िया के बहाने
कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने
बाहर-भीतर,
इस घर उस घर
कविता के पंख लगा उड़ने के माने
चिड़िया क्या जाने?

कविता एक खिलना है फूलों के बहाने
कविता का खिलना भला फूल क्या जाने!
बाहर भीतर,
इस घर उस घर
बिना मुरझाए महकने के माने,
फूल क्या जाने?

(क) कवि ने कविता को किसकी उड़ान माना है?

(i) प्रश्नों की (ii) शब्दों की (iii) सीमाओं की (iv) कल्पना की

(ख) "कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने" पंक्ति का आशय क्या है?

(i) कविता की उड़ान चिड़िया की उड़ान से कम होती है
(ii) कविता की उड़ान असीमित है, इसे चिड़िया नहीं समझ पाती है
(iii) कविता और चिड़िया दोनों की उड़ान अनन्त है
(iv) कविता की उड़ान से चिड़िया भली-भाँति परिचित है

(ग) कवि ने फूल और कविता के खिलने में क्या अंतर बताया है?

(i) फूल क्षणिक होता है जबकि कविता अमर होती है
(ii) फूल में सुगंध होती है जबकि कविता में नहीं होती
(iii) फूल में सौंदर्य होता है जबकि कविता में क्षणिक सौंदर्य होता है
(iv) फूल और कविता दोनों में कोई समानता नहीं है

(घ) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन (A): कवि के अनुसार फूल कविता की समता नहीं कर सकते हैं।

कारण (R): कविता अनंत जीवन एवं आनंद से युक्त होती है।

(i) कथन (A) सही है, कारण (R) ग़लत है।

(ii) कथन (A) सही नहीं है, कारण (R) सही है।

(iii) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) उसकी सही व्याख्या नहीं करता।

(iv) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं, कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(ड.) कॉलम-I को कॉलम-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कॉलम 1	**कॉलम 2**
A कविता की उड़ान	1 कल्पना शक्ति
B कविता के पंख	2 असीमित
C बिना मुरझाए महकने के माने	3 अमरता और आनन्द

(i) A (1), B (2), C (3)   (ii) A (2), B (3), C (1)

(iii) A (2), B (1), C (3)   (iv) A (3), B (1), C (2)

<u>उत्तर-</u> **क- iv   ख- ii   ग- i   घ- iv   ड.- iii**

काव्यांश-2 (बात सीधी थी पर)

आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था ज़ोर ज़बरदस्ती से बात की चूड़ी मर गई और वह भाषा में बेकार घूमने लगी ! हारकर मैंने उसे कील की तरह उसी जगह ठोंक दिया। ऊपर से ठीकठाक पर अंदर से,	न तो उसमें कसाव था न ताकत ! बात ने, जो एक शरारती बच्चे की तरह मुझसे खेल रही थी, मुझे पसीना पोंछते देखकर पूछा- "क्या तुमने भाषा को सहूलियत से बरतना कभी नहीं सीखा?"

(क) बात कवि के साथ कैसे खेल रही थी?

(i) शांत बच्चे के समान   (ii) चंचल बच्चे के समान

(iii) शरारती बच्चे के समान   (iv) बुद्धिमान बच्चे के समान

(ख) 'बात की चूड़ी मर जाना' से कवि का का तात्पर्य है?

(i) बात का पकड़ में आना   (ii) बात का प्रभावशाली हो जाना

(iii) बात का प्रभावहीन हो जाना   (iv) सरल व सहज भाषा का प्रयोग करना

(ग) कॉलम-I को कॉलम-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कॉलम 1	**कॉलम 2**
A कवि का डर	1 थक हारकर-
B कील की तरह ठोंक देना	2 बात का प्रभाव खत्म होना
C पसीना पोंछते	3 बात में कसावट न होना

(i) A (1), B (2), C (3) (ii) A (2), B (3), C (1)
(iii) A (2), B (1), C (3) (iv) A (3), B (1), C (2)

(घ) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए।
कथन (A) "क्या तुमने भाषा को सहूलियत से बरतना कभी नहीं सीखा?"
कारण (R) यह व्यक्ति के भाषा ज्ञान की कमी को दर्शाता है।
(i) कथन **(A)** सही है**,** कारण **(R)** ग़लत है।
(ii) कथन **(A)** सही नहीं है**,** कारण **(R)** सही है।
(iii) कथन **(A)** तथा कारण **(R)** दोनों सही हैं**,** किंतु कारण **(R)** उसकी सही व्याख्या नहीं करता।
(iv) कथन **(A)** तथा कारण **(R)** दोनों सही हैं**,** कारण **(R)** कथन **(A)** की सही व्याख्या करता है।

(ङ.) 'भाषा में बेकार घूमने लगी' का अर्थ क्या है?
(i) बात भाषा में अर्थहीन हो गई (ii) बात कविता बन गई
(iii) भाषा को नई दिशा मिली (iv) कविता में भावनात्मक मज़बूती

<u>उत्तर-</u> क- iii ख- iii ग- ii घ- iv ङ.- i

<u>वर्णनात्मक प्रश्न-</u>

प्रश्न (1) इस कविता के बहाने बताएँ कि 'सब घर एक कर देने के माने' क्या है?
उत्तर- 'सब घर एक कर देने के माने' है- आपसी भेदभाव समाप्त कर अपनत्व की भावना का विकास करना। कवि के अनुसार बच्चे आपसी भेदभाव मिटाकर अपनत्व व भाईचारे की भावना का विकास करते हैं। बच्चे खेलते हुए एक घर से दूसरे घर में बिना भेदभाव के चले जाते हैं और भाईचारा बढ़ाते हैं।

प्रश्न (2) 'उड़ने' व 'खिलने' का कविता से क्या सम्बन्ध बनता है? **अथवा**
कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं? **CBSE 2024, 26**
उत्तर-

चिड़िया, फूल, बच्चा	**कविता**
चिड़िया- उड़ान सीमित होती है और आसमान में एक निश्चित ऊँचाई तक ही उड़ सकती है।	कविता की उड़ान असीमित होती है और वह दिल की गहराइयों से आसमान की ऊँचाइयों तक उड़ सकती है।
फूल- फूल का खिलने के साथ ही मुरझाना भी निश्चित हो जाता है और वह थोड़े समय के लिए ही ख़ुशबू देता है।	कविता बिना मुरझाए महकती रहती है। इसका प्रभाव कभी खत्म नहीं होता और यह हमेशा पाठकों को आनंद देती रहती है।
बच्चा = कविता	
1. बच्चे खेल खेलते हैं व आनंद देते हैं उसी प्रकार कविता भी शब्दों का खेल है और आनंद प्रदान करती है। 2. दोनों ही भेदभाव मिटाकर अपनत्व व भाईचारे की भावना बढ़ाते हैं। (सब घर एक कर देना) 3. दोनों में ही रचनात्मक ऊर्जा होती है।	

प्रश्न (3) 'भाषा को सहूलियत' से बरतने का क्या अभिप्राय है? **CBSE 2025**

उत्तर- 'भाषा को सहूलियत' से बरतने का अभिप्राय है**-** भाषा को सरलता और सहजता से प्रयोग में लाना।बात को सीधे और सरल शब्दों में कहना**,** जिससे कथ्य और भाषा में सामंजस्य स्थापित हो सके और बात लोगों तक सरलता से पहुँच सके।भाषा को सुविधाजनक एवं सहज ढंग से प्रयोग में लाना।

प्रश्न (4) 'सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है।' कैसे? **CBSE 2025,26**

उत्तर- कवि सीधी सरल बात को प्रभावी बनाने की कोशिश करता है।इसके लिए वह सुंदर**,** अलंकृत**,** प्रभावी व जटिल भाषा का प्रयोग करता है।भाषा के इस प्रदर्शन के चक्कर में सीधी बात भी टेढ़ी व पेचीदा हो जाती है।

प्रश्न (5) 'बात सीधी थी पर' कविता का सन्देश / कथ्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-कविता में कथ्य व माध्यम के द्वंद्व को बताते हुए कहा गया है कि हमें बात को सीधे-सरल शब्दों में कहना चाहिए।भाषा को सुन्दर**,** अलंकृत और जटिल बनाने के चक्कर में बात उलझने लगती है और मूल बात का प्रभाव समाप्त हो जाता है।इसलिए हमें सही बात के लिए सही शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।साथ ही भाषा की सरलता पर ध्यान देना चाहिए।

<u>**उच्चस्तरीय चिंतन कौशल व दक्षता आधारित प्रश्न-**</u>

प्रश्न- (1) कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर- कवि ने बच्चे और कविता को समानांतर रखा है। बच्चों में रचनात्मक ऊर्जा होती है। उनके खेलने की कोई निश्चित सीमा नहीं होती। उनके सपने असीम होते हैं। इसी तरह कविता भी रचनात्मक तत्वों से युक्त होती है। उसका क्षेत्र भी विस्तृत होता है। उनकी कल्पना शक्ति अद्भुत होती है।

प्रश्न (2) निम्नलिखित मुहावरों/ बिम्बों के आशय को स्पष्ट कीजिए-

(i) **बात की चूड़ी मर जाना** (ii) **पेंच को कील की तरह ठोंक देना** (iii) **बात का बन जाना**

उत्तर- (i) <u>**बात की चूड़ी मर जाना-**</u> बात का प्रभावहीन होना।जब भाषा के साथ ज़ोर ज़बरदस्ती की जाए तो बात का प्रभाव समाप्त हो जाता है। इसे कवि ने बात की चूड़ी मरना कहा है।

(ii) <u>**पेंच को कील की तरह ठोंक देना-**</u> बात में कसावट न होना।जब कवि से बात बन नहीं पा रही थी तब वह उसे जैसे-तैसे पूरी कर देता है। यह बात उस कील की तरह महसूस होती है जो बाहर से तो पूरी लगती है परन्तु अंदर से उसमें कसावट नहीं होती।

(iii) <u>**बात का बन जाना-**</u> कथ्य और भाषा का सही सामंजस्य बनना। हमें सही बात के लिए सही शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। साथ ही भाषा की सरलता पर ध्यान देना चाहिए।

<u>अवधारणा मानचित्र - बात सीधी थी पर</u>

<u>पाठ-4 कैमरे में बंद अपाहिज- रघुवीर सहाय</u>

मूलभाव-

- मीडिया कर्मियों की संवेदनहीनता और क्रूरता पर व्यंग्य किया गया है।
- व्यावसायिक दबाव के कारण अपाहिजों को कैमरे के सामने लाकर उनसे बड़े क्रूर प्रश्न पूछे जाते हैं। उनके सोए हुए दर्द को जानबूझकर ताज़ा किया जाता है।
- मीडिया की कोशिश होती है कि अपाहिज व्यक्ति अपने दर्द से और दर्शक करुणा से रो पड़े जिससे उनका कार्यक्रम रोचक बन सके।

<u>काव्यांश-1</u>

हम दूरदर्शन पर बोलेंगे
हम समर्थ शक्तिवान
हम एक दुर्बल को लाएँगे
एक बंद कमरे में
उससे पूछेंगे तो आप क्या अपाहिज हैं?
तो आप क्यों अपाहिज हैं?

आपका अपाहिजपन तो दुख देता होगा
देता है?
(कैमरा दिखाओ इसे बड़ा बड़ा)
हाँ तो बताइए आपका दुख क्या है
जल्दी बताइए वह दुख बताइए
बता नहीं पाएगा।

(क) काव्यांश में 'समर्थ शक्तिवान' किसके लिए कहा गया है?

(i) कवि के लिए (ii) कार्यक्रम के संचालक के लिए (iii) अपाहिज के लिए (iv) दर्शकों के लिए

(ख) प्रस्तुत काव्यांश का उद्देश्य क्या है?

(i) मीडिया के सामाजिक उत्तरदायित्व को दर्शाना (ii) मीडिया कर्मियों की संवेदनशीलता को दर्शाना
(iii) मीडिया कर्मियों की संवेदनशून्यता को दर्शाना (iv) मीडिया की परंपरा को बताना

(ग) काव्यांश में कोष्ठक में लिखे शब्द संकेत करते हैं-

(i) परदे के पीछे की वास्तविकता (ii) मीडिया का बुरा बर्ताव
(iii) साक्षात्कार के प्रश्न (iv) विकलांग व्यक्ति की मानसिकता

(घ) निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए सही कथन/कथनों वाले विकल्प का चयन कीजिए-

कथन: दूरदर्शन पर शारीरिक विकलांग व्यक्ति का साक्षात्कार लिया जाता है।
कारण: दूरदर्शन वाले उसका दुख बाँटना चाहते हैं।

(i) कथन सही है, लेकिन कारण ग़लत है।

(ii) कथन ग़लत है, लेकिन कारण सही है।

(iii) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किन्तु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(iv) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ङ) 'हम एक दुर्बल को लाएँगे' पंक्ति में दुर्बल किसके लिए कहा गया है?

(i) कवि के लिए (ii) कार्यक्रम के संचालक के लिए

(iii) अपाहिज के लिए (iv) दर्शकों के लिए

<u>उत्तर-</u> क- ii ख- iii ग- i घ- i ड.- iii

<u>काव्यांश-2</u>

फिर हम परदे पर दिखलाएँगे
फूली हुई आँख की एक बड़ी तसवीर
बहुत बड़ी तसवीर
और उसके होंठों पर एक कसमसाहट भी
(आशा हैं आप उसे उसकी अपंगता की पीड़ा मानेंगे)
एक और कोशिश,
दर्शक,
धीरज रखिए
देखिए,
हमें दोनों एक संग रुलाने हैं
आप और वह दोनों
(कैमरा, बस करो,
नहीं हुआ,
रहने दो
परदे पर वक्त की कीमत है)
अब मुसकुराएँगे हम
आप देख रहे थे
सामाजिक उद्देश्य से युक्त कार्यक्रम
(बस थोड़ी ही कसर रह गई)

(क) कार्यक्रम संचालक परदे पर फूली हुई आँख की तसवीर क्यों दिखाना चाहता है?

(i) उनके कष्टों को बताकर कार्यक्रम प्रभावी बनाना (ii) उनके प्रति सहानुभूति दिखाना

(iii) अपाहिजों को समाज के सामने लाना (iv) उनकी वास्तविकता बताना

(ख) 'एक और कोशिश' इस पंक्ति का क्या तात्पर्य है?

(i) अपाहिज को समझाने की (ii) अपाहिज के कष्ट दूर करने की

(iii) अपाहिज से मनमाना व्यवहार करने की (iv) अपाहिज को घर भेजने की

(ग)काव्यांश में 'आप' और 'वह' प्रयुक्त हुआ है-

(i) दर्शक और संवाददाता के लिए (ii) मीडियाकर्मी और कैमरामैन के लिए

(iii) दर्शक और विकलांग के लिए (iv) विकलांग और संवाददाता के लिए

(घ) निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए सही कथन/कथनों वाले विकल्प का चयन कीजिए -
कथन I : दर्शक उस अपंग व्यक्ति के रोने का इंतज़ार करते हैं।
कथन II: दर्शक भी दूरदर्शन पर उस अपंग व्यक्ति के दुख दर्द को उसके मुख से सुनना चाहते हैं।
कथन III : केवल सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति हेतु अपाहिज पर कार्यक्रम बनाया जाता है।

(i) केवल III (ii) I और II (iii) II और III (iv) I,II और III

(ङ) 'परदे पर वक्त की कीमत है'- पंक्ति से प्रश्नकर्ता के किस नज़रिए का पता चलता है?

(i) व्यावसायिकता का (ii) संवेदनशीलता का (iii) सकारात्मकता का (iv) सहानुभूतिपूर्ण भाव का

उत्तर- क- i ख- iii ग- iii घ- ii ड.- i

वर्णनात्मक प्रश्न-

प्रश्न (1) 'कैमरे में बंद अपाहिज करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है- स्पष्ट कीजिए। **CBSE 2025, 26**

उत्तर- कैमरे में बंद अपाहिज कविता में मीडिया के लोगों की व्यावसायिक मानसिकता तथा संवेदनहीनता को उजागर किया गया है। मीडिया के लोग अपनी मन-मानी कर अपाहिज व्यक्ति से स्टूडियो में बेहूदे प्रश्न पूछते हैं, जैसे- आप क्या अपाहिज हैं?, आप अपाहिज क्यों हैं?, आपको अपाहिज होकर कैसा महसूस हो रहा है? आदि। जब अपाहिज व्यक्ति इन प्रश्नों से दुखी होकर रोने लगता है और कार्यक्रम लोकप्रिय हो जाता है। इस प्रकार अपाहिज की पीड़ा को बेचकर वे लोकप्रियता और लाभ कमाने की कोशिश करते हैं।

प्रश्न (2) हम समर्थ शक्तिवान और हम एक दुर्बल को लाएँगे पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया है?

उत्तर- हम समर्थ शक्तिवान- मीडिया के लोग अपने आप को सबसे अधिक ताकतवर मानते हैं। वे मानते हैं कि हम स्टूडियो में अपनी मनमानी कर कुछ भी कर सकते हैं।

हम एक दुर्बल को लाएँगे-अपाहिज व्यक्ति को मीडिया के लोग दुर्बल, कमज़ोर और लाचार मानते हैं और अपनी मनमानी का मौका ढूँढ़ते हैं।

इस प्रकार कवि ने मीडिया के लोगों की क्रूर व्यावसायिकता और संवेदनहीनता पर व्यंग्य किया है।

प्रश्न (3) परदे पर वक्त की कीमत है कहकर कवि ने साक्षात्कार के प्रति अपना नज़रिया किस रूप में रखा है?

उत्तर- परदे पर वक्त की कीमत है- कवि ने मीडिया के लोगों (साक्षात्कार लेने वालों) के व्यावसायिक नज़रिए का पता चलता है। उनके लिए अपाहिज की पीड़ा का कोई महत्त्व नहीं बल्कि उनका उद्देश्य टी.वी. के परदे पर कार्यक्रम को लोकप्रिय बनाकर अधिक धन कमाना है।

प्रश्न (4) यदि शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति और दर्शक, दोनों एक साथ रोने लगेंगे, तो प्रश्नकर्ता का कौन-सा उद्देश्य पूरा होगा?

उत्तर- यदि शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति और दर्शक, दोनों एक साथ रोने लगेंगे तो प्रश्नकर्ता का यह उद्देश्य पूरा होगा कि उसका कार्यक्रम लोकप्रिय, भावनापूर्ण और करुणापूर्ण हो जाएगा। साथ ही वे अपंग व्यक्ति की पीड़ा व करुणा को बेचकर अधिक से अधिक धन कमा सकेंगे, साथ ही दिखावटी रूप से सामाजिक उद्देश्य भी पूरा हो जाएगा।

अवधारणा मानचित्र

पाठ-5 उषा- शमशेर बहादुर सिंह

मूलभाव-

- ‘उषा’ कविता भोर से सूर्योदय तक पल-पल बदलते प्रकृति-चित्रों और जीवंत बिंबों का सुंदर वर्णन है।
- सुबह का आकाश गहरे नीले से राख जैसे रंग में बदलता दिखाया गया है।कवि ने आकाश को राख से लीपे हुए चौके के समान बताया है जिसमें नमी है।
- सूर्योदय के समय आकाश में हल्की लालिमा फैलने लगती है।यह दृश्य काली स्लेट पर लाल चॉक से लिखने और काले पत्थर पर लाल केसर मलने जैसा प्रतीत होता है।
- अंत में सूरज की किरणें नीले जल में झिलमिलाती सुंदर युवती के समान प्रतीत होती हैं।

काव्यांश

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे , भोर का नभ, राख से लीपा चौका, (अभी गीला पड़ा है(बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से कि जैसे धुल गई हो, स्लेट पर या लाल खड़िया चाक,	मल दी हो किसी ने नील जल में या किसी की गौर झिलमिल देह जैसे हिल रही हो। और .... जादू टूटता हैं इस उषा का अब सूर्योदय हो रहा हैं।

(क) कवि ने प्रातःकालीन वातावरण की समानता नीले शंख से क्यों की है?

(i) भोर में नीला आकाश शंख-सा दिखने के कारण (ii) कवि को नीला रंग पसंद होने के कारण

(iii) केवल नए उपमान का प्रयोग करने के कारण (iv) उपरोक्त सभी कारणों से

(ख) अभी गीला पड़ा है, का तात्पर्य है-

(i) नए जीवन का उदय (ii) वातावरण में नमी

(iii) मैदान गीला है (iv) वातावरण में शुष्कता

(ग) कॉलम-I को कॉलम-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कॉलम 1	**कॉलम 2**
A काली सिल पर लाल केसर	1 ग्रामीण बच्चों की गतिशीलता
B राख से लीपा चौका	2 काले आसमान में लालिमा
C स्लेट पर या लाल खड़िया चाक	3 नभ का सुरमई रंग

(i) A (1), B (2), C (3) (ii) A (3), B (1), C (2)

(iii) A (2), B (1), C (3) (iv) A (2), B (3), C (1)

(घ) उषा का जादू- का तात्पर्य है-

(i) केवल तालाब का दृश्य (ii) आसमान के बदलते रंग

(iii) महिलाओं का स्नान करना (iv) पानी का नीला रंग

(ङ) 'नील जल में या किसी की, गौर झिलमिल देह'- का वर्णन किस अनुभूति से सम्बन्धित है?

(i) निर्मलता और उज्ज्वलता (ii) कृत्रिमता और पवित्रता

(iii) कोमलता और सुन्दरता (iv) विस्मय और रहस्य

<u>उत्तर-</u> क- i ख- ii ग- iv घ- ii ङ.- i

<u>वर्णनात्मक प्रश्न-</u>

प्रश्न (1) कविता के किन उपमानों को देखकर कहा जा सकता है कि उषा गाँव की सुबह का गतिशील शब्दचित्र है? CBSE 2024

उत्तर- 1. <u>आसमान नीले शंख व गीली राख के समान-</u> आसमान में नमी है। गाँव की महिलाएँ भोर में ही अपना चूल्हा-चौका लीपकर अपनी दिनचर्या शुरू करती है। भोर का नभ मंदिर में पूजा के पवित्र शंख के समान प्रतीत हो रहा है।

2. <u>काली सिल पर लाल केसर, स्लेट पर लाल चाक-</u> काले आसमान में सूर्य की हल्की लालिमा है। गाँव कीस्त्रियों द्वारा सुबह जल्दी ही सिल पर केसर पीसी गई हो या पुरुषों द्वारा पूजा की तैयारी की गई हो और बच्चे काली स्लेट पर लाल चाक से लिखकर अपनी पढ़ाई कर रहे हैं।

3. <u>गौर झिलमिल देह-</u> सूर्य की किरणें तालाब पर मानवीय आकृति जैसी लगती है। गाँव की महिलाएँ सुबह जल्दी ही तालाब में स्नान कर लेती है।

प्रश्न (2) 'नील जल में या किसी की /गौर झिलमिल देह / जैसे हिल रही हो' पंक्तियों के सन्दर्भ में लिखिए कि उषा को किस रूप में चित्रित किया है? CBSE 2026

उत्तर- (i) उषाकाल में उदित होते हुए सूर्य का गौरवर्णीय युवती के रूप में मानवीकरण

(ii) प्राकृतिक सौन्दर्य का सजीव चित्रण

(iii) नीले आकाश रूपी सरोवर से स्नान कर निकली युवती की भांति सूर्य का झिलमिलाना

प्रश्न (3) उषा का जादू क्या है? उषा का जादू कब टूटता है?

उत्तर- उषाकाल में (भोर से सूर्योदय तक) आसमान में कई रंग जैसे नीला, राख जैसा, लालिमा लिए काला रंग आदि आसमान में दिखाई देते हैं, यही उषा का जादू है।सूर्योदय होने और सूर्य की चमक के कारण उषा का जादू टूटता है।

अवधारणा मानचित्र

पाठ-6 बादल राग- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

मूलभाव-

- कवि बादलों को देखकर कल्पना करता हैकि बादल हवारूपी समुद्र में तैरते हुए अमीरों के क्षणिक सुखों पर दुख की छाया है। क्रांतिदूत बादल युद्ध की नौका के समान लगते हैं।
- बादल की गर्जना को सुनकर धरती के अंदर सोए हुए बीज या अंकुर नए जीवन की आशा से अपना सिर ऊँचा उठाकर देखने लगते हैं।
- आकाश में तैरते बादल ऐसे लगते हैं मानो वज्रपात से सैकड़ों वीर धराशायी हो गए हो और उनके शरीर क्षत-विक्षत है।
- कवि बादलों को क्रांति-दूत की संज्ञा देता है। बादलों का गर्जन किसानों व मजदूरों को नवनिर्माण की प्रेरणा देता है। क्रांति से सदा आम आदमी को ही फ़ायदा होता है।
- कमजोर शरीर वाले कृषक बादलों को अधीर होकर बुलाते हैं क्योंकि पूँजीपति वर्ग ने उनका अत्यधिक शोषण किया है।

काव्यांश-1

तिरती हैं समीरसागर पर- अस्थिर सुख पर दुख की छाया- जग के दग्ध हृदय पर निर्दय विप्लव की प्लावित माया- यह तेरी रणतरी-	भरी आकांक्षाओं से, घन, भेरीगर्जन से सजग सुप्त अंकुर- उर में पृथ्वी के, आशाओं से नवजीवन की, ऊँचा कर सिर, तक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल!

(क) 'अस्थिर सुख पर दुख की छाया' पंक्ति में दुःख की छाया किसे कहा गया है?

(i) क्रांतिदूत बादलों को (ii) अमीरों को (iii) पहाड़ों को (iv) नाव को

(ख) 'यह तेरी रण-तरी' पंक्ति में 'रण-तरी' किसे कहा गया है?

(i) युद्ध में तैरने वाली नाव (ii) युद्ध की आकांक्षाएँ

(iii) युद्ध रूपी नौका अर्थात बादल (iv) पहाड़ रूपी नाव को

(ग) कथन और कारणको पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए:

कथन: बादल को क्रांतिदूत के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

कारण: बादल के बरसने से अग्नि शांत हो जाती है।

(i) कथन सही है, कारण ग़लत है

(ii) कथन ग़लत है, कारण सही है

(iii) कथन तथा कारण दोनों सही हैं। कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(iv) कथन तथा कारण दोनों सही हैं। कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(घ) क्रांति का सबसे अधिक लाभ किसे मिलता है?

(i) मध्यम वर्ग को (ii) गरीबों व आम आदमी को

(iii) अमीरों व पूँजीपतियों को (iv) उदासीन वर्ग को

(ङ) कॉलम-I को कॉलम-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कॉलम 1	**कॉलम 2**

A समीर- सागर	1 क्रांति
B प्लावित-माया	2 वायुरूपी समुद्र
C विप्लव	3 शोषक-वर्ग की धन-संपत्ति

विकल्प :

(i) A (1), B (2), C (3)　　(ii) A (2), B (3), C (1)

(iii) A (2), B (1), C (3)　　(iv) A (3), B (2), C (1)

<u>उत्तर-</u>　**क- i**　**ख- iii**　**ग-i**　**घ- ii**　**ड.- ii**

<u>काव्यांश-2</u>

रुद्ध कोष हैं, क्षुब्ध तोष अंगनाअंग से लिपटे भी- आतंक अंक पर काँप रहे हैं। धनी, वज्र!गर्जन से बादल- त्रस्त नयनमुख ढाँप रहे हैं।-	जीर्ण बाहु, हैं शीर्ण शरीर, तुझे बुलाता कृषक अधीर, ऐ विप्लव के वीरचूस लिया है उसका सार!, हाड़ ,मात्र ही है आधार- ऐ जीवन के पारावार !

(क) 'चूस लिया है उसका सार' पंक्ति में किसकी ओर संकेत किया गया है?

(i) बादल की ओर　　(ii) शोषित वर्ग की ओर

(iii) शोषक वर्ग की ओर　　(iv) धनी वर्ग की ओर

(ख) 'ऐ जीवन के पारावार!' पंक्ति में 'पारावार' किसे कहा गया है?

(i) समुद्र को　　(ii) बादल को

(iii) जीवन को पार लगाने वाले भगवान को　(iv) पूँजीपतियों को

(ग) कथन और कारणको पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए:

कथन : अत्यधिक शोषण के कारण किसानों की दयनीय स्थिति को चित्रित किया गया है।

कारण : शोषण के कारण किसान का शरीर कृश हो गया है।

(i) कथनसही है, कारण ग़लत है।

(ii) कथन ग़लत है, कारण सही है।

(iii) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(iv) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(घ) कॉलम-I को कॉलम-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कॉलम 1	**कॉलम 2**
A रुद्ध	1 कमजोर
B क्षुब्ध	2 खिन्न
C जीर्ण	3 एकत्रित रुका हुआ/

विकल्प :

(i) A (1), B (2), C (3)　　(ii) A (3), B (1), C (2)

(iii) A (2), B (1), C (3)　　(iv) A (3), B (2), C (1)

(ङ) मुख-ढाँपना किस मानसिकता का द्योतक है?

(i) सहयोगी मानसिकता (ii) रूढ़िवादी मानसिकता

(iii) भयभीत मानसिकता (iv) फैशन की मानसिकता

<u>उत्तर-</u> क- ii ख- ii ग-iii घ- iv ड.- iii

<u>वर्णनात्मक प्रश्न-</u>

प्रश्न (1) 'अस्थिर सुख पर दुख की छाया' पंक्ति में दुख की छाया किसे कहा गया है और क्यों? CBSE 2026

उत्तर- <u>अस्थिर सुख-</u> अमीरों ने गरीबों का शोषण कर जो अस्थाई सुख पाया है।

<u>दुख की छाया-</u> बादलदुख की छाया बादलों को कहा गया है क्योंकि बादल अमीरों के अस्थाई सुख पर मँडरा कर व क्रांति कर उसे खत्म करने वाले हैं। अमीरों ने गरीबों का शोषण कर जो सुख पाया है, वह अस्थाई है और बादल वर्षा कर उसे नष्ट करने वाले हैं।

प्रश्न (2) 'अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर'- पंक्ति में किसकी ओर संकेत किया गया है? CBSE 2024

उत्तर- <u>अशनि-पात का अर्थ है-</u> बिजली गिरना, क्रांति होना।

<u>वीर का अर्थ है-</u> ऊँचे पहाड़, अमीर व पूँजीपति।

जिस प्रकार जब बिजली गिरती है तब ऊँचे-ऊँचे पहाड़ टूट-फूट जाते हैं व उन्हें नुकसान उठाना पड़ता है। उसी प्रकार जब क्रांति होती है तब सबसे पहले बड़े-बड़े पूँजीपतियों व शोषक वर्ग को नुकसान उठाना पड़ता है।

प्रश्न (3) 'बादल राग' कविता के आधार पर भाव स्पष्ट कीजिए-'विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते।' क्या 'बादल राग' कविता को लघुमानव की खुशहाली का राग कहा जा सकता है? पक्ष याविपक्ष में तर्क लिखिए। CBSE 2025

उत्तर- <u>विप्लव रव का अर्थ है -</u> बादलों की गर्जना, क्रांति की आवाज।

<u>छोटे का अर्थ है-</u> छोटे पौधे तथा गरीब, मजदूर, किसान व आम आदमी।

जिस प्रकार जब बादल गरजते है और वर्षा करते हैं, तब छोटे-छोटे पौधे तेजी से पनपते हैं। उसी प्रकार जब क्रांति होती है तब गरीब व आम आदमी को लाभ मिलता है तथा अमीरों व शोषक वर्ग को नुकसान उठाना पड़ता है। अतः 'बादल राग' लघुमानव की खुशहाली का राग है।

प्रश्न (4) बादलों के आगमन से प्रकृति में होने वाले किन परिवर्तनों को कविता रेखांकित करती है?

उत्तर- कविता में बादलों के आगमन से प्रकृति में होने वाले परिवर्तन इस प्रकार है -

(i) आसमान में बादल गरज रहे हैं।बहुत तेज़ बारिश हो रही है।

(ii) ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर बिजली गिर रही है और वे टूट-फूट रहे हैं।

(iii)छोटे-छोटे पौधे पनप रहे हैं। कमलों से पानी टपक रहा है।

प्रश्न (5) 'बादल राग' कविता में 'ऐ विप्लव के वीर' किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर- इस कविता में 'ऐ विप्लव के वीर' बादल को कहा गया है। बादल घनघोर वर्षा करता है तथा बिजलियाँ गिराता है। इससे सारा जनजीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। बादल क्रांति का प्रतीक है।

क्रांति आने से बुराई रूपी कीचड़ समाप्त हो जाता है तथा आम व्यक्ति को जीने योग्य स्थिति मिलती हैं।

प्रश्न (6) क्रांति की गर्जना का शोषक वर्ग पर क्या प्रभाव पड़ता है? उनका मुख ढाँपना किस मानसिकता का द्योतक है? 'बादल राग' कविता के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर- शोषक वर्ग ने आर्थिक साधनों पर एकाधिकार जमा लिया है, परंतु क्रांति की गर्जना सुनकर वह अपनी सत्ता को खत्म होते देखता है। वह बुरी तरह भयभीत हो जाता है। उसकी शांति समाप्त हो जाती है। शोषक वर्ग का मुख ढाँपना उनकी कमजोर स्थिति को दर्शाता है। क्रांति के परिणामों से वे भयभीत हैं।

<u>उच्चस्तरीय चिंतन कौशल व दक्षता आधारित प्रश्न-</u>

प्रश्न (1) 'बादल राग' कविता में 'जीवन के पारावार' किसे कहा गया है और क्यों? CBSE 2026

उत्तर- 'जीवन के पारावार' बादलों को कहा गया है क्योंकि गरमी से तपती धरती पर वर्षा कर हरियाली के रूप में फसलों एवं पेड़-पौधों को नवजीवन प्रदान करते हैं। साथ ही भूख प्यास से त्रस्त लोगों के मन में ख़ुशी और आनंद का भाव भरते हैं। सर्वहारा वर्ग में नवजीवन की आशा का संचार करते हैं।

प्रश्न (2) 'बादल राग' कविता मेंकवि ने ऐसा क्यों कहा है कि 'सदा पंक पर ही होता जल-विप्लव-प्लावन'? CBSE 2025,26

उत्तर- <u>पंक-</u> शोषक वर्ग (पूँजीपति, साधन-संपन्न) **<u>विप्लव-</u>** क्रांति

जिस प्रकार जल प्लावन हमेशा पंक (कीचड़) पर ही होता है उसी प्रकार जब गरीबों व आम आदमी का शोषण अधिक हो जाता है तो सामाजिक क्रांति का सूत्रपात हमेशा गरीब, मजदूर व आम आदमी (शोषित वर्ग) द्वारा होता है। इस क्रांति से शोषक वर्ग का पतन होता है और आम आदमी को शोषण से मुक्ति मिलती है।

<u>अवधारणा मानचित्र</u>

पाठ-7 कवितावली (उत्तरकांड से), लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप- तुलसीदास

कवितावली (उत्तर कांड से) मूलभाव-

- पहले कवित्त में तुलसी ने समाज में व्याप्त भुखमरी का दारुण चित्रण किया है। मजदूर, भिखारी, किसान,व्यापारी, नौकर आदि सभी अपना पेट भरने के लिए अनैतिक,अधार्मिक कर्म करने को मजबूर है। वे अपने पेट की आग को शांत करने के लिए अपनी संतान तक को बेचने के लिए तैयार हो जाते है। तुलसीदास जी ने पेट की आग का शमन श्रीराम रूपी मेघ की कृपा रूपी वर्षा द्वारा बताया है।
- दूसरे कवित्त में प्रकृति और शासन की विषमता से उपजी बेकारी व गरीबी की पीड़ा का चित्रण हुआ है। दरिद्रता रूपी इस रावण से मुक्ति भी कवि को राम-भक्ति में दिखाई देती है।
- तीसरे छंद (सवैया) में समाज में व्याप्त जातिवाद और ऊँच-नीच के भेदभाव का खंडन किया है। वे अपने-आप को राम का गुलाम मानते हैं।

काव्यांश -1

किसबी, किसान-कुल, बनिक, भिखारी, भाट,
चाकर, चपल नट, चोर, चार, चेटकी।
पेट को पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटत गहन-गन अहन अखेटकी।।
ऊँचे-नीचे करम, धरम-अधरम करि,
पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी।
'तुलसी' बुझाइ एक राम घनस्याम ही तें,
आगि बड़वागितें बड़ी है आगि पेट की।।

(क) काव्यांश के अनुसार विद्या प्राप्त करने में लगे लोगों का उद्देश्य इनमें से क्या है?

(i) ज्ञानवान बनना (ii) समाज में शिक्षा का बढ़ावा देना।

(iii) जीवन यापन का साधन बनाना (iv) सामाजिक बुराइयों दूर करने में सक्षम बनना

(ख) निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए सही कथन /कथनों वाले विकल्प का चयन कीजिए-

कथन - I संसार में पेट की आग सबसे छोटी है।

कथन- II पेट की आग समुद्र की आग से भयंकर होती है।

कथन - III भूख राम रूपी घनश्याम की कृपा से ही शांत हो सकती है।

कथन- IV बड़वाग्नि पेट की आग से भयंकर होती है।

(i) केवल कथन I सही है। (ii) केवल कथन II सही है।

(iii) केवल कथन II और III सही हैं। (iv) केवल कथन I और IV सही हैं।

(ग) 'किसबी, किसान-कुल'- पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार है -

(i) अनुप्रास (ii)उपमा (iii) रूपक (iv) मानवीकरण

(घ) 'पेटको पढ़त' और 'बेचत बेटा-बेटकी' शब्दों से समाज की किस स्थिति का पता चलता है?

(i) अत्यधिक संपन्नता का (ii) चरम गरीबी और बेबसी का

(iii) शिक्षा के प्रति जागरूकता का (iv) पारिवारिक कटुता

(ङ) काव्यांश का वर्ण्य विषय है -

(i) युगीन सामाजिक विषमता का वर्णन (ii) युगीन आर्थिक विषमता का वर्णन

(iii) समाज में बढ़ते अंधविश्वासों का वर्णन (iv) श्रमहीन लोगों के प्रयासों का वर्णन

<u>उत्तर-</u> **क- iii** **ख- iii** **ग-i** **घ- ii** **ड.- ii**

काव्यांश - 2

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ।
काहूकी बेटीसों बेटा न व्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ॥
तुलसी सरनाम गुलामु है रामको, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।
माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबोको एकु न दैबेको दोऊ॥

(क) काव्यांश का वर्ण्य विषय है -

(i) समाज की आर्थिक स्थिति का वर्णन (ii) जाति-पाँतिगत भेदभाव का वर्णन

(iii) समाज में विद्यमान समानता का वर्णन (iv) धर्म के नाम पर हो रहे आडम्बरों का वर्णन

(ख) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कथन: परंपरावादी एवं रूढ़िग्रस्त समाज में रहते हुए भी तुलसी निर्विकार जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

कारण: वे सामाजिक उत्तरदायित्वों से मुक्त थे।

(i) कथन और कारण दोनों ग़लत हैं।

(ii) कारण सही है,लेकिन कथन ग़लत है।

(iii) कथन सही है, लेकिन कारण कथन की ग़लत व्याख्या करता है।

(iv) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ग) 'काहू की बेटी सों बेटा न ब्याहब' पंक्ति के माध्यम से कटाक्ष किया गया है -

(i) समाज में व्याप्त जाति-व्यवस्था पर (ii) जाति आधारित वैवाहिक प्रथा पर

(iii) पुरुष-प्रधान समाज की मानसिकता पर (iv) समाज की विघटनकारी व्यवस्था पर

(घ) 'लैबो को एकु न दैबो को दोऊ'- से आशय है -

(i) पैसे का लेना देना नहीं करना (ii) किसी से कोई बुरी बात न कहना

(iii) किसी से कोई सम्बन्ध न रखना (iv) बिना वजह की मुसीबत होना

(ङ) तुलसीदास स्वयं को किसका दास मानते हैं?

(i) नियमों का (ii) परिस्थितियों का (iii) स्वयं का (iv) राम का

<u>उत्तर-</u> **क- ii** **ख- iii** **ग-ii** **घ- iii** **ड.- iv**

<u>वर्णनात्मक प्रश्न-</u>

प्रश्न (1) कवितावली में उदधृत छंदों के आधार पर स्पष्ट करें कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है? CBSE 2026

उत्तर-

(i) तुलसी ने लिखा है कि उस समय बेरोजगारी व भुखमरी की समस्या थी।

(ii) किसान, व्यापारी, नौकर, भिखारी सभी बेरोजगार थे।

(iii) आम-आदमी बेरोजगारी के कारण चिंतित था और पेट की आग बुझाने के लिए लोग अच्छे-बुरे काम करते थे।

(iv) उस समय सामंत व राजा अमीर थे परन्तु जनता गरीब थी। गरीबी के कारण लोग अपनी संतान तक को बेचने के लिए तैयार थे। सभी ओर विवशता का वातावरण था।

इससे स्पष्ट है कि तुलसी को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ थी।

प्रश्न (2) पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है- तुलसी का यह काव्य सत्य क्या इस समय का भी युग-सत्य है? तर्क संगत उत्तर दीजिए। CBSE 2025

उत्तर :- तुलसी के युग का यह सत्य आज भी सत्य है। तुलसी के अनुसार पेट की आग का शमन राम रूपी घनश्याम ही कर सकता है। उसी प्रकार प्रकृति (ईश्वर) की कृपा के बिना बादल नहीं आएँगे और बारिश नहीं होगी, जिससे अन्न भी पैदा नहीं होगा। प्रकृति की कृपा से अन्न पैदा होता है व पेट की आग बुझती है। अतः यह वर्तमान युग का भी सत्य है।

प्रश्न (3) "धूत कहो : ... वाले छंद में ऊपर से सरल व निरीह दिखलाई पड़ने वाले तुलसी की भीतरी असलियत एक स्वाभिमानी भक्त हृदय की है। इससे आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर- हम इस बात से पूर्णत: सहमत है कि तुलसी स्वाभिमानी भक्त हृदय व्यक्ति है क्योंकि धूत कहो.....वाले छंद में भक्ति की गहनता और सघनता में उपजे भक्त हृदय के आत्मविश्वास का सजीव चित्रण है,जिससे समाज में व्याप्त जाति-पाँति और दुराग्रहों के तिरस्कार का साहस पैदा होता है। वे सच्चे राम भक्त हैं तथा उन्हीं के प्रति समर्पित हैं। वे कहते हैं कि चाहे कोई उन्हें धूर्त कहे या योगी कहे, राजपूत कहे या जुलाहा कहे, उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। वे तो संसार-प्रसिद्ध राम के गुलाम है।

उच्चस्तरीय चिंतन कौशल व दक्षता आधारित प्रश्न-

प्रश्न (1) 'माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबोको एकु न दैबको दोऊ'-आशय स्पष्ट कीजिए। CBSE 26

उत्तर- तुलसीदास को समाज के उलाहनों-तानों से कोई फर्क नहीं पड़ता और वे स्वाभिमानी तथा निडर हैं। वे श्रीराम का नाम लेकर दिन बिताते है,माँग कर खाते है और मस्जिद में सो जाते है। उन्हें किसी से कुछ लेना देना नहीं है। उन्होंने समाज की रूढ़िवादिता को खारिज करते हुए समन्वय की स्थापना का प्रयास किया है। वे सांसारिक मोह-माया से परे हैं।

प्रश्न (2) 'कवितावली' में समाज की किन सामाजिक बुराइयों को चित्रित किया है? CBSE 26

उत्तर- कवि ने अपने समाज की निम्नलिखित सामाजिक बुराइयों को चित्रित किया है-

(i) गरीबी, अनाचार, बेरोजगारी, आर्थिक विषमता, नैतिक पतन।

(ii) उदरपूर्ति के लिए नैतिक-अनैतिक कार्यों को करना, यहाँ तक कि अपने बच्चों को बेचा देना।

(iii) समाज में व्याप्त छुआ-छूत और धर्म को बाँटने वाले दुराग्रह एवं पाखंड।

लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप-

मूलभाव-

- इसमें लक्ष्मण को शक्ति बाण लगने व उनकी मूर्च्छा से संबंधित प्रसंग है।
- इस प्रसंग में ईश्वरीय राम को सामान्य मानव के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

- ❖ मूर्च्छित लक्ष्मण को देखकर राम विलाप करते हैं और उनका भाई के प्रति प्रेम प्रकट होता है।
- ❖ इस घने शोक परिवेश में हनुमान का संजीवनी लेकर आ जाना करुण रस के बीच वीर रस के उदय को दिखाता है।

काव्यांश -1

सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि मम बच बिकलाई।।
जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पितु बचन मनतेउँ नहिं ओहू।।
सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।।
अस बिचारि जियँ जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।।

(क) 'जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू'- उस स्थिति में राम क्या करते?

(i) पिता के सभी वचनों को नहीं मानते (ii) पिता के द्वारा दिए वनवास के वचन को नहीं मानते
(iii) माता के वचनों को नहीं मानते (iv) भाई लक्ष्मण के वचन को नहीं मानते

(ख) राम के अनुसार संसार में बार-बार क्या प्राप्त किया जा सकता है?

(i) पुत्र, भाई और परिवार (ii) धन, पत्नी और भाई
(iii) भवन, पुत्र और धन (iv) भ्राता, पत्नी और पुत्र

(ग) निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए सही कथन/कथनों वाले विकल्प का चयन कीजिए-
कथन- I लक्ष्मण राम के सहोदर भ्राता थे।
कथन- II पुत्र, धन, पत्नी, भवन और परिवार बार-बार मिल जाते हैं।
कथन- III काव्यांश में राम के व्याकुल वचनों का उल्लेख है।

(i) केवल कथन I सही है। (ii) केवल कथन II सही है।
(iii) केवल कथन II और III सही हैं। (iv) केवल कथन I और III सही हैं।

(घ)राम इस काव्यांश में किस भाव को व्यक्त कर रहे हैं?

(i) राजसुख की इच्छा (ii) बंधु प्रेम और उसके वियोग का दुःख
(iii) युद्ध की तैयारी (iv) क्रोध और प्रतिशोध

(ङ) कॉलम-I को कॉलम-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कॉलम 1	**कॉलम 2**
A बित	1 बेचैन
B बिकलाई	2 प्रेम
C अनुराग	3 धन

विकल्प :

(i) A (1), B (2), C (3) (ii) A (3), B (1), C (2)
(iii) A (2), B (1), C (3) (iv) A (3), B (2), C (1)

<u>उत्तर-</u> क- ii ख- iii ग-iii घ- ii ड.- ii

काव्यांश-2

जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही।।
जैहउँ अवध कवन मुहुँलाई। नारि हेतु प्रिय भाई गँवाई।
बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं।।

(क) पंक्तियों में राम अपनी किस मनोदशा को व्यक्त कर रहे हैं?

(i) अपनी वीरता को (ii) अपनी प्रसन्नता को
(iii) अपनी विवशता और असहायता को (iv) क्रोध और प्रतिशोध को

(ख) लक्ष्मण के बिना राम अपने जीवन की तुलना किससे नहीं कर रहे हैं?

(i) पंख रहित पक्षी से (ii) मणि रहित साँप से
(iii) सूंड़ रहित हाथी से (iv) हाथ के बिना मनुष्य से

(ग) 'जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई।'- पंक्ति में प्रदर्शित भाव है-

(i) शोक का (ii) लज्जा का (iii) घृणा का (iv) भय का

(घ) 'बरु अपजस सहतेउँ जगमाहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं।।'
पंक्ति के आधार पर कथन और कारणको पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए:
कथन : वक्ता संसार में अपयश सहने को तैयार है।
कारण : उसके लिए नारी की हानि सबसे बड़ी क्षति है।

(i) कथन सही है, कारण ग़लत है।
(ii) कथन ग़लत है, कारण सही है।
(iii) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।
(iv) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(घ) काव्यांश में किस भाषा का प्रयोग है?

(i) हिंदी (ii) अवधी (iii) ब्रज (iv) भोजपुरी

उत्तर- क- iii ख- iv ग-ii घ- i ड.- ii

वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न (1) भ्रातृशोक में हुई राम की दशा को कवि ने प्रभु की नर लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है। क्या आप इससे सहमत हैं? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। अथवा
'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप' प्रसंग के राम अवतारी पुरुष न होकर एक सामान्य मानव थे, उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। CBSE 2026

उत्तर- हाँ, हम इससे सहमत हैं कि भाई के शोक का विलाप एक सामान्य मनुष्य की तरह कर रहे थे, जो इस प्रकार है-

(i) राम के अनुसार भाई का स्थान कोई नहीं ले सकता।
(ii) पुत्र, धन, पत्नी, भवन व परिवार बार-बार मिल सकते परंतु भाई नहीं।
(iii) भाई के बिना राम अपना जीवन महत्त्वहीन मानते हैं। जैसे- पंख के बिना पक्षी, सूंड़ के बिना हाथी और मणि के बिना साँप का जीवन।

प्रश्न (2) शोकग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया है? **CBSE 2024**

उत्तर- लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर राम रोने लगे जिसके कारण पूरी वानर सेना रोने लगी और शोक का भाव व करुण रस छा गया। इतने में हनुमान जी संजीवनी बूटी लेकर आ गए जिससे राम व वानर सेना में उत्साह का भाव व वीर रस उत्पन्न हो गया। इस प्रकार करुण रस में वीर रस का आविर्भाव हो गया।

<u>उच्चस्तरीय चिंतन कौशल व दक्षता आधारित प्रश्न-</u>

प्रश्न (1) भ्रातृ-शोक में डूबे राम के प्रलाप-वचन से स्त्री के प्रति कैसा सामाजिक दृष्टिकोण संभावित है?

उत्तर- राम के प्रलाप-वचन में नारी के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण दिखाई देता है। राम ने अपनी पत्नी के खो जाने से बढ़कर लक्ष्मण के मूर्छित हो जाने को महत्त्व दिया है। उन्हें इस बात का पछतावा होता है कि नारी के लिए मैंने भाई खो दिया है यह सबसे बड़ा कलंक है। यदि नारी खो जाए तो उसके खो जाने से कोई बड़ी हानि नहीं होती। नारी से बढ़कर तो भाई-बंधु हैं।

अवधारणा मानचित्र - लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप

<u>पाठ-8 रुबाइयाँ- फिराक गोरखपुरी</u>

<u>रुबाई छंद-</u> रुबाई उर्दू और फ़ारसी का एक छंद है जिसमें चार पंक्तियाँ होती हैं। पहली, दूसरी और चौथी पंक्ति में तुक मिलाया जाता है तथा तीसरी पंक्ति स्वच्छंद होती है।

<u>मूलभाव-</u>

- माँ के वात्सल्य और प्रेम का वर्णन किया गया है।
- जीवन में त्योहारों का महत्त्व दर्शाया है। जैसे- दीपावली और रक्षाबंधन
- बालक की जिद को माँ द्वारा शांत करना सूरदास जी के वात्सल्य-चित्रण से मेल खाता है।
- उर्दू मिश्रित हिंदी सरल भाषा एवं लोक भाषा का अद्भुत मिश्रण है।
- फिराक गोरखपुरी की रुबाइयों में हिंदी का एक घरेलू रूप दिखाता है, जिसकी भाषा सरल है।

काव्यांश-1

आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी हाथों पे झुलाती है उसे गोदभरी- रहरह के हवा में जो लोका देती है- गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी	नहला के छलके छलके निर्मल-जल से उलझे हुए गेसुओं में कंघी करके किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को जब घुटनियों में ले के हैं पिन्हाती कपड़े।

(क) कवि ने "चाँद के टुकड़े" जैसे बिंब का प्रयोग क्यों किया है?

(i) बच्चे की सुंदरता और मासूमियत दिखाने के लिए (ii) चाँद का वर्णन करने के लिए

(iii) प्रकृति का डर दिखाने के लिए (iv) समय का वर्णन करने के लिए

(ख) कथन और कारणको पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए:

कथन: माँ बच्चे की देखभाल अत्यंत स्नेह और अपनत्व के साथ करती है।

कारण: बच्चा माँ की हर क्रिया को प्रेमपूर्ण दृष्टि से देखता है।

(i) कथन सही है, कारण ग़लत है।

(ii) कथन ग़लत है, कारण सही है।

(iii) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(iv) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(ग) निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए सही कथन /कथनों वाले विकल्प का चयन कीजिए-

कथन- I माँ बच्चे को उपेक्षा के साथ देखती है।

कथन- II माँ बच्चे की देखभाल में स्नेह और ममता दिखाती है।

कथन- III बच्चा माँ को प्रेमपूर्ण दृष्टि से देखता है।

(i) केवल कथन I सही है। (ii) केवल कथन II सही है।

(iii) केवल कथन II और III सही हैं। (iv) केवल कथन I और III सही हैं।

(घ) माँ बच्चे को हवा में क्यों लोका देती है?

(i) उसे डराने के लिए (ii) उसे मनोरंजन के लिए (iii) उसे पढ़ाने के लिए (iv) उसे सुलाने के लिए

(ङ) काव्यांश में प्रयुक्त लोकभाषा के शब्दों का सही समूह है-

(i) आँगन, चाँद, माँ (ii) पिन्हाती, लोका देना, घुटनियाँ

(iii) निर्मल, कपड़े, गेसुओं (iv) छलके, प्यार, कंघी

<u>उत्तर-</u> क- i ख- iii ग-iii घ- ii ङ.- ii

<u>वर्णनात्मक प्रश्न-</u>

प्रश्न (1) फ़िराक की रुबाइयों में चित्रित घरेलू जीवन के बिम्ब लिखिए।

उत्तर- फ़िराक की रुबाइयों में चित्रित घरेलू जीवन के बिम्ब इस प्रकार हैं-

(i) माँ द्वारा बच्चे को गोद में लेकर आँगन में उछालकर (लोका देना) खुश करने का बिम्ब है।
(ii) माँ द्वारा बच्चे को नहलाने, कंघी करने व घुटनों के बीच पकड़कर कपड़े पहनाने का बिम्ब है।
(iii) दीवाली की शाम का बिम्ब जिसमें माँ बच्चे के घरौंदे (मिट्टी के घर) में दीया जलाकर उसे
(iv) खुश कर रही है।
(v) बच्चे का चाँद के लिए जिद करना और माँ द्वारा उसे शीशे में चाँद व बच्चे का मुँह
(vi) दिखाकर खुश करने का बिम्ब है।
(vii) रक्षाबंधन का बिम्ब जिसमें भाई-बहन के रिश्ते की तुलना बादल व बिजली से की गई है।

प्रश्न (2) शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है? अथवा टिप्पणी करें- सावन घटाएँ व रक्षाबंधन का पर्व।

उत्तर- सावन में जिस प्रकार बादल व बिजली का अटूट व गहरा रिश्ता होता है, उसी प्रकार रक्षाबंधन के पर्व पर जब बहन भाई के चमकदार राखी बाँधती है, तो उनका रिश्ता भी अधिक गहरा व चमकदार हो जाता है। यहाँ बादल व बिजली की तुलना भाई-बहन से की गई है।

उच्चस्तरीय चिंतन कौशल व दक्षता आधारित प्रश्न-

प्रश्न (1) 'गोदी के चाँद' और 'गगन के चाँद' के भावनात्मक रिश्ते को स्पष्ट करते हुए बताइए कि किसे अधिक महत्त्व दिया गया है व क्यों?

उत्तर- माँ अपने बच्चे को "गोदी का चाँद" कहती है, क्योंकि वह उसके लिए सबसे प्रिय और सुंदर है। आकाश का चाँद देखकर बच्चा उसे खिलौना समझकर पाने की जिद करता है। माँ उसे आईने में उसका प्रतिबिंब और चाँद दिखाकर खुश करती है। यहाँ मातृत्व-प्रेम के कारण बच्चे को सर्वोच्च महत्त्व दिया गया है।

अवधारणा मानचित्र

पाठ-9 छोटा मेरा खेत, बगुलों के पंख- उमाशंकर जोशी

छोटा मेरा खेत मूल भाव-

- 'छोटा मेरा खेत' खेती के रूपक में कवि-कर्म के हर चरण को बाँधने की कोशिश है। कवि को कागज का पन्ना एक चौकोर खेत की तरह प्रतीत होता है।
- कविता रूपी इस खेत में, किसी आँधी के प्रभाव से, एक बीज बोया जाता है। यह बीज कवि की कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है और इस प्रक्रिया में स्वयं गल जाता है, जिससे शब्दों के अंकुर फूटते हैं और कवि के विचार रचना का रूप ले लेते हैं।
- कविता में व्यक्त रस-धारा क्षणिक होते हुए भी अनंत काल तक चलती है, जो साहित्य की अमरता को दर्शाती है।

बगुलों के पंख मूलभाव-

- बगुलों के पंख कविता प्रकृति के एक सुंदर दृश्य को प्रस्तुत करती है। कवि काले बादलों से भरे आकाश में पंक्ति बनाकर उड़ते सफेद बगुलों को देखता है।
- वे काले बादलों के ऊपर तैरती हुई सायं काल की श्वेतकाया के समान प्रतीत होते हैं।
- यह दृश्य कवि को इतना मनोहारी है कि इनकी आँखें उस दृश्य से हटने का नाम ही नहीं लेती।
- कवि सब कुछ भूलकर उसमें खो जाता है। वह इस दृश्य के जादू से अपने को बचाने की गुहार लगाता है, लेकिन वह स्वयं को इससे बचा नहीं पाता।

काव्यांश-1

छोटा मेरा खेत चौकोना
कागज का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष;
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।

(क) कवि अपने छोटे खेत में कौन-से बीज बोता है?

(i) चावल के (ii) विचारों के (iii) ईर्ष्या के (iv) कागज़ के

(ख) कविने कवि-कर्म की तुलना किससे की है?

(i) भवन-निर्माण से (ii) शिक्षा -दीक्षा से (iii) कृषि-कर्म से (iv) व्यवसाय से

(ग) 'बीज गल गया निःशेष'- पंक्ति से क्या संकेत मिलता है?

(i) खेतों में फसल उगाने के लिए बीजों को मिट्टी में बोना पड़ता है।

(ii) रचना और विकास के लिए स्वयं का त्याग करना पड़ता है।

(iii) बीजों के गलने पर ही खेतों में फ़सल के अंकुर फूटते हैं।

(iv) कल्पना के संसर्ग बिना साहित्यिक कृति की रचना असंभव है।

(घ) कवि-कर्म की दृष्टि से 'अंधड़' हो सकता है-

(i) विचारों व अभिव्यक्ति का | (ii) भावनाओं के आवेग का

(iii) कवि के परिश्रम का | (iv) कल्पना व शब्दों का

(ङ) कॉलम-I को कॉलम-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कॉलम 1	कॉलम 2
A छोटा मेरा खेत	1 कागज़ का पन्ना
B अंकुर फूटना	2 साहित्यिक कृति का रूप धारण करना
C पल्लवित-पुष्पित होना	3 भावनाओं को शब्द मिलना

(i) A (1), B (3), C (2) | (ii) A (3), B (1), C (2)

(iii) A (1), B (2), C (3) | (iv) A (2), B (3), C (1)

<u>उत्तर-</u> **क- ii ख- iii ग-ii घ- ii ङ.- i**

<u>काव्यांश-2</u>

झूमने लगे फल,
रस अलौकिक,
अमृत धाराएँफूटतीं
रोपाई क्षण की,
कटाई अनंतता की
लुटते रहने से ज़रा भी नहीं कम होती।
रस का अक्षय पात्र सदा का
छोटा मेरा खेत चौकोना।

(क) 'झूमने लगे फल'- का आशय है-

(i) बीज अंकुरित होने लगे | (ii) फल हवा के संपर्क से झूमने लगे

(iii) परिश्रम का प्रतिफल मिलने लगा | (iv) बीज फूलों का रूप धारण करने लगे

(ख) रस का अक्षय-पात्र किसे कहा गया है?

(i) फलों को (ii) साहित्य को (iii) कृषि-कर्म को (iv) पुष्पों को

(ग) काव्यांश के मूल भाव के बारे में सही कथन है-

(i) कविता को व्यवसाय के रूप में देखा गया है।

(ii)इसमें श्रव्य बिम्ब का प्रयोग किया गया है।

(iii) यह ऐसा खेत है जिसके चार कोने हैं।

(iv) यह सृजन-कर्म के शाश्वत भाव को प्रकट करता है।

(घ) 'कटाई अनंतता की' का प्रतीकार्थ है -

(i) रोपाई के बाद कटाई | (ii) कटाई कर्म अनंत

(iii) साहित्य कालजयी | (iv) फलों की काट-छाँट

(ङ) कथन और कारणको पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए:

कथन : साहित्यिक कृति की अलौकिक रसधारा कालजयी होती है।

कारण : असंख्य पाठकों द्वारा अनंतकाल तक पढ़े जाने पर भी इसका आनंद समाप्त नहीं होता।

(i) कथन तथा कारण दोनों ग़लत हैं।

(ii) कारण सही है लेकिन कथन ग़लत है।

(iii) कथन सही है, लेकिन कारण, कथन की ग़लत व्याख्या करता है।

(iv) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

<u>उत्तर-</u> क- iii ख- ii ग-iv घ- iii ड.- iv

<u>वर्णनात्मक प्रश्न-</u>

प्रश्न (1) छोटे चौकोने खेत को कागज़ का पन्ना कहने में क्या अर्थ निहित है?

उत्तर- किसान के खेत के समान कागज़ का पन्ना भी चौकोर होता है। जैसे खेत में किसान बीज, खाद आदि डालकर अंकुर, फूल व फल उत्पन्न करता है उसी प्रकार कवि कागज़ के पन्ने पर अपने विचारों और कल्पना के द्वारा कविता व उसका रस उत्पन्न करता है। इस प्रकार काव्य-रचना रूपी खेती करने के कारण पन्ने की तुलना खेत से की गई है।

प्रश्न (2) रचना के संदर्भ में अंधड़ और बीज क्या है?

उत्तर- रचना के संदर्भ में अंधड का अर्थ है - भावनाओं का आवेग। विशेष परिस्थितियों में कवि के मन में उत्पन्न भावनाओं के आवेग को कवि ने अंधड़ कहा है, जिससे कविता की रचना होती है। **बीज' का अर्थ है - विचार व भाव।** विशेष परिस्थितियों में कवि के मन में आए भावनाओं के आवेग के कारण जो विचार और भाव उत्पन्न होते हैं, उसे बीज कहा गया है।

प्रश्न (3) रस के 'अक्षय पात्र' से कवि ने रचनाकर्म की किन विशेषताओं की ओर इंगित किया है? अथवा व्याख्या करें- रोपाई क्षण की / कटाई अनंतता की/ लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती।

उत्तर- कवि ने कविता को रस का 'अक्षय पात्र, कहा है क्योंकि इसका आनंद (रस) कभी खत्म नहीं होता। किसी भावनामय क्षण में लिखी गई कविता हमेशा-हमेशा पाठकों को आनंद देती है। कविता के आनंद को बाँटने, खर्च करने या लुटाने से वह कम नहीं होता बल्कि बढ़ जाता है।

प्रश्न (4) 'बगुलों के पंख' कविता के आधार पर 'नभ में पाँती-बँधे उड़ते बगुलों के सौंदर्य का वर्णन कीजिए। CBSE 2026

उत्तर- इस कविता में शाम के समय काले बादलों से भरे आसमान में पंक्ति बनाकर उड़ते हुए सफ़ेद बगुलों को देखता है तो उसकी नज़रे वहीं टिकी रह जाती है। यह सुंदर दृश्य अपने आकर्षण में कवि को बाँध लेता है। यह सौन्दर्य कवि को प्रकृति की अद्भुत-माया के समान प्रतीत हुआ।

<u>उच्चस्तरीय चिंतन कौशल व दक्षता आधारित प्रश्न-</u>

प्रश्न (1) 'बीज गल गया निःशेष' से कवि का क्या तात्पर्य है? कवि ने ऐसा क्यों कहा है?CBSE 26

उत्तर- 'बीज गल गया निःशेष, का तात्पर्य है किजिस प्रकार जब बीज गलता है तब पौधा बनता है, उसी प्रकार जब अपना अहंकार खत्म करता है तब कवि के विचारों में कल्पना जुड़कर कविता बनती है जिसमें विनम्रता का भाव झलकता है। यहाँ निजता के विलय और अहंकार से मुक्ति के कारण ऐसा कहा गया है।

प्रश्न (2) 'बगुलों के पंख' कविता से उद्धृत 'उसे कोई तनिक रोक रक्खो' पंक्ति से क्या आशय है?

उत्तर- (i) काले बादलों से भरे आकाश में पंक्तिबद्ध उड़ते सफ़ेद बगुलों के सौन्दर्य की माया में कवि बँध गया है।

(ii) कवि इस सौन्दर्य को अपनी आँखों से ओझल नहीं होने देना चाहता है।

(iii) यह सुंदर दृश्य अपने आकर्षण में कवि को इतना बाँध लेता है कि उसकी नजरें उस दृश्य से हट ही नहीं रही है।

प्रश्न (3) व्याख्या करें-

शब्द के अंकुर फूटे
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।

उत्तर- जिस प्रकार बीज को खाद, पोषक तत्त्व आदि मिलने पर अंकुर फूटते हैं। बाद में उन्हीं पर नए पत्ते व फूल आने पर वह पौधा झुक जाता है। उसी प्रकार कवि के विचारों में कल्पना जुड़ जाती है और अहंकार खत्म हो जाता है, तब शब्द और कविता का सौंदर्य उत्पन्न हो जाता जिसमें विनम्रता का भाव झलकता है।

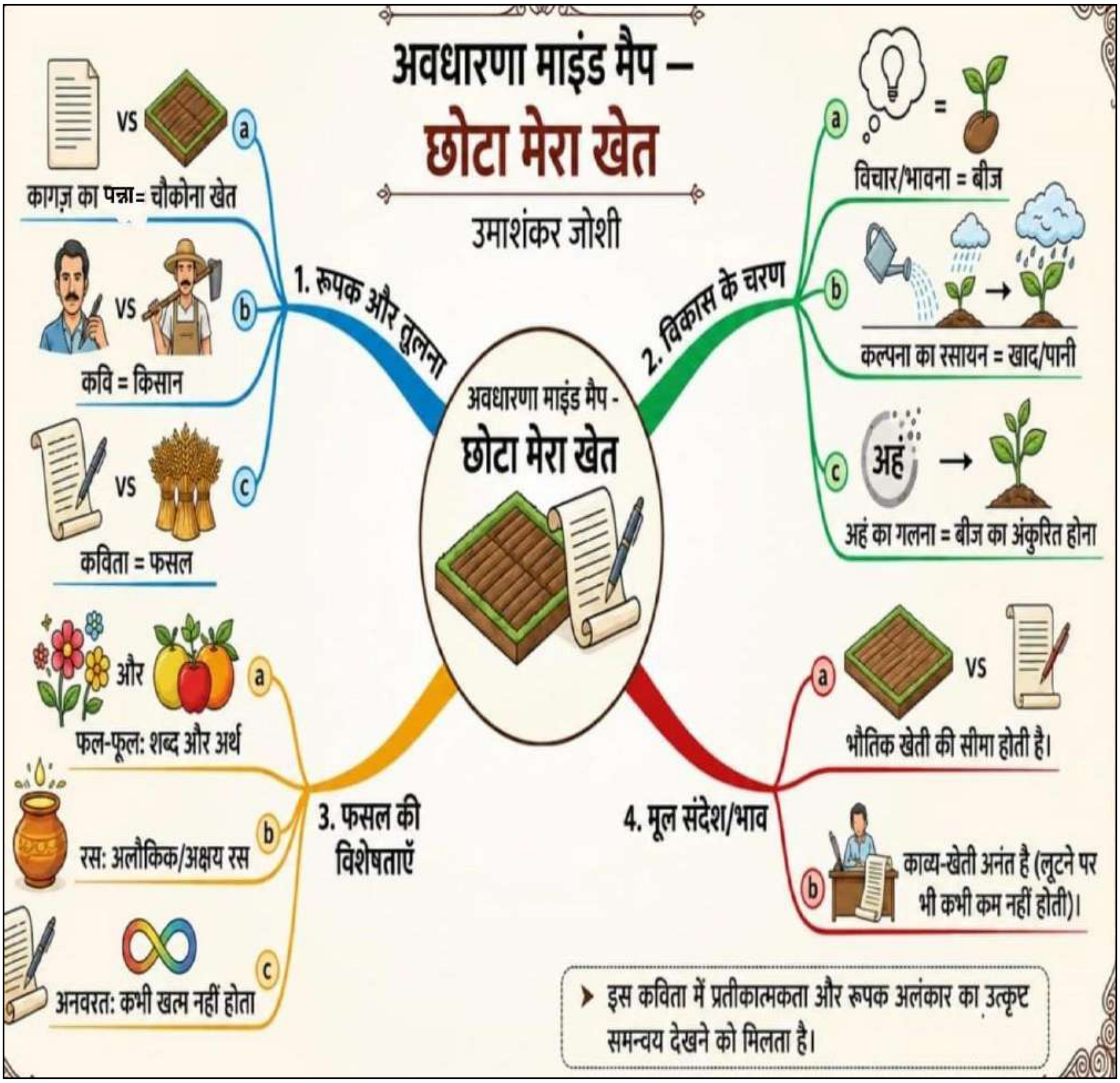

आरोह भाग-2 गद्य खंड

पाठ-10 भक्तिन- महादेवी वर्मा

सारांश/ मुख्य बिन्दु:

- **परिचय: संस्मरणात्मक रेखाचित्र' भक्तिन'** में उसके जीवन को चार परिच्छेदों में बाँटा गया हैं-
  प्रथम- विवाह से पूर्व (पिता के घर में, विमाता के साथ)।
  द्वितीय- ससुराल में पति के साथ, तीन पुत्रियों को जन्म देने से भेदभाव का सामना।
  तृतीय- विधवा के रूप में जेठ-जिठौतों से संघर्ष, पंचों का अन्याय, शहर पलायन।
  चतुर्थ- महादेवी की सेवा में। इसमें लेखिका ने सेवक धर्म में हनुमान से स्पर्धा करने वाली सेविका 'भक्तिन' के व्यक्तित्व और जीवन-संघर्ष का संवेदनशील चित्रण किया है।
- **शारीरिक बनावट और नामकरण:** भक्तिन छोटे कद और दुबले शरीर वाली एक दृढ़-निश्चयी महिला थी, जिसका असली नाम 'लछमिन' था; परन्तु उसके नाम के विपरीत उसकी सादगी और कंठी माला को देखकर लेखिका ने उसका नाम 'भक्तिन' रख दिया।
- **बाल्यकाल और बाल-विवाह:** भक्तिन का प्रारंभिक जीवन ग्रामीण परिवेश और सामाजिक रूढ़ियों के बीच बीता, 05 वर्ष की आयु में उसका विवाह और 09 वर्ष की आयु में गौना कर दिया गया।
- **पुरुषप्रधान समाज में अन्याय और तिरस्कार:** लगातार एक के बाद एक तीन बेटियों को जन्म देने के कारण ससुराल में सास और जिठानियों द्वारा उसे भारी उपेक्षा, भेदभाव, अन्याय, अपमान और तिरस्कार का सामना करना पड़ा।
- **कठिन परिश्रम और आत्मनिर्भरता:** विषम परिस्थितियों के बावजूद, अपने पति का साथ पाकर भक्तिन ने अपनी कर्मठता और कड़े परिश्रम के बल पर अपनी अलग गृहस्थी बसाकरसंपत्ति बढ़ाई और आत्मनिर्भर बनी।
- **पारिवारिक त्रासदी:** पति की असमय मृत्यु के बाद उसने पारिवारिक कलहों और जिठौतों (जेठ के बेटों) की साज़िशों का डटकर सामना किया तथा अपनी संपत्ति और अधिकारों की रक्षा की।
- **पंचायत का अन्यायपूर्ण निर्णय:** पारंपरिक पंचायत द्वारा उसकी बेटी पर ज़बरन एक निकम्मे तीतरबाज़ वर को थोप दिया गया, जो तत्कालीन समाज की स्त्री विरोधी रूढ़िवादी सोच और सामाजिक अन्याय का प्रतीक है।
- **शहरी जीवन और लेखिका से जुड़ाव:** दरिद्रता, पारिवारिक संघर्ष और ज़मींदार के अपमान से तंग आकर वह शहर आ गई और महादेवी वर्मा की सेविका के रूप में एक अटूट और अद्भुत रिश्ता कायम किया।
- **देहाती स्वभाव:** शहर में रहने के बावजूद उसने अपनी देहाती आदतें, खान-पान की सादगी और ग्रामीण बोलचाल को कभी नहीं छोड़ा, बल्कि लेखिका को भी काफी हद तक देहाती बना दिया।
- **हठी व्यक्तित्व:** वह अपनी बात सहीसिद्ध करने के लिए शास्त्रों की मनगढ़ंत व्याख्या करने और अपनी छोटी-मोटी कमियों (जैसे- पैसे छुपाना आदि) को तर्क-वितर्क से छिपाने में माहिर थी।
- **स्वामी-सेवक भाव से परे आत्मीयता:** लेखिका और भक्तिन का संबंध केवल मालकिन और नौकर का नहीं था, बल्कि स्नेह, पारस्परिक निर्भरता और गहरे मानवीय जुड़ाव में बदल चुका था।
- **संकट के समय अटूट निष्ठा:** युद्ध जैसी विपरीत और भयानक परिस्थितियों में अपनी सारी जमा-पूँजी (105 रूपये) कुर्बान करने को तत्पर थी। वह जेल जाने के अवसर पर भी लेखिका का साथ छोड़ने को तैयार नहीं थी, जो उसकी चरम निष्ठा और भावनात्मक लगाव को दर्शाता है।

➢ **सामाजिक संदेश:** लेखिका ने इस रेखाचित्र के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं के जीवन-संघर्ष, मानवीय गरिमा और पितृसत्तात्मक समाज की कुरीतियों पर अत्यंत संवेदनशील प्रहार किया है।

गद्यांश-1

जीवन के दूसरे परिच्छेद में भी सुख की अपेक्षा दुःख ही अधिक है। जब उसने गेहुँए रंग और बटिया जैसे मुख वाली पहली कन्या के दो संस्करण और कर डाले तब सास और जिठानियों ने ओठ बिचकाकर उपेक्षा प्रकट की। उचित भी था, क्योंकि सास तीन-तीन कमाऊ वीरों की विधात्री बनकर मचिया के ऊपर विराजमान पुरखिन के पद पर अभिषिक्त हो चुकी थी और दोनों जिठानियाँ काक-भुशंडीजैसे काले लालों की क्रम बद्ध सृष्टि करके इस पद के लिए उम्मीदवार थी। बहू के लीक छोड़कर चलने के कारण उसे दंड मिलना आवश्यक हो गया।

(1) गद्यांश में "बहू के लीक छोड़कर चलने" का आशय है–

(क) घर छोड़ देना (ख) सामाजिक अपेक्षाओं के अनुसार पुत्र को जन्म न देना
(ग) परिवार से झगड़ा करना (घ) शिक्षा प्राप्त न करना

(2) यह गद्यांश मुख्य रूप से किस सामाजिक प्रवृत्ति की आलोचना करता है?

(क) बाल-विवाह (ख) दहेज-प्रथा
(ग) पुत्र-प्राथमिकता और स्त्री-विरोधी सोच (घ) बेरोज़गारी

(3) गद्यांश में प्रयुक्त संदर्भों के आधार पर 'स्तंभ I' का 'स्तंभ II' से सही मिलान कीजिए:

स्तंभ I (संदर्भ/पात्र)	स्तंभ II (गद्यांश में प्रयुक्त व्यंग्य/पद)
(1) सास	(अ) काक-भुशंडी जैसे काले लाल
(2) जिठानियाँ	(ब) गेहुँए रंग और बटिया जैसा मुख
(3) पहली कन्या (बेटी)	(स) मचिया पर विराजमान पुरखिन
(4) जिठानियों के बेटे	(द) पद की अगली उम्मीदवार

(क) 1-(स), 2-(द), 3-(ब), 4-(अ) (ख) 1-(अ), 2-(ब), 3-(स), 4-(द)
(ग) 1-(स), 2-(अ), 3-(ब), 4-(द) (घ) 1-(द), 2 (स), 3-(अ), 4-(ब)

(4) लेखिका के अनुसार, भक्तिन और उनके बीच कैसा संबंध स्थापित हो गया था?

(क) केवल व्यावसायिक मालिक और नौकर का (ख) घृणा और ईर्ष्या का
(ग) आत्मीयता, स्नेह और पारस्परिक निर्भरता का (घ) गुरु और शिष्य का

(5) निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए सही कथन/कथनों वाले विकल्प का चयन कीजिए -

I. गद्यांश में पितृसत्तात्मक समाज के उस क्रूर चेहरे को दिखाया गया है जहाँ स्त्रियाँ ही स्त्रियों के शोषण का कारण बनती हैं।

II. सास को परिवार में सर्वोच्च आदर और 'पुरखिन' का पद केवल उसकी आयु और बुद्धिमानी के कारण मिला था।

III. 'कमाऊ वीरों की विधात्री' और 'काक-भुशंडी जैसे काले लालों' पदों के माध्यम से लेखिका ने समाज की पुत्र-मोह की मानसिकता पर तीखा व्यंग्य किया है।

IV. 'कन्या के दो संस्करण और कर डाले' पंक्ति में 'संस्करण' शब्द का प्रयोग भक्तिन की बेटियों के प्रति लेखिका की घृणा को दर्शाता है।

(क) केवल कथन I सही है। (ख) केवल कथन I और III सही हैं।

(ग) केवल कथन I, II और III सही हैं। (घ) चारों कथन सही हैं।

उत्तर- (1) (ख) **(2)** (ग) **(3)** (क) **(4)** (ग) **(5)** (ख)

गद्यांश-2

इस दंड-विधान के भीतर कोई ऐसी धारा नहीं थी, जिसके अनुसार खोटे सिक्कों की टकसाल-जैसी पत्नी से पति को विरक्त किया जा सकता। सारी चुगली-चबाई की परिणति उसके पत्नी-प्रेम को बढ़ाकर ही होती थी। जिठानियाँ बात-बात पर धमाधम पीटी-कूटी जातीं, पर उसके पति ने उसे कभी उँगली भी नहीं छुआई। वह बड़े बाप की बड़ी बात वाली बेटी को पहचानता था। इसके अतिरिक्त परिश्रमी, तेजस्विनी और पति के प्रति रोम-रोम से सच्ची पत्नी को वह चाहता भी बहुत रहा होगा, क्योंकि उसके प्रेम के बल पर ही पत्नी ने अलगौझा करके सबको अँगूठा दिखा दिया। काम वही करती थी, इसलिए गाय-भैंस, खेत-खलिहान, अमराई के पेड़ आदि के संबंध में उसी का ज्ञान बहुत बढ़ा-चढ़ा था। उसने छाँट-छाँट कर, ऊपर से असंतोष की मुद्रा के साथ और भीतर से पुलकित होते हुए जो कुछ लिया, वह सबसे अच्छा भी रहा, साथ ही परिश्रमी दंपति के निरंतर प्रयास से उसका सोना बन जाना भी स्वाभाविक हो गया।

(1) खोटे सिक्के की टकसाल किसे कहा गया हैं-

(1) जिठानियों को (2) भक्तिन को (3) भक्तिन की बेटियों को (4) भक्तिन की सास को

(क) विकल्प 1 और 2 सही हैं (ख) केवल विकल्प 3 और 4 सही हैं

(ग) केवल विकल्प 2 सही हैं (घ) विकल्प 1 और 3 सही हैं

(2) नीचे दिए गए कथन और कारण को पढ़कर सही विकल्प चुनिए-

कथन: गाय-भैंस, खेत-खलिहान और अमराई के पेड़ों के संबंध में भक्तिन का व्यावहारिक ज्ञान परिवार के अन्य सदस्यों से बहुत बढ़ा-चढ़ा था।

कारण: भक्तिन ने औपचारिक संस्था से विशेष व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त की थी।

(क) कथन और कारण दोनों सही हैं (ख) कथन सही है, लेकिन कारण ग़लत है

(ग) कथन ग़लत है, लेकिन कारण सही है। (घ) दोनों कथन और कारण ग़लत हैं।

(3)भक्तिन द्वारा अलगौझा (बँटवारा) करने का मुख्य आधार क्या था?

(क) ससुराल वालों से बदला लेने की उसकी गुप्त इच्छा।

(ख) उसके पति का अटूट प्रेम, अपना परिश्रमी व तेजस्विनी स्वभाव और आत्मीय संबल।

(ग) सांसारिक धन-दौलत का अत्यधिक लालच।

(घ) ज़मींदार द्वारा दिया गया गुप्त आदेश।

(4) जिठानियों की चुगली-चबाई का क्या परिणाम हुआ?

(क) पति-पत्नी में झगड़ा हुआ (ख) पति ने भक्तिन को छोड़ दिया

(ग) पति का पत्नी के प्रति प्रेम और बढ़ गया (घ) परिवार टूट गया

(5) गद्यांश के अनुसार, भक्तिन के पति ने उसे कभी 'उँगली भी नहीं छुआई', इसका क्या अर्थ है?

(क) वह भक्तिन से दूर रहता था और कभी बात नहीं करता था।

(ख) उसने कभी भी भक्तिन पर हाथ नहीं उठाया

(ग) वह भक्तिन के हाथों से खाना नहीं खाता था।

(घ) वह बहुत कमज़ोर और बीमार पति था।

उत्तर: (1) (ग) **(2) (ख)** **(3)**(ख) **(4)** (ग) **(5)** (ख)

गद्यांश-3

सेवक-धर्म में हनुमान जी से स्पर्द्धा करने वाली भक्तिन किसी अंजना की पुत्री न होकर एक अनामधन्या गोपालिका की कन्या है-नाम है लछमिन अर्थात् लक्ष्मी, पर जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी। वैसे तो जीवन में प्रायः सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है, पर भक्तिन बहुत समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धि-सूचक नाम किसी को बताती नहीं। केवल जब नौकरी की खोज में आई थी, तब ईमानदारी का परिचय देने के लिए उसने शेष इतिवृत्तके साथ यह भी बता दिया, पर इस प्रार्थना के साथ कि मैं कभी नाम का उपयोग न करूँ।

(1) "समृद्धि-सूचक नाम किसी को बताती नहीं।" भक्तिन की यह आदत उसके स्वभाव के किस पहलू को प्रदर्शित करती है?

(क) उसकी अज्ञानता और लोक-व्यवहार की कमी को।

(ख) उसकी व्यावहारिक समझदारी, स्वाभिमान और सामाजिक उपहास से बचने की कला को।

(ग) उसकी संकोची और अत्यधिक डरपोक प्रवृत्ति को।

(घ) अपनी वास्तविक पहचान को छुपाकर अपराध करने की उसकी इच्छा को।

(2) 'कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी' पंक्ति में 'कपाल की कुंचित रेखाएँ' प्रतीक हैं?

(क) माथे पर पड़ने वाले बुढ़ापे के निशानों का।

(ख) मनुष्य के माथे की सिलवटों द्वारा उसके संघर्षमय व दरिद्र भाग्य का।

(ग) किसी विशेष आभूषण या मुकुट का।

(घ) भक्तिन की शारीरिक सुंदरता का।

(3) नीचे दिए गए कथन और कारण को पढ़कर सही विकल्प चुनिए:

कथन : भक्तिन को गद्यांश में 'अंजना की पुत्री' स्वीकार किया गया है।

कारण : वह सेवक-धर्म के मामले में इतिहास-प्रसिद्ध पौराणिक पात्र हनुमान जी से स्पर्धा (मुकाबला) करने की क्षमता रखती है।

(क) कथन और कारण दोनों सही हैं (ख) कथन सही है, लेकिन कारण ग़लत है

(ग) कथन ग़लत है, लेकिन कारण सही है। (घ) दोनों कथन और कारण ग़लत हैं।

(4) गद्यांश की वैचारिक शब्दावली के अर्थ के संदर्भ में 'स्तंभ I' और 'स्तंभ II' को सुमेलित कीजिए-

स्तंभ I (गद्यांश के कठिन पद)	**स्तंभ II (संदर्भानुसार सटीक अर्थ)**
(1) दुर्वह	(अ) भाग्य की उलझी या विपरीत रेखाएँ
(2) कुंचित रेखाएँ	(ब) जिसे सहन करना या उठाना अत्यंत कठिन हो
(3) इतिवृत्त	(स) वास्तविक जीवन और नाम का आपस में न मिलना
(4) विरोधाभास	(द) जीवन का पूरा परिचय या बीता हुआ वृत्तांत

(क) 1-(ब), 2-(अ), 3-(द), 4-(स)　　　(ख) 1-(अ), 2-(ब), 3-(स), 4-(द)

(ग) 1-(द), 2-(अ), 3-(ब), 4-(स)　　　(घ) 1-(ब), 2-(द), 3-(अ), 4-(स)

(5) "जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है..." इस कथन से महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व का कौन-सा आयाम झलकता है?

(क) उनका अत्यधिक अहंकार और बड़प्पन का प्रदर्शन

(ख) अपने स्वयं के नाम के प्रति उनकी घृणा

(ग) उनकी असीम नम्रता और आत्म-निरीक्षण की गहरी क्षमता

(घ) समाज के प्रति उनका गहरा असंतोष

उत्तर: **(1)** (ख) **(2)** (ख) **(3)** (ग) **(4)** (क) **(5)** (ग)

पाठ्यपुस्तक पर आधारित महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर

1. **भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी? भक्तिन नाम किसने और क्यों दिया होगा?**

उत्तर- वास्तविक नाम छुपाने का कारण:भक्तिन का असली नाम 'लछमिन' (लक्ष्मी) था जो समृद्धि का सूचक था, जबकि उसका जीवन अत्यंत दरिद्र व अभावग्रस्त था। वह नहीं चाहती थी कि लोग इस विरोधाभास के कारण उसका उपहास करें।

भक्तिन नाम किसने और क्यों दिया:उसकी कंठी-माला, मुँडे हुए सिर और सादगीपूर्ण व समर्पित पवित्र वेशभूषा को देखकर**लेखिका महादेवी वर्मा**ने उसे यह नाम दिया, जो उसके सेवा-धर्म और व्यक्तित्व के सर्वथा अनुकूल था।

2. 'स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है'—क्या आप इस धारणा से सहमत हैं? भक्तिन पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- धारणा की पुष्टि: पाठ में भक्तिन की सास और जिठानियाँ स्वयं स्त्री होकर भी भक्तिन का घोर मानसिक व शारीरिक शोषण करती हैं क्योंकि भक्तिन ने लड़कियों को जन्म दिया था।

सहमति व कारण: मैं इस बात से काफी हद तक सहमत हूँ। पितृसत्तात्मक व्यवस्था में स्त्रियाँ अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए खुद पुरुषों की रूढ़िवादी सोच को अपना लेती हैं और दूसरी स्त्रियों को प्रताड़ित करती हैं, जो सामाजिक विडंबना है।

3. भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा ज़बरन पति थोपा जाना स्त्री के मानवाधिकार को कुचलने की सामाजिक परंपरा का प्रतीक है। कैसे? (तर्कसम्मत टिप्पणी)

उत्तर- मानवाधिकार का हनन: विवाह स्त्री का व्यक्तिगत और मौलिक अधिकार है (वह किससे करे या न करे)। पंचायत ने भक्तिन की बेटी की इच्छा के विरुद्ध एक निठल्ले, तीतरबाज़ वर को उस पर थोप दिया।

सामाजिक परंपरा का प्रतीक: यह घटना दर्शाती है कि सदियों से हमारा समाज स्त्री को स्वतंत्र इकाई न मानकर पुरुषों की जागीर समझता आया है, जहाँ न्याय के नाम पर रूढ़ियाँ स्त्रियों के अधिकारों को बेरहमी से कुचल देती हैं।

4. "भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं।" लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर- "भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं।" लेखिका ने ऐसा इसलिए कहा होगा कि -

(i) वह पूरा सच नहीं बोलती थी और झूठ बोल देती थी।

(ii) वह लेखिका के इधर-उधर पड़े पैसों को भंडारघर की मटकी में छिपा देती थी।

(iii) वह क्रोध से बचने के लिए बातों को बदलकर कह देती थी।

(iv) वह जिद्दी थी और स्वयं को नहीं बदलती थी।

5. भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेखिका ने दिया है?

उत्तर- सिर मुँड़ाने का प्रसंग: भक्तिन हर बृहस्पतिवार को अपना सिर मुँड़ाती (केश मुंडन करवाती) थी। जब लेखिका ने इसे अनुचित मानकर मना किया, तो भक्तिन ने तुरंत शास्त्र का सहारा लिया।

मनगढ़ंत व्याख्या: उसने 'तीरथ गए मुँड़ाए सिद्ध' नामक एक लोक-प्रचलित पंक्ति को प्रामाणिक शास्त्र वचन बताकर पेश किया। लेखिका के पास इसका कोई जवाब नहीं थाऔर उसने हार मान ली।

6. भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गईं? सोदाहरण लिखिए।

उत्तर- भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहातीइस प्रकार हो गई -

(i) खान-पान: भक्तिन ने शहर आकर खुद को बदलने के बजाय लेखिका को ही ग्रामीण रंग में ढाल दिया। वह लेखिका को ग्रामीण व बासी भोजन खिलाती थी—जैसे ज्वार की खिचड़ी, महुए की लपसी, बाजरे के ठंडे पुए आदि।

(ii) कपड़े: वह लेखिका की साड़ी ऐसे तह करती थी कि वह सलवटों से भर जाती थी।

(iii) भाषा: वह हर बात में ग्रामीण मुहावरे और तर्कों का प्रयोग करती थी।उसने लेखिका को गाँव की कई दंतकथाएँ याद करवा दी थीं।

दक्षता-आधारित उच्चस्तरीय चिन्तन कौशल एवं सीबीएसई परीक्षोपयोगी प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. भक्तिन की जीवन स्थितियाँ तत्कालीन ग्रामीण समाज की किस सच्चाई को प्रकट करती हैं? अथवा भक्तिन पाठ में वर्णित किन्हीं तीन समस्याओं का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

उत्तर- लैंगिक भेदभाव: ग्रामीण समाज में लैंगिक भेदभाव चरम पर था, जहाँ बेटों को 'कमाऊ वीर' और बेटियों को 'खोटा सिक्का' मानकर प्रताड़ित किया जाता था।

बाल-विवाह की कुप्रथा: मात्र 5 वर्ष की उम्र में विवाह और 9 वर्ष में गौना जैसी प्रथाएँ बालिकाओं के अधिकारों और स्वतंत्रता को कुचल देती थीं।

अन्यायपूर्ण सामाजिक ढाँचा: पंचायत जैसी संस्थाएँ भी स्त्रियों के विरुद्ध पक्षपातपूर्ण निर्णय लेती थीं और ज़मींदार लगान न मिलने पर शारीरिक व मानसिक उत्पीड़न करते थे।

प्रश्न 2. "उपनाम रखने की प्रतिभा होती तो मैं सबसे पहले इसका प्रयोग अपने ऊपर करती" लेखिका ने यह कथन किस संदर्भ में और क्यों कहा?

उत्तर- कथन का संदर्भ: यह कथन तब कहा गया जब भक्तिन ने नौकरी माँगते समय लेखिका से अपना समृद्धि-सूचक नाम 'लक्ष्मी' न पुकारने की प्रार्थना की।

कहने का कारण: लेखिका का स्वयं का नाम 'महादेवी' (महान देवी) था, जिसकी भव्यता उन्हें अपने साधारण जीवन के लिए बहुत भारी (दुर्वह) लगती थी।

नाम का विरोधाभास: वे व्यंग्यपूर्वक कहती हैं कि समाज में प्रायः सभी को अपने नाम के विपरीत जीना पड़ता है, इसलिए वे स्वयं को भी दूसरा नाम देना चाहती थीं।

प्रश्न 3. भक्तिन के चरित्र की किन्हीं तीन विशेषताओं का वर्णन कीजिए जिन्होंने आपको प्रभावित किया? अथवा भक्तिन की निष्ठा एवं सेवाभाव आज की जीवन-स्थितियों में भी प्रेरणादायक कैसे हो सकते हैं?

उत्तर- असाधारण कर्मठता: पारिवारिक उपेक्षा और भेदभाव के बावजूद उसने दिन-रात खेतों व मवेशियों के साथ कड़ी मेहनत कर आत्मनिर्भर गृहस्थी खड़ी की।

दृढ़ स्वाभिमान: ज़मींदार द्वारा कड़ी धूप में खड़े रहने की अपमानजनक सज़ा मिलने पर उसने झुकने के बजाय स्वाभिमान से गाँव छोड़ दिया।

अटूट स्वामिभक्ति: लेखिका के प्रति उसकी निष्ठा अद्वितीय थी; वह युद्ध या जेल जाने जैसे संकटों में भी छाया बनकर उनका साथ निभाने को तैयार थी। आज ऐसे लोगों का मिलना कठिन हो गयाहै।

प्रश्न 4. महादेवी के घर आने वाले साहित्यकारों के प्रति भक्तिन के सम्मान का क्या मानदंड था?

उत्तर- लेखिका के प्रति आदर: भक्तिन के सम्मान का पैमाना साहित्यकारों की अपनी प्रसिद्धि नहीं, बल्कि महादेवी जी के प्रति उनका व्यवहार और आदर-भाव था।

विशिष्ट पहचान: वह आने वाले मेहमानों को उनके नाम या रचनाओं से नहीं, बल्कि उनके आकार-प्रकार (जैसे- कविता लिखने वाले, दाढ़ी वाले आदि) से पहचानती थी।

सम्मान की अभिव्यक्ति: जो साहित्यकार लेखिका का अधिक सम्मान करते थे, भक्तिन उन्हें मुस्कुराकर और अधिक आदर के साथ चाय-पानी देकर अपना सम्मान प्रकट करती थी।

प्रश्न 5. 'भक्तिन वाक्पटुता में बहुत आगे थी', पाठ के आधार पर उदाहरण देकर पुष्टि कीजिए।

उत्तर- तर्क में माहिर: भक्तिन अपनी हर गलती या बात को सही साबित करने के लिए तुरंत अचूक और मनगढ़ंत तर्क गढ़ लेती थी।

चोरी पर वाक्पटुता: जब लेखिका ने इधर-उधर पड़े पैसे मटकी में छुपाने पर टोकना चाहा, तो उसने उसे चोरी न मानकर 'अपना ही घर सँभालना' कह दिया।

शास्त्रों का सहारा: सिर मुँडाने के प्रसंग पर उसने तुरंत 'तीरथ गए मुँडाए सिद्ध' जैसी बात कहकर लेखिका को निरुत्तर कर दिया, जो उसकी वाक्पटुता का जीवंत प्रमाण है।

अवधारणा मानचित्र

पाठ-11 बाज़ार दर्शन- जैनेंद्र कुमार

<u>**सारांश / मुख्य बिंदु**</u>

जैनेंद्र कुमारद्वारा लिखित**'बाज़ार दर्शन'**एक गहरा विचारात्मक निबंध है। इसमें उपभोक्तावाद और बाज़ारवाद के मनोविज्ञान को अत्यंत रोचक शैली में समझाया गया है।

- **बाज़ार का आकर्षण और जादू:** लेखक के अनुसार बाज़ार का आमंत्रण मूक होता है। यह रूप का जादू होता हैजो आँखों के रास्ते मनुष्य को अपनी ओर खींचता है। मनुष्य इस आकर्षण के जाल में फँसकर चाह और कामनाओं से विकल हो जाता है। किन्तु कुछ लोग संयमी भी होते हैं।
- **'परचेजिंग पावर' (क्रय-शक्ति) का अहंकार**: बाज़ार का काम है आवश्यकता को पूरी करना परन्तु कुछ लोग बाज़ार का उपयोग अपनी आवश्यकता के लिए नहीं, बल्कि अपनी क्रय-शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए करते हैं। वे पैसे की गर्मी अर्थात मनी-पावर को दिखाने के लिए अनावश्यक चीजें खरीद लेते हैं। ऐसे लोग बाज़ार को सार्थकता प्रदान नहीं करते बल्कि उसका बाज़ारूपन बढ़ाते हैं।
- **खाली मन और भरे मन का अंतर:** बाज़ार का जादू केवल उसी व्यक्ति पर चलता है जिसका मन 'खाली' होता है अर्थात जिसे अपनी वास्तविक ज़रूरतों का पता नहीं होता। यदि मन 'भरा' हो अर्थात् लक्ष्य निश्चित हो (अपनी आवश्यकता का पता हो)तो बाज़ार का आकर्षण प्रभावहीन हो जाता है। ऐसे लोग बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं।
- **खाली मन और बंद मन में अंतर:** लेखक स्पष्ट करते हैं कि मन को खाली न रखने का अर्थ 'मन को बंद कर लेना' या शून्य हो जाना नहीं है। शून्य होने का अधिकार केवल परमात्मा को है। मनुष्य को अपनी इच्छाओं का जबरन दमन नहीं करना चाहिए, बल्कि उन्हें सही दिशा देनी चाहिए।
- **बाज़ारूपन बनाम बाज़ार की सार्थकता:** बाज़ार की असली सार्थकता मनुष्य की आवश्यकता के समय काम आने में है। जब लोग केवल कपट, दिखावे और बिना ज़रूरत के ख़रीददारी करते हैं, तो वे बाज़ार का 'बाज़ारूपन' बढ़ाते हैं, जिससे बाज़ार में केवल छल-कपट और स्पर्धा बढ़ती है।
- **भगत जी का आदर्श चरित्र**: लेखक पाठ में भगत जी का उदाहरण देते हैं जो वर्षों से चूरन बेच रहे हैं। उनका लक्ष्य निश्चित है- रोज़ केवल छह आने कमाना। छह आने पूरे होते ही वे बचा हुआ चूरन बच्चों को मुफ़्त बाँट देते हैं। उन पर बाज़ार का जादू कभी नहीं चलता। वे अपनी आवश्यकता से अधिक संचित नहीं करते।
- **अचल संतोष और समभाव:** भगतजी बाज़ार की चकाचौंध के बीच से गुज़रते समय सभी फैंसी दुकानों को छोड़कर सीधे एक छोटी-सी पंसारी की दुकान पर जाते हैं और अपनी ज़रूरत का जीरा और काला नमक ख़रीदकर संतुष्ट मन से लौट आते हैं। बाज़ार का जादू भगतजी पर नहीं चलता।
- **पैसे की व्यंग्य-शक्ति:** पैसे में एक क्रूर व्यंग्य-शक्ति होती है। उदाहरण के लिए, जब कोई मोटर कार पास से धूल उड़ाती हुई निकलती है, तो पैदल चलने वाले व्यक्ति के मन में अपने जन्म और भाग्य के प्रति एक गहरी ग्लानि और हीनता का भाव जाग उठता है। पैसे की व्यंग्य शक्ति इतनी प्रबल है कि मनुष्य अपने जन्मदाताओं के प्रति भी कृतघ्न हो जाता है।
- **सद्भाव का ह्रास और कपट की बढ़ोतरी:** बाज़ारूपन बढ़ने से समाज में 'सद्भाव' (भाईचारा) नष्ट होता है। लोग एक-दूसरे को ग्राहक और बेचक (विक्रेता) के रूप में देखने लगते हैं, जहाँ एक का लाभ दूसरे की हानि माना जाता है।

- **अर्थशास्त्र बनाम अनीतिशास्त्र:** लेखक का मानना है कि जो बाज़ार मनुष्य की तृष्णा और लालच को बढ़ावा देता है, आवश्यकता का सही मूल्यांकन नहीं करता, वह अर्थशास्त्र नहीं 'अनीतिशास्त्रहै।
- **मूल संदेश:** यह निबंध उपभोक्तावाद और बाज़ारवाद के चंगुल में फँसने के बजाय अपनी आवश्यकताओं के प्रति सचेत रहने तथा आत्म-नियंत्रण (संतोष) रखने का एक अमूल्य सामाजिक संदेश देता है।

गद्यांश-1

बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमन्त्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी हो तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है ! मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है।

1. गद्यांश के अनुसार, बाज़ार के जादू के चलने की अनिवार्य शर्त क्या है?

(क) जेब का भरा होना (ख) मन का खाली होना

(ग) बाज़ार में अत्यधिक भीड़ होना (घ) उपभोक्ता का अमीर होना

2. गद्यांश के अनुसार 'खाली मन' की दशा में व्यक्ति को क्या महसूस होता है?

1. उसे हर सामान ज़रूरी लगने लगता है।
2. वह अपनी वास्तविक ज़रूरतों को पहचान लेता है।
3. उसे लगता है कि बाज़ार की वस्तुएँ उसका आराम बढ़ाएँगी।
4. वह केवल चूरन खरीदने की इच्छा रखता है।

(क)1 और 3 सही हैं (ख)2 और 4 सही हैं (ग)1, 2 और 3 सही हैं (द)3 और 4 सही हैं

3. "वह जादू आँख की राह काम करता है"– इस पंक्ति का क्या निहितार्थ है?

(क) बाज़ार की वस्तुएँ आँखें खराब कर देती हैं।

(ख) बाज़ार का आकर्षण केवल सुंदर दृश्यों तक सीमित है।

(ग) बाज़ार की चकाचौंध देखकर ही मन में लालच और चाह जगती है।

(द) बिना देखे बाज़ार से सामान नहीं खरीदा जा सकता।

4. "मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ।" इस मानसिक स्थिति को निबंध के व्यापक संदर्भ में क्या नाम दिया जा सकता है?

(क) अपरिग्रह की भावना (ख) तृष्णा और असंतोष (ग) विवेकशीलता (घ) आर्थिक सुदृढ़ता

5. गद्यांश की शब्दावली के विशिष्ट अर्थ के संदर्भ में 'स्तंभ I' और 'स्तंभ II' को सुमेलित कीजिए-

स्तम्भ- I	**स्तम्भ- II**
(i) आँख	(अ) जादू
(ii) मन	(ब) इच्छा
(iii) जेब	(स) क्रय-शक्ति
(iv) बाज़ार	(द) आकर्षण

(क) i-अ, ii-ब, iii-स, iv-द (ख) i-स, ii-अ, iii-द, iv-ब

(ग) i-ब, ii-स, iii-अ, iv-द (घ) i-द, ii-ब, iii-स, iv-अ

उत्तर- (1) (ख) **(2)** (क) **(3)** (ग) **(4)** (ख) **(5)** (घ)

गद्यांश-2

पैसा पावर है। पर उसके सबूत में आस-पास माल-टाल न जमा हो, तो क्या वह खाक पावर है। पैसे को देखने के लिए बैंक-हिसाब देखिए, पर माल-असबाब, मकान-कोठी तो अनदेखे भी दिखते हैं। पैसे की उस 'पर्चेजिंग पावर' के प्रयोग में ही पावर का रस है। लेकिन नहीं। लोग संयमी भी होते हैं। वे फ़िजूल सामान को फ़िजूल समझते हैं। वे पैसा बहाते नहीं हैं और बुद्धिमान होते हैं। बुद्धि और संयमपूर्वक वे पैसे को जोड़ते जाते हैं, जोड़ते जाते हैं। वे पैसे की पावर को इतना निश्चित समझते हैं कि उसके प्रयोग की उन्हें दरकार नहीं है। बस पैसे के जुड़ा होने पर खुद उनका मन गर्व से भरा-फूला रहता है।

1. गद्यांश के अनुसार, समाज का एक वर्ग पैसे की 'पावर' का सबूत किस रूप में पेश करता है?

(क) बैंक का बढ़ता हुआ बैलेंस दिखाकर

(ख) समाज सेवा एवं दान-पुण्य करके

(ग) माल-टाल, मकान-कोठी और असबाब जमा करके

(घ) सादगीपूर्ण जीवन जीकर

2. नीचे दिए गए कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए:

कथन: संयमी लोगों को पैसे की पावर का प्रदर्शन करने के लिए सामान खरीदने की दरकार नहीं होती।

कारण: वे बुद्धि और संयमपूर्वक पैसे को जोड़ते जाते हैं और पैसे के जुड़ा होने मात्र से ही उनका आत्म-गौरव संतुष्ट रहता है।

(क) कथन तथा कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, परन्तु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(ग) कथन सही है, परन्तु कारण ग़लत है।

(घ) कथन ग़लत है, परन्तु कारण सही है।

3. "माल असबाब मकान कोठी तो अनदेखे भी दीखते हैं"– इस पंक्ति के माध्यम से लेखक किस सामाजिक मानसिकता पर कटाक्ष कर रहे हैं?

(क) लोगों की आंतरिक सुंदरता देखने की आदत पर

(ख) बैंकों के गुप्त नियमों पर

(ग) वास्तुकला या आर्किटेक्चर के प्रति प्रेम पर

(घ) समाज में व्याप्त दिखावे की संस्कृति और भौतिकवादी दृष्टिकोण पर

4. दिए गए गद्यांश के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों को पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए:

1 यहाँ पैसे के प्रति दो विपरीत दृष्टिकोणों (दिखावा-पसंद और संयमी) को दर्शाया गया है

2. बुद्धिमान लोग पैसे की पावर को अनिश्चित मानते हैं, इसलिए वे उसे खर्च कर देते हैं।

3. बैंक-हिसाब आंतरिक या परोक्ष रूप से पैसे की शक्ति को देखने का साधन है।

4. संयमी लोग पैसे के प्रयोग को अनिवार्य मानते हैं।

(क) 1 और 2 सही हैं (ख) 1 और 3 सही हैं
(ग) 2, 3 और 4 सही हैं (घ) 1, 2, 3 और 4 सभी सही हैं

5. गद्यांश में प्रयुक्त "खाक पावर है" वाक्यांश में 'खाक' शब्द किस अर्थ को अभिव्यक्त करता है?

(क) बहुत कीमती (ख) व्यर्थ या मूल्यहीन (ग) पवित्र राख (घ) अत्यंत शक्तिशाली

उत्तर: (1) (ग) (2) (क) (3) (घ) (4) (ख) (5) (ख)

गद्यांश-3

यहाँ मुझे ज्ञात होता है कि बाज़ार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है। और जो नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं, अपनी 'पर्चेजिंग पावर' के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति, शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाज़ार को देते हैं। न तो वे बाज़ार से लाभ उठा सकते हैं, न उस बाज़ार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे लोग बाज़ार का बाज़ारूपन बढ़ाते हैं। जिसका मतलब है कि कपट बढ़ाते हैं। कपट की बढ़ती का अर्थ परस्पर में सद्भाव की घटी। इस सद्भाव के ह्रास पर आदमी आपस में भाई-भाई और सुहृद और पड़ोसी फिर रह ही नहीं जाते हैं और आपस में कोरे ग्राहक और बेचक की तरह व्यवहार करते हैं।

1. बाज़ार को सार्थकता कौन दे सकता है?

(क) जिसे बाज़ार आकर्षित करता है (ख) पैसे की पावर रखने वाला
(ग) जो अपनी आवश्यकता जानता है (घ) जो बाज़ारूपन को महत्त्व देते हैं

2. पर्चेजिंग पॉवर का तात्पर्य है -

(क) पैसे के अनुसार गैर-ज़रूरी चीजें खरीदने का दिखावा (ख) कम पैसे में अधिक चीज़ें खरीदना
(ग) उधार में गैर-ज़रूरी चीजें खरीदने का दिखावा (घ) दूसरे को सुंदर चीज़ें उपहार में देकर दिखावा

3. पर्चेजिंग पावर का गर्व बाज़ार पर क्या प्रभाव डालता है?

(क) यह बाज़ार को सार्थकता देता है (ख) यह शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही देता है
(ग) यह बाज़ार को सच्चा लाभ देता है (घ) बाज़ार को संयमी मनुष्यों से भर देता है

4. लेखक के अनुसार बाजारूपन किससे बढ़ता है?

(क) सद्भाव से (ख) कपट से (ग) सादगी से (घ) सहयोग से

5. गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

(I) जो अपनी आवश्यकताओं को नहीं जानता वह बाज़ार को विनाशक शक्ति देता है।
(II) पर्चेजिंग पॉवर का गर्व बाजारूपन को बढ़ावा देता है
(III) बाज़ारूपन का आधार कपट नहीं होता।
(IV) अपनी आवश्यकता को जानने वाला बाज़ार को सच्चा लाभ देता है।

उक्त कथनों में से कौनसा / कौनसे कथन सही है?

(क) केवल (I), (II) (ख) केवल (I), (II), (III)
(ग) केवल (I), (III), (IV) (घ) केवल (I), (II), (IV)

उत्तर: (1) (ग) (2) (क) (3) (ख) (4) (ख) (5) (घ)

पाठ्यपुस्तक पर आधारित महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. बाज़ार का जादू क्या है? उसके चढ़ने-उतरने का मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर: बाज़ार का जादू: लेखक के अनुसार बाज़ार का जादू एक प्रकार का 'रूप का जादू' है, जो आँखों के रास्ते काम करता है। यह आकर्षक सजावट के माध्यम से मनुष्य को अपनी ओर खींचता है।

जादू चढ़ने का प्रभाव: जब यह जादू मनुष्य पर चढ़ता है, तो उसे बाज़ार की हर फैंसी चीज़ ज़रूरी और आराम बढ़ाने वाली लगती है। वह अपनी 'पर्चेजिंग पावर' के घमंड में आकर बिना सोचे-समझे ग़ैर-ज़रूरी सामान खरीद लेता है।

जादू उतरने का प्रभाव: जादू उतरने पर मनुष्य को एहसास होता है कि वे आकर्षक वस्तुएँ उसके आराम में मदद नहीं करतीं, बल्कि उसकी शांति में बाधा (खलल) डालती हैं। इससे केवल उसका अहंकार बढ़ता है और अंत में असंतोष ही हाथ लगता है।

प्रश्न 2. बाज़ार में भगत जी के व्यक्तित्व का कौन-सा सशक्त पहलू उभरकर आता हैं? क्या आपकी नज़र में उनका आचरण समाज में शांति-स्थापित करने में मददगार हो सकता हैं?

उत्तर- व्यक्तित्व का सशक्त पहलू: बाज़ार में भगत जी का **पूर्ण आत्म-नियंत्रण, अटूट संतोष और निस्पृह स्वभाव** उभरकर आता है। वे प्रतिदिन केवल छः आने की निश्चित कमाई करते हैं और बाज़ार की बड़ी-बड़ी दुकानें व चकाचौंध उनके मन को ज़रा भी विचलित नहीं कर पातीं।

शांति स्थापना में मददगार: हाँ, मेरी नज़र में उनका यह आचरण समाज में शांति स्थापित करने में पूरी तरह सहायक है। समाज में अपराध, ईर्ष्या और अशांति तब बढ़ती है जब लोग अंधाधुंध उपभोग और दिखावे की होड़ में शामिल होते हैं। भगत जी जैसा संतोषी व्यवहार यदि सब अपना लें, तो बाज़ार का शोषण और मानसिक तनाव पूरी तरह समाप्त हो जाएगा।

प्रश्न 3. 'बाज़ारूपन' से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं अथवा बाज़ार की सार्थकता किसमें हैं?

उत्तर- बाज़ारूपन से तात्पर्य: इसका अर्थ है बाज़ार का केवल दिखावे, छल-कपट और व्यावसायिक लाभ के लिए उपयोग करना। जब ग्राहक और विक्रेता आवश्यकताओं का सहज आदान-प्रदान करने के बजाय एक-दूसरे को ठगने की घात में रहते हैं, तो बाज़ार का 'बाज़ारूपन' बढ़ता है।

सार्थकता देने वाले व्यक्ति: बाज़ार को सार्थकता केवल वे ही व्यक्ति दे सकते हैं जो अपनी आवश्यकताओं को ठीक-ठीक जानते हैं और केवल वही खरीदते हैं जिसकी उन्हें वास्तव में ज़रूरत है (जैसे भगत जी)।

बाज़ार की असली सार्थकता: बाज़ार की वास्तविक सार्थकता **'मनुष्य की आवश्यकता के समय काम आने'** में है। जो केवल धन के घमंड में खरीददारी करते हैं, वे बाज़ार को केवल एक विनाशक और शैतानी शक्ति ही देते हैं।

प्रश्न 4. बाज़ार किसी का लिंग,जाति,धर्म या क्षेत्र नहीं देखता? वह देखता है सिर्फ़ उसकी क्रय-शक्ति को। इस तरह बाज़ार एक सामाजिक समता की भी रचना कर रहा है। आप इससे कहाँ तक सहमत है?

उत्तर- सहमति का आधार: मैं इस विचार से काफी हद तक सहमत हूँ। बाज़ार एक व्यावहारिक और लोकतांत्रिक स्थान है; वह किसी ग्राहक की सामाजिक पृष्ठभूमि, लिंग या जाति नहीं पूछता। वह केवल व्यक्ति की 'क्रय-शक्ति' (पैसे की ताकत) को पहचानता है। इस दृष्टि से वह पारंपरिक भेदभाव को भुलाकर सभी को एक समान 'ग्राहक' का दर्जा देता है।

इसकी सीमा: हालांकि, यह समता केवल एक आर्थिक भ्रम भी पैदा करती है। यह केवल उन्हीं को समान मानती है जिनकी जेब में पैसा है। जो आर्थिक रूप से गरीब हैं, बाज़ार उन्हें सम्मान नहीं देता, जिससे अमीर-गरीब के बीच की खाई और गहरी हो जाती है।

दक्षता-आधारित उच्चस्तरीय चिन्तन कौशल एवं सीबीएसई परीक्षोपयोगी प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. **"जहाँ तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ उस बल का बीज नहीं है" कथन का आशय स्पष्ट करते हुए लिखिए कि 'बाज़ार दर्शन' पाठ में यह बात किस संदर्भ में कही गई है?**

उत्तर- कथन का संदर्भ: यह बात लेखक ने संसारी वैभव, धन संचय की अंधी दौड़ और मनुष्य की आंतरिक निर्बलता को प्रकट करने के संदर्भ में कही है।

कथन का आशय: जिसके मन में और अधिक पाने की लालसा (तृष्णा) और धन बटोरने की तीव्र इच्छा (स्पृहा) होती है, वहाँ आत्मिक या नैतिक बल का वास नहीं हो सकता।

मूल सत्य: संचय की यह व्याकुलता मनुष्य की आत्मिक शक्ति को नष्ट कर देती है। धन के पीछे भागना चेतन (मनुष्य) पर जड़ (पैसा) की हार को दर्शाता है।

प्रश्न 2.'बाज़ार दर्शन' पाठ के लेखक ने किस प्रकार के बाज़ार को मानवता के लिए विडंबना कहा है?

उत्तर- कपट और शोषण को बढ़ावा:लेखक ने उस बाज़ार को मानवता के लिए विडंबना कहा है जो लोगों की आवश्यकताओं का आदान-प्रदान करने के बजाय केवल उनका शोषण करता है।

कपट की सफलता:जहाँ ग्राहक और विक्रेता एक-दूसरे को ठगने की घात में रहते हैं और एक की हानि में दूसरा अपना लाभ देखता है।

अनीतिशास्त्र:ऐसे बाज़ारों के कारण समाज में परस्पर सद्भाव, भाईचारा और पड़ोस का रिश्ता समाप्त हो जाता है। लेखक ने इसके पोषक अर्थशास्त्र को 'मायावी' एवं 'अनीतिशास्त्र' माना है।

प्रश्न 3. बाज़ार दर्शन' पाठ के संदर्भ में लिखिए कि 'पर्चेजिंग पावर' से क्या अभिप्राय है? क्या इसका उपयोग सकारात्मक कार्यों के लिए भी किया जा सकता है? उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर- 'पर्चेजिंग पावर' का अभिप्राय है- क्रय शक्ति या धन की ताकत। लोग इसके गर्व में आकर अक्सर अनावश्यक सामान की खरीदारी करते हैं। हाँ, इसका उपयोग रचनात्मक एवं कल्याणकारी कार्यों में किया जा सकता है। **जैसे -** अपनी क्रय शक्ति का प्रयोग सामाजिक विकास के कार्यों (जैसे-निर्धनों के लिए चिकित्सालय या पुस्तकालय खुलवाना आदि) में करना। ग्रामीण कुटीर उद्योगों की वस्तुओं को खरीदकर ग्रामीण आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना।

प्रश्न 4. समय के साथ -साथ बाजारों के स्वरुप में बदलाव और विस्तार आया है, आपको किस प्रकार के बाज़ार में खरीददारी करना पसन्द है और क्यों? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

उत्तर- बाज़ारों का आधुनिक स्वरूप: आज बाज़ार परंपरागत दुकानों से बदलकर बड़े-बड़े वातानुकूलित मॉल्स, सुपरमार्केट्स और ऑनलाइन ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स के रूप में विस्तारित हो चुके हैं।

पसंदीदा बाज़ार और तर्क: मुझे **सामान्य स्थानीय बाज़ार या हाट** में खरीददारी करना पसंद है।

कारण: यहाँ चमक-दमक और भ्रामक विज्ञापनों का कृत्रिम जाल (शैतान का जाल) कम होता है। स्थानीय बाज़ारों में मानवीय संवाद और आवश्यकता-आधारित क्रय-विक्रय सहजता से होता है, जिससे अनावश्यक अपव्यय और मानसिक असंतोष से बचा जा सकता है।

प्रश्न 5. 'बाज़ार दर्शन' पाठ में "लोक वैभव की व्यंग्य शक्ति" किसे कहा गया है? इसके क्या दुष्परिणाम होते हैं? यह किसके समक्ष चूर-चूर हो जाती है?

उत्तर- वैभव की व्यंग्य शक्ति का अर्थ है अमीरी का वह तीखा प्रदर्शन (जैसे पास से धूल उड़ाती हुई कार का निकलना), जो साधारण मनुष्य को उसकी हीनता का अहसास कराता है।

दुष्परिणाम: यह मनुष्य को अपनी ही परिस्थितियों के प्रति असंतोष, ईर्ष्या और तृष्णा से घायल कर देती है। व्यक्ति अपनों और माता-पिता तक के प्रति कृतघ्न हो जाता है।

यह दारुण शक्ति भगत जी जैसे आत्मिक, धार्मिक या नैतिक बल से संपन्न, संतोषी व्यक्तियों के सामने पूरी तरह चूर-चूर और पानी-पानी हो जाती है।

प्रश्न 6. लेखक ने पाठ में संकेत किया है कि कभी-कभी बाज़ार में आवश्यकता ही शोषण का रूप धारण कर लेती है। क्या आप इस विचार से सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर: विचार से पूर्ण सहमति: मैं लेखक के इस विचार से पूर्णतः सहमत हूँ कि बाज़ार में मनुष्य की मजबूरी या ज़रूरत कभी-कभी शोषण का जरिया बन जाती है।

शोषण का तरीका: जब बाज़ार में व्यावसायिकता या 'बाज़ारूपन' बढ़ जाता है, तो दुकानदार ग्राहक की लाचारी का अनुचित लाभ उठाते हैं।

तर्कपूर्ण उदाहरण: किसी आपदा, महामारी या वस्तु की भारी कमी के समय जब दवा या राशन जैसी अनिवार्य चीज़ों की माँग बढ़ जाती है, तब जमाखोर उनकी कृत्रिम कमी पैदा कर देते हैं। ऐसे समय में इंसानी ज़रूरत का फ़ायदा उठाकर मनमाने दामों पर सामान बेचा जाता है, जो शुद्ध शोषण है।

प्रश्न 7. लेखक ने अर्थशास्त्र को अनीतिशास्त्र क्यों कहा है? बाज़ार-दर्शन पाठ के आधार पर लिखें।

उत्तर: शोषणकारी व्यवस्था: लेखक ने उस अर्थशास्त्र को 'अनीतिशास्त्र' और 'मायावीशास्त्र' माना है जो केवल और केवल 'बाज़ारूपन' और असीमित मुनाफ़ाखोरी की प्रवृत्ति का पोषण करता है।

सद्भाव का नाश: ऐसा अर्थशास्त्र समाज में परस्पर भाईचारे, सुहृदता और पड़ोस के पवित्र रिश्तों को समाप्त करके इंसानों को केवल 'ग्राहक और विक्रेता' के क्रूर रिश्ते में बाँध देता है।

कपट की सफलता: जहाँ आवश्यकताओं के सहज आदान-प्रदान के स्थान पर केवल शोषण होता है और कपटी लोग सफल तथा निष्कपट व्यक्ति शिकार बनते हैं, उस पूरी व्यवस्था को लेखक ने मानवता विरोधी और औंधा (अनीतिशास्त्र) कहा है।

अवधारणा मानचित्र

पाठ-12 काले मेघा पानी दे- धर्मवीर भारती

<u>सारांश / मुख्य बिंदु</u>

यह संस्मरण लेखक के किशोर जीवन की स्मृतियों पर आधारित है, जिसमें वर्षा के लिए किए जाने वाले लोकाचारों का वर्णन है।

- **विश्वास और विज्ञान का द्वंद्व:**यह पाठ मुख्य रूप से लोक-प्रचलित पारंपरिक विश्वास और आधुनिक विज्ञान के तर्कों के बीच चलने वाले द्वंद्व को रेखांकित करता है।
- **इंदरसेना (मेढक-मंडली) का आगमन:**भीषण सूखे के समय गाँव के किशोरों की टोली (इंदर सेना) कीचड़ में लथपथ होकर बादलों से पानी और गुड़धानी माँगने के लिए द्वार-द्वार निकलती है।
- **पानी की निर्मम बरबादी पर तर्क:**लेखक का किशोर मन वैज्ञानिक सोच और आर्यसमाजी संस्कारों के कारण इस भीषण सूखे में बच्चों पर बाल्टी भर-भर कर पानी फेंकने को अंधविश्वास और पानी की बरबादी मानता है।
- **जीजी का सेवा भाव और दान की महिमा:**लेखक की जीजी अंधविश्वासों से दूर, त्याग और दान की महत्ता को किसान द्वारा खेत में बीज बोने (बुवाई) के उदाहरण से सही ठहराती हैं कि कुछ पाने के लिए पहले अर्घ्य रूप में देना ज़रूरी है।
- **सहज-प्रेम बनाम वैज्ञानिक सत्य:**संस्मरण यह दिखाता है कि कभी-कभी अपनों की संतुष्टि और रिश्तों में सहज प्रेम-रस, विज्ञान के कठोर सत्य से भी अधिक भारी और महत्त्वपूर्ण हो जाता है।
- **सांस्कृतिक मूल्यों की रचनात्मक भूमिका:**पाठ यह संदेश देता है कि जो विश्वास किसी के लिए जानलेवा या अपमानजनक न हों, वे आपातकाल में निराशा दूर करने और लोक-चेतना को जोड़ने में रचनात्मक भूमिका निभाते हैं।
- **राष्ट्रीय चेतना और स्वार्थ पर चोट:**लेखक आज के समय में देश के प्रति हमारे कर्तव्यों, स्वार्थपरता और केवल माँग करने की प्रवृत्ति पर चोट करता है, जहाँ भ्रष्टाचार की बातें तो सब करते हैं पर स्वयं त्याग करने से पीछे हट जाते हैं।
- **गगरी फूटी की फूटी रह जाना:**अंत में बादलों के उमड़ने और पानी बरसने के बावजूद 'गगरी फूटी और बैल प्यासे' रहने का प्रतीक देश में विकास योजनाएँ होने पर भी आम जनता तक लाभ न पहुँचने की विवशता को दर्शाता है।

गद्यांश-1

सचमुच ऐसे दिन होते जब गली-मुहल्ला, गाँव-शहर हर जगह लोग गरमी में भुन-भुन कर त्राहिमाम कर रहे होते, जेठ के दसतपा बीतकर आषाढ़ का पहला पखवारा भी बीत चुका होतापर क्षितिज पर कहीं बादल की रेख भी नहीं दीखती होती, कुएँ सूखने लगते, नलों में एक तो बहुत कम पानी आता और आता भी तो आधी रात को भी मानो खौलता हुआ पानी हो। शहरों की तुलना में गाँव में और भी हालत खराब होती थी। जहाँ जुताई होनी चाहिए वहाँ खेतों की मिट्टी सूख कर पत्थर हो जाती, फिर उसमें पपड़ी पड़कर जमीन फटने लगती, लू ऐसी कि चलते-चलते आदमी आधे रास्ते में लू खाकर गिर पड़े। ढोर-ढंगर प्यास के मारे मरने लगते लेकिन बारिश का कहीं नाम निशान नहीं, ऐसे में पूजा-पाठ कथा-विधान सब करके लोग जब हार जाते तब अंतिम उपाय के रूप में निकलती यह इंदर सेना। वर्षा के बादलों के स्वामी, हैं इंद्र और इंद्र की सेना टोली बाँधकर कीचड़ में लथपथ निकलती, पुकारते हुए मेघों को, पानी माँगते हुए प्यासे गलों और सूखे खेतों के लिए।

1. गद्यांश में 'ढोर-ढंगर' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है?

(क) गाँव के बच्चों के लिए (ख) खेतों की फटी हुई मिट्टी और पपड़ियों के लिए।

(ग) घरेलू पशुओं के लिए (घ) बादलों के स्वामी इंद्रदेव के दूतों के लिए।

2. "आधे रास्ते में लू खाकर गिर पड़े" कथन से जेठ-आषाढ़ की किस विभीषिका का चित्रण होता है?

(क) अत्यधिक ठंड और कोहरे का। (ख) प्राणलेवा गर्मी और गर्म हवा के प्रकोप का।

(ग) अत्यधिक बाढ़ और कीचड़ का। (घ) गाँव में फैली किसी संक्रामक बीमारी का।

3. 'जेठ के दसतपा' शब्द से लेखक का क्या तात्पर्य है?

(क) जेठ महीने के दस दिन जब अत्यधिक वर्षा होती है।

(ख) दस बार पूजा-पाठ का विधान करना।

(ग) गाँव के दस बुजुर्गों द्वारा किया जाने वाला विशेष तप।

(घ) जेठ मास के वे दस दिन जो वर्ष में सबसे अधिक गर्म और तपने वाले माने जाते हैं।

4. स्तंभ-1 की परिस्थितियों को स्तंभ-2 के उनके प्रभावों से सुमेलित कीजिए तथा सही विकल्प चुनिए:

स्तंभ-1 (परिस्थिति)	**स्तंभ-2 (प्रभाव/रूप)**
(1) आषाढ़ का पहला पखवारा बीतना	(अ) चलते-चलते आदमी का गिर पड़ना
(2) नलों की स्थिति	(ब) क्षितिज पर बादल की रेख भी न दिखना
(3) तीव्र लू का चलना	(स) प्यास के मारे दम तोड़ना
(4) ढोर-ढंगर की दशा	(द) आधी रात को भी खौलता हुआ पानी आना

(क) (1)-(ब), (2)-(द), (3)-(अ), (4)-(स) (ख) (1)-(द), (2)-(अ), (3)-(ब), (4)-(स)

(ग) (1)-(ब), (2)-(अ), (3)-(द), (4)-(स) (घ) (1)-(स), (2)-(ब), (3)-(अ), (4)-(द)

5. गद्यांश के अनुसार ग्रामीण-जीवन की विवशताओं से जुड़े कौनसे बिंदु सत्य हैं? सही विकल्प चुनिए-

I. लोग अपनी बेबसी दूर करने के लिए उत्सवधर्मी और प्रपंचधर्मी हो जाते हैं।

II.खेतों की जुताई के समय पानी न होने से मिट्टी पत्थर बन जाती है।

III.ग्रामीण लोग बिना पूजा-पाठ किए सीधे ही इंदर सेना को बाहर निकाल देते थे।

(क) केवल I और II (ख) केवल II और III (ग) केवल I और III (घ) I, II और III सभी

उत्तर: (1) (ग) (2) (ख) (3) (घ) (4) (क) (5) (क)

गद्यांश -2

मैं असल में था तो इन्हीं मेढक-मंडली वालों की उमर का, पर कुछ तो बचपन के आर्यसमाजी संस्कार थे और एक कुमार सुधार सभा कायम हुई थी उसका उपमंत्री बना दिया गया था-सो समाज-सुधार का जोश कुछ ज़्यादा ही था। अंधविश्वासों के खिलाफ तो तरकस में तीर रखकर घूमता रहता था। मगर मुश्किल यह थी कि मुझे अपने बचपन में जिससे सबसे ज़्यादा प्यार मिला वे थीं जीजी। यूँ मेरी रिश्ते में कोई नहीं थीं। उम्र में मेरी माँ से भी बड़ी थीं, पर अपने लड़के-बहू सबको छोड़कर उनके प्राण मुझी में बसते थे। और वे थीं उन तमाम रीति-रिवाजों, तीज-त्योहारों, पूजा-अनुष्ठानों की खान जिन्हें कुमार-सुधार सभा का यह उपमंत्री अंधविश्वास कहता था, और उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकना चाहता

था। पर मुश्किल यह थी कि उनका कोई पूजा-विधान, कोई त्योहार अनुष्ठान मेरे बिना पूरा नहीं होता था।

1. नीचे दिए गए कथन और कारण पर विचार कीजिए:

कथन: लेखक अंधविश्वासों का समर्थक था।

कारण: वह कुमार सुधार सभा का उपमंत्री था और आर्यसमाजी विचारों से प्रभावित था।

(क) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन सही है, परंतु कारणग़लत है।

(ग) कथन ग़लत है, परंतु कारणसही है।

(घ) कथन और कारण दोनों ग़लत हैं।

2. गद्यांशानुसार निम्नलिखित में से कौन-कौन से बिंदु सत्य प्रमाणित होते हैं? सही विकल्प चुनिए:

I. वैचारिक मतभेद होने के बावजूद लेखक और जीजी में गहरा भावनात्मक संबंध था।

II. जीजी धर्म और लोक-आचार को बहुत महत्त्व देती थीं।

III. लेखक अपनी जीजी से बहुत नफ़रत करता था।

(क) केवल I और II (ख) केवल II और III (ग) केवल I और III (घ) सभी कथन सही हैं

3. यह गद्यांश मुख्य रूप से किस द्वंद्व को रेखांकित करता है?

(क) शहरों और गाँवों के विकास के बीच के द्वंद्व को।

(ख) किशोरावस्था के वैज्ञानिक तर्क और पारिवारिक आत्मीयता के बीच के द्वंद्व को।

(ग) आर्य समाज और सनातन धर्म के बीच के द्वंद्व को।

(घ) पुलिस की लाठी और स्वतंत्रता संग्राम के बीच के द्वंद्व को।

4. "उनके प्राण मुझी में बसते थे"– पंक्ति से जीजी के चरित्र की किस विशेषता का पता चलता है?

(क) उनका अंधविश्वासी स्वभाव। (ख)अपने बेटे-बहू के प्रति उनका अत्यधिक लगाव।

(ग) लेखक के प्रति उनका असीम, निश्छल प्रेम। (घ) कुमार-सुधार सभा के प्रति उनकी निष्ठा।

5. जीजी का लेखक (धर्मवीर भारती) से क्या संबंध था?

(क) वे रिश्ते में लेखक की सगी मौसी लगती थीं। (ख) वे लेखक की माँ की सगी छोटी बहन थीं।

(ग) वे कुमार-सुधार सभा की अध्यक्ष थीं। (घ) वे रिश्ते में लेखक की कुछ नहीं लगती थीं।

उत्तर: (1) (ग) (2) (क) (3) (ख) (4) (ग) (5) (घ)

गद्यांश-3

“देख, तू तो अभी से पढ़-लिख गया है। मैंने तो गाँव के मदरसे का भी मुँह नहीं देखा। पर एक बात देखी है कि अगर तीस-चालीस मन गेहूँ उगाना है, तो किसान पाँच-छह सेर अच्छा गेहूँ अपने पास से लेकर जमीन में क्यारियाँ बनाकर फेंक देता है। उसे बुवाई कहते हैं। यह जो सूखे हम अपने घर का पानी इन पर फेंकते हैं, वह भी बुवाई है। यह पानी गली में बोएँगे तो सारे शहर, कस्बे और गाँव पर पानी वाले बादलों की फसल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं, फिर काले मेघा से पानी माँगते हैं। सब ऋषि-मुनि कह गए हैं कि पहले खुद दो, तब देवता तुम्हें चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे। भइया, यह तो हर आदमी का आचरण है, जिससे सबका आचरण बनता है। ‘यथा राजा तथा प्रजा’ सिर्फ़ यही सच नहीं है। सच यह भी है कि ‘यथा प्रजा तथा राजा’। यही तो गाँधी जी महाराज कहते हैं।”

1. जीजी के अनुसार, अधिक फसल पाने के लिए किसान को पहले क्या करना पड़ता है?

(क) ऋण लेना पड़ता है। (ख) पूजा-पाठ करना पड़ता है।
(ग) अच्छा अनाज खेत में त्यागना पड़ता है। (घ) सरकार से गुहार लगानी पड़ती है।

2. 'यथा प्रजा तथा राजा' कथन का इस गद्यांश में क्या तात्पर्य है?

(क) राजा ही सब कुछ तय करता है। (ख) जनता के आचरण से ही देश बनता है।
(ग) प्रजा हमेशा राजा से डरती है। (घ) राजा प्रजा को सजा देता है।

3. इस गद्यांश में 'मन' और 'सेर' शब्द किस व्यवस्था को दर्शाते हैं?

(क) समय की माप को (ख) दूरी की माप को
(ग) पुराने तोल-माप के पैमानों को (घ)मुद्रा की इकाइयों को

4. नीचे दिए गए कथन और कारण पर विचार कीजिए:

कथन: जीजी ने बचपन में गाँव के बड़े मदरसे में जाकर शिक्षा प्राप्त की थी।

कारण: वे मानती थीं कि पढ़-लिख जाने से ही मनुष्य को सही आचरण समझ में आता है।

(क) कथन और कारण दोनों सही हैं। (ख) कथनसही है, परंतु कारणग़लत है।
(ग) कथन ग़लत है, परंतु कारण सही है। (घ) कथन और कारण दोनों ग़लत हैं।

5. जीजी का 'बुवाई' वाला तर्क लेखक के किस दृष्टिकोण को चुनौती देता है?

(क) उसके धार्मिक दृष्टिकोण को (ख) उसके केवल किताबी और वैज्ञानिक तर्क को
(ग) उसके राजनीतिक विचारों को (घ) उसकी आर्थिक सोच को

उत्तर- (1) (ग) (2) (ख) (3) (ग) (4) (घ) (5) (ख)

पाठ्यपुस्तक पर आधारित महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. लोगों ने लड़कों की टोली को मेंढक मंडली नाम किस आधार पर दिया? यह टोली अपने आपको इंदर सेना कहकर क्यों बुलाती थी?

उत्तर- नाम का आधार: गाँव के लोग बच्चों की इस टोली को 'मेंढक मंडली' इसलिए कहते थे क्योंकि ये बच्चे नग्न होकर गली-मोहल्लों में शोर मचाते, उछलते-कूदते और कीचड़ में लोटते थे। उनकी हरकतें मेंढकों के समान प्रतीत होती थीं।

इंदर सेना का कारण: यह टोली स्वयं को 'इंदर सेना' इसलिए बुलाती थी क्योंकि उनका मानना था कि वे इंद्र देव के दूत हैं। उनका विश्वास था कि यदि वे कीचड़ में सराबोर होकर इंद्र की पूजा करेंगे और पानी की माँग करेंगे, तो इंद्र देव प्रसन्न होकर बारिश करेंगे।

प्रश्न 2. इंदर सेना पर पानी फेंकने के संदर्भ में लेखक तथा जीजी के मत को स्पष्ट कीजिए-

उत्तर- लेखक का मत:लेखक के अनुसार यह पानी की निर्मम बर्बादी है और यदि इंदर सेना इंद्र देवता की दूत हैं तो अपने लिए पानी क्यों नहीं माँगते। यह पाखंड और अंधविश्वास है। इसके कारण ही समाज पिछड़ता है।

जीजी का मत: जीजी के अनुसार इंदर सेना पर पानी फेंकना इंद्र देवता को अर्घ्य देना है। यह दान और त्याग है तथा पानी की बुवाई है। जिस प्रकार किसान थोड़े बीज से अधिक फसल उगाता है, वैसे ही यह भी भविष्य के लिए पानी की बुवाई है।

प्रश्न 3. पानी दे, गुड़धानी दे, मेघों से पानी के साथ-साथ गुड़धानी की माँग क्यों की जा रही है?

उत्तर- गुड़धानी का अर्थ: गुड़ और चने का मिश्रण, जो अनाज और फसल तथा समृद्धि का प्रतीक है।

माँग का कारण: किसान की खुशहाली अच्छी फसल पर निर्भर करती है। इंद्र सेना मेघों से केवल वर्षा की बूँदें ही नहीं, बल्कि ऐसी वर्षा चाहती है जिससे धरती लहलहा उठे और पूरे समाज के लिए भोजन

व समृद्धि का मार्ग प्रशस्त हो। यह कृषि संस्कृति की समृद्धि के प्रति उनकी गहरी आस्था को दर्शाता है।

प्रश्न 4. गगरी फूटी, बैल पियासा इंदर सेना के इस खेल गीत में बैलों के प्यासा रहने की बात क्यों मुखरित हुई?

उत्तर- सूखे की भीषणता: 'गगरी फूटी बैल पियासा' गीत सूखे की विभीषिका को प्रकट करता है। जब घर की गगरी खाली हो जाती है और पशुओं के लिए पानी नहीं बचता, तो वह स्थिति अत्यंत दर्दनाक होती है।

सामाजिक करुणा: यह गीत अकाल की पीड़ा को व्यक्त करता है। बैलों का प्यासा रहना इस बात का प्रमाण है कि गाँव में पानी का घोर संकट है। यह अकाल के प्रति समाज की चिंता और करुणा का स्वर है, जो बादलों के प्रति एक मार्मिक अपील है।

प्रश्न 5. इंदर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय क्यों बोलती हैं? नदियों का भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्त्व हैं?

उत्तर- जय का कारण: भारत में गंगा को 'जीवनदायिनी' और पवित्र माना गया है। इंदर सेना द्वारा 'गंगा मैया की जय' बोलना यह दर्शाता है कि भारतीय आस्था में जल और जीवन के मूल स्रोत को ही सर्वोच्च स्थान प्राप्त है।

नदियों का महत्त्व: नदियाँ केवल जल का स्रोत नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता की पोषक हैं। इन्हें 'माता' मानकर पूजा जाता है। अधिकांश धार्मिक व सांस्कृतिक केंद्र नदियों के किनारे हैं। जैसे- मथुरा, आगरा।

प्रश्न 6. "रिश्तों में हमारी भावना- शक्ति का बँट जाना, विश्वासों के जंगल में सत्य की राह खोजनी हमारी बुद्धि की शक्ति को कमज़ोर करती है।" पाठ में जीजी के प्रति लेखक की भावना के संदर्भ में इस कथन के औचित्य की समीक्षा कीजिए?

उत्तर- भावना बनाम तर्क: जीजी की भावनाएँ उनकी अटूट आस्था से जुड़ी हैं, जबकि लेखक वैज्ञानिक तर्क पर टिका है। दोनों के बीच यही प्रेम और तर्क का द्वंद्व है।

औचित्य: जीजी का प्रेम लेखक को विवश कर देता है कि वह उनकी आस्था को ठेस न पहुँचाएँ। लेखक समझता है कि अंधविश्वास समाज के लिए हानिकारक है, लेकिन जीजी के स्नेह के आगे उनका तर्क कमजोर पड़ जाता है। यह कथन इस उलझन को दर्शाता है कि कभी-कभी प्रेम के कारण हम सत्य (वैज्ञानिक) और विश्वास (आस्था) के बीच सही निर्णय नहीं ले पाते।

दक्षता-आधारित उच्चस्तरीय चिन्तन कौशल एवं सीबीएसई परीक्षोपयोगी प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. 'काले मेघा पानी दे' पाठ में लोक प्रचलित विश्वास और विज्ञान के द्वंद्व का चित्रण किस प्रकार किया गया है?

उत्तर- विश्वास: ग्रामीण समाज इंद्र देव को प्रसन्न करने के लिए 'इंद्र सेना' पर कीचड़ और पानी डालता है। उनकी मान्यता है कि यह एक 'अर्घ्य' है, जिससे वर्षा होगी।

विज्ञान: लेखक एक तर्कशील युवक है जो इसे 'पानी की बर्बादी' मानता है। उसके लिए विज्ञान ही सत्य है और अंधविश्वास कुरीतियों को बढ़ावा देते हैं।

द्वंद्व: पाठ इन दोनों विचारधाराओं के बीच के टकराव को उजागर करता है। जहाँ एक ओर गाँव की परंपराएँ और आस्थाएँ हैं, वहीं दूसरी ओर लेखक का तार्किक दृष्टिकोण है। यह पाठ हमें यह समझने पर मजबूर करता है कि आस्था और तर्क के बीच संतुलन कैसे बनाया जाए।

प्रश्न 2. जेठ के दसतपा और आषाढ़ का पहला पखवारा बीत जाने पर भी बारिश न होने पर 'काले मेघा पानी दे' पाठ में गाँव वालों द्वारा क्या-क्या उपाय किए गए? उन उपायों को आप कितना उचित मानते हैं? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

उत्तर- उपाय: गाँव वालों ने 'इंद्र सेना' (मेंढक मंडली) के माध्यम से कीचड़ में लोटना, पानी की माँग करना, पूजा-पाठ करना और इंद्र देव को प्रसन्न करने के लिए जल अर्पण जैसे अनुष्ठान किए।

तर्क:ये उपाय वैज्ञानिक दृष्टि से व्यर्थ हैं क्योंकि इनसे वर्षा नहीं होती। हालांकि, ये उपाय समाज में एकता और साझा संकट में आशा बनाए रखने का माध्यम हैं। मैं इन्हें तर्कपूर्ण नहीं मानता क्योंकि सीमित जल संसाधनों की बर्बादी किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है, विशेषकर अकाल के समय में।

प्रश्न 3. "माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं पर त्याग का कहीं नामोनिशान नहीं है" इस पंक्ति से लेखक का क्या तात्पर्य है?

उत्तर- लेखक का तात्पर्य है कि आज का समाज अधिकार पाने की तो हर संभव कोशिश करता है और बड़ी-बड़ी माँगें रखता है, लेकिन अपनी ओर से समाज या देश के लिए 'त्याग' करने के लिए तैयार नहीं है।लेखक इस वाक्य के माध्यम से समाज के उस दोगलेपन पर कटाक्ष करता है जो भगवान से तो 'अच्छी फसल' और 'पानी' की भीख माँगता है, लेकिन स्वयं अपनी कीमती वस्तु का दान देने में संकोच करता है। यह अधिकार और कर्तव्य के बीच के असंतुलन की ओर संकेत करताहै।

प्रश्न 4. तकनीकी विकास के दौर में भी भारत की अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर है। कृषि समाज में चैत्र-वैशाख सभी माह महत्त्वपूर्ण हैं, पर आषाढ़ का चढ़ना उनमें उल्लास क्यों भर देता है?

उत्तर- भारत की कृषि पूरी तरह वर्षा पर निर्भर है, इसलिए आषाढ़ मास के साथ ही मानसून (वर्षा ऋतु) मानसून का आना किसानों के लिए जीवनदायी होता है। वर्षा होने से खेतों में बुआई और खेती की शुरुआत संभव होती है, जो ग्रामीण जीवन की आशा और समृद्धि का आधार है। लंबे समय के सूखे और जल संकट के बाद पहली बारिश किसानों में नई उम्मीद और खुशी भर देती है। इसलिए आषाढ़ का चढ़ना पूरे कृषि समाज में उल्लास, उत्साह और जीवन का संचार कर देता है।

अवधारणा मानचित्र

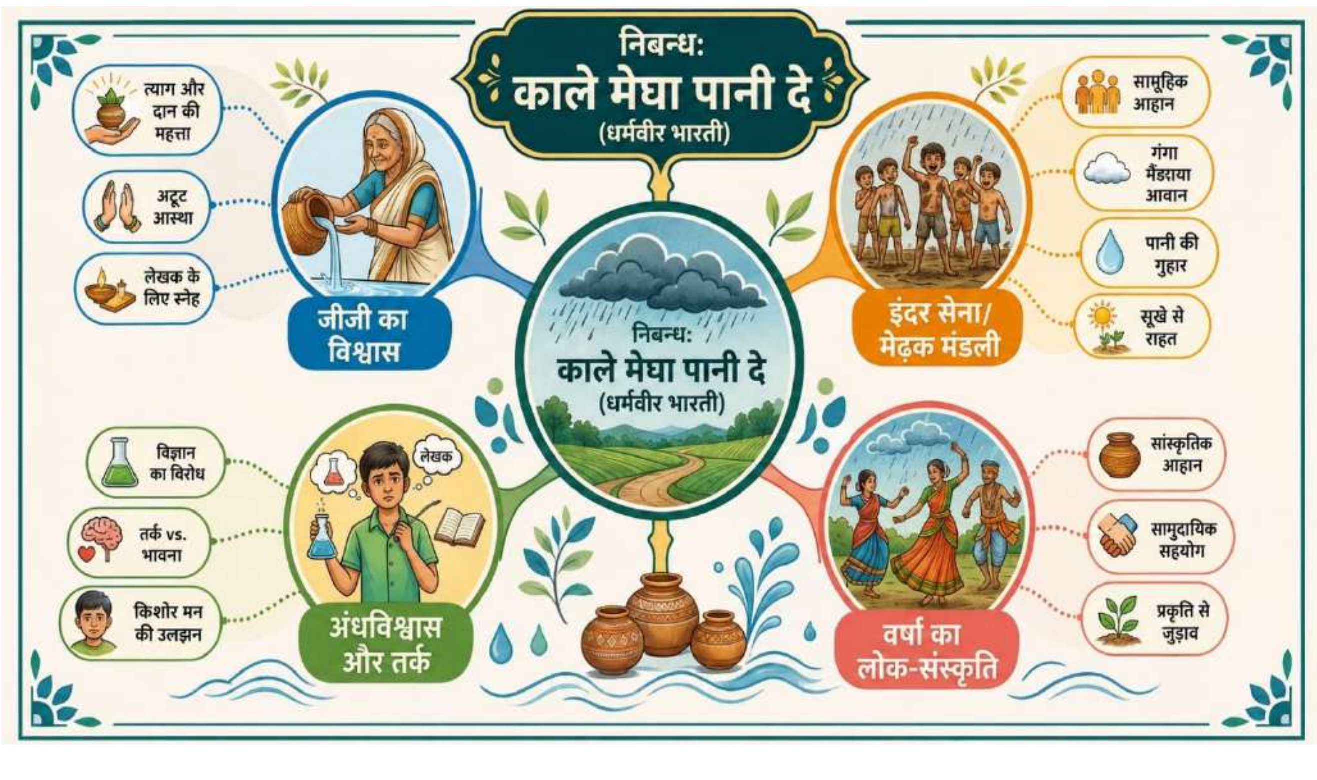

पाठ-13 पहलवान की ढोलक- फणीश्वर नाथ रेणु

सारांश/ मुख्य बिंदु

- **'पहलवान की ढोलक'** फणीश्वरनाथ रेणु की प्रसिद्ध आंचलिक कहानी है, जिसमें लोक-संस्कृति, संघर्ष और जीवन-शक्ति का मार्मिक चित्रण किया गया है।
- **व्यवस्था परिवर्तन से लोक-कला की उपेक्षा:** यह कहानी मुख्य रूप से व्यवस्था बदलने के साथ ही लोक-कला और लोक-कलाकारों के अप्रासंगिक तथा उपेक्षित हो जाने की करुण त्रासदी को दर्शाती है।
- **'भारत' पर 'इंडिया' का प्रभाव:** पुराने राजा साहब की मृत्यु के बाद विलायत से आए नए राजकुमार द्वारा कुश्ती का स्थान 'घोड़े की रेस' को देना व्यक्तिगत सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि पुरानी जमीनी व्यवस्था पर आधुनिक सभ्यता के थोपे जाने का प्रतीक है।
- **लुट्टन सिंह का संघर्ष:** बचपन में अनाथ हुए लुट्टन को उसकी विधवा सास ने पाला-पोसा। गाँव वालों के तानों का बदला लेने के लिए उसने कसरत शुरू की और अंततः एक कुशल पहलवान बना।
- **'शेर के बच्चे' को परास्त करना:** श्यामनगर के दंगल में बिना किसी गुरु के, केवल ढोल की थाप से प्रेरणा लेकर लुट्टन ने अजेय माने जाने वाले पंजाब के प्रसिद्ध पहलवान 'चाँद सिंह' (शेर के बच्चे) को पटखनी दे दी।
- **राज-पहलवान का गौरव:** चाँद सिंह को हराने के बाद राजा साहब ने प्रसन्न होकर उसे अपने दरबार में रख लिया, जहाँ उसने 15 वर्षों तक अजेय रहकर राज-पहलवान के रूप में कीर्ति और सुख पाया।
- **दरबार से निष्कासन:** नए राजा (राजकुमार) के आते ही पहलवान और उसके दोनों भावी पहलवान बेटों के भोजन-व्यय को फ़िज़ूलखर्ची मानकर उन्हें बिना गिड़गिड़ाने का मौका दिए राजदरबार से निकाल दिया गया।
- **गाँव वापसी और जीवन यापन:** लुट्टन अपने बेटों के साथ गाँव लौट आया और झोंपड़ी में रहकर गाँव के चरवाहों और नौजवानों को कुश्ती सिखाने लगा। बाद में बेटों की मजदूरी से जैसे-तैसे उनका जीवन चलने लगा।
- **गाँव में भूख और महामारी का प्रकोप:** अचानक गाँव पर सूखे और अन्न की कमी के साथ मलेरिया तथा हैज़े का वज्रपात हुआ, जिससे प्रतिदिन गाँव में लाशें उठने लगीं और चारों ओर मौत का सन्नाटा पसर गया।
- **ढोलक की संजीवनी शक्ति:** इस विभीषिका और घोर निराशा के बीच पहलवान की ढोलक की आवाज़ गाँव के मृतप्राय लोगों में संजीवनी शक्ति भरकर उन लोगों में मौत से लड़ने का हौंसला जगाती थी।
- **बेटों की मृत्यु पर भी अदम्य धैर्य एवं साहसिकता:** महामारी की चपेट में आकर जब पहलवान के दोनों युवा बेटे दम तोड़ रहे थे, तब भी वह रात भर ढोल बजाता रहा और बेटों की मौत के बाद उनके शवों को अकेले ही नदी में बहा आया।
- **कलाकार का दर्दनाक अंत:** बेटों की मृत्यु के चार-पाँच दिन बाद भूख, बीमारी और अपार दुख के कारण लुट्टन की भी मौत हो गई। उसकी अंतिम इच्छा थी कि वह ज़िंदगी में कभी 'चित' नहीं हुआ, इसलिए उसे चिता पर पेट के बल सुलाया जाए।

➢ **कहानी का मूल संदेश:** यह कहानी व्यवस्था की मुखापेक्षिता पर सवाल उठाती है कि क्या लोक-कलाओं का अस्तित्व केवल राज्याश्रय पर निर्भर है या उनका कोई स्वतंत्र मानवीय मूल्य भी है।

गद्यांश-1

अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलाखिलाकर हँस पड़ते थे। सियारों का क्रंदन और पेचक की डरावनी आवाज कभी-कभी निस्तब्धता को अवश्य भंग कर देती थी। गाँव की झोंपड़ियों से कराहने और कै करने की आवाज 'हरे राम! हे भगवान!' की टेर अवश्य सुनाई पड़ती थी। बच्चे भी कभी-कभी निर्बल कंठों से 'माँ-माँ' पुकार कर रो पड़ते थे। पर इससे रात्रि की निस्तब्धता में विशेष बाधा नहीं पड़ती थी। कुत्तों में परिस्थिति को ताड़ने की विशेष बुद्धि होती है। वे दिन-भर राख के घूरों पर गठरी की तरह सिकुड़कर, मन मारकर पड़े रहते थे। संध्या या गंभीर रात्रि को सब मिलकर रोते थे।

1. "आकाश से टूटकर... अन्य तारे उसकी असफलता पर हँस पड़ते थे"- यह अंश समाज की किस मानवीय प्रवृत्ति को दिखाता है?

(क) आपसी सहयोग की भावना को (ख) विवशता पर समाज की संवेदनहीनता को

(ग) वैज्ञानिक प्रगति की होड़ को (घ) धार्मिक एकता के संदेश को

2. गद्यांश के अनुसार, टूटते हुए तारे की 'ज्योति और शक्ति' रास्ते में ही क्यों समाप्त हो जाती थी?

(क) वायुमंडल के घर्षण के कारण (ख) मार्ग की अत्यधिक दूरी होने से

(ग) सूर्य की तीव्र किरणों के प्रभाव से (घ) घोर अवसाद और अंधकार के कारण

3. बीमार ग्रामीणों के कंठों से निकलने वाली 'हरे राम! हे भगवान!' की टेर क्या दर्शाती है?

(क) उनका गहरा धार्मिक उल्लास (ख) चिकित्सा के अभाव में अंतिम लाचार पुकार

(ग) राजा के प्रति उनका भारी आक्रोश (घ) ढोलक की थाप का विरोध

4. इस गद्यांश की केंद्रीय साहित्यिक विधागत विशेषता क्या है?

(क) केवल ऐतिहासिक तथ्यों का वर्णन (ख) हास्य और व्यंग्य रस की प्रधानता

(ग) अमूर्त प्रवृत्तियों का सजीव मानवीकरण (घ) कठिन दुरूह शब्दों की भरमार

5. नीचे दिए गए कथन और कारण पर विचार कीजिए:

कथन: पृथ्वी पर चारों तरफ रोशनी और उल्लास का माहौल व्याप्त था।

कारण: बीमार बच्चे रात भर जागकर अपनी माँ के साथ खेलते थे।

(क) कथन और कारण दोनों सही हैं। (ख) कथन सही है, परंतु कारण ग़लत है

(ग) कथन ग़लत है, परंतु कारण सही है। (घ) कथन और कारण दोनों ग़लत हैं।

उत्तर- 1 (ख) 2 (घ) 3 (ख) 4 (ग) 5 (घ)

गद्यांश-2

श्यामनगर के दंगल और शिकार-प्रिय वृद्ध राजा साहब उसे दरबार में रखने की बातें कर ही रहे थे कि लुट्टन ने शेर के बच्चे को चुनौती दे दी। सम्मान-प्राप्त चाँद सिंह पहले तो किंचित, उसकी

स्पर्धा पर मुसकुराया, फिर बाज की तरह उस पर टूट पड़ा। शांत दर्शकों की भीड़ में खलबली मच गई–'पागल है, पागल, मरा-ऐं! मरा... मरा !'.... पर वाह रे बहादुर! लुट्टन बड़ी सफ़ाई से आक्रमण को सँभालकर निकलकर उठ खड़ा हुआ और पैंतरा दिखाने लगा। राजा साहब ने कुश्ती बंद करवाकर लुट्टन को अपने पास बुलवाया और समझाया। अंत में उसकी हिम्मत की प्रशंसा करते हुए दस रुपये का नोट देकर कहने लगे–"जाओ, मेला देखकर घर जाओ!..."

1. गद्यांश में 'शेर के बच्चे' की उपाधि से किसे संबोधित किया गया है?

(क) लुट्टन सिंह को (ख) राजा साहब को (ग) चाँद सिंह को (घ) श्यामनगर के राजकुमार को

2. लुट्टन की चुनौती पर चाँद सिंह की तात्कालिक प्रतिक्रिया क्या थी?

(क) वह डरकर पीछे हट गया। (ख) वह किंचित मुस्कुराया और बाज की तरह टूट पड़ा।

(ग) उसने राजा से शिकायत की। (घ) वह दंगल छोड़कर भाग गया

3. नीचे दिए गए कथन और कारण पर विचार कीजिए:

कथन: राजा साहब ने लुट्टन की हिम्मत से नाराज होकर उसे कोड़े मारने का आदेश दिया।

कारण: राजा साहब लुट्टन को चाँद सिंह से भी बड़ा पहलवान मानते थे।

(क) कथन और कारण दोनों सही हैं। (ख) कथन सही है, परंतु कारण ग़लत है।

(ग) कथन ग़लत है, परंतु कारण सही है (घ) कथन और कारण दोनों ग़लत हैं।

4. स्तंभ 1 के पात्रों को स्तंभ 2 में उनकी गद्यांश आधारित क्रियाओं से सुमेलित कीजिए:

स्तंभ 1 (पात्र)	स्तंभ 2 (क्रिया/स्वरूप)
(1) राजा साहब	(अ) बाज की तरह टूट पड़ना
(2) चाँद सिंह	(ब) दस रुपये का नोट देकर समझाना
(3) लुट्टन सिंह	(स) 'पागल है' कहकर शोर मचाना
(4) दर्शक भीड़	(द) सफ़ाई से आक्रमण संभालना

(क) (1)-(ब), (2)-(अ), (3)-(द), (4)-(स) (ख) (1)-(अ), (2)-(ब), (3)-(स), (4)-(द)

(ग) (1)-(ब), (2)-(स), (3)-(अ), (4)-(द) (घ) (1)-(द), (2)-(अ), (3)-(ब), (4)-(स)

5. लुट्टन द्वारा चाँद सिंह को चुनौती देना उसके स्वभाव के किस गुण को रेखांकित करता है?

(क) उसके अत्यधिक घमंड को (ख) उसके अदम्य साहस और निडरता को

(ग) उसकी राजनीतिक चतुराई को (घ) उसकी धन कमाने की लालसा को

उत्तर- 1 (ग) 2 (ख) 3 (घ) 4 (क) 5 (ख)

गद्यांश-3

रात्रि की विभीषिका को सिर्फ़ पहलवान की ढोलक ही ललकार कर चुनौती देती रहती थी। पहलवान संध्या से सुबह तक, चाहे जिस खयाल से ढोलक बजाता हो, किंतु गाँव के अर्द्धमृत, औषधि उपचार-पथ्य-विहीन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी। बूढ़े-बच्चे-जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था। स्पंदन-शक्ति-शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी। अवश्य ही ढोलक की आवाज़ में न तो बुखार हटाने का कोई गुण था और न महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति ही, पर इसमें संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों को आँख मूँदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती थी, मृत्यु से वे डरते नहीं थे।

1. ढोलक की आवाज का महामारी से पीड़ित गाँव पर क्या मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता था?
(क) लोग अपनी बीमारी भूलकर कसरत करने लगते थे।
(ख) यह मृतप्राय शरीर में जीने की इच्छा और साहस जगाती थी।
(ग) इससे गाँव के लोग राजा के विरुद्ध एकजुट होते थे।
(घ) लोग ढोलक की थाप पर लोकगीत गाने लगते थे।
2. "मरते हुए प्राणियों को आँख मूंदते समय कोई तकलीफ नहीं होती थी" इसमें संकेत किस ओर है?
(क) वे बहुत गहरी नींद सो जाते थे।
(ख) वे शारीरिक कष्ट से पूरी तरह मुक्त हो जाते थे।
(ग) ढोलक की थाप उनके मानसिक संताप और मृत्यु के भय को हर लेती थी।
(घ) उन्हें राजा की तरफ से बहुत सा धन मिल जाता था।
3. इस गद्यांश में 'रात्रि की विभीषिका' किसका प्रतीक है?
(क) हिंसक जंगली जानवरों के डर का (ख) घने बादलों और वर्षा का
(ग) महामारी के कारण फैली मृत्यु और घोर सन्नाटे का (घ) राजा के अत्याचारों का
4. गद्यांश के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-से बिंदु सत्य हैं? सही विकल्प चुनिए:
I. कला जीवन में मनुष्य के कष्टों को कम कर सकती है।
II. पहलवान की ढोलक रात्रि के सन्नाटे और विभीषिका को तोड़ती थी।
III. गाँव के बच्चे केवल ढोलक बजाना सीखना चाहते थे।

(क) केवल I और II (ख) केवल II और III (ग) केवल I और III (घ) सभी कथन सही हैं

5. गद्यांश में वर्णित तत्त्वों और उनकी वास्तविकताओं का सही मिलान कीजिए:

स्तंभ 1 तत्व	**स्तंभ 2 वास्तविकता**
(1) ढोलक की आवाज़	शाम से सुबह तक ढोलक बजाना
(2) ढोलक की समय अवधि	रात की विभीषिका को ललकारना
(3) गाँव के प्राणी	चिकित्सा और पथ्य से विहीन

(क) (1)-(अ), (2)-(ब), (3)-(स) (ख) (1)-(ब), (2)-(अ), (3)-(स)

(ग) (1)-(ब), (2)-(स), (3)-(अ) (घ) (1)-(स), (2)-(ब), (3)-(अ)

उत्तर. 1 (ख) 2 (ग) 3 (ग) 4 (क) 5 (ख)

पाठ्यपुस्तक पर आधारित महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. कुश्ती के समय ढोल की आवाज़ और लुट्टन के दाँव-पेंच में क्या तालमेल था?
उत्तर- लुट्टन का शरीर और ढोल की आवाज़ एक-दूसरे के पूरक थे। ढोल की हर थाप लुट्टन के शरीर में नई शक्ति भरती थी।
तालमेल: ढोल की आवाज़ जैसे 'चटाक्-चट्-धा' कहती, लुट्टन वैसे ही अपने दाँव-पेंच बदलता। ढोल की लय उसे संकेत देती थी कि कब दाँव लगाना है और कब बचाव करना है।
ध्वनि: 'चटाक्-चट्-धा' (उठाकर पटक दे), चट्-गिड़-धा' (मत डरना), 'धिना-धिना, धिक्-धिना' (चित करो, चित करो) जैसी ध्वनियाँ मन में युद्ध का उत्साह और एक लयबद्ध जोश पैदा करती हैं।
प्रश्न 2. कहानी के किस-किस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए?

उत्तर- कहानी के विभिन्न मोड़ और लुट्टन के जीवन के परिवर्तन इस प्रकार हैं -

अनाथ होना: बचपन में माता-पिता की मृत्यु और विवाह के बाद पत्नी की मृत्यु ने उसे संघर्षों के लिए तैयार किया।

पहलवानी में पदार्पण: सास के अपमान का बदला लेने के लिए उसने पहलवानी को अपना पेशा बनाया।

राजपहलवान: चाँद सिंह को हराकर वह राजदरबार का शाही पहलवान बना।

अंतिम समय: वृद्धावस्था और राजदरबार के छूटने के बाद उसे गाँव में बच्चों को कुश्ती सिखाते हुए महामारी में अपने बेटों को खोना पड़ा और अंततः ढोलक के साथ उसने दम तोड़ दिया।

प्रश्न 3. लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि 'मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं यही ढोल है'?

उत्तर- सच्चा मार्गदर्शक: लुट्टन ने किसी इंसान से कुश्ती नहीं सीखी थी, बल्कि ढोल की आवाज़ ही उसे कुश्ती के दाँव-पेंच सिखाती थी।

प्रेरणा का स्रोत: ढोल की हर थाप उसे जीवन की चुनौतियों से जूझने का हौंसला देती थी। उसी की ताल पर वह अपने शरीर का संचालन करता था।

आत्मीयता: उसके लिए ढोल केवल वाद्य यंत्र नहीं, बल्कि एक जीवित गुरु था, जिसने उसे सफलता के शिखर तक पहुँचाया और जीवन के कठिन समय में सहारा दिया।

प्रश्न 4. गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन ढोल क्यों बजाता रहा?

उत्तर- ढोलक की आवाज़ का पूरे गाँव पर निम्नलिखित असर होता है:

(i) ढोलक की आवाज़ से गाँव के औषधि-उपचार-पथ्य विहीन लोगों में संजीवनी शक्ति भर जाती थी।

(ii) उससे लोगों के सामने दंगल का दृश्य आ जाता था।

(iii) उसके कारण उन्हें मौत से डर नहीं लगता था तथा तकलीफ कम महसूस होती थी।

(iv) ढोलक की आवाज़ से जोश व उत्साह भरने के कारण लुट्टन ढोल बजाता रहा।

प्रश्न 5. महामारी फैलने के बाद गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में क्या अंतर होता था?

उत्तर- सूर्यास्त: सूर्यास्त के बाद गाँव में सन्नाटा पसर जाता था। लोग डर के मारे घरों में दुबक जाते थे। रोने-चिल्लाने की आवाज़ें नहीं आती थीं, केवल सिसकियाँ सुनाई देती थीं।

सूर्योदय: सूर्योदय के बाद भी गाँव में कोई चहल-पहल नहीं होती थी। लोग एक-दूसरे का हाल पूछने के लिए भी बाहर नहीं निकलते थे। चारों ओर मौत का मातम और चुप्पी छाई रहती थी।

प्रश्न 6. आशय स्पष्ट करें:

"आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।'

उत्तर- इसका अर्थ है कि एक साधारण व्यक्ति या छोटे पहलवान के पास बड़ी महत्वाकांक्षा तो होती है, लेकिन संसाधनों और समर्थन के अभाव में उसकी शक्ति रास्ते में ही दम तोड़ देती है।

समाज उसकी असफलता पर सहानुभूति रखने के बजाय उसका उपहास उड़ाता है। यह पंक्ति उस पहलवान की विवशता को दर्शाती है जो अपनी प्रतिभा को निखारने का सपना तो देखता है, लेकिन गरीबी और उपेक्षा के कारण नष्ट हो जाता है।

दक्षता-आधारित उच्चस्तरीय चिन्तन कौशल एवं सीबीएसई परीक्षोपयोगी प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. हैज़े और मलेरिया से पीड़ित गाँव की स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर- हैज़े और मलेरिया से पीड़ित गाँव की स्थिति इस प्रकार थी -

भीषण सन्नाटा: महामारी के कारण पूरा गाँव मौत की चपेट में था। रात के समय सन्नाटा इतना गहरा होता था कि केवल सिसकियाँ और कराहें सुनाई देती थीं।

अकाल मृत्यु: लोग एक-दूसरे का हाल पूछने भी बाहर नहीं निकलते थे। सुबह उठने पर अक्सर पता चलता था कि कल रात कितने और लोग काल के गाल में समा गए।

भय का वातावरण: हर तरफ निराशा और मृत्यु का तांडव था। पूरा गाँव जैसे एक विशाल श्मशान में बदल गया था, जहाँ जीवन की कोई उम्मीद शेष नहीं बची थी।

प्रश्न 2. लुट्टन सिंह की प्रमुख चारित्रिक विशेषताओं का उदाहरण सहित उल्लेख कीजिए।

उत्तर- लुट्टन सिंह की प्रमुख चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

अदम्य साहसी: लुट्टन अत्यंत साहसी था। उसने बिना किसी गुरु के पहलवानी सीखी और चाँद सिंह और काला खाँ जैसे नामी पहलवानों को चुनौती देकर हराया।

कर्तव्यनिष्ठ: अपने दोनों बेटों की मृत्यु के बाद भी उसने हार नहीं मानी और अंत समय तक गाँव वालों का हौंसला बढ़ाने के लिए ढोल बजाता रहा।

कला-प्रेमी: वह ढोल को अपना गुरु मानता था और ढोल की थाप में ही अपना जीवन ढूँढ़ता था।

संवेदनशील- संवेदनशील होने के कारण वह गाँव के लोगों के दुख को अपना दुख मानता था।

प्रश्न 3. राजा साहब ने लुट्टन को सहारा क्यों दिया था? अंत में उसकी दुर्गति होने का क्या कारण था?

उत्तर- सहारा देने का कारण: राजा साहब ने लुट्टन की कुश्ती और साहस से प्रभावित होकर उसे राजदरबार में राजपहलवान का सम्मान दिया था ताकि वह अपनी कला को और निखार सके।

दुर्गति का कारण: राजा साहब की मृत्यु और उनके उत्तराधिकारी द्वारा राजपाट की विलासिता में डूबने के कारण राजदरबार से कुश्ती को मिलने वाला संरक्षण बंद हो गया। बाद में आई महामारी और संसाधनों की कमी ने उसकी स्थिति अत्यंत दयनीय बना दी।

अवधारणा मानचित्र

पाठ-14 शिरीष के फूल- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

सारांश / मुख्य बिंदु-

- शिरीष के फूल' हज़ारीप्रसाद द्विवेदी का एक ललित निबंध है**,** जिसमें शिरीष वृक्ष और उसके फूलों के माध्यम से जीवन-दर्शन प्रस्तुत किया गया है।
- **अजेय जिजीविषा का प्रतीक:** यह निबंध जेठ की जलती धूप, प्रचंड आँधी और लू जैसी विषम परिस्थितियों में भी कालजयी अवधूत (संन्यासी) की तरह अविचल रहकर फूलों का सौंदर्य बिखेर रहे शिरीष के माध्यम से मनुष्य की अजेय जिजीविषा को रेखांकित करता है।
- **धैर्य और कर्तव्यशीलता का संदेश:** शिरीष का पेड़ हमें यह संदेश देता है कि जीवन में चाहे जितना भी तुमुल कोलाहल, कलह या विपरीत परिस्थितियाँ हों, मनुष्य को धैर्यपूर्वक लोक-कल्याण के प्रति चिंतारत और कर्तव्यशील बने रहना चाहिए।
- **गांधीवादी मूल्यों और आत्मबल की याद:** शिरीष की कोमलता और कठोरता को देखकर लेखक को इतिहास-विभूति महात्मा गांधी की याद आती है, जो बाह्य वायुमंडल से रस खींचकर आत्मबल के प्रतीक बने थे। लेखक वर्तमान समाज में देह-बल के बढ़ते वर्चस्व और गांधीवादी मूल्यों के अभाव पर गहरा दुख व्यक्त करता है।
- **पुरानी और नयी पीढ़ी का द्वंद्व:** शिरीष के पुराने फल नए पत्ते-फूल आने पर भी अपना स्थान नहीं छोड़ते और अंत में धकियाए जाने पर ही गिरते हैं। लेखक इसके माध्यम से समाज, राजनीति और साहित्य में पुरानी पीढ़ी की अधिकार-लिप्सा पर तीखा कटाक्ष करता है और नएपन के स्वागत का साहस देखना चाहता है।
- **सत्कवि के लिए अनासक्ति की शर्त:** लेखक के अनुसार, एक सच्चा कवि वही हो सकता है जिसमें योगी जैसी अनासक्त शून्यता और विदग्ध प्रेमी जैसी सरसपूर्णता एक साथ मौजूद हो। कालिदास, कबीर, सुमित्रानंदन पंत और रवींद्रनाथ टैगोर इसी अनासक्ति के कारण महान थे।
- **परिवर्तनशीलता ही जीवन का सत्य है:** संसार में जरा (बुढ़ापा) और मृत्यु ही परम सत्य हैं। लेखक का मानना है कि जो लोग एक ही जगह जड़ होकर जमे रहना चाहते हैं, वे नष्ट हो जाते हैं; जो निरंतर गतिशील रहते हैं, वे ही महाकाल के कोड़ों की मार से बच पाते हैं।
- **बाह्य आवरण को भेदने की कला:** कला और सौंदर्य केवल बाह्य आवरण तक सीमित नहीं हैं। सच्चे कलाकार का कर्तव्य है कि वह कालिदास की भाँति जीवन के बाह्य रूप को भेदकर उसके भीतर के सहज रस को निचोड़ सके।
- **सांस्कृतिक और ऐतिहासिक वैभव:** निबंध में लेखक प्राचीन भारत के सामंती वैभव, वृक्ष-वाटिकाओं के सौंदर्य, संस्कृत साहित्य के इतिहास और कालिदास की लालित्य-योजना की खोखली और वास्तविक परतों को बहुत बारीकी से उकेरता है।
- **इक्षुदंड (गन्ने) जैसा शिल्प:** इस निबंध का शिल्प गन्ने की तरह है, जो ऊपर से सांस्कृतिक संदर्भों और तत्सम शब्दावली की भड़कीली खोल (आवरण) से ढका है, परंतु उसके भीतर सहज भावधारा का मधुरस पूरी तरह व्याप्त है।
- **साहित्य का परम उद्देश्य:** हजारीप्रसाद द्विवेदी जी का मानना है कि वही रचना सार्थक साहित्य है जो मनुष्य को हीनता और परमुखापेक्षिता से बचाकर उसकी आत्मा को तेजोद्दीप्त करे तथा उसे संवेदनशील बनाए।

गद्यांश-1

शिरीष के फूलों की कोमलता देखकर परवर्ती कवियों ने समझा कि उसका सब-कुछ कोमल है! यह भूल है। इसके फल इतने मजबूत होते हैं कि नए फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते। जब तक नए फल-पत्ते मिलकर, धकियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते तब तक वे डटे रहते हैं। वसंत के आगमन के समय जब सारी वन स्थली पुष्प-पत्र से मर्मरित होती रहती है, शिरीष के पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ाते रहते हैं। मुझे इनको देखकर उन नेताओं की बात याद आती है, जो किसी प्रकार ज़माने का रुख नहीं पहचानते और जब तक नयी पौध के लोग उन्हें धक्का मारकर निकाल नहीं देता तब तक जमे रहते हैं।

मैं सोचता हूँ कि पुरानों की यह अधिकार-लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती? जरा और मृत्यु, ये दोनों ही जगत के अतिपरिचित और अतिप्रामाणिक सत्य हैं। तुलसीदास ने अफ़सोस के साथ इनकी सच्चाई पर मुहर लगाई थी- 'धरा को प्रमान यही तुलसी जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना!'

1."जो बरा सो बुताना" वाक्य में 'बुताना' शब्द का प्रतीकात्मक अर्थ क्या है?

(क) जीवन का अंत होना (ख) नया घर बनाना

(ग) पानी का उबलना (घ) वृक्ष पर नए फूल आना

2. परवर्ती कवियों ने शिरीष के संदर्भ में क्या भूल की थी?

(क) उन्होंने शिरीष को कड़वा पेड़ समझा।

(ख) उन्होंने शिरीष के वृक्ष को बहुत कमजोर माना।

(ग) उन्होंने फूलों की कोमलता देखकर उसके सब-कुछ को कोमल मान लिया।

(घ) उन्होंने इसके केवल फलों का ही वर्णन किया।

3. "वसंत के आगमन के समय पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ाते रहते हैं"- यह स्थिति समाज के किस वर्ग को दर्शाती है?

(क) नए विचारों को तुरंत अपनाने वाले युवाओं को (ख) सत्ता से चिपके रहने वाले रूढ़िवादी वृद्धों को

(ग) समाज के गरीब और लाचार लोगों को (घ) केवल प्रकृति प्रेमियों को।

4. नीचे दिए गए कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:

कथन: शिरीष के पुराने फल नए पत्तों के आने पर भी आसानी से स्थान नहीं छोड़ते।

कारण: वे फल अंदर और बाहर से अत्यंत कोमल और लचीले होते हैं।

(क) कथन सही है, लेकिन कारण ग़लत है।

(ख) कथन ग़लत है, लेकिन कारण सही है।

(ग) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(घ) कथन और कारण दोनों सही हैं लेकिन कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है

5. स्तंभ 1 के पदों को स्तंभ 2 के दार्शनिक/प्राकृतिक अर्थों से सुमेलित कीजिए:

स्तंभ 1 (पद/पंक्ति)	स्तंभ 2 (वास्तविक अर्थ)
(1) जो फरा सो झरा	(अ) बुढ़ापा और अंत
(2) जरा और मृत्यु	(ब) जो उगा है वह नष्ट होगा
(3) खड़खड़ाते फल	(स) कवियों का अधूरा भ्रम
(4) शिरीष का सब-कुछ कोमल	(द) जर्जर और पुरानी व्यवस्था

(क) (1)-(ब), (2)-(अ), (3)-(द), (4)-(स)   (ख) (1)-(अ), (2)-(ब), (3)-(स), (4)-(द)

(ग) (1)-(ब), (2)-(स), (3)-(अ), (4)-(द)   (घ) (1)-(द), (2)-(अ), (3)-(ब), (4)-(स)

उत्तर- 1 (क) 2 (ग) 3 (ख) 4 (क) 5 (क)

गद्यांश-2

शिरीष एक अद्भुत अवधूत है। दुःख हो या सुख, वह हार नहीं मानता। न ऊधो का लेना, न माधो का देना। जब धरती और आसमान जलते रहते हैं, तब भी यह हज़रत न जाने कहाँ से अपना रस खींचते रहते हैं। मौज में आठों याम मस्त रहते हैं। एक वनस्पति शास्त्री ने मुझे बताया है कि यह उस श्रेणी का पेड़ है जो वायुमंडल से अपना रस खींचता है। ज़रूर खींचता होगा। नहीं तो भयंकर लू के समय इतने कोमल तंतुजाल और ऐसे सुकुमार केसर को कैसे उगा सकता था? अवधूतों के मुँह से ही संसार की सबसे सरस रचनाएँ निकली हैं। कबीर बहुत-कुछ इस शिरीष के समान ही थे, मस्त और बेपरवा, पर सरस और मादक। कालिदास भी ज़रूर अनासक्त योगी रहे होंगे। शिरीष के फूल फक्कड़ाना मस्ती से ही उपज सकते हैं और 'मेघदूत' का काव्य उसी प्रकार के अनासक्त अनाविल उन्मुक्त हृदय में उमड़ सकता है। जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, जो फक्कड़ नहीं बन सका, जो किए-कराए का लेखा-जोखा मिलाने में उलझ गया, वह भी क्या कवि है? कहते हैं कर्णाट-राज की प्रिया विज्जिका देवी ने गर्वपूर्वक कहा था कि एक कवि ब्रह्मा थे, दूसरे वाल्मीकि और तीसरे व्यास। एक ने वेदों की रचना की, दूसरे ने रामायण की और तीसरे ने महाभारत की।

1. लेखक ने शिरीष को 'अद्भुत अवधूत' क्यों कहा है?

(क) वह बहुत बड़ा और छायादार वृक्ष है।   (ख) वह अन्य वृक्षों को नष्ट कर देता है।

(ग) उस पर शीत ऋतु में ही फूल आते हैं।   (घ) सुख-दुःख दोनों में समान रहता है।

2. विज्जिका देवी ने गर्वपूर्वक संसार में किन्हें वास्तविक कवि माना है?

(क) केवल कालिदास और कबीर को   (ख) ब्रह्मा**,** वाल्मीकि और व्यास को

(ग) श्यामनगर के सभी चारणों को   (घ) आधुनिक युग के सभी नए लेखकों को

3. **"न ऊधो का लेना**, **न माधो का देना"– इस मुहावरे का गद्यांश में क्या अर्थ है**?

(क) किसी से बहुत बड़ा कर्ज़ लेना (ख) हर व्यक्ति से झगड़ा करना

(ग) व्यापार में बहुत लाभ कमाना (घ) संसार के प्रपंचों से पूरी तरह मुक्त और तटस्थ रहना

4. गद्यांश में वर्णित प्रतीकों और उनके अर्थों का सही मिलान कीजिए:

स्तंभ 1 (**प्रतीक**)	**स्तंभ** 2 **वास्तविक अर्थ**
(1) अवधूत	अनासक्त और उन्मुक्त हृदय
(2) वायुमंडल से रस	सुख-दुःख में समान रहने वाला
(3) मेघदूत का काव्य	विपरीत दशा में ऊर्जा लेना

(क) **(1)-(**अ**), (2)-(**ब**), (3)-(**स) (ख) **(1)-(**ब**), (2)-(**स**), (3)-(**अ)

(ग) **(1)-(**ब**), (2)-(**अ**), (3)-(**स) (घ) **(1)-(**स**), (2)-(**ब**), (3)-(**अ)

5.गद्यांश के आलोक में 'सच्चे कवि' के संदर्भ में कौन-से बिंदु सत्य हैं? सही विकल्प चुनिए:

I. कवि को स्वभाव से फक्कड़ और अनासक्त होना चाहिए।

II. कवि को संसार के लाभ-हानि के गणित से ऊपर उठना चाहिए।

III. संसार की सबसे सरस रचनाएँ अवधूतों के मुँह से ही निकली हैं।

(क) केवल I और II (ख) केवल II और III (ग) केवल I और III (घ) सभीकथन सही हैं

उत्तर- 1 (घ) 2 (ख) 3 (घ) 4 (ख) 5 (घ)

गद्यांश-3

कालिदास सौंदर्य के बाह्य आवरण को भेदकर उसके भीतर तक पहुँच सकते थे, दुख हो कि सुख, वे अपना भाव-रस उस अनासक्त कृपीवल की भाँति खींच लेते थे जो निर्दलित ईक्षु दंड से रस निकाल लेता है। कालिदास महान थे, क्योंकि वे अनासक्त रह सके थे। कुछ इसी श्रेणी की अनासक्ति आधुनिक हिंदी कवि सुमित्रानंदन पंत में है। कविवर रवींद्रनाथ में यह अनासक्ति थी। एक जगह उन्होंने लिखा- 'राजोद्यान का सिंह द्वार कितना ही अभ्रभेदी क्यों न हो, उसकी शिल्पकला कितनी ही सुंदर क्यों न हो, वह यह नहीं कहता कि हममें आकर ही सारा रास्ता समाप्त हो गया। असल गंतव्य स्थान उसे अतिक्रम करने के बाद ही है, यही बताना उसका कर्तव्य है। 'फूल हो या पेड़, वह अपने आप में समाप्त नहीं है। वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अँगुली है। वह इशारा है।

1. लेखक ने कालिदास जैसी ही अनासक्ति आधुनिक युग के किन कवियों में बताई है?

(क) सुमित्रानंदन पंत और रवींद्रनाथ टैगोर में (ख) प्रेमचंद और कबीरदास में

(ग) निराला और महादेवी वर्मा में (घ) भारतेन्दु हरिश्चंद्र और मैथिलीशरण गुप्त में

2. 'निर्दलित ईक्षुदंड' पद का गद्यांश के संदर्भ में क्या अर्थ है?

(क) सूखा हुआ पेड़ (ख) सोने का महल

(ग) लोहे का बहुत बड़ा डंडा (घ) पूरी तरह पेरा गया गन्ना

3. अनासक्त कृपीवल द्वारा 'निर्दलित ईक्षुदंड से रस निकालना' किस मानवीय क्षमता को रेखांकित करता है?

(क) गन्ने की खेती करने की विधि को। (ख) कठिन परिस्थितियों में आनंद लेने की क्षमता को।

(ग) बहुत अधिक धन कमाने के लालच को। (घ) केवल शारीरिक श्रम को।

4. निम्नलिखित कथनों पर विचार करके बताइए कि कितने कथन सही हैं?

I. कालिदास सुख और दुःख दोनों स्थितियों से भाव-रस खींच लेते थे।

II. आधुनिक कवि सुमित्रानंदन पंत में अनासक्ति का पूर्ण अभाव था।

III. सिंहद्वार सुंदर होने पर भी अंतिम गंतव्य नहीं होता।

IV. प्रकृति का हर रूप किसी अन्य सत्य की ओर इशारा करता है।

(क) कथन-I, II, III सही है। (ख) कथन I, II, IV सही हैं।

(ग) कथन I, III, IV सही हैं। (घ) कथन I, II, III, IV सही हैं।

5. नीचे दिए गए कथन और कारण पर विचार कीजिए:

कथन: रवींद्रनाथ टैगोर के अनुसार सिंहद्वार पर पहुँचते ही मनुष्य की यात्रा समाप्त हो जाती है।

कारण: फूल और पेड़ अपने आप में ही अंतिम रूप से समाप्त वस्तुएँ हैं।

(क) कथन और कारण दोनों सही हैं। (ख) कथन सही है, परंतु कारण ग़लत है।

(ग) कथन ग़लत है, परंतु कारण सही है। (घ) कथन और कारण दोनों ग़लत हैं।

उत्तर- 1 (क) 2 (घ) 3 (ख) 4 (ग) 5 (घ)

पाठ्यपुस्तक पर आधारित महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत (संन्यासी) की तरह क्यों माना है?

उत्तर- कठिन परिस्थितियों में अडिग: शिरीष का पेड़ भयंकर लू और गर्मी में भी अविचल खड़ा रहता है और फूलता रहता है।

अनासक्ति: जैसे एक अवधूत सुख-दुख, मान-अपमान से परे रहकर संसार में रहता है, वैसे ही शिरीष भी प्रचंड गर्मी में अडिग रहकर अपनी कोमलता बनाए रखता है। वह किसी भी परिस्थिति से विचलित नहीं होता, इसलिए उसे 'कालजयी अवधूत' कहा गया है।

प्रश्न 2. हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी-कभी ज़रूरी हो जाती है- स्पष्ट करें।

उत्तर- कोमलता का रक्षक: शिरीष के फूल अत्यंत कोमल होते हैं, लेकिन वे इतनी गर्मी में भी नहीं झड़ते क्योंकि उनका आधार (डंठल) कठोर होता है।

सीख: लेखक यह समझाना चाहते हैं कि यदि हम जीवन में अपनी कोमलता और मानवीय संवेदनाओं को बचाए रखना चाहते हैं, तो हमें बाह्य जीवन में कठोरता और दृढ़ता का परिचय देना होगा। विपरीत परिस्थितियों में कोमल मन ही टूटता है, जबकि दृढ़ इच्छाशक्ति वाला व्यक्तित्व सुरक्षित रहता है।

प्रश्न 3. द्विवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन-स्थितियों में अविचल रह कर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है। स्पष्ट करें।

उत्तर: जीवन की वास्तविकता: जीवन संघर्षों और कोलाहल से भरा है, लेकिन शिरीष हमें सिखाता है कि इन स्थितियों से घबराकर भागना नहीं चाहिए।

जिजीविषा: जिस तरह शिरीष बिना किसी शिकायत के लू में भी खिलता रहता है, हमें भी उसी तरह अपनी जीवन-शक्ति (जिजीविषा) को बनाए रखना चाहिए। अविचल रहने का अर्थ है–अपने लक्ष्य पर टिके रहना और हर परिस्थिति में स्वयं को जीवंत बनाए रखना।

प्रश्न 4. "हाय, वह अवधूत आज कहाँ है!" ऐसा कहकर लेखक ने आत्मबल पर देह-बल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के संकट की ओर संकेत किया है। कैसे?

उत्तर- आत्मबल बनाम देह-बल: लेखक महात्मा गाँधी के संदर्भ में यह कहते हैं। आज की सभ्यता हथियारों और भौतिक शक्ति (देह-बल) पर गर्व करती है, जबकि गाँधीजी का 'आत्मबल' (सत्य और अहिंसा) आज के स्वार्थी युग में खो सा गया है।

संकट: वर्तमान सभ्यता केवल दिखावे और शारीरिक बल को महत्त्व देती है। 'अवधूत' के लुप्त होने का अर्थ है कि आज के दौर में सादगी, त्याग और आत्मिक शक्ति का सम्मान कम हो गया है, जो एक बड़ा सभ्यतागत संकट है।

प्रश्न 5. साहित्य-कर्म के लिए अनासक्त योगी और विदग्ध प्रेमी का हृदय होना क्यों आवश्यक है?

उत्तर-अनासक्त योगी: साहित्यकार को अनासक्त होना चाहिए ताकि वह निष्पक्ष रहकर समाज को देख सके और किसी मोह-माया या स्वार्थ में न फँसे।

विदग्ध प्रेमी: उसे प्रेमी का हृदय भी चाहिए ताकि वह समाज के दुखों और संवेदनाओं को गहराई से महसूस कर सके।

मानदंड: यह दोनों गुण साथ होने से साहित्यकार न तो कठोर (संवेदनहीन) बनता है और न ही बहुत भावुक (अतार्किक)। यही संतुलन एक महान साहित्य सृजन के लिए अनिवार्य है।

प्रश्न 6. 'सर्वग्रासी काल की मार से बचते हुए वही दीर्घजीवी हो सकता है, जिसने अपने व्यवहार में जड़ता छोड़कर निरंतर गतिशीलता बनाए रखी है।" स्पष्ट करें।

उत्तर- जड़ता का त्याग:जो व्यक्ति एक जगह 'जड़' होकर बैठ जाता है, उसे समय नष्ट कर देता है

गतिशीलता:शिरीष का पेड़ भी हिलता-डुलता है। जीवन का नियम है–परिवर्तन। जो व्यक्ति समय के साथ बदलती स्थितियों को अपनाता है और निरंतर गतिशील रहता है, वही लंबे समय तक जीवित और प्रासंगिक बना रह सकता है।

प्रश्न 7. आशय स्पष्ट कीजिए:

(क) "हिलते-डुलते रहो, स्थान बदलते रहो..."

आशय: जीवन में गति ही सुरक्षा है। यदि हम एक ही स्थान पर या एक ही विचार के साथ अड़कर बैठ गए, तो समय की मार हमें नष्ट कर देगी। आगे बढ़ने और परिवर्तनों को स्वीकार करने वाले ही संघर्षों से सुरक्षित निकल सकते हैं।

(ख) "जो कवि अनासक्त नहीं रह सका... वह भी क्या कवि है?"

आशय: सच्चा कवि वही है जो फक्कड़ हो, जिसे यश-अपयश या लाभ-हानि का मोह न हो। जो केवल पुरस्कारों या प्रसिद्धि के लेखे-जोखे में फँसा है, वह वास्तव में साहित्य की आत्मा को नहीं छू पाया है।

(ग) "वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अँगुली है।"

आशय: प्रकृति का कोई भी रूप (फूल या पेड़) स्वयं साध्य नहीं है। वे ईश्वर या सत्य की ओर इशारा करते हैं। वे हमें सिखाते हैं कि हम केवल अपनी सुंदरता में न उलझें, बल्कि जीवन के गहरे सत्यों को समझने का प्रयास करें।

दक्षता-आधारित उच्चस्तरीय चिन्तन कौशल एवं सीबीएसई परीक्षोपयोगी प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. शिरीष के फूल पाठ में शिरीष के नए और पुराने फूलों द्वारा जीवन के किस सत्य को उजागर किया गया है?

उत्तर- जीवन की निरंतरता: शिरीष के पुराने फूलों का तब तक नहीं झड़ना जब तक नए फल-फूल नहीं आ जाते, जीवन की निरंतरता को दर्शाता है।

समय का चक्र: यह स्पष्ट करता है कि पुराने को विदा लेना पड़ता है ताकि नए का आगमन हो सके।

सत्य: यह पाठ जीवन के उस शाश्वत सत्य को उजागर करता है कि परिवर्तन संसार का नियम है। जैसे पुराने फूल नए के आने के बाद ही स्थान छोड़ते हैं, वैसे ही जीवन में पुरानी स्मृतियों और अवस्थाओं को एक निश्चित समय पर छोड़ना ही विकास है।

प्रश्न 2. शिरीष के माध्यम से लेखक ने कालजयी अवधूत की भांति विपरीत परिस्थितियों में भी अविचल खड़े रहने की प्रेरणा दी है। स्पष्ट करें।

उत्तर- प्रकृति का उदाहरण: शिरीष का पेड़ भयंकर लू और गर्मी में भी हताश नहीं होता, बल्कि खिलता रहता है।

अविचल जिजीविषा: लेखक हमें सिखाते हैं कि विपरीत परिस्थितियाँ जीवन का हिस्सा हैं। एक सच्चा 'अवधूत' वही है जो प्रतिकूल वातावरण में भी डरा नहीं, बल्कि अविचल खड़ा रहा।

प्रेरणा: हमें शिरीष की तरह ही अपने मूल्यों पर अडिग रहना चाहिए और संघर्षों को देखकर निराश होने के बजाय जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण (जिजीविषा) बनाए रखना चाहिए।

प्रश्न 3. शिरीष का फूल अपने जीवन की 'अपराजिता' का मंत्र प्रचार किस प्रकार करता है?

उत्तर- अनुकूलन की शक्ति: भीषण लू में भी अपनी सुंदरता और कोमलता को बनाए रखना ही शिरीष की 'अपराजिता' का मंत्र है।

संघर्ष का प्रतीक: यह फूल यह संदेश देता है कि हार मान लेना ही सबसे बड़ी पराजय है।

सकारात्मकता: अपराजिता का अर्थ है कभी न हारने वाला। शिरीष हमें सिखाता है कि कठिन से कठिन समय में भी हँसते रहना और अपने लक्ष्य की ओर निरंतर बढ़ते रहना ही सबसे बड़ा पराक्रम और जीवन का मंत्र है।

प्रश्न 4. शिरीष के फूल पाठ के आधार पर शिरीष के फूल की विशेषताएँ लिखें।

उत्तर- कालजयी और अवधूत:यह भीषण लू और गर्मी में भी अविचल खड़ा रहता है, जैसे कोई संन्यासी या अवधूत सुख-दुख से परे हो।

कोमलता और दृढ़ता का मेल: फूल अत्यंत कोमल होते हैं, परंतु उनका आधार (डंठल) बहुत मजबूत होता है, जिससे वे झड़ने का नाम नहीं लेते।

अनासक्ति का गुण: यह फूल जीवन की नश्वरता को स्वीकार करता है और बिना किसी शिकायत के खिलता है। यह सौंदर्य और स्थिरता का अद्भुत संगम है जो जीवन के कठिन समय में हमें धैर्य बनाए रखने की प्रेरणा देता है।

अवधारणा मानचित्र

15- श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा- डॉ भीमराव आंबेडकर

<u>**सारांश / मुख्य बिंदु**</u>

- डॉ. भीमराव आंबेडकर द्वारा रचित 'श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा' नामक निबंध में **श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा के अंतर** को स्पष्ट किया है।लेखक के अनुसार **श्रम-विभाजन किसी भी सभ्य समाज की आवश्यकता**है, क्योंकि इससे कार्यों का सुचारु संचालन और दक्षता बढ़ती है।
- **जातिवाद का विरोध:** आधुनिक युग में भी जातिवाद के बने रहने को आंबेडकर ने इस पाठ में एक गंभीर विडंबना माना हैं। वे इसके समर्थकों के तर्कों को अवैज्ञानिक और अमानवीय सिद्ध करते हैं।
- **श्रम-विभाजन बनाम श्रमिक-विभाजन:** लेखक स्पष्ट करते हैं कि 'श्रम-विभाजन' सभ्य समाज की आवश्यकता है, लेकिन जाति-प्रथा केवल काम का बँटवारा नहीं करती, बल्कि यह 'श्रमिकों का' अस्वाभाविक विभाजन कर देती है।
- **जन्मगत पेशे का निर्धारण:** जाति-प्रथा मनुष्य को उसकी रुचि या क्षमता के आधार पर नहीं, बल्कि जन्म के आधार पर पेशा चुनने के लिए मजबूर करती है, जो पूरी तरह अनुचित है।
- **कार्यकुशलता पर नकारात्मक प्रभाव:** जब कोई व्यक्ति अपनी रुचि के विरुद्ध कोई कार्य विवशतावश करता है, तो वह न तो काम में अपना दिल लगा पाता है और न ही अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दे पाता है। इससे कार्यकुशलता का ह्रास होता है।
- **ऊँच-नीच का भेदभाव:** भारतीय जाति-प्रथा विभिन्न व्यवसायों को ऊँच-नीच के क्रम में व्यवस्थित करती है, जिससे समाज में असमानता और वैमनस्य पैदा होता है।
- **व्यक्तिगत स्वतंत्रता का दमन:** यह प्रथा मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणा, रुचि और आत्म-शक्ति को पूरी तरह दबा देती है, जिससे व्यक्ति समाज के लिए निष्क्रिय और बोझ बन जाता है।
- **समान अवसर की माँग:** पाठ का सार यह है कि समाज में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता विकसित करने का पूरा प्रोत्साहन मिलना चाहिए और अवसरों की समानता होनी चाहिए, न कि जन्म के आधार पर निर्धारित भूमिकाएँ।

गद्यांश-1

यह विडंबना की ही बात है, कि इस युग में भी 'जातिवाद' के पोषकों की कमी नहीं है। इसके पोषक कई आधारों पर इसका समर्थन करते हैं। समर्थन का एक आधार यह कहा जाता है कि आधुनिक सभ्य समाज 'कार्य-कुशलता' के लिए श्रम विभाजन को आवश्यक मानता है, और चूँकि जाति-प्रथा भी श्रम विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है। इस तर्क के संबंध में पहली बात तो यही आपत्तिजनक है, कि जाति-प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक-विभाजन का भी रूप लिए हुए है। श्रम विभाजन, निश्चय ही सभ्य समाज की आवश्यकता है, परंतु किसी भी सभ्य समाज में श्रम विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करती। भारत की जाति-प्रथा की एक और विशेषता यह है कि यह श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन ही नहीं करती बल्कि विभाजित विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है, जो कि विश्व के किसी भी समाज में नहीं पाया जाता।

1. यदि जाति-प्रथा को समाप्त कर दिया जाए, तो सभ्य समाज पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

(क) श्रम का बँटवारा बंद हो जाएगा। (ख) आर्थिक संकट आ जाएगा।

(ग) कार्य-कुशलता बढ़ेगी और समानता आएगी। (घ) लोग काम करना छोड़ देंगे।

2. श्रम-विभाजन और श्रमिक-विभाजन में मुख्य अंतर क्या है?

(क) श्रम-विभाजन दक्षता पर आधारित है, श्रमिक-विभाजन जन्म पर।

(ख) दोनों ही पूरी तरह से एक समान प्रक्रियाएं हैं।

(ग) श्रम-विभाजन केवल अमीरों के लिए होता है।

(घ) श्रमिक-विभाजन में काम का चुनाव अपनी रुचि से होता है।

3. गद्यांश के आलोक में 'अस्वाभाविक विभाजन' से लेखक का क्या तात्पर्य है?

(क) योग्यता की अपेक्षा जन्म से ही पेशे का निर्धारण (ख) काम के आधार पर समूह बनाना।

(ग) शारीरिक क्षमता के अनुसार काम देना। (घ) इच्छा के अनुसार नया पेशा चुनना।

4. **जाति-प्रथा के संदर्भ में क्या सत्य है?**

I. यह श्रम का बँटवारा है। II. यह श्रमिकों का बँटवारा है।

III. यह ऊँच-नीच का भेदभाव पैदा करती है। IV. यह पूर्णतः वैज्ञानिक है।

(क) कथन-I, II सही है। (ख) कथन II, III सही हैं।

(ग) कथन I, III, IV सही हैं। (घ) कथन I, II, III सही हैं।

5. नीचे दिए गए कथन और कारण पर विचार कीजिए:

कथन: जाति-प्रथा श्रम विभाजन का एक दोषपूर्ण रूप है।

कारण: यह व्यक्ति की स्वाभाविक रुचि को दबाकर उसे निष्क्रिय बनाती है।

(क) कथन और कारण दोनों सही हैं। (ख) कथन सही है, परंतु कारण ग़लत है।

(ग) कथन ग़लत है, परंतु कारण सही है। (घ) कथन और कारण दोनों ग़लत हैं।

उत्तर- 1 (ग) 2 (क) 3 (क) 4 (ख) 5 (क)

पाठ्यपुस्तक पर आधारित महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. जाति-प्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के क्या तर्क हैं?

उत्तर- जाति प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के तर्क:

(i) इससे श्रमिकों का विभाजन होता है और भेदभाव बढ़ता है।

(ii) यह स्वाभाविकविभाजन नहीं है; यह मनुष्य की रुचि पर आधारित विभाजन नहीं है।

(iii) इसमें मनुष्य की निजी क्षमता व प्रशिक्षण का ध्यान नहीं रखा जाता है।

(iv) यह मनुष्य को एक पेशे से बाँध देती है।

(v) इससे बेरोजगारी व भुखमरी बढ़ती है और आर्थिक नुकसान होता है।

प्रश्न 2. जाति-प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण कैसे बनती रही है? क्या यह स्थिति आज भी है?

उत्तर- जाति प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी और भुखमरी का कारण बनती रही है क्योंकि उद्योग-धंधों के विकास के कारण जाति के आधार पर तय किए गए पेशे से मनुष्य को पूरा रोजगार नहीं मिल पाता और जाति प्रथा उसे पेशा बदलने की छूट भी नहीं देती। जब कोई व्यक्ति अपनी रुचि के बिना काम करता है, तो कार्य की गुणवत्ता कम होती है। इससे उसे आर्थिक नुकसान व बेरोजगारी का सामना करना पड़ता है।आज भी गाँवों और पिछड़े क्षेत्रों में जातिगत आधार पर काम

करने का दबाव कहीं न कहीं विद्यमान है, जिससे युवाओं की प्रतिभा का विकास अवरुद्ध हो जाता है।

दक्षता-आधारित उच्चस्तरीय चिन्तन कौशल एवं सीबीएसई परीक्षोपयोगी प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. जाति प्रथा और श्रम विभाजन में बुनियादी अंतर बताइए।

उत्तर- डॉ. आंबेडकर के अनुसार जाति प्रथा और श्रम विभाजन में बुनियादी अंतर इस प्रकार है -

(i) **श्रम विभाजन** किसी भी सभ्य समाज की आवश्यकता है, जबकि **जाति प्रथा** एक सामाजिक बुराई है।

(ii) श्रम विभाजन में व्यक्ति अपनी **रुचि, योग्यता और क्षमता** के अनुसार कार्य चुन सकता है, जबकि जाति प्रथा में व्यक्ति का व्यवसाय**जन्म के आधार पर पहले से निर्धारित** कर दिया जाता है।

(iii) श्रम विभाजन समाज की **दक्षता और प्रगति** बढ़ाता है जबकि जाति प्रथा **असमानता, भेदभाव और ऊँच-नीच** को जन्म देती है।

प्रश्न 2. श्रम विभाजन के व्यक्तिगत रुचि पर आधारित न होने के क्या दुष्परिणाम होते हैं?

उत्तर- श्रम विभाजन के व्यक्तिगत रुचि पर आधारित न होने के निम्नलिखित दुष्परिणाम होते हैं:

(i) कार्यकुशलता में कमी: जब कोई व्यक्ति अपनी रुचि के बिना काम करता है, तो कार्य की गुणवत्ता कम होती है। अरुचि से कार्य करने पर वह कामचलाऊ व टालू काम करता है।

(ii) मानसिक दासता: अरुचिपूर्ण कार्य व्यक्ति को मानसिक रूप से कुंठित और दुखी बनाता है।

(iii) प्रतिभा का हनन: इससे व्यक्ति के अंदर छुपी हुई विशिष्ट क्षमताएँ विकसित नहीं हो पातीं।

अवधारणा मानचित्र

मेरी कल्पना का आदर्श-समाज -बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर

सारांश / मुख्य बिंदु:

- डॉ. आंबेडकर एक ऐसे समाज की कल्पना करते हैं, जहाँ सभी मनुष्य समान हों और किसी प्रकार का ऊँच-नीच या भेदभाव न हो।
- **लोकतंत्र का आधार:** डॉ. आंबेडकर की कल्पना का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता और भ्रातृता (भाईचारे) पर आधारित है। लोकतंत्र का अर्थ केवल शासन की पद्धति नहीं, बल्कि 'सामूहिक जीवनचर्या' और अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है।
- **भाईचारा और सामाजिक गतिशीलता:** भाईचारे का आदर्श रूप 'दूध और पानी के मिश्रण' जैसा है। लोकतंत्र भाईचारे का ही दूसरा रूप है। आदर्श समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए कि परिवर्तन समाज के हर वर्ग तक आसानी से पहुँचे। समाज के हितों में सबका बराबर भाग होना चाहिए।
- **लोकतंत्र एक जीवन-पद्धति:** लोकतंत्र केवल शासन चलाने का एक तंत्र नहीं है, बल्कि एक सामूहिक जीवनचर्या है, जिसमें समाज के सम्मिलित अनुभवों का निरंतर आदान-प्रदान होता रहता है।
- **स्वतंत्रता:** हर मनुष्य को अपना पेशा चुनने की स्वतंत्रता हो, मज़बूरी में पेशा न अपनाना पड़े।
- **समता:** सभी मनुष्यों को अपने प्रयत्न करने के समान अवसर मिलने चाहिए।

गद्यांश - 1

मेरा आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता, भ्रातृता पर आधारित होगा। क्या यह ठीक नहीं है, भ्रातृता अर्थात भाईचारे में किसी को क्या आपत्ति हो सकती है? किसी भी आदर्श समाज में इतनी गातिशीलता होनी चाहिए जिससे कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे तक संचारित हो सके। ऐसे समाज के बहुविधि हितों में सबका भाग होना चाहिए तथा सबको उनकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपलब्ध रहने चाहिए। तात्पर्य यह कि दूध-पानी के मिश्रण की तरह भाईचारे का यही वास्तविक रूप है, और इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है। क्योंकि लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति ही नहीं है, लोकतंत्र मूलतः सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। इनमें यह आवश्यक है कि अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो।

1. गद्यांश में 'अबाध संपर्क' का क्या अर्थ है?

(क) बिना किसी रोक-टोक के मिलना-जुलना
(ख) केवल उच्च वर्ग के लोगों से मिलना
(ग) व्यापार में लाभ कमाना
(घ) दूर की यात्रा करना

2. "दूध-पानी का मिश्रण"– भाईचारे के लिए इस उपमा का प्रयोग किया गया है, क्योंकि-

(क) यह दूध की तरह सफेद होता है
(ख) यह अटूट एकात्मता का प्रतीक है।
(ग) इसमें दूध और पानी मिलते हैं।
(घ) यह मिलावट का प्रतीक है।

3. कथन और कारण पर विचार कीजिए:

कथन: आदर्श समाज में परिवर्तन के साधन बंद होने चाहिए।

कारण: समाज की स्थिरता ही उसकी सबसे बड़ी प्रगति है।

(क) कथन और कारणदोनों सही हैं।　　(ख) कथनसही है, लेकिन कारणग़लत है।
(ग) कथन ग़लत है, लेकिन कारणसही है।　　(घ) दोनों ग़लत हैं।

4. गद्यांश के अनुसार निम्नलिखित कथनों पर विचार करके बताएँ कि कितने कथन सही हैं?

I. भ्रातृता का अर्थ भाईचारा है।

II. लोकतंत्र शासन का एकमात्र तरीका है।

III. आदर्श समाज में सबका समान हित होना चाहिए।

IV. साथियों के प्रति सम्मान का भाव लोकतंत्र के लिए हानिकारक है।

(क) II और III सही हैं (ख) I,II और III सही हैं(ग) I,II और IV सही हैं(घ) I और III सही हैं

5.स्तम्भ I को स्तम्भ II से सुमेलित करें:

स्तम्भ I	**स्तम्भ II**
(1) स्वतंत्रता	(अ) भाईचारा
(2) भ्रातृता	(ब) सामूहिक जीवनचर्या
(3) लोकतंत्र	(स) वांछित परिवर्तन
(4) गतिशीलता	(द) आदर्श समाज का आधार

(क) (1)-(ब), (2)-(स), (3)-(अ), (4)-(द)　　(ख) (1)-(अ), (2)-(ब), (3)-(स), (4)-(द)

(ग) (1)-(द), (2)-(अ), (3)-(ब), (4)-(स)　　(घ) (1)-(स), (2)-(अ), (3)-(द), (4)-(ब)

उत्तर- 1 (क)　　2 (ख)　　3 (घ)　　4 (घ)　　5 (ग)

गद्यांश-2

व्यक्ति विशेष के दृष्टिकोण से, असमान प्रयत्न के कारण, असमान व्यवहार को अनुचित नहीं कहा जा सकता। साथ ही प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता का विकास करने का पूरा प्रोत्साहन देना सर्वथा उचित है। परंतु यदि मनुष्य प्रथम दो बातों में असमान है, तो क्या इस आधार पर उनके साथ भिन्न व्यवहार उचित हैं? उत्तम व्यवहार के हक की प्रतियोगिता में वे लोग निश्चय ही बाजी मार ले जाएँगे, जिन्हें उत्तम कुल, शिक्षा, पारिवारिक ख्याति, पैतृक संपदा तथा व्यवसायिक प्रतिष्ठा का लाभ प्राप्त है। इस प्रकार पूर्ण सुविधा संपन्नों को ही 'उत्तम व्यवहार' का हकदार माना जाना वास्तव में निष्पक्ष निर्णय नहीं कहा जा सकता। क्योंकि यह सुविधा संपन्नों के पक्ष में निर्णय देना होगा। अतः न्याय का तकाज़ा यह है कि जहाँ हम तीसरे (प्रयासों की असमानता, जो मनुष्यों के अपने वश की बात है) आधार पर मनुष्यों के साथ असमान व्यवहार को उचित ठहराते हैं, वहाँ प्रथम दो आधारों (जो मनुष्य के अपने वश की बातें नहीं हैं) पर उनके साथ असमान व्यवहार नितांत अनुचित है।

1. लेखक ने 'उत्तम व्यवहार की प्रतियोगिता' किसे कहा है?

(क) दौड़ने की दौड़ को　　(ख) जीवन में उन्नति के अवसर पाने की होड़ को
(ग) केवल स्कूल की परीक्षा को　　(घ) संपत्ति बाँटने की प्रक्रिया को

2. "सुविधा संपन्नों के पक्ष में निर्णय"– इस पंक्ति से स्पष्ट होता है, कि निर्णय-

(क) पक्षपाती है।　　(ख) न्यायपूर्ण है।　　(ग) ईश्वरकृत है।　　(घ) आवश्यक है।

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार करके बताएँ कि कौन-सा/कौन-से कथन सही हैं?

I. असमान प्रयत्न के आधार पर असमान व्यवहार उचित है।

II. प्रत्येक व्यक्ति को क्षमता विकास का मौका मिलना चाहिए।

III. पैतृक संपदा न्याय का उचित आधार है।

IV. न्याय केवल सुविधा संपन्न लोगों को मिलना चाहिए।

(क) I और III सही हैं (ख) I और II सही हैं

(ग) I,II और IV सही हैं (घ) I,II और III सही हैं

4. कथन और कारण पर विचार कीजिए:

कथन: मनुष्य के वश में न होने वाले आधारों पर असमान व्यवहार करना अनुचित है।

कारण: न्याय का आधार योग्यता और प्रयत्न होना चाहिए, न कि जन्म।

(क) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन सही है, पर कारणग़लत है।

(ग) कथन ग़लत है, परकारण सही है।

(घ) कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथनकी सही व्याख्या नहीं करता है।

5. स्तम्भ I को स्तम्भ II से सुमेलित करें:

स्तम्भ I	**स्तम्भ II**
(1) प्रथम दो आधार	(अ) प्रयत्न (स्वयं के वश में)
(2) तीसरा आधार	(ब) जन्म, कुल और संपदा
(3) प्रोत्साहन	(स) क्षमता विकास
(4) अन्याय	(द) सुविधा-संपन्नों का पक्ष लेना

(क) (1)-(द), (2)-(स), (3)-(ब), (4)-(अ) (ख) (1)-(अ), (2)-(ब), (3)-(स), (4)-(द)

(ग) (1)-(ब), (2)-(अ), (3)-(स), (4)-(द) (घ) (1)-(स), (2)-(द), (3)-(अ), (4)-(ब)

उत्तर- 1 (ख) 2 (क) 3 (ख) 4 (क) 5 (ग)

पाठ्यपुस्तक पर आधारित महत्त्वपूर्ण प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. लेखक के मत से 'दासता' की व्यापक परिभाषा क्या है? समझाइए।

उत्तर- दासता: बाबासाहब के मत में दासता केवल कानूनी पराधीनता या गुलामी तक सीमित नहीं है।
इच्छा के विरुद्ध पेशा अपनाना: दासता में वह सामाजिक स्थिति भी शामिल है जहाँ कुछ व्यक्तियों को दूसरों द्वारा निर्धारित व्यवहार और कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है।
स्वतंत्रता का अभाव: जाति के पैतृक या थोपे गए व्यवसाय को अपनाने के लिए मजबूर किया जाता है, तो वह स्थिति भी दासता का ही रूप है।

प्रश्न 2. शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद 'समता' को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह क्यों करते हैं? इसके पीछे उनके क्या तर्क हैं?

उत्तर: शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद समता को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह करते हैं क्योंकि समाज को अपने सभी सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता तभी प्राप्त हो सकती है जब उन्हें आरंभ से ही समान अवसर एवं समान व्यवहार उपलब्ध कराए जाएँ। व्यक्ति को अपनी क्षमता के विकास के लिए समान अवसर देने चाहिए। अतः सभी व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए।

प्रश्न 3. सही में आंबेडकर ने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा है, जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन-सुविधाओं का तर्क दिया है। क्या इससे आप सहमत हैं?

उत्तर- लेखक के इस दृष्टिकोण से पूर्णतः सहमत हुआ जा सकता है। समाज में जातिवाद को मिटाने के लिए केवल मानसिक बदलाव काफी नहीं है, बल्कि बुनियादी भौतिक सुधार भी आवश्यक हैं।

जीवन-सुविधाओं की अनिवार्यता: समाज में जब तक सभी वर्गों को समान आर्थिक साधन, शिक्षा, स्वास्थ्य और जीविकोपार्जन के साधन नहीं मिलेंगे, तब तक केवल कागजों पर समता स्थापित नहीं हो सकती।

मानवीय गरिमा की स्थापना: भौतिक और जीवन-सुविधाओं में समानता आने से ही लोगों के भीतर एक-दूसरे के प्रति स्वाभाविक रूप से भावनात्मक जुड़ाव, सम्मान और मानवीय गरिमा की भावना पैदा होगी।

प्रश्न 4. आदर्श समाज के तीन तत्वों में से एक 'भ्रातृता' को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है अथवा नहीं? आप इस 'भ्रातृता' शब्द से कहाँ तक सहमत हैं? यदि नहीं, तो आप क्या शब्द उचित समझेंगे/समझेंगी?

उत्तर- भ्रातृता (भाईचारा) शब्द में स्त्रियों का समावेश और विकल्प

स्त्रियों का समावेश: लेखक ने अपने आदर्श समाज में 'भ्रातृता' (भाईचारे) का अर्थ 'दूध-पानी के मिश्रण' जैसी सामाजिक गतिशीलता और अबाध संपर्क से लिया है, जिसमें समाज के सभी नागरिक (स्त्रियाँ और पुरुष दोनों) अनिवार्यतः शामिल हैं।

शब्द की सीमा: 'भ्रातृता' शब्द प्रत्यक्ष रूप से पुरुष-प्रधान (भाईचारे) की ध्वनि देता है, जिससे तात्कालिक रूप से ऐसा भ्रम हो सकता है कि इसमें स्त्रियों को अलग रखा गया है।

उचित वैकल्पिक शब्द: इस शब्द से आंशिक सहमति रखते हुए, आज के आधुनिक संदर्भ में इसके स्थान पर **'बंधुत्व'**, **'सहोदरता'** या**' सामाजिक समरसता'** जैसे लिंग-तटस्थ शब्दों का प्रयोग अधिक समावेशी और उचित जान पड़ता है।

दक्षता-आधारित उच्चस्तरीय चिन्तन कौशल एवं सीबीएसई परीक्षोपयोगी प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. आदर्श समाज के महत्त्वपूर्ण तत्त्वलिखिए।

उत्तर: आदर्श समाज के महत्त्वपूर्ण तत्त्वइस प्रकार है:

भ्रातृता (भाईचारा): समाज में दूध-पानी के मिश्रण की तरह भाईचारा होना चाहिए, ताकि कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे छोर तक आसानी से प्रसारित हो सके।

स्वतंत्रता: आदर्श समाज में प्रत्येक नागरिक को आने-जाने, जीवन रक्षा, संपत्ति और अपनी रुचि का पेशा चुनने की पूरी स्वाधीनता होनी चाहिए।

समता: समाज के सभी सदस्यों को शुरुआत से ही समान अवसर और समान व्यवहार उपलब्ध होना चाहिए, जिससे विषमता दूर हो सके।

प्रश्न 2. समता काल्पनिक जगत की वस्तु है। फिर भी इस पर बल क्यों दिया जाता है?

उत्तर- सभी मनुष्यों में शारीरिक वंश परंपरा, सामाजिक, उत्तराधिकार व मनुष्य के अपने प्रयत्न एक समान नहीं हो सकते। इसलिए समता काल्पनिक जगत की वस्तु है। डॉ. आंबेडकर का मानना है कि समाज में सभी लोगों को आगे बढ़ने का समान अवसर मिलना चाहिए व उनके साथ समान व्यवहार होना चाहिए, जिससे सदस्यों की अधिकतम उपयोगिता प्राप्त हो सके। यही समता है और इसी पर बल दिया गया है।

प्रश्न 3. बाबा साहेब आंबेडकर के 'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि मनुष्य की क्षमता किन बातों पर निर्भर करती है?

उत्तर: मनुष्य की क्षमता के निर्धारक तत्त्व:

शारीरिक वंश-परंपरा: मनुष्य की क्षमता पहली बात तो उसके माता-पिता से मिले शारीरिक और आनुवंशिक गुणों पर निर्भर करती है।

सामाजिक उत्तराधिकार: इसके अंतर्गत सामाजिक परंपरा के रूप में मिलने वाली माता-पिता की कल्याण-कामना, उचित शिक्षा, पारिवारिक ख्याति और वैज्ञानिक ज्ञानार्जन जैसी उपलब्धियाँ आती हैं।

मनुष्य के अपने प्रयत्न: तीसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि मनुष्य अपनी क्षमता को बढ़ाने के लिए खुद कितने प्रयास और पुरुषार्थ करता है।

अवधारणा मानचित्र

वितान भाग-2

पाठ-1 सिल्वर वैडिंग - मनोहर श्याम जोशी (विधा- कहानी)

सारांश / मुख्य बिंदु:

यह कहानी यशोधर बाबू के जीवन के इर्द-गिर्द घूमती है, जो पुरानी परंपराओं और मूल्यों में विश्वास रखते हैं। वे गृह मंत्रालय में सेक्शन ऑफिसर (अनुभाग अधिकारी) के पद पर कार्यरत हैं।यशोधर बाबू आदर्शवादी और परंपरागत विचारों वाले व्यक्ति हैं।

- **सोच और संस्कार**-वे पुराने जीवन-मूल्यों को महत्त्व देते हैं। वे अपने गरीब रिश्तेदारों की मदद करना चाहते हैं। उनके बच्चे और पत्नी आधुनिक विचारों एवं जीवन-शैली को अपनाते हैं।
- **किशनदा का प्रभाव**-यशोधर बाबू के व्यक्तित्व पर किशनदा अर्थात कृष्णानंद पाण्डे के आदर्शों का गहरा प्रभाव है और वे किशनदा के सिद्धांतों पर जीवन-यापन करना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि उन्हें समाज का सम्मानित बुजुर्ग समझा जाए।
- **भौतिकवादी दृष्टिकोण**-नई पीढ़ी सादगी की अपेक्षा आधुनिक सुख-सुविधाओं को अधिक महत्त्व देती है जबकि यशोधर बाबू को आधुनिक चीजें 'समहाउ इम्प्रापर' लगती हैं।
- **सिल्वर वैडिंग की तैयारी**-यशोधर बाबू के बच्चे उनकी विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ मनाने की योजना बनाते हैं जबकि यशोधर बाबू के लिए यह सब दिखावा है।
- **बुज़ुर्गों की स्थिति**-कहानी बुज़ुर्गों की भावनाओं और उनके सम्मान की आवश्यकता को दर्शाती है। यशोधर बाबू चाहते हैं कि बच्चे उनसे सलाह लें जबकि बच्चे मनमानी पर उतारू हैं।
- **पार्टी, केक और आशीर्वाद:** पार्टी में केक काटने पर यशोधर बाबू को लगता है कि यह उनके सिद्धांतों का उल्लंघन है, वे अनिच्छा से इसमें शामिल होते हैं। हालांकि उन्हें यह अच्छा लगता है कि बच्चों ने उनके लिए आयोजन किया।
- **पुत्र द्वारा उपहार:** उनका बड़ा बेटा उन्हें ऊनी गाउन भेंट करते हुए कहता है कि बब्बा आप इसे पहनकर दूध लेने जाया करें। शायद उन्हें बेटे की बात या उसके कहने का तरीका अच्छा नहीं लगता या संभवत: उन्हें किशनदा की याद आ जाती है और उनकी आँखों में नमी चमक जाती है।
- **पीढ़ी का अंतराल:** कहानी पीढ़ी अंतराल (जेनरेशन गैप) और बदलते सामाजिक मूल्यों के कारण यशोधर बाबू के अंतर्द्वंद्व को दर्शाती है। पीढ़ियों के बीच आपसी समझ, सम्मान और संवाद बनाए रखना आवश्यक है। कहानी की मूल संवेदना **'पीढ़ी का अंतराल'** है।

पाठ्य-पुस्तक से प्रश्न-

प्रश्न 1. यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं। ऐसा क्यों?

उत्तर- उनकी पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है क्योंकि:-

(i) वह बच्चों से प्रेम करती थी व उनकी तरफदारी करती थी।

(ii) उसे स्वतंत्र रहने की भी चाह थी।

(iii) उसका व्यवहार लचीला था।

(iv) उस पर किसी व्यक्ति-विशेष का प्रभाव नहीं था।

यशोधर बाबू समय के साथ ढल सकने में असफल रहे क्योंकि:-

(i) वह आदर्शवादी, सिद्धांतवादी व परंपरावादी व्यक्ति थे।

(ii) वह पाश्चात्य (अंग्रेजी) संस्कृति के विरोधी थे तथा भारतीय परंपराओं को मानते थे।

(iii) उनका व्यवहार लचीला नहीं था।

(iv) उन पर किशनदा का गहरा प्रभाव था।

प्रश्न 2. पाठ में 'जो हुआ होगा'वाक्य की आप कितनी अर्थ छवियाँ खोज सकते/सकती हैं?

उत्तर- 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में "जो हुआ होगा" में यथास्थितिवाद यानी ज्यों का त्यों स्वीकार कर लेने का भाव है, इस वाक्यांश की प्रमुख अर्थ छवियाँ निम्नलिखित हैं:

(i) पहली बार (पता नहीं क्या हुआ होगा): जब यशोधर बाबू किशन दा के जाति भाई से किशनदा की मृत्यु का कारण पूछते हैं, तो वह कहता है- "जो हुआ होगा",यानी पता नहीं क्या हुआ होगा? इसलिए 'जो हुआ होगा' उनके अकेलेपन, उपेक्षा और मानसिक पीड़ा की ओर संकेत करता है।

(ii) दूसरी बार (मरते समय हर आदमी अकेला होता है): जब यशोधर बाबू संध्या पूजन कर रहे थे तब उनको ध्यान में किशनदा कहते हैं कि चाहे गृहस्थ हो या संन्यासी, अमीर हो या गरीब, सभी इस "जो हुआ होगा" से मरते हैं यानी मरते समय सब अकेले होते हैं। यह वाक्य समाज द्वारा बुज़ुर्गों और अकेले लोगों की उपेक्षा को भी उजागर करता है।

प्रश्न 3.'समहाउ इम्प्रापर' वाक्यांश का प्रयोग यशोधर बाबू लगभग हर वाक्य के प्रारंभ में तकिया कलाम की तरह करते हैं।इस वाक्यांश का उनके व्यक्तित्व और कहानी के कथ्य से क्या संबंध बनता है?

उत्तर- यशोधर बाबू को जो उचित नहीं लगता उन सब के लिए 'समहाउ इम्प्रापर' तकिया कलाम का प्रयोग करते हैं।

(i) यह वाक्यांश उनके परंपरावादी, रूढ़िवादी और आदर्शवादी व्यक्तित्व को प्रकट करता है।

(ii) यशोधर बाबू पुराने संस्कारों और मान्यताओं में विश्वास रखते हैं।

(iii) वे आधुनिक जीवन-शैली और नए मूल्यों को सहज रूप से स्वीकार नहीं कर पाते।

(iv) यह वाक्यांश पुरानी और नई पीढ़ी के वैचारिक संघर्ष को दर्शाता है।

(v) यशोधर बाबू की दृष्टि में नई पीढ़ी का व्यवहार 'समहाउ इम्प्रापर' हैं।

(vi) दूसरी ओर, नई पीढ़ी उन्हें पुराने विचारों वाला व्यक्ति मानती है।

इस प्रकार यह वाक्यांश यशोधर बाबू के व्यक्तित्व तथा कहानी के केंद्रीय विषय 'परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व' को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करता है।

प्रश्न 4.यशोधर बाबू की कहानी को दिशा देने में किशनदा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। आपके जीवन को दिशा देने में किसका महत्त्वपूर्ण योगदान है और कैसे?

उत्तर- यशोधर बाबू के जीवन में किशनदा की भूमिका एक आदर्श मार्गदर्शक की रही है। उसी प्रकार मेरे जीवन को दिशा देने में मेरे शिक्षक का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान है। मेरे शिक्षक ने मुझे नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी है और ईमानदारी, अनुशासन तथा कठिन समय में धैर्य रखने की सीख दी है। उन्होंने मुझमें आत्मविश्वास का संचार किया और मेरी क्षमताओं को पहचानकर मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। उन्होंने मुझे लक्ष्य के प्रति स्पष्टता प्रदान की और सही-ग़लत में अंतर समझने में सहायता की। वे केवल किताबी ज्ञान ही नहीं देते, बल्कि जीवन में सफल होने का मार्ग भी दिखाते हैं। शिक्षक मेरे जीवन में एक प्रकाश स्तंभ के समान हैं जो मुझे सही दिशा दिखाते हैं।

प्रश्न 5.वर्तमान समय में परिवार की संरचना, स्वरूप से जुड़े आपके अनुभव इस कहानी से कहाँ तक सामंजस्य बिठा पाते हैं?

उत्तर- 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर वर्तमान पारिवारिक संरचना से जुड़े मुख्य बिंदु निम्नवत हैं:-

वैचारिक मतभेद (पीढ़ी अंतराल): कहानी की तरह आज भी पुरानी पीढ़ी परंपराओं व पारिवारिक रिश्तों को महत्त्व देती है, जबकि नई पीढ़ी आधुनिक सुख-सुविधाओं और व्यक्तिगत आज़ादी को सर्वोपरि मानती है।

एकल परिवारों का चलन: यशोधर बाबू की तरह आज के बुज़ुर्ग संयुक्त परिवारों के टूटने और रिश्तेदारों से बढ़ती दूरी से दुखी हैं, जबकि युवा वर्ग अपनी सीमित दुनिया में खुश है।

भौतिकवाद की अधिकता: वर्तमान समय में भी बच्चे माता-पिता को महँगे उपहार (जैसे ड्रेसिंग गाउन) तो दे देते हैं, लेकिन उनके पास बुज़ुर्गों के लिए समय और अपनेपन से उन्हें समझाने का धैर्य नहीं होता है।

जीवनशैली का द्वंद्व: पहनावे और आधुनिक तौर-तरीकों को लेकर परिवारों में आज भी वही तनाव है जो यशोधर बाबू और उनके बच्चों के बीच था।

प्रश्न 6. निम्नलिखित में से किसे आप कहानी की मूल संवेदना कहेंगे/कहेंगी और क्यों?

(क) हाशिए पर धकेले जाते मानवीय मूल्य

(ख) पीढ़ी अंतराल

(ग) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव।

उत्तर- 'सिल्वर वैडिंग' कहानी की मूल संवेदना **'पीढ़ी अंतराल'** है। इसे निम्नलिखित बिन्दुओं में समझा जा सकता है-

मूल वैचारिक टकराव: पूरी कहानी यशोधर बाबू (पुरानी पीढ़ी) और उनके बच्चों (नई पीढ़ी) के बीच जीवन के मूल्यों, प्राथमिकताओं और सोच को लेकर होने वाले द्वंद्व पर आधारित है।कहानी में यशोधर बाबू पारिवारिक आत्मीयता, बड़ों के सम्मान और पारंपरिक मानवीय मूल्यों के पक्षधर हैं।जबकि नई पीढ़ी भौतिक सुख-सुविधाओं और आधुनिक जीवन-शैली को अधिक महत्त्व देती है, जिससे पारिवारिक संबंधों में दूरी बढ़ती जाती है।

सामंजस्य का अभाव: पीढ़ी के इस बड़े अंतर के कारण यशोधर बाबू अपने ही आधुनिक विचारों वाले परिवार में अकेलापन और परायापन महसूस करने को विवश हैं।

किशनदा का जीवन और उनकी मृत्यु इस बात का प्रतीक है कि समाज में आत्मीय संबंध और मानवीय संवेदनाएँ कमजोर पड़ती जा रही हैं। अतः 'पीढ़ी अंतराल' ही इस कहानी का मुख्य केंद्र बिंदु और सबसे गहरी मूल संवेदना है।

सीबीएसई परीक्षाओं में पूछे गए एवं उच्च चिंतन कौशल पर आधारित दक्षतापरक प्रश्न

प्रश्न 1. 'हम पुरानी चाल के, हमारी घड़ी पुरानी चाल की" 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में यशोधर पंत द्वारा यह कथन किस संदर्भ में कहा गया है? इस कथन के आलोक में पंतजी की किन्हीं चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में यह प्रसंग यशोधर बाबू के कार्यालय का है जब सहकर्मी चड्ढा पंतजी की पुरानी घड़ी को 'बाबा आदम के जमाने की' कहता है, तब वे इसे शादी का उपहार बताते कहते हैं- 'हम पुरानी चाल के, हमारी घड़ी पुरानी चाल की"।

परंपरावादी व्यक्तित्व: वे आधुनिक विचारों, पाश्चात्य संस्कृति और नई पीढ़ी के तौर-तरीकों को सहज स्वीकार नहीं कर पाते और पुरानी मान्यताओं को सर्वोपरि मानते हैं।

सादगी पसंद: वे सादगी पसंद थे। इसलिए पुरानी घड़ी को बदलना नहीं चाहते थे।

मितव्ययी: वे सही चल रही पुरानी घड़ी बदलना नहीं चाहते थे जो उनके मितव्ययी होने का प्रमाण है।

प्रश्न 2. नई पीढ़ी व पुरानी पीढ़ी के अंतर्विरोधों किस प्रकार कम किया जा सकता है?'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- वैचारिक मतभेद और अंतर्विरोध: कहानी में यशोधर बाबू पुरानी पीढ़ी के प्रतीक हैं जो सादगी, सामाजिक रिश्तों और परंपराओं को मानते हैं, जबकि उनके बच्चे आधुनिकता, पाश्चात्य संस्कृति और भौतिक सुख-सुविधाओं को महत्त्व देते हैं। यशोधर बाबू को बच्चों द्वारा केक काटना, पार्टी करना और बिना पूछे घर के फैसले लेना 'समहाउ इम्प्रॉपर' लगता है।

कम करने के उपाय-आपसी संवाद: दोनों पीढ़ियों के बीच के इस अंतर को कम करने के लिए खुलकर बातचीतहोना बहुत ज़रूरी है।

लचीलापन और स्वीकार्यता: पुरानी पीढ़ी को समय के साथ बदलते मूल्यों और नई तकनीक को अपनाना चाहिए, वहीं नई पीढ़ी को बुजुर्गों के अनुभवों और उनकी भावनाओं का सम्मान करना चाहिए।

प्रश्न 3. "जिम्मेदारी सर पर पड़ेगी तब सब अपने ही आप ठीक हो जाएँगे।" यशोधर बाबू का ऐसा सोचना कहाँ तक सही था?यदि आपको कोई जिम्मेदारी दी जाए, तो आप उसका निर्वहन कैसे करेंगे? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- यशोधर बाबू की सोच का औचित्य: यशोधर बाबू का यह सोचना काफी हद तक सही है। वास्तविक जीवन का अनुभव और परिस्थितियाँ इंसान को सबसे बड़ा सबक सिखाती हैं। जब तक व्यक्ति पर संकट या जिम्मेदारी नहीं आती, वह लापरवाह रह सकता है, लेकिन कर्तव्य सामने आते ही उसमें परिपक्वता आ जाती है। स्वयं यशोधर बाबू भी युवावस्था में किशनदा के आश्रय में रहकर साधारण जीवन जी रहे थे, लेकिन जब शादी के बाद उन पर पूरे परिवार और बच्चों का दायित्व आया, तो वे एक गंभीर और जिम्मेदार गृहस्थ बन गए।

जिम्मेदारी का निर्वहन करने का तरीका: यदि मुझे कोई बड़ी जिम्मेदारी जैसे विद्यालय के किसी बड़े कार्यक्रम या उत्सव के प्रबंधन की दी जाए, तो मैं उसका निर्वहन निम्नलिखित चरणों में करूँगा:

1. योजना बनाना
2. योग्यता के अनुसार कार्य विभाजन
3. किसी भी समस्या का सामना धैर्य, सूझबूझ से करूँगा।

प्रश्न 4. 'सिल्वर वैडिंग' कहानी वर्तमान युग में बदलते हुए जीवन मूल्यों की कहानी है।" स्पष्ट कीजिए किये जीवन मूल्य कौन-से हैं और क्यों बदल रहे हैं?

उत्तर- बदलते हुए जीवन मूल्य: कहानी में दिखाया गया है कि आधुनिकता के प्रभाव में आकर संयुक्त परिवार बिखर रहे हैं और व्यक्तिवाद बढ़ रहा है। पुराने जीवन मूल्य जैसे सादगी, बड़ों का आदर, रिश्तेदारों की मदद और धार्मिक अनुष्ठान अब पीछे छूट रहे हैं, जबकि दिखावा, भौतिक सुख-सुविधाएँ और पाश्चात्य संस्कृति (जैसे सिल्वर वेडिंग मनाना, पार्टी आदि) नए जीवन मूल्य बनते जा रहे हैं।

बदलाव के कारण:

पाश्चात्य प्रभाव और उपभोक्तावाद: पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण और बाज़ारवाद ने नई पीढ़ी को भौतिकवादी बना दिया है, जहाँ मानवीय रिश्तों से ज़्यादा पैसों को महत्त्व दिया जाता है।

पीढ़ी का अंतराल: नई पीढ़ी पुरानी रूढ़ियों और बंदिशों से मुक्त होकर अपनी स्वतंत्रता चाहती है, जिसके कारण पुरानी मान्यताओं के प्रति उनका नजरिया बदल रहा है।

प्रश्न 5. "यशोधर जी चाहते हैं कि उन्हें समाज का सम्मानित बुज़ुर्ग माना जाए।" 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में यह कथन किस संदर्भ में आया है? इस कथन के संदर्भ में यशोधर बाबू के मनोभावों को स्पष्ट कीजिए। क्या यशोधर बाबू की ऐसी चाह अनुचित है?

उत्तर- कथन का संदर्भ: यह संदर्भ तब आता है जब यशोधर बाबू अपने घर और समाज में उपेक्षित महसूस करते हैं। उनके बच्चे और पत्नी उनकी सलाह के बिना घर के महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते हैं, जिससे उन्हें लगता है कि एक बुजुर्ग के नाते उन्हें वह सम्मान नहीं मिल रहा है जिसके वे हकदार हैं।

यशोधर बाबू के मनोभाव: वे मानसिक रूप से अपने आदर्श 'किशनदा' की तरह समाज और परिवार में मार्गदर्शक की भूमिका निभाना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि बच्चे उनसे राय लें, उनका आदर करें और पारंपरिक जीवन मूल्यों को महत्त्व दें। जब ऐसा नहीं होता, तो वे उपेक्षा और अकेलेपन से घिर जाते हैं।

चाहत का औचित्य: हमारे विचार से यशोधर बाबू की यह चाह बिल्कुल भी अनुचित नहीं है। भारतीय संस्कृति में परिवार के बुजुर्गों को सम्मान देना और उनके अनुभवों का लाभ उठाना एक स्वाभाविक परंपरा है। नई पीढ़ी यदि आधुनिक होना चाहती है, तब भी उसे बुजुर्गों की भावनाओं को ठेस पहुँचाए बिना उन्हें आदर देना और उनके अनुभवों का लाभ लेना ही चाहिए।

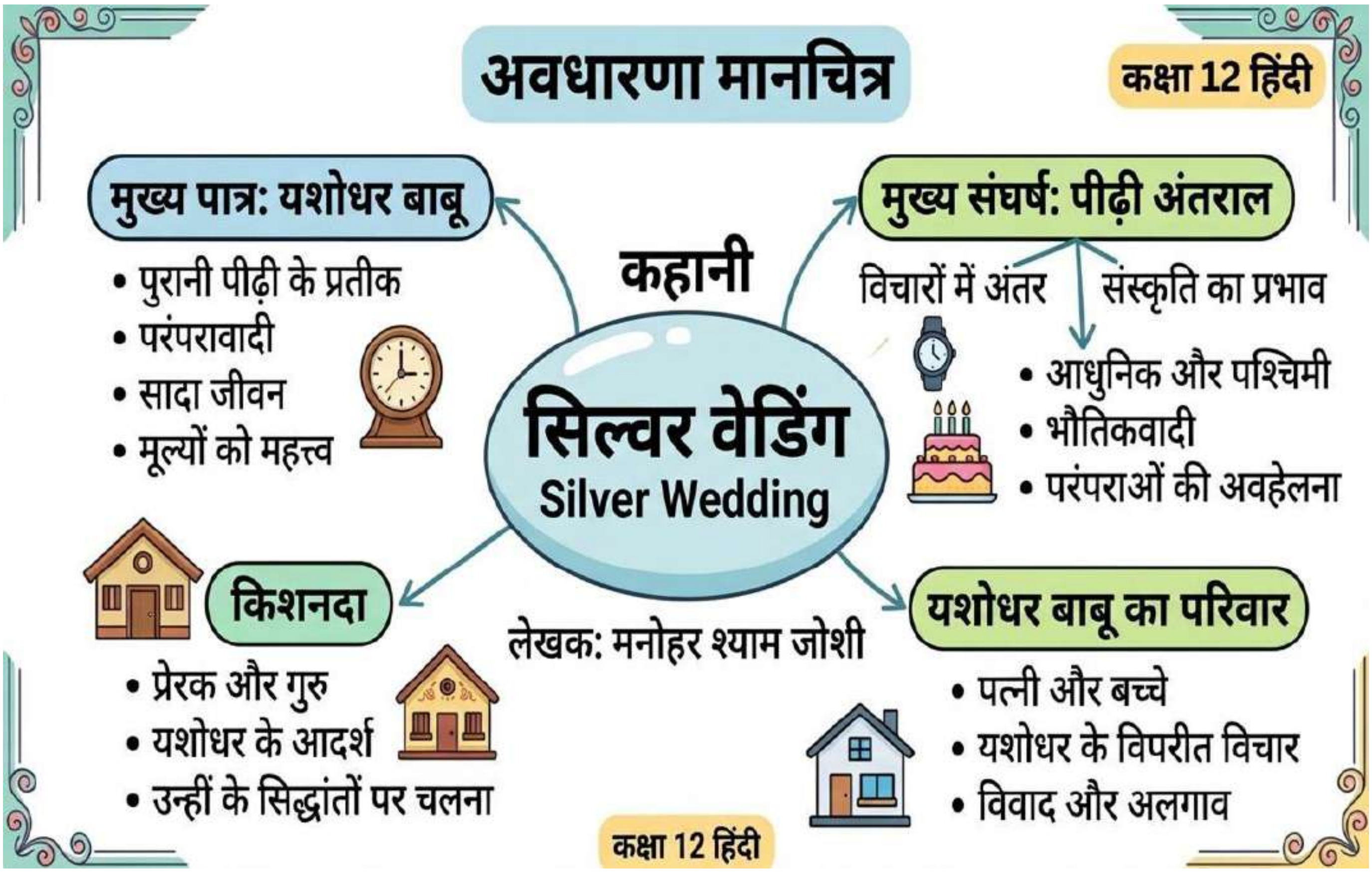

पाठ- 2 जूझ- आनंद यादव (विधा- आत्मकथात्मक उपन्यास)

'जूझ' लेखक डॉ. आनंद यादव द्वारा रचित आत्मकथात्मक उपन्यास है जिसका एक अंश पाठ्य पुस्तक में सम्मिलित है। यह एक किशोर की शिक्षा के प्रति अटूट चाह और संघर्ष की कहानी है।

- **पाठशाला जाने की तड़प:** लेखक का मन पढ़ने के लिए तड़पता था, लेकिन पिता (दादा) के गुस्से के डर से वह सीधे उनसे कुछ कह नहीं पाता था।
- **खेती से मोहभंग:** लेखक को विश्वास था कि जीवनभर खेती करने से हाथ कुछ नहीं लगेगा; पढ़-लिखकर ही नौकरी या व्यापार किया जा सकता है।
- **जल्दी कोल्हू चलाना:** दादा बाज़ार में गुड़ का अच्छा भाव पाने के लिए पूरे गाँव में सबसे पहले अपने खेत का कोल्हू चलाते थे, जिससे वे खेती के कार्य से जल्दी मुक्त हो जाते थे।
- **माँ से चर्चा:** कोल्हू का काम खत्म होने पर लेखक ने माँ से पढ़ाई की इच्छा जताई।माँ ने अपनी लाचारी बताते हुए गाँव के प्रभावशाली व्यक्ति दत्ता जी राव देसाई से मदद लेने की बात की।
- **देसाई सरकार की डाँट:** लेखक और माँ ने रात में दत्ता जी राव को दादा के गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार और रखमाबाई के पास समय बिताने के बारे में बताया।राव साहब ने दादा को बुलाकर खूब फटकार लगाई और लेखक को दोबारा स्कूल भेजने का आदेश दिया।
- **पिता की कड़ी शर्तें:** दादा ने मन मारकर स्कूल भेजने की हामी तो भरी, लेकिन आनंदा के लिए कठिन शर्तें रखीं–जैसे सुबह स्कूल से पहले खेत में पानी लगाना, स्कूल के बाद ढोर (पशु) चराना और काम ज़्यादा होने पर स्कूल से गैर-हाजिर रहना।
- **कक्षा में उपहास:** पाँचवीं कक्षा में दोबारा बैठने पर उम्र में छोटे लड़कों के साथ बैठना पड़ा और शरारती बच्चों ने आनंदा की मटमैली धोती व गमछे का मज़ाक उड़ाया।
- **वसंत पाटिल से दोस्ती:** कक्षा के होशियार मॉनीटर वसंत पाटिल के संपर्क में आकर लेखक का ध्यान पढ़ाई और गणित पर केंद्रित हुआ, जिससे दोनों में गहरी दोस्ती हो गई। पढ़ाई में अच्छा होने पर मास्टरों से प्रशंसा और स्नेह पाकर लेखक का आत्मविश्वास बढ़ा।
- **सौंदलगेकर मास्टर का प्रभाव:** मराठी के अध्यापक श्री सौंदलगेकर बहुत रसिक ढंग से, गाकर और अभिनय के साथ कविता पढ़ाते थे।उनसे प्रभावित होकर लेखक भी अकेले में खेतों पर कविताएँ गुनगुनाने और रचने लगा।पहले जो अकेलापन खटकता था, अब कविता गाने और अभिनय करने के लिए वह लेखक को अच्छा लगने लगा।
- **स्वयं कविता रचना:** यह जानकर कि कवि भी आम इंसान होते हैं, लेखक के मन में आत्मविश्वास जगा।इससे उसका अकेलापन दूर होने के साथ उसमें स्वयं से कविता रच लेने का आत्मविश्वास भी आया। वह भैंस की पीठ या पत्थरों पर लकड़ी व कंकड़ से तुकबंदी लिखने लगा। सौंदलगेकर मास्टर को कविताएँ दिखाने और उनके मार्गदर्शन से लेखक की मराठी भाषा, छंद और अलंकारों की समझ बहुत सुधर गई।

पाठ्यपुस्तक से प्रश्न और उनके उत्तर-

प्रश्न 1. 'जूझ' शीर्षक के औचित्य पर विचार करते हुए यह स्पष्ट करें कि क्या यह शीर्षक कथा नायक की किसी केंद्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता हैं?

उत्तर- शीर्षक का औचित्य: 'जूझ' का अर्थ 'संघर्ष' है, जो नायक आनंदा के जीवन की **अदम्य संघर्षशीलता** को सटीकता से उजागर करता है, जो इस प्रकार है-

पारिवारिक संघर्ष: पिता द्वारा पढ़ाई छुड़ाकर जबरन खेत में झोंके जाने पर भी उसने हिम्मत नहीं हारी और दत्ता जी राव की मदद से स्कूल जाने का रास्ता निकाला।

कठिन शर्तों का निर्वाह: उसने स्कूल जाने के लिए पिता की कड़ी शर्तें स्वीकार कीं; जैसे सुबह खेत में पानी लगाना और छुट्टी के बाद ढोर चराना।

पाठशाला की चुनौतियाँ: कक्षा में शरारती लड़कों द्वारा मज़ाक उड़ाए जाने पर भी वह विचलित नहीं हुआ और अपनी लगन से मॉनीटर बना।

एकांत को ताकत बनाना: खेतों के अकेलेपन से जूझते हुए उसने सौंदलगेकर मास्टर जी की प्रेरणा से काव्य रचना सीखी और आत्मविश्वास पाया। अतःयह शीर्षक आनंदा के कर्मठ और जुझारू चरित्र को पूरी तरह सार्थक करता है।

प्रश्न 2. स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास लेखक के मन में कैसे पैदा हुआ?

उत्तर- लेखक के मन में कविता रचने का आत्मविश्वास पैदा होने के मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं-

कवियों के प्रति धारणा बदलना: सौंदलगेकर मास्टर जी द्वारा कवियों के संस्मरण सुनाने पर लेखक को समझ आया कि कवि भी आम इंसान ही होते हैं।

आस-पास के दृश्यों से प्रेरणा: मास्टर जी को अपने घर की मालती बेल पर कविता लिखते देख लेखक को लगा कि वे भी अपने खेतों, पशुओं और फूलों पर कविता रच सकते हैं।

तुकबंदी का निरंतर अभ्यास: लेखक भैंस चराते या पानी लगाते समय पत्थरों पर कंकड़ से या भैंस की पीठ पर लकड़ी से तुकबंदी लिखने लगा।

मास्टर जी का प्रोत्साहन: मास्टर जी द्वारा कविता की प्रशंसा करने, स्कूल के समारोह में गवाने और छंद-अलंकार सिखाने से लेखक का हौंसला बढ़ा।

प्रश्न 3. श्री सौंदलगेकर के अध्यापन की उन विशषताओं को रेखांकित करें जिन्होंने कविताओं के प्रति लेखक के मन में रुचि जगाई।

उत्तर- मास्टर सौंदलगेकर के अध्यापन की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

रसिक व जीवंत पाठ: वे स्वयं कविता रचते थे और कक्षा में सुरीले गले, उचित लय, छंद की चाल तथा सुंदर अभिनय के साथ सस्वर पाठ करते थे।

भावपूर्ण प्रस्तुति: कविता पढ़ाते समय वे स्वयं उसमें रम जाते थे और उसी भाव की अन्य कवियों की रचनाएँ व अपने संस्मरण सुनाकर माहौल को जीवंत बनाते थे।

व्यक्तिगत मार्गदर्शन: उन्होंने आनंदा की शुरुआती तुकबंदियों को बड़े स्नेह से परखा और आधी रात को भी उसके लेखन, छंद और अलंकारों की कमियों को सुधारा।

प्रोत्साहन: वे आनंदा को विभिन्न कविता-संग्रह पढ़ने को देते थे, जिससे लेखक के मन में काव्य के प्रति गहरा अनुराग जगा।

प्रश्न 4. कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारणा में क्या बदलाव आया?

उत्तर- कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारणा पर निम्नलिखित बदलाव आए-

लगाव से पहले का अकेलापन: कविता के प्रति रुचि जागने से पहले लेखक को ढोर चराते और खेत में पानी लगाते समय अकेलापन बहुत सालता और खटकता था। वे हमेशा बातचीत के लिए किसी साथी का साथ चाहते थे।

बाद का परिवर्तन: कविता में रम जाने के बाद लेखक की धारणा बदल गई और उन्हें अकेले रहना अधिक अच्छा तथा आनंददायक लगने लगा।अकेले रहने पर वे बिना किसी संकोच के ऊँची आवाज़ में कविताएँ गा सकते थे, मास्टर सौंदलगेकर की तरह अभिनय कर सकते थे और खेतों में नाच भी सकते थे।जो एकांत पहले लेखक के लिए उबाऊ बोझ था, वही बाद में उनकी रचनात्मकता और आनंद का जरिया बन गया।

प्रश्न 5. आपके खयाल से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का तर्क सहित उत्तर दें।

उत्तर - पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक (आनंदा) और दत्ता जी राव का रवैया बिल्कुल सही था।

लेखक की दूरदर्शिता: लेखक का मानना था कि जीवनभर खेती करने से हाथ कुछ नहीं लगेगा जबकि पढ़-लिख जाने से नौकरी लग जाएगी या कोई व्यापार किया जा सकेगा।

दत्ता जी राव का सही दृष्टिकोण: वे शिक्षा के महत्त्व को समझते थे, इसलिए उन्होंने आनंदा के पिता को कड़ी फटकार लगाई और आनंदा को तुरंत पाठशाला भेजने का आदेश दिया।

पिता का संकीर्ण रवैया: इसके विपरीत, लेखक के पिता (दादा) का रवैया ग़लत और स्वार्थी था। वे स्वयं गाँव में आज़ादी से घूमने के लिए आनंदा के जीवन की बलि चढ़ा रहे थे।

पढ़ाई के प्रति लेखक और दत्ता जी राव की सोच प्रगतिशील थी, जबकि पिता की सोच केवल व्यक्तिगत स्वार्थ पर टिकी थी।

प्रश्न 6. दत्ता जी राव से पिता पर दबाव डलवाने के लिए लेखक और उसकी माँ को एक झूठ का सहारा लेना पड़ा। यदि झूठ का सहारा न लेना पड़ता तो आगे का घटनाक्रम क्या होता?

उत्तर- यदि लेखक और उनकी माँ ने दत्ता जी राव के सामने झूठ का सहारा न लिया होता, तो आगे का संभावित घटनाक्रम निम्नलिखित होता-

घर में भारी कलह: यदि दादा को पता चलता कि माँ-बेटे ने उनकी शिकायत दत्ता जी राव से की है, तो वे घर में बहुत गुस्सा करते और दोनों की बेरहमी से पिटाई करते।

शिक्षा पर स्थायी विराम: पिता के क्रूर और अड़ियल रवैये के कारण आनंदा को कभी दोबारा पाठशाला जाने का अवसर नहीं मिलता और उनका साल हमेशा के लिए बर्बाद हो जाता।

दत्ता जी राव के हस्तक्षेप का अभाव: बिना योजना और चतुराई के दत्ता जी राव भी दादा को डांटने या उन पर दबाव बनाने का ठोस आधार नहीं ढूँढ़ पाते।

प्रतिभा का दमन: आनंदा जीवनभर केवल खेतों में काम करने और ढोर चराने तक ही सीमित रह जाते और उनकी काव्य रचने की अद्भुत प्रतिभा कभी निखर नहीं पाती।

सीबीएसई परीक्षाओं में पूछे गए एवं उच्च चिंतन कौशल पर आधारित दक्षतापरक प्रश्न

प्रश्न 1.'जूझ' कहानी में छात्रों को अनुशासन में रखने के लिए अध्यापकों द्वारा दिए जाने वाले शारीरिक दंड का उल्लेख किया गया है। आपकी दृष्टि में छात्रों के साथ इस प्रकार व्यवहार कहाँ तक उचित है? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। वर्तमान में इसमें क्या परिवर्तन आया है?

उत्तर- जूझ' कहानी के संदर्भ में शारीरिक दंड पर विचार: मेरी दृष्टि में छात्रों के साथ शारीरिक दंड का व्यवहार बिल्कुल भी उचित नहीं है। इससे छात्रों के मन में भय पैदा होता है और सीखने की स्वाभाविक प्रक्रिया बाधित होती है।

मानसिक विकास में बाधा: मारपीट और कठोर दंड से छात्र स्कूल जाने से डरने लगते हैं और उनका पढ़ाई से मोहभंग हो जाता है। अनुशासन प्रेम, सहानुभूति और उचित मार्गदर्शन से सिखाया जाना चाहिए, न कि हिंसा से।

वर्तमान में आए परिवर्तन: आज की शिक्षा प्रणाली बाल-केंद्रित हो गई है। स्कूलों में शारीरिक दंड को कानूनी रूप से प्रतिबंधित कर दिया गया है। अब अध्यापकों द्वारा प्रेम, सहानुभूति और मनोवैज्ञानिक तरीकों से बच्चों को समझाकर अनुशासन में रखने पर बल दिया जाता है।

प्रश्न 2. 'जूझ' कहानी के आधार पर लिखिए कि सारे गाँव भर में आनंदा के पिता का कोल्हू सबसे पहले क्यों चलता था? गाँव के बाकी किसानों का इस विषय में क्या मत था? आपकी दृष्टि में दोनों में से किसकी सोच अधिक महत्त्वपूर्ण और उचित है और क्यों? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

उत्तर- आनंदा के पिता (दादा) का मानना था कि कोल्हू जल्दी शुरू करने से बाज़ार में गुड़ की बहुतायत नहीं होती और उनके नंबर तीन के गुड़ को भी अच्छे दाम मिल जाते हैं।

अन्य किसान मानते थे कि ईख को कुछ और दिन खेत में खड़ी रहने देने से उसका रस गाढ़ा हो जाता है, जिससे गुड़ की मात्रा अधिक निकलती है और गुड़ भी अच्छा होता है।

मेरी दृष्टि में बाकी किसानों की सोच अधिक महत्त्वपूर्ण और उचित है क्योंकि बाकी किसानों की सोच वैज्ञानिक और गुणवत्ता पर आधारित थी, जिससे फसल का पूरा लाभ मिलता था। इसके विपरीत, पिता की सोच केवल जल्दबाज़ी और स्वार्थ से प्रेरित थी जो कृषि की समझ के अनुकूल नहीं थी।

प्रश्न 3. "मैं अपनी आँखों और कानों में प्राणों की सारी शक्ति लगाकर- दम रोककर मास्टर के हाव-भाव, ध्वनि,गति,चाल और रस पीता रहता।" 'जूझ' कहानी के इस कथन को स्पष्ट करते हुए लिखिए कि एक अध्यापक कैसे अपने छात्रों का आदर्श स्वरुप हो सकता है?

उत्तर- कथन का आशय: जब मराठी शिक्षक श्री सौंदलगेकर कक्षा में स्वयं रमकर अभिनय और सुरीले गले से कविता पाठ करते थे, तब लेखक (आनंदा) अपनी पूरी एकाग्रता और संवेदना के साथ उनके हाव-भाव और रस में डूब जाता था।

शिक्षण के प्रति समर्पण:एक शिक्षक अपने काम में पूरी तरह डूबकर और अपनी विषय-वस्तु को जीवंत बनाकर छात्रों का आदर्श बन सकता है, जैसा शिक्षक सौंदलगेकर करते थे।

स्नेह और व्यक्तिगत मार्गदर्शन: शिक्षक जब छात्रों को केवल कक्षा तक सीमित न रखकर उनकी व्यक्तिगत कमियों को सुधारते हैं और आगे बढ़ने का हौसला देते हैं, तो वे छात्रों के प्रिय हो जाते हैं।

प्रेरणा पुंज होना: सौंदलगेकर जी ने आनंदा के भीतर छिपी काव्य-प्रतिभा को जगाया और उसका आत्मविश्वास बढ़ाया। इसी प्रकार एक आदर्श शिक्षक छात्रों की सोई हुई क्षमताओं को पहचानकर उनके जीवन को सही दिशा देता है।

प्रश्न 4. "यह खेती हमें गड्ढे में धकेल रही है। पढ़ जाऊँगा तो नौकरी लग जाएगी, पैसे हाथ में रहेंगे।" 'जूझ' पाठ से उद्धृत इस कथन के सन्दर्भ में ग्रामीण युवाओं की मानसिक स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर- 'जूझ' पाठ के इस कथन के संदर्भ में आज के ग्रामीण युवाओं की मानसिक स्थिति को इस प्रकार समझा जा सकता है-

कृषि के प्रति मोहभंग: आनंदा की तरह आज के ग्रामीण युवा भी यह महसूस करते हैं कि पारंपरिक खेती उन्हें कर्ज या पिछड़ेपन के गड्ढे में धकेल रही है।

शिक्षा के प्रति बढ़ता झुकाव: युवाओं में यह दृढ़ विश्वास है कि शिक्षा ही उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति को सुधारने का एकमात्र सशक्त माध्यम है।

आर्थिक आत्मनिर्भरता की चाह: ग्रामीण युवा पढ़-लिखकर नौकरी पाना चाहते हैं जिससे वे अपने परिवार को एक बेहतर और सुरक्षित जीवन दे सकें।

शहरी जीवन और आधुनिकता का आकर्षण: खेती के कठिन और अनिश्चित श्रम की तुलना में युवा शहरों में नौकरी या व्यापार करने को अधिक सम्मानजनक और सुलभ मानते हैं।

संसाधनों के अभाव का द्वंद्व: ग्रामीण युवाओं में आगे बढ़ने की तीव्र लालसा और विपरीत परिस्थितियों से जूझने का जज़्बा साफ़ दिखाई देता है।

पाठ-3 अतीत में दबे पाँव- ओम थानवी (विधा- यात्रा वृत्तांत और रिपोर्ट)

यह पाठ हमें सिंधु घाटी सभ्यता की श्रेष्ठता और प्राचीनता की जानकारी देता है, जो इस प्रकार है -

- **मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा** दुनिया के दो सबसे पुराने नियोजित शहर माने जाते हैं। मुअनजो-दड़ो पाकिस्तान के सिंध प्रान्त में स्थित है।मुअनजो-दड़ो का अर्थ- मुर्दों का टीला।यह ताम्र काल का सबसे बड़ा शहर था।यह उस सभ्यता की राजधानी रहा होगा जिसका क्षेत्रफल 200 हैक्टर व आबादी 85000 रही होगी।वर्ष 1922 में पुरातत्त्ववेत्ता राखलदास बनर्जी ने बौद्ध स्तूप के आस-पास की गई खुदाई में ईसा पूर्व के निशान पाए।
- **साधन-संपन्न पर आडंबरहीन सभ्यता:** सिंधु सभ्यता पूरी तरह साधन-संपन्न थी, लेकिन यहाँ भव्य महलों, विशाल मंदिरों या राजाओं-महंतों की बड़ी समाधियों जैसे दिखावे का सर्वथा अभाव था। 'नरेश' का मुकुट और मूर्तियाँ भी आकार में छोटी है।
- **समाज-पोषित सौंदर्य-बोध:** यहाँ का सौंदर्य-बोध राज-पोषित या धर्म-पोषित न होकर समाज-पोषित था। वास्तुकला, मुहरों, खिलौनों, आभूषणों और सुघड़ लिपि में राजसी प्रभुत्व के बजाय आम आदमी की सुरुचि और कला-सिद्धि को प्राथमिकता दी गई थी।
- **शक्ति के बजाय समझ का अनुशासन:** यहाँ नगर-नियोजन, वास्तुकला, मुहरों, ठप्पों और सामाजिक व्यवस्था में एकरूपता मिलती है। यह साबित करता है कि यह सभ्यता किसी सैन्य या राजसी ताकत से शासित होने के बजाय नागरिकों की आपसी समझ से अनुशासित थी।
- **जल-संस्कृति:** बेजोड़ जल-प्रबंधन के कारण इसे 'जल-संस्कृति' कहना बिल्कुल उचित है। मुअनजो-दड़ो में लगभग 700 पक्के कुएँ, प्रत्येक घर में स्नानघर, एक विशाल महाकुंड (40 फुट लंबा, 25 फुट चौड़ा) और ऊपर से ढकी हुई नालियों की उच्च स्तरीय जल-निकासी व्यवस्था थी।
- **धड़कती ज़िंदगी का दस्तावेज़:** यहाँ के टूटे-फूटे खंडहर और अधूरी सीढ़ियाँ आज भी मानवता के क्रमिक विकास और उस समय के सभ्य मानवीय समाज की धड़कती ज़िंदगियों को महसूस कराने का एक जीवंत दस्तावेज़ हैं।

पाठ्यपुस्तक से प्रश्न और उनके उत्तर-

प्रश्न 1. सिंधु सभ्यता साधन-संपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था, कैसे?

उत्तर- सैन्य व राजसी दिखावे का अभाव: सिंधु सभ्यता में राजतंत्र या धर्मतंत्र की ताकत का प्रदर्शन करने वाले विशाल महल, बड़े उपासना-स्थल या मंदिर नहीं मिले हैं।

लघुता में महत्ता: यहाँ से प्राप्त मूर्तियाँ, औज़ार और राजा (याजक-नरेश) का मुकुट आकार में अत्यंतछोटे हैं। यहाँ तक कि नावें भी मिस्र की तुलना में छोटी थीं।

हथियारों का न होना: अजायबघर या खुदाई में औज़ार तो प्रचुर मात्रा में मिले हैं, परंतु किसी प्रकार के युद्ध संबंधी हथियार नहीं मिले, जो यह दर्शाता है कि यहाँ अनुशासन ताकत के बल पर नहीं था। यह एक 'लो-प्रोफ़ाइल' सभ्यता थी, जहाँ दिखावे की जगह कला और उपयोगिता की भव्यता थी।

प्रश्न 2. सिंधु-सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य-बोध है जो राज-पोषित या धर्म-पोषित न होकर समाज-पोषित था।' ऐसा क्यों कहा गया?

उत्तर- सिंधु सभ्यता को **'समाज-पोषित सौंदर्य-बोध'** कहने के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं-

प्रभुत्व या दिखावे का अभाव: यहाँ राजतंत्र या धर्मतंत्र का प्रदर्शन करने वाले विशाल महल, भव्य मंदिर, पिरामिड या राजाओं की बड़ी समाधियाँ नहीं मिलतीं।

लघु आकार में महत्ता: यहाँ प्राप्त याजक-नरेश की मूर्ति का मुकुट और कलाकृतियाँ आकार में बहुत छोटी हैं, जो यह दर्शाती हैं कि वे दिखावे में विश्वास नहीं रखते थे।

आम जनता की सुरुचि का महत्त्व: यहाँ मिले चाक पर बने चित्रित मृद्-भांड, आभूषण, बारीकी से उत्कीर्ण मुहरें, खिलौने और सुघड़ लिपिरूप आम लोगों की उच्च कलात्मक रुचि को प्रकट करते हैं।

सामुदायिक व्यवस्था में एकरूपता: नगर नियोजन, बेजोड़ जल निकासी व्यवस्था, और कुओं का निर्माण किसी राजा के डर से नहीं, बल्कि समाज की नागरिक समझ और आपसी अनुशासन से प्रेरित था।

इस सभ्यता में सौंदर्य और कला का आधार किसी राजा या धार्मिक गुरु की सत्ता (राज-पोषित या धर्म-पोषित) न होकर वहाँ का आम समाज और उसकी जीवनशैली थी।

प्रश्न 3. पुरातत्त्व के किन चिह्नों के आधार पर आप यह कह सकते हैं कि-"सिंधु सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी।"

उत्तर- निम्नलिखित पुरातात्त्विक चिह्नों के बल पर यह कहा जा सकता है कि सिंधु सभ्यता ताकत से शासित होने की बजाय समझ से अनुशासित थी-

हथियारों का न होना: खुदाई में और अजायबघर में प्रदर्शित चीज़ों में अनेक प्रकार के औज़ार तो मिले हैं, परंतु किसी राजतंत्र की तरह युद्ध से जुड़े हथियार कहीं नहीं मिले हैं।

प्रभुत्व या दिखावे का अभाव: यहाँ सैन्य सत्ता या धर्मतंत्र का प्रदर्शन करने वाले विशाल महल, मंदिर,पिरामिड या राजाओं-महंतों की भव्य समाधियाँ नहीं मिलती हैं।

लघु आकार के शिल्प: यहाँ से प्राप्त मूर्तिशिल्प और औज़ार आकार में काफी छोटे हैं।

व्यवस्था में एकरूपता: बिना किसी सैन्य बल के भी यहाँ की नगर योजना, ग्रिड प्लान सड़कें, पक्की ईंटों का अनुपात (1:2:4), बेजोड़ जल निकासी और साफ़-सफ़ाई की सामाजिक व्यवस्था में अद्भुत एकरूपता थी, जो केवल नागरिक समझ से ही संभव है।

प्रश्न 4. "यह सच है कि यहाँ किसी आँगन की टूटी-फूटी सीढ़ियाँ अब आप को कहीं नहीं ले जातीं; वे आकाश की तरफ़ अधूरी रह जाती हैं, लेकिन उन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर अनुभव किया जा सकता है कि आप दुनिया की छत पर हैं, वहाँ से आप इतिहास को नहीं उस के पार झाँक रहे हैं।इस कथन के पीछे लेखक का क्या आशय है?"

उत्तर- लेखक के इस कथन का आशय है-

सभ्यता की प्राचीनता व श्रेष्ठता: मुअनजो-दड़ो के खंडहरों में घरों की अधूरी सीढ़ियों पर खड़े होकर 'दुनिया की छत' पर होने का अहसास होता है, जो इस सभ्यता के ऐतिहासिक रूप से सर्वोच्च और सबसे पुराने नियोजित शहर होने को दर्शाता है।

जीवंत इतिहास का अनुभव: यहाँ टूटी हुई सीढ़ियाँ पाठक को 5,000 वर्ष पुराने सुसंस्कृत समाज की धड़कन, उनकी जीवनशैली और परिवेश को साक्षात् महसूस कराती हैं।

इतिहास के पार झाँकना: इसका अर्थ है कि यहाँ आकर व्यक्ति केवल किताबों में लिखे तथ्यों या तारीखों को नहीं पढ़ता, बल्कि उस समय के इंसानी संस्कारों, संवेदनाओं और जीवन की निरंतरता का अनुभव करता है।

काल की सीमाओं से परे जाना: खंडहरों के उस ठहरे हुए दृश्य में हज़ारों साल पुराना अतीत और आज का वर्तमान एक साथ विलीन हो जाते हैं, जिससे समय की सीमाएँ समाप्त महसूस होती हैं।

प्रश्न 5. टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों को भी दस्तावेज़ होते हैं-इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आलोक में इस कथन को इस प्रकार समझा जा सकता है -

जीवंत मानवीय संवेदनाएँ: मुअनजो-दड़ो के किसी घर की देहरी पर पाँव रखते ही वहाँ कभी रहने वाले लोगों की मौजूदगी का अहसास मन को सहमा देता है।

दैनिक जीवन के साक्ष्य: रसोई की उजड़ी खिड़की के पास खड़े होकर प्राचीन समय के भोजन की गंध को महसूस करना या सूनी गलियों में बैलगाड़ी की रुन-झुन की कल्पना करना, उनकी उस समय रोज़मर्रा की धड़कती ज़िंदगी का अहसास कराता है।

अनछुए समय का दस्तावेज़: ये खंडहर हमें केवल राजाओं का इतिहास नहीं बताते, बल्कि यह साबित करते हैं कि यहाँ एक सुसंस्कृत जन समाज रहता था, जिसके सुख-दुख और धड़कते पल आज भी इन दीवारों में सुरक्षित हैं।

प्रश्न 6. नदी, कुएँ, स्नानागार और बेजोड़ निकासी व्यवस्था को देखते हुए लेखक पाठकों से प्रश्न पूछता है कि क्या हम सिंधु घाटी सभ्यता को जल-संस्कृति कह सकते हैं? आपका जवाब लेखक के पक्ष में है या विपक्ष में? तर्क दें।

उत्तर- नदी, कुएँ, स्नानागार और जल निकासी व्यवस्था को देखते हुए सिंधु घाटी सभ्यता को निश्चित ही **'जल-संस्कृति'** कहा जा सकता है-

नदी सभ्यता: यह सिंधु नदी के किनारे बसी सभ्यता थी और नदी के पानी के नुक्सान से बचने के लिए उन्होंने अपनी बसावट टीलों पर की थी।

भू-जल तक पहुँच: सिंधु सभ्यता दुनिया की पहली ज्ञात संस्कृति है जिसने कुएँ खोदकर भू-जल तक पहुँच बनाई; अकेले मुअनजो-दड़ो में करीब 700 कुएँ थे।

अद्वितीय महाकुंड: मुअनजो-दड़ो का विशाल सामूहिक स्नानागार (महाकुंड) और साधुओं के कक्ष इसके पवित्र व अनुष्ठानिक जल-उपयोग को प्रमाणित करते हैं।

बेजोड़ जल निकासी: यहाँ पक्की ईंटों से बनी और ढकी हुई नालियों का ऐसा सुव्यवस्थित बंदोबस्त मिलता है, जो तत्कालीन इतिहास में अन्यत्र कहीं नहीं है।

नागरिक सरोकार: हर घर में स्नानागार का होना और गंदे पानी की निकासी के लिए सड़कों के दोनों तरफ बंद नालियों का जाल उनके उच्च जल-प्रबंधन को दर्शाता है।

सीबीएसई परीक्षाओं में पूछे गए एवं उच्च चिंतन कौशल पर आधारित दक्षतापरक प्रश्न

प्रश्न 1. लेखक ने सिंधु घाटी सभ्यता के सबसे बड़े नगर मुअनजो-दड़ो की नगर-योजना की तुलना आज के नगरों से किस प्रकार की है? 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर विवेचना कीजिए।

उत्तर- मुअनजो-दड़ो की नगर-योजना और आज के शहर के नगर-योजना की तुलना इस प्रकार है -

नियोजित और ग्रिड प्रणाली: लेखक ने बताया है कि मोहेनजो-दड़ो की नगर-योजना पूरी तरह ग्रिड पैटर्न पर आधारित थी, जहाँ सड़कें सीधी थीं और एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं। आज के चंडीगढ़ या इस्लामाबाद जैसे आधुनिक नियोजित शहर इसी तर्ज पर बसे हैं लेकिन इनका नियोजन नीरस है।

सेक्टर जैसी बनावट: प्राचीन मुअनजो-दड़ो शहर अलग-अलग हिस्सों में विभाजित था, जो आज के महानगरों के सेक्टर्स की याद दिलाता है, परन्तु आज की सेक्टर मार्का कॉलोनियों में खुद विकसने का अवसर नहीं है।

आज के नगरों से भिन्नता (बेहतर जल निकासी): आधुनिक शहरों में थोड़ी सी बारिश होते ही पानी जमा हो जाता है वहीं मुअनजो-दड़ो की जल निकासी व्यवस्था इतनी बेजोड़ थी कि वहाँ पानी जमा होने की कोई गुंजाइश नहीं थी।

प्रश्न 2. 'अतीत में दबे पाँव' पाठ में मुअनजो-दड़ो के किन भौतिक अवशेषों का वर्णन किया गया है? उस सभ्यता की जीवन-शैली, सामाजिक संरचना और संस्कृति को भी स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- **मुख्य भौतिक अवशेष:** पाठ में मुअनजो-दड़ो के बौद्ध स्तूप, सुनियोजित सीधी सड़कें, ढकी हुई पक्की नालियाँ, सामूहिक महाकुंड अनाज के कोठार, लगभग 700 कुएँ, सूती कपड़े के साक्ष्य और मिट्टी के बर्तनों जैसे भौतिक अवशेषों का विस्तृत वर्णन है।

जीवन-शैली और संस्कृति: अवशेषों से पता चलता है कि वहाँ के लोगों की जीवन-शैली अत्यंत अनुशासित, सादगीपूर्ण और व्यावहारिक थी। वे खेती (गेहूँ, कपास) और व्यापार करते थे। वास्तुकला में तड़क-भड़क या भव्यता की जगह उपयोगिता को प्राथमिकता दी जाती थी।

सामाजिक संरचना: यह एक सुव्यवस्थित और शांतिप्रिय समाज था। यहाँ समाज दो हिस्सों में बँटा था- ऊँचे चबूतरे पर बना 'गढ़' जहाँ संभवतः संभ्रांत लोग रहते थे, और नीचे बसा 'लोअर टाउन' जहाँ आम नागरिक रहते थे।

अवधारणा मानचित्र

SET-1

Series S4PRQ

प्रश्न-पत्र कोड **2/4/1**

रोल नं. | | | | | | | | |

परीक्षार्थी प्रश्न-पत्र कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें।

[]

नोट

(I) कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **11** हैं।

(II) प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए प्रश्न-पत्र कोड को परीक्षार्थी उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें।

(III) कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **12** प्रश्न हैं।

(IV) **कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, उत्तर-पुस्तिका में यथा स्थान पर प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।**

(V) इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है। प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा। 10.15 बजे से 10.30 बजे तक परीक्षार्थी केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे।

हिन्दी (आधार)

HINDI (Core)

निर्धारित समय : 3 घण्टे — *अधिकतम अंक : 80*

सामान्य निर्देश :

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका सख़्ती से अनुपालन कीजिए :

(i) *यह प्रश्न-पत्र **तीन** खण्डों में विभाजित है।*

(ii) ***खण्ड क** में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। **सभी** प्रश्नों के उत्तर देना **अनिवार्य** है।*

(iii) ***खण्ड ख** में पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।*

(iv) ***खण्ड ग** में पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।*

(v) *तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।*

(vi) *यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।*

*2/4/1** — *1 *Page* — *P.T.O.*

खण्ड - क (अपठित बोध)

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 10

मानव के संवाद करने, जानकारी प्राप्त करने और बाह्य दुनिया के समक्ष स्वयं को अभिनीत करने की शैली में परिवर्तन लाकर सोशल मीडिया आधुनिक युग का सर्वव्यापी पहलू बन गया है। इसने सूचना के प्रसार को अत्यंत त्वरित बना दिया है और यह सभी आयु समूहों के लिए एक आसान माध्यम बन चुका है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, लिंक्डइन, यूट्यूब आदि उपयोगकर्ता को अपनी रचनात्मकता प्रदर्शित करने और सामाजिक तौर पर सक्रिय रहने का अवसर प्रदान करते हैं। इसका महत्त्व समय के साथ बढ़ता ही जा रहा है। यह न केवल व्यक्तिगत जीवन के लिए एक प्रभावी माध्यम है, बल्कि यह शिक्षा, व्यापार और यहाँ तक कि राजनीति में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।इसने सूचना के प्रसार को अत्यधिक तेज़ और सस्ता बना दिया है। इसके जरिए लोग घटनाओं का सीधा प्रसारण विश्व के किसी भी कोने से देख सकते हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षा के क्षेत्र में तो इसने एक क्रांतिसी ला दी है। छात्रों के लिए यह किसी वरदान से कम नहीं है। व्यावसायिक गतिविधियाँ- जैसे उत्पादों और सेवाओं का प्रचार करना, ग्राहकों से जुड़ना तथा विपणन अभियानों को तेजी से फैलाने में भी यह मदद करता है।

सोशल मीडिया जहाँ सकारात्मक भूमिका अदा कर रहा हैवहीं समाज पर इसका दुष्प्रभाव भी देखने को मिल रहा है। लोग तनाव और अवसाद से प्रभावित हो रहे हैं, अकेलापन बढ़ रहा है, अनिद्रा की समस्या बढ़ रही है। इसने आत्ममुग्धता को बढ़ाया है। अपनी निजी जिंदगी के बारे में लिखना, अपनी आत्मीय तस्वीरें शेयर करना, चौबीसों घंटे सोशल मीडिया पर उपस्थित रहना बेचैनी को बढ़ा सकता है। आपको याद रखना चाहिए कि इस मंच पर आने वाले आपके आभासी मित्र, सच्चे मित्र या हितैषी नहीं होते। लोग आपकी उपस्थिति का लाभ उठाकर आपको धोखाधड़ी का शिकार बना लेते हैं। 'लाइक' और 'कमेंट' की अपेक्षा हमारे मस्तिष्क की लय बिगाड़ देती है। वैज्ञानिक इसकी लत को खराब जीवन-शैली से होने वाली बीमारियों में सबसे ऊपर रखते हैं।

यद्यपि यह लोगों से जुड़ने, सूचना के प्रचार-प्रसार, समुदाय में अहम भूमिका निभा रहा हैलेकिन इसके अति प्रयोग से बचना चाहिए।

(i) निम्नलिखित में से सोशल मीडिया का प्रकार नहीं है: **(1)**

(A) इंस्टाग्राम (B) व्हाट्सऐप (C) ट्विटर (D) फेसबुक

(ii) सोशल मीडिया की लोकप्रियता का नकारात्मक प्रभाव है: **(1)**

(A) सूचनाओं का त्वरित प्रसारण (B) दुनिया भर से जुड़ने का अवसर

(C) आत्ममोह की संस्कृति को बढ़ावा (D) व्यावसायिक गतिविधियों में योगदान

(iii) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प चुनिए: **(1)**

कथन :सोशल मीडिया का महत्त्व समय के साथ बढ़ता ही जा रहा है।

कारण :सामाजिक संरचना के सुदृढ़ीकरण और रचनात्मक क्षमता के प्रदर्शन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

विकल्प :

(A) कथन तथा कारण दोनों ग़लत हैं।

(B) कारण सही है, किंतु कथन ग़लत है।

(C) कथन सही है, किंतु कारण उसकी सही व्याख्या नहीं करता।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(iv) सोशल मीडिया से क्या अभिप्राय है? **(1)**

(v) सोशल मीडिया के दो सकारात्मक पहलुओं का उल्लेख कीजिए। **(2)**

(vi) सोशल मीडिया पर 'लाइक' और 'कमेंट' की अपेक्षा हमारे मस्तिष्क की लय बिगाड़ देती है। कैसे? स्पष्ट कीजिए। **(2)**

(vii) सोशल मीडिया की लत का खराब जीवन-शैली से होने वाली बीमारियों से क्या संबंध है? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। **(2)**

2. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: **(8)**

सबकी पीड़ा के साथ व्यथा अपने मन की जो जोड़ सके,
मुड़ सके जहाँ तक समय, उसे निर्दिष्ट दिशा में मोड़ सके।
युगपुरुष वही सारे समाज का विहित धर्मगुरु होता है,
सबके मन का जो अंधकार अपने प्रकाश से धोता है।
थे जहाँ सहस्रों वर्ष पूर्व, लगता है वहीं खड़े हैं हम,
है वृथा वर्ग उन गुफावासियों से कुछ बहुत बड़े हैं हम।

अनगढ़ पत्थर से लड़ो, लड़ो किटकिटा नखों से, दाँतों से
या लड़ो ऋक्ष के रोमगुच्छ-पूरित वज्रीकृत हाथों से।
या चढ़ विमान पर नर्म मुट्ठियों से गोलों की वृष्टि करो,
आ जाए लक्ष्य में जो कोई, निष्ठुर हो सबके प्राण हरो।
ये तो साधन के भेद, किन्तु भावों में तत्त्व नया क्या है?
क्या खुली प्रेम आँख अधिक? भीतर कुछ बढ़ी दया क्या है?
झर गई पूँछ, रोमान्त झरे, पशुता का झरना बाकी है,
बाहर-बाहर तन सँवर चुका, मन अभी सँवरना बाकी है।

(i) कवि को ऐसा क्यों लगता है कि हम सहस्रों वर्ष पूर्व जहाँ थे, आज भी वहीं हैं? (1)

(A) धरती के भीतर का रहस्य जानना अभी भी बाकी है।
(B) मानव के भीतर पशुता अभी भी शेष है।
(C) आज भी मनुष्य अपने नाखूनों का बढ़ना नहीं रोक पाया है।
(D) आज भी मनुष्य नख-दंत अवलम्बी है।

(ii) 'ये तो साधन के भेद' पंक्ति में 'साधन' से आशय है: (1)

(A) जीवनयापन के साधन
(B) लक्ष्य-प्राप्ति के अस्त्र-शस्त्र
(C) जीविकोपार्जन के माध्यम
(D) शत्रु को भयभीत करने के तरीके

(iii) 'बाहर-बाहर तन सँवर चुका' से क्या अभिप्राय है? (1)

(A) सौंदर्य-प्रसाधनों से शारीरिक सुंदरता का बढ़ जाना
(B) शरीर के अनावश्यक अंगों का झड़ जाना
(C) मनुष्य की शारीरिक बनावट का सुंदर हो जाना
(D) मनुष्य और पशुओं के बीच अंतर दृष्टिगत होना

(iv) 'भावों में तत्त्व नया क्या है'- पंक्ति में निहित व्यंग्य स्पष्ट कीजिए। (1)

(v) 'मन अभी सँवरना बाकी है'- कवि ने ऐसा क्यों कहा है? (2)

(vi) वज्रीकृत हाथों से या नर्म मुट्ठियों से लड़ना कवि की दृष्टि में एक समान क्यों है? (2)

खण्ड - ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक पर आधारित प्रश्न)

3. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए: (6)

(i) दीपावली में घर की साज-सज्जा
(ii) उस दिन जब अचानक धरती काँपने लगी
(iii) विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने का उत्साह

4. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए: (4×2=8)

(i) पत्रकारीय लेखन का सबसे जाना-माना रूप क्या है? इसके लिए समाचार-लेखन की शैली का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(ii) वे कौन-सी सुविधाएँ हैं जो मुद्रित माध्यमों के पाठकों को उपलब्ध हैं, लेकिन रेडियो के श्रोताओं को नहीं?

(iii) पिछले कुछ वर्षों में आर्थिक पत्रकारिता के महत्त्व के बढ़ने का कारण स्पष्ट कीजिए।

(iv) कहानी के संवादों को नाट्य रूपांतरण करते समय किस तरह प्रभावशाली बनाया जा सकता है?

(v) विचार करने और उसे व्यक्त करने की प्रक्रिया निबंध-लेखन के परंपरागत विषयों में क्यों घटित नहीं हो पाती?

5. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए: (2×4=8)

(i) आपके विद्यालय ने 'विश्व जल दिवस' के अवसर पर 'जल संरक्षण' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया। स्कूल-पत्रिका में प्रकाशन हेतु इस गोष्ठी का विवरण देते हुए दिव्य/दिव्या की ओर से एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।

(ii) विशेषीकृत रिपोर्टिंग, बीट रिपोर्टिंग से भिन्न कैसे है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(iii) रेडियो नाटक और रंगमंचीय नाटकों की समानताओं एवं भिन्नताओं का उल्लेख कीजिए।

खण्ड- ग (पाठ्य-पुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न)

6. काव्यांश पर आधारित दिए गये प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: (5×1=5)

हो जाए न पथ में रात कहीं,
मंज़िल भी तो है दूर नहीं -
यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे -
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

(i) बच्चों का नीड़ों से झाँकने का संभावित कारण है: **(1)**

(A) रात्रि का अंधकारयुक्त भयावह वातावरण

(B) माता-पिता प्रदत्त स्नेह, सुरक्षा और भोजन

(C) माता-पिता का सुबह से नीड़ों से बाहर होना

(D) नीड़ और आसपास के वातावरण में पसरा सन्नाटा

(ii) दिन ढलते ही घर की ओर लौटती चिड़िया के परों में चंचलता है, तो कवि के कदमों में: **(1)**

(A) शिथिलता (B) व्याकुलता (C) गतिशीलता (D) भावुकता

(iii) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए: **(1)**

कथन :चिड़िया शीघ्रातिशीघ्र अपनी मंज़िल तक पहुँचना चाहती है।

कारण :गहराती संध्या उसे उसके बच्चों के लिए चिंतित कर रही है।

विकल्प :

(A) कथन तथा कारण दोनों ग़लत हैं।

(B) कारण सही है, लेकिन कथन ग़लत है।

(C) कथन सही है, लेकिन कारण कथन की सही व्याख्या **नहीं** करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(iv) काव्यांश के मूल भाव को स्पष्ट करने वाला/वाले कथन है/हैं: **(1)**

I. बीता हुआ समय लौटकर नहीं आता।

II. गतिशील समय के साथ चलते हुए लक्ष्य-प्राप्ति के लिए संघर्ष करना चाहिए।

III. अपनों से मिलन की आशा हमारे प्रयासों में तीव्रता लाती है।

उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

(A) केवल III (B) I और II (C) II और III (D) I, II और III

(v) 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है'- कथन की आवृत्ति संकेत करती है: **(1)**

(A) समय की गतिशीलता की ओर (B) काव्यांश के तुकांत शब्दों की ओर

(C) संध्या के आगमन की ओर (D) कवि की रचनात्मकता की ओर

7. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए:(2×3=6)

(i) 'उषा' कविता में कवि ने ग्रामीण अंचल की सुबह का मनोरम वर्णन किया है। आप अपने घर के आसपास होने वाली रात्रि के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

(ii) 'बादल राग' कविता में 'तिरती है समीर-सागर पर अस्थिर सुख पर दुख की छाया'- पंक्ति से क्या आशय है? कविता में किसके सुख-दुख की बात की जा रही है और क्यों?

(iii) 'छोटा मेरा खेत' कविता में खेती के रूपक द्वारा कवि ने किस कर्म की प्रक्रिया को स्पष्ट किया है,वर्णन कीजिए।

8. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए: (2×2=4)

(i) 'बात सीधी थी पर' कविता से उद्धृत 'भाषा के चक्कर में ज़रा टेढ़ी फँस गई'- पंक्ति से क्या अभिप्राय है?

(ii) 'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप' प्रसंग के राम अवतारी पुरुष न होकर एक सामान्य मानव थे, उदाहरण सहित सिद्ध कीजिए।

(iii) 'बगुलों के पंख' कविता के आधार पर नभ में पाँती-बँधे उड़ते बगुलों के सौंदर्य का वर्णन कीजिए।

9. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: (5×1=5)

रात्रि की विभीषिका को सिर्फ़ पहलवान की ढोलक ही ललकारकर चुनौती देती रहती थी। पहलवान संध्या से सुबह तक, चाहे जिस ख़याल से ढोलक बजाता हो, किंतु गाँव के अर्द्धमृत, औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी। बूढ़े-बच्चे-जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था। स्पंदन-शक्ति-शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी। अवश्य ही ढोलक की आवाज़ में न तो बुखार हटाने का कोई गुण था और न महामारी की सर्वनाश-शक्ति को रोकने की शक्ति ही, पर इसमें संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों को आँख मूँदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती थी। मृत्यु से वे डरते नहीं थे।

(i) 'रात्रि की विभीषिका' से अभिप्राय है: **(1)**

(A) रात्रि का सन्नाटा (B) रात्रि का भयावहपन

(C) रात्रि का अंधकार (D) रात्रि की स्पंदनहीनता

(ii) रात्रि की विभीषिका को गाँव में कौन चुनौती देता था? (1)

(A) जंगली जानवरों की आवाज़ (B) रात्रि का सूनापन

(C) पहलवान के लड़के (D) पहलवान की ढोलक

(iii) ढोलक की आवाज़ का गाँववालों पर पड़ने वाले प्रभाव के विषय में असत्य कथन है: (1)

(A) नसों में बिजली दौड़ जाती थी।

(B) उनमें संजीवनी-शक्ति भरती थी।

(C) मृत्यु का सामना करने की शक्ति देती थी।

(D) मृत्यु को पराजित करने की ताकत देती थी।

(iv) गद्यांश के अनुसार गाँववालों की दीन-हीन स्थिति का प्रमुख कारण था: (1)

(A) निर्धनता (B) अतिवृष्टि (C) संक्रामक रोग (D) साधनहीनता

(v) 'बिजली दौड़ जाती थी'- का आशय है: (1)

(A) वायु का प्रवाह होने लगता था। (B) रक्त का संचार होने लगता था।

(C) बिजली का प्रवाह होने लगता था। (D) चेतना का संचार हो जाता था।

10. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए: (2×3=6)

(i) 'भक्तिन' पाठ में वर्णित किन्हीं तीन समस्याओं का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

(ii) 'बाज़ार दर्शन' पाठ के संदर्भ में लिखिए कि 'पर्चेजिंग पावर' से क्या अभिप्राय है? क्या इसका उपयोग सकारात्मक कार्यों के लिए भी किया जा सकता है? उदाहरण सहित लिखिए।

(iii) 'शिरीष के फूल' पाठ में शिरीष के नए और पुराने फूलों द्वारा जीवन के किस सत्य को उजागर किया गया है?

11. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए: (2×2=4)

(i) 'काले मेघा पानी दे' पाठ में मेंढक-मंडली पर पानी फेंके जाने को 'पानी की बुवाई' कहा गया है। इस विषय में आपकी क्या राय है? स्पष्ट कीजिए।

(ii) 'भक्तिन' पाठ में महादेवी जी ने भक्तिन और अपने संबंधों की तुलना किनसे और क्यों की है?

(iii) 'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' पाठ के आधार पर लेखक के 'समता' संबंधी विचारों की व्याख्या कीजिए।

12. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं दो के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए: (2×5=10)

(i) नई पीढ़ी व पुरानी पीढ़ी के अंतर्विरोधों को 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए। इस प्रकार के अंतर्विरोधों को किस प्रकार कम किया जा सकता है?

(ii) 'जूझ' कहानी के आधार पर लिखिए कि सारे गाँव भर में आनंदा के पिता का कोल्हू सबसे पहले क्यों चलता था? गाँव के बाकी किसानों का इस विषय में क्या मत था? आपकी दृष्टि में दोनों में से किसकी सोच अधिक महत्त्वपूर्ण और उचित है और क्यों? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

(iii) "मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा प्राचीन भारत के ही नहीं, दुनिया के दो सबसे पुराने नियोजित शहर माने जाते हैं।"पाठ के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिए।

अंक योजना (विषय कोड - 302)

(Paper Code : 2/4/1) (Series - S4PRQ)

निर्धारित समय - 3 घंटे **अधिकतम अंक- 80**

Q.N.	मूल्यांकन बिंदु	Full Marks	Marks
	खंड - क (अपठित बोध)	**18**	
1.	**अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर-बहुविकल्पी-**	**10**	
(i)	(B) व्हाट्सऐप	1	Step 1 1 Mark
(ii)	(C) आत्ममोह की संस्कृति को बढ़ावा	1	Step 1 1 Mark
(iii)	(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।	1	Step 1 1 Mark
	वस्तुपरक-		
(iv)	• मानव के संवाद करने, जानकारी प्राप्त करने और बाह्य दुनिया के समक्ष स्वयं को अभिनीत करने का माध्यम	1	Step 1 1 Mark
(v)	• सूचनाओं और घटनाओं का त्वरित प्रसारण • वैश्विक मंच पर अपनी रचनात्मकता प्रदर्शित करने और सामाजिक तौर पर सक्रिय रहने का अवसर प्रदान करना • व्यक्तिगत जीवन के साथ शिक्षा, व्यापार और राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना • व्यावसायिक गतिविधियों में सहायक (कोई दो बिंदु अपेक्षित)	2	Step1 2 Marks
(vi)	• आत्म-मुग्धता को बढ़ावा • चौबीसों घंटे सोशल मीडिया पर उपस्थित रहने से बेचैनी बढ़ना • निजी जिंदगी की जानकारी और आत्मीय तस्वीरों को सार्वजानिक करना (कोई दो बिंदु अपेक्षित)	2	Step 1 2 Marks
vii	• तनाव और अवसाद से प्रभावित होना • अकेलापन बढ़ना • अनिद्रा और बेचैनी का बढ़ना (कोई दो बिंदु अपेक्षित- अन्य उपयुक्त तर्कपूर्ण उत्तर भी स्वीकार्य)	2	Step 1 2 Marks
2.	**अपठित पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर-बहुविकल्पी-**	**(8)**	
(i)	(B) मानव के भीतर पशुता अभी भी शेष है	1	Step 1 1 Mark
(ii)	(B) लक्ष्य प्राप्ति के अस्त्र-शस्त्र	1	Step 1 1 Mark
(iii)	(C) मनुष्य की शारीरिक बनावट का सुंदर हो जाना	1	Step 1 1 Mark

	वस्तुपरक-		
(iv)	• आदिमानव की भाँति आज भी मानव में हिंसा की प्रधानता	1	Step 1 1 Mark
(v)	• दया, ममता, प्रेम का अभाव• स्वार्थ और हिंसा की प्रबलता • जीवन मूल्यों का विकास न हो पाना (कोई दो बिंदु अपेक्षित)	2	Step 1 2 Marks
(vi)	• वज्रीकृत हाथ - आदिमानव की हिंसक वृत्ति की ओर संकेत • नर्म मुट्ठियाँ- आधुनिक मानव की हिंसक वृत्ति की ओर संकेत • दोनों ही स्थितियाँ मनुष्य की विनाशकारी प्रवृत्ति की परिचायक • युद्ध का साधन अथवा युद्ध करने वाला कोई भी मानवता का ही हनन (कोई दो बिंदु अपेक्षित)	2	Step 1 2 Marks
	खंड - ख(अभिव्याक्ति और माध्यम पुस्तक पर आधारित प्रश्न)	**22**	
3.	किसी एक विषय पर 120 शब्दों में रचनात्मक लेख : विषयवस्तु : 4 अंक प्रस्तुति : 1 अंक भाषा : 1 अंक	6	Step1 4 Marks Step 2 1 Mark Step 3 1 Mark
4.	**किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में अपेक्षित :4x2=8**		
(i)	**रूप-•** समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ परिचय-• उल्टा पिरामिड शैली छह ककारों का प्रयोग • घटते क्रम में समाचार की जानकारी देना • घटना, समस्या या विचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य, सूचना या जानकारी सबसे पहले लिखा जाना (कोई एक बिंदु अपेक्षित)	2	Step 1 1 Mark Step 2 1 Mark
(ii)	• अपनी पसंद के समाचार को सबसे पहले पढ़ना • सामग्री का स्थायित्व- सहेजकर रखने की सुविधा • प्रमाण के रूप में मान्य• चिंतनमनन की सुविधा • किसी शब्द का अर्थ समझ में न आने पर शब्दकोश की सहायता लेना (कोई दो बिंदु अपेक्षित)	2	Step 1 2 Marks
(iii)	• जनसामान्य का प्रत्यक्ष जुड़ाव • जनसामान्य की बढ़ती हुई जागरूकता • राजनीति और अर्थव्यवस्था के साथ बढ़ता रिश्ता • आर्थिक उदारीकरण और वैश्वीकरण के बाद से अर्थव्यवस्था में व्यापक बदलाव (कोई दो बिंदु अपेक्षित)	2	Step 1 2 Marks
(iv)	• देशकाल-वातावरण और पात्रानुकूल भाषा के प्रयोग द्वारा • मानसिक द्वंद्व की अभिव्यक्ति के लिए स्वगत कथन और वायस ओवर का प्रयोग करके• रंगमंचीय संकेतों के द्वारा • लंबे संवादों को संक्षिप्त करके (कोई दो बिंदु अपेक्षित)	2	Step 1 2 Marks

(v)	• तैयारशुदा सामग्री का प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होना • मौलिक चिंतन का अभाव • आत्मनिर्भर होकर मौलिक लेखन का प्रयास एवं अभ्यास न करना (कोई दो बिंदु अपेक्षित)	2	Step 1 2 Marks
5.	**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में अपेक्षित :2x4=8**		
(i)	• शीर्षक, दिनांक, नाम और स्थान संबंधी औपचारिकताएँ : 1 अंक • विषयवस्तु : 2 अंक • भाषा : 1 अंक	4	Step 1 1 Mark Step 2 2 Marks Step 3 1 Mark
(ii)	**भिन्नता-**• विशेषीकृत रिपोर्टिंग - सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस विशेष क्षेत्र या विषय से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण कर पाठकों को उसका अर्थ समझाने की कोशिश करना • बीट रिपोर्टिंग- संवाददाता में अपने क्षेत्र (खेल, शिक्षा, व्यापार आदि) विशेष की जानकारी और दिलचस्पी होना पर्याप्त, आमतौर पर अपनी बीट से जुड़ी सामान्य खबरें ही लिखना **उदाहरण -** • विशेषीकृत रिपोर्टिंग ईरान और इजरायल के बीच चल रहे संघर्ष के कारण तथा विश्व समुदाय विशेषकर पश्चिम एशियाई देशों पर पड़ने वाले प्रभाव का भी विश्लेषण कर पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना • बीट रिपोर्टिंग- इस संघर्ष की जानकारी के लिए बीट रिपोर्टर द्वारा दोनों देशों के एक दूसरे पर किए गए हमलों और उससे होने वाले नुकसान से अवगत कराना	4	Step 1 2 Marks Step 2 2 Marks
(iii)	**समानताएँ -** • दोनों में कहानी, चरित्र और संवाद का होना • कथानक में आदि-मध्य-अंत का होना • परिचय-द्वंद्व-समाधान का होना (कोई दो बिंदु अपेक्षित) **भिन्नताएँ -** • रेडियो नाटक- केवल श्रव्य माध्यम जबकि रंगमंचीय नाटक-दृश्य एवं श्रव्य दोनों • रेडियो नाटक की पात्र संख्या और अवधि सीमित होना जबकि रंगमंचीय नाटकों में पात्र संख्या और अवधि अपेक्षाकृत अधिक होना • रेडियो नाटक का प्रायः घर पर या अकेले सुना जाना जबकि	4	Step 1 2 Marks Step 2 2 Marks

	रंगमंचीय नाटक देखने के लिए सार्वजनिक स्थल पर एकत्रित होकर देखना • रेडियो नाटक में मंच, वस्त्र-सज्जा और कलाकारों के भावों को संवादों और ध्वनि प्रभावों के माध्यम से ही संप्रेषित किया जाना, जबकि रंगमंचीय नाटकों में मंच, वस्त्र-सज्जा और कलाकारों के चेहरे की भाव-भंगिमा द्वारा संप्रेषण (कोई दो बिंदु अपेक्षित)		
	खंड - ग (पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान पर आधारित प्रश्न)	**40**	
6.	**पठित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के संभावित उत्तर5x1=5**		Step 1 1 Mark
(i)	(B) माता-पिता प्रदत्त स्नेह, सुरक्षा और भोजन	1	Step 1 1 Mark
(ii)	(A) शिथिलता	1	Step 1 1 Mark
(iii)	(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।	1	Step 1 1 Mark
(iv)	(C) II और III	1	Step 1 1 Mark
(v)	(A) समय की गतिशीलता की ओर	1	Step 1 1 Mark
7.	**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में अपेक्षित :2x3=6**		
(i)	(परीक्षार्थी की निजी अनुभूति पर आधारित रात्रि के प्राकृतिक सौंदर्य का मनोरम वर्णन) **यथा-** • तारों से जगमगाता आकाश • कीट-पतंगों की ध्वनियाँ • आकाश की गोद में शिशु की भाँति लुकता-छिपता चंद्रमा • झिलमिलाते तारों का दुकूल ओढ़े प्रकृति आदि (परीक्षार्थी द्वारा दिए गए मुक्त उत्तर स्वीकार्य)	3	Step 1 3 Marks
(ii)	**आशय-** • क्षणिक एवं अस्थायी सुख पर दुख की छाया का सदा मंडराते रहना **किसके-** • पूँजीपति / शोषक वर्ग के लिए **क्यों-** शोषक वर्ग से उसकी संपन्नता व सुख छिन जाने के भयसे	3	Step 1 1 Mark Step 2 1 Mark Step 3 1 Mark
(iii)	**कर्म-•** कवि कर्म (काव्य रचना) **वर्णन-•** कवि द्वारा कागज रूपी खेत में रचना, विचार या अभिव्यक्ति के बीज का भावना रूपी आँधी से रोपण करना • बीज से शब्दों का अंकुर निकलना और पल्लवित, पुष्पित होना • कल्पना रूपी रसायनों का संसर्ग पाकर विकसित होकर एक	3	Step 1 1 Mark Step2 2 Marks

	कालजयी साहित्यिक कृति का रूप ग्रहण करना		
8.	**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में अपेक्षित :2x2=4**		
(i)	• कृत्रिमता एवं भाषा के अनावश्यक पांडित्य-प्रदर्शन से भाव का उलझकर रह जाना• कथ्य का प्रभावहीन हो जाना (कोई दो बिंदु)	2	Step 1 2 Marks
(ii)	• राम का सामान्य मानव की भाँति प्रलाप करना • मानवीय प्रकृति के अनुरूप पश्चात्ताप भरे वचनों को कहना • स्वयं को असहाय मानकर दुखी होना • लोक-निंदा से भयभीत होना • भाई को पत्नी से अधिक महत्त्व देना (कोई दो बिंदु अपेक्षित)	2	Step 1 2 Marks
(iii)	• सांध्यकालीन आकाश में काले-काले बादलों के बीच उड़ती श्वेत बगुलों की पंक्ति का अनुपम सौंदर्य मंत्र-मुग्ध करने वाला • गतिशील सौंदर्य को देखकर कवि का आश्चर्यचकित होना • इस सौंदर्य का प्रकृति की अद्भुत माया के समान प्रतीत होना (कोई दो बिंदु अपेक्षित)		Step 1 2 Marks
9.	**पठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्नों के उत्तर : 5x1=5**		
(i)	(B) रात्रि का भयावहपन	1	Step 1 1 Mark
(ii)	(D) पहलवान की ढोलक	1	Step 1 1 Mark
(iii)	(D) मृत्यु को पराजित करने की ताकत देती थी	1	Step 1 1 Mark
(iv)	(C) संक्रामक रोग	1	Step 1 1 Mark
(v)	(D) चेतना का संचार हो जाता था	1	Step 1 1 Mark
10.	**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में अपेक्षित : 2x3=6**		
(i)	• लिंग-भेद (लड़का-लड़की में भेदभाव) सास एवं जेठानियों द्वारा भक्तिन एवं उसकी पुत्रियों के साथ दुर्व्यवहार • न्याय के नाम पर पंचायत द्वारा स्त्रियों के अधिकारों का हनन- भक्तिन की विधवा पुत्री का जबरन विवाह किया जाना • जमींदार द्वारा की जाने वाली मनमानी- मनचाहा लगान वसूलना एवं अदा न करने पर दंडित करना • विधवाओं की समस्या- पति की मृत्यु के बाद भक्तिन की दयनीय स्थिति • बाल-विवाह - भक्तिन का विवाह • पारिवारिक द्वेष- जेठ और उनके पुत्रों द्वारा भक्तिन की संपत्ति हड़पने का षड्यंत्र (कोई तीन बिंदु अपेक्षित)	3	Step 1 3 Marks

(ii)	अभिप्राय-• खरीददारी (क्रय) करने की शक्ति **हाँ अथवा नहीं-** (पक्ष अथवा विपक्ष में परीक्षार्थी द्वारा दिए गए उचित तर्कपूर्ण मुक्त उत्तर उदाहरण सहित स्वीकार्य)	3	Step 1 1 Mark Step 2 2 Marks
(iii)	• परिवर्तनशीलता संसार का नियम •समयानुसार परिवर्तन, गतिशीलता एवं निरंतरता को स्वीकार करते हुए पुरानी पीढ़ी को समय रहते ही नई पीढ़ी को सत्ता, उनके अधिकार सौंप देने चाहिए अन्यथा नई पीढ़ी द्वारा उन्हें पदच्युत कर दिए जाने की आशंका• जरा और मृत्यु जीवन के शाश्वत सत्य	3	Step 1 3 Marks
11.	**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में अपेक्षित :2x2=4**		
(i)	(परीक्षार्थी द्वारा दिए गए उपयुक्त तर्कपूर्ण मुक्त उत्तर स्वीकार्य) यथा: • पानी फेंकना पानी की बर्बादी, पानी की बुवाई संभव नहीं • गाँव वालों की अज्ञानता और अंधविश्वास का परिचायक अथवा • पानी की बुवाई- लोकविश्वास • निराशा की स्थिति में आत्मबल का आधार	2	Step 1 2 Marks
(ii)	**किनसे-** • प्राकृतिक उपादान- अपने घर में बारी-बारी से आने-जाने वाले अँधेरे-उजाले, आँगन में खिलने वाले गुलाब और आम से **क्यों-** •प्राकृतिक उपादान और भक्तिन- दोनों का स्वतंत्र व्यक्तित्व	2	Step 1 1 Mark Step 2 1 Mark
(iii)	• शारीरिक वंश परंपरा, सामाजिक उत्तराधिकार और मनुष्य के अपने प्रयासों के आधार पर सभी मनुष्य समान न होने पर भी उनके साथ असमान व्यवहार किया जाना अनुचित • आरंभ से ही सभी को समाज में आगे बढ़ने का समान अवसर दिया जाना और समान व्यवहार किया जाना	2	Step 1 2 Marks
12.	**किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में अपेक्षित :2x5=10**		
(i)	**अंतर्विरोध-•** नई पीढ़ी द्वारा आधुनिक और पश्चिमी जीवनशैली का अंधानुकरण करते हुए सुविधाभोगी होना जबकि पुरानी पीढ़ी का पारंपरिक जीवन शैली अपनाना एवं सिद्धांतवादी होना • पीढ़ीगत सोच में अंतर होने के कारण वैचारिक मतभेद एवं मूल्यों में टकराहट • नई पीढ़ी का एकल परिवार में विश्वास जबकि पुरानी पीढ़ी संयुक्त परिवार की पक्षधर • नई पीढ़ी अपेक्षाकृत अधिक व्यवहारवादी जबकि पुरानी पीढ़ी आदर्शों और विचारों में सिद्धांतवादी(कोई दो बिंदु अपेक्षित) **कम करने के उपाय-** (परीक्षार्थी द्वारा दिए गए उचित तर्कपूर्ण मुक्त उत्तर स्वीकार्य) **यथा-•** पारस्परिक संवाद द्वारा• वैचारिक सामंजस्य	5	Step 1 2 Marks Step 2 3 Marks

	• एक-दूसरे की भावनाओं को सम्मान देना • एक-दूसरे को समय देना आदि		
(ii)	**क्यों-•** बाजार में सबसे पहले गुड़ लेकर जाने से अच्छी कीमत मिलने की आशा **अन्य किसानों का मत -** • गन्ने को खेतों में अधिक दिनों तक छोड़ने से उसमें पानी की मात्रा कम होने तथा रस के गाढ़ा होने से अधिक गुड़ प्राप्त होना **किसकी सोच महत्त्वपूर्ण तथा उचित और क्यों -** • (परीक्षार्थी द्वारा दिए गए उचित तर्कपूर्ण मुक्त उत्तर स्वीकार्य)	5	Step 1 1 Mark Step 2 1 Mark Step 3 3 Marks
(iii)	• नगर का श्रेष्ठ नियोजन • तत्कालीन वास्तुकला • जल निकासी की उत्कृष्ट व्यवस्था • जल संचयन और संरक्षण की व्यवस्था • पशुपालन, खेती और व्यापार को एक साथ बढ़ावा	5	Step 1 5 Marks

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र -1

विषय - हिंदी (आधार) विषय कोड - (302)

कक्षा - बारहवीं

निर्धारित समयः 03 घंटे **अधिकतम अंक : 80**

खंड - क (अपठित बोध) (18)

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (सी.बी.एस.ई.2025) [10 अंक]

प्रकृति के कई रंग हैं और उन रंगों में कोई होड़ नहीं है। रंगों की इस विशाल दुनिया में हम भी तो एक रंग ही हैं। पर हमारे साथ दिक्कत है। एक तो हमें अपने रंगों का पता नहीं है। दूसरा, हम दूसरों के रंगों से डरते हैं। हम भूल जाते हैं कि जीवन बहुरंगी है। दूसरे के जैसा होने की या उन्हें अपने जैसा करने की हमारी कोशिशों का कोई बहुत अर्थ भी नहीं है। कारण जबरदस्ती चढ़ाए गए रंग देर तक टिकते ही नहीं है। सबको एक ही रंग में रंगने की कोशिश से बेहतर है कि हम एक-दूसरे को अपना सहयोग दें। दो रंग जुड़ते हैं तो एक नया ही रंग बन जाता है। इसी तरह आपस के साथ से हम भी कुछ नए रंग ज़िंदगी में जोड़ सकते हैं।

सुख सतरंगी है तो दुख के भी कई रंग हैं। फिर, सफेद और काले रंग के भी कई प्रतिरूप होते हैं। गायिका एमी ग्रांट कहती हैं, 'काले रंग के बिना किसी भी रंग को गहराई नहीं मिलती।' बात केवल परछाईं की नहीं है, पूर्णता की है। ज़्यादातर लोग निराशा, अकेलापन, चुनौती, डर और उदासी के रंगों से दूर भागते हैं। वे जीवन में मुश्किल समय आते ही बेचैन हो उठते हैं जबकि मनुष्य की विकास यात्रा यही कहती है कि दुख, दर्द, कड़ी मेहनत, धैर्य और चुनौतियों के रंगों से मिलकर ही हमें जीत की चमक मिलती है। लेखक रे विलियम्स का मानना है कि बड़ी बारीकी से हम अपने दिमाग की नकारात्मक घेराबंदी करते चले जाते हैं, जो है उसके बारे में ध्यान नहीं देते, अभावों के विषय में

सोचते चले जाते हैं और जीवन को जटिल बना लेते हैं। प्रकृति हर दिन होली खेलती है, एक ही दिन में कई रंग बदलती है। दुख-दर्द का कोई रंग स्थायी नहीं होता। हमारी दुनिया रंगीन हो जाती है जब हम अपने रंगों से संतुष्ट हो जाते हैं और दूसरों को देखकर खुश होते हैं।

(i) 'हमें अपने रंगों का पता नहीं है' से अभिप्राय है : **[1]**

(अ) अपने स्वभाव का ज्ञान नहीं है। (ब)अपनी विशेषताओं का ज्ञान नहीं है।

(स) जीवन की विविधता का ज्ञान नहीं है। (द) अपनी परंपराओं का ज्ञान नहीं है।

(ii) 'हम भूल जाते हैं कि जीवन बहुरंगी है' पंक्ति में जीवन के बहुरंगी होने का अर्थ है – **[1]**

(अ) जीवन का रंग-बिरंगा होना (ब)जीवन में दुख-तकलीफ का होना

(स) जीवन में सुख-दुख का होना (द) जीवन का बहुत विशाल होना

(iii) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनिए: **[1]**

कथन :प्रकृति के कई रंग हैं और रंगों में कोई होड़ नहीं है।

कारण :प्रकृति सहज ही एक दिन में कई रंग बदलती है।

(अ) कारण सही है किंतु कथन ग़लत है।

(ब)कथन तथा कारण दोनों ग़लत हैं।

(स)कथन तथा कारण दोनों सही हैं किंतु कारण कथन की ग़लत व्याख्या करता है।

(द) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(iv) प्रकृति के माध्यम से लेखक हमें क्या संदेश देना चाहता है? **[1]**

(v) रे विलियम्स के अनुसार जीवन की जटिलता का क्या कारण है? **[2]**

(vi) 'दो रंग जुड़ते हैं तो एक नया ही रंग बन जाता है' पंक्ति का क्या आशय है? **[2]**

(vii) 'प्रकृति हर दिन होली खेलती है' से क्या अभिप्राय है? इसके द्वारा क्या संदेश दिया गया है?[2]

प्रश्न 2. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (सी.बी.एस.ई.2025) **[8]**

है दीप एक पर मोल सूर्य से भी भारी
है व्यक्ति एक वर्तिका, दीप धरती सारी
देखो न दुखी हो व्यक्ति, उठे इंसानी लौ,
वनखंड जलाती सिर्फ़ एक ही चिनगारी।
है झंझापथ, पद आहत, दीपक मद्धिम है
संघर्ष, रातकाली, मंजिल पर रिमझिम है
लेकिन पुकारता आ पहुँचा युग इंसानी
दो कदम रह गया स्वर्ग चढ़ाई अन्तिम है।
दीपक, तेरे नीचे घिर रहा अँधेरा है
सोने की चमक तले अनीति का डेरा है
तू इंसानी जीवन की रात मिटा, वरना
इंसान स्वयं बनकर आ रहा सवेरा है।

(i) 'है दीप एक.... सूर्य से भी भारी'- पंक्ति का आशय है – **[1]**

(अ) एक अकेला शोषित व्यक्ति, संपूर्ण शोषक वर्ग से शक्तिशाली है।

(ब)अकेला दीपक सूर्य के प्रकाश से अधिक प्रकाश प्रदान करने में सक्षम है।

(स)एक अकेला प्रकाश का स्रोत सूर्य से अधिक मूल्यवान है।

(द) दीपक सूर्य की ऊर्जा से अधिक ऊर्जा अपने भीतर रखता है।

(ii) 'इंसानी जीवन की रात मिटा' से क्या अभिप्राय है? [1]

(अ) शोषित वर्ग के जीवन से रात्रि को दूर करना

(ब)शोषित वर्ग के घरों को प्रकाशित करना

(स)इंसानों के जीवन से अंधकार को दूर करना

(द) शोषित वर्ग के अभावों को दूर कर, उन्हें अधिकार देना

(iii) कॉलम-1 को कॉलम-2 से सुमेलित कीजिए और सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चुनिए: [1]

कॉलम-1	**कॉलम-2**
(क) मद्धिम दीपक	(1) लक्ष्य प्राप्ति के सीमित साधन
(ख) झंझापथ	(2) विपरीत परिस्थितियाँ
(ग) आहत पद	(3) घायल अंग

(अ) क-2, ख-3, ग-1 (ब)क-1, ख-2, ग-3 (स)क-3, ख-1, ग-2(द) क-1, ख-3, ग-2

(iv) 'इंसान स्वयं सवेरे का रूप धारण कर आ रहा है' पंक्ति द्वारा किसे क्या चेतावनी दी गई है? [1]

(v) 'वनखंड जलाती है एक चिनगारी' पंक्ति से क्या अभिप्राय है? [2]

(vi) 'इंसानी युग आने और स्वर्ग के दो कदम दूर रह जाने' से क्या आशय है? [2]

'खंड-ख' पाठ्यपुस्तक 'अभिव्यक्ति और माध्यम' पर आधारित 22 अंक

प्रश्न 3. दिए गए विषयों में से किसी एक पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए- 6

(क) नर हो न निराश करो मन को

(ख) जीव-जंतुओं का घटता संसार

(ग) कृत्रिम बुद्धि (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस)

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए- 4x2=8

(क) पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं? स्पष्ट कीजिए। 2

(ख) बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में अंतर बताइए। 2

(ग) रेडियो समाचार कॉपी की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 2

(घ) कहानी और नाटक में अंतर स्पष्ट कीजिए। 2

(ड.) फ्रीलांसर पत्रकार किन्हें कहा जाता है? 2

प्रश्न 5. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर लिखिए- 2x4=8

(क) विशेष लेखन के दायरे में आजकल किन विषयों को अधिक महत्त्व मिल रहा है? किन्हीं महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों का उल्लेख कीजिए। 4

(ख) फ़ीचर से क्या अभिप्राय है? फ़ीचर एवं समाचार में अंतर स्पष्ट कीजिए। 4

(ग) क्या नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन की कोई तकनीक हो सकती है? इन्हें लिखते समय क्या-क्या सावधानियां बरतनी चाहिए? 4

खंड-ग' पाठ्यपुस्तक 'आरोह और वितान' पर आधरित प्रश्न 40 अंक

प्रश्न 6. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर समुचित विकल्प चुनकर लिखिए:- 1x5=5

बात सीधी थी पर एक बार
भाषा के चक्कर में ज़रा टेढ़ी फँस गई।
उसे पाने की कोशिश में
भाषा को उलटा पलटा
तोड़ा मरोड़ा, घुमाया फिराया
कि बात या तो बने
या फिर भाषा से बाहर आएँ।
लेकिन इससे भाषा के साथ-साथ
बात और भी पेंचीदा होती चली गई।

(i) कवि का 'भाषा के चक्कर' में फँसने का क्या आशय है? 1

(क) जटिल शब्दों का प्रयोग करना

(ख) सीधी बात को भी घुमा-फिराकर कहना

(ग) प्रभावी बनाने के लिए अनावश्यक शब्दजाल का प्रयोग करना

(घ) भाषा का ज्ञान न होना

(ii) 'बात और भी पेंचीदा होती चली गई' का निहितार्थ क्या है? 1

(क) बात का अर्थ स्पष्ट हो गया। (ख) बात बेअसर हो गई।

(ग) बात अपने मूल अर्थ को खोकर जटिल हो गई (घ) भाषा सरल हो गई।

(iii) कवि ने बात को पाने के लिए भाषा के साथ क्या किया? 1

(क) उसे केवल उलटा-पलटा। (ख) उसे तोड़ा-मरोड़ा

(ग) उसे घुमाया-फिराया। (घ) उक्त सभी।

(iv) काव्यांश में निहित अलंकार है? 1

(क) उपमा और रूपक (ख) अनुप्रास और पुनरुक्ति प्रकाश

(ग) मानवीकरण और श्लेष (घ) विरोधाभास

(v) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए। - 1

कथन : सीधी बात को कहने के लिए भाषा को तोड़ना-मरोड़ना नहीं चाहिए।

कारण : भाषा के अनावश्यक प्रयोग से बात का मूल भाव नष्ट हो जाता है।

(क) कथन सही है, कारण ग़लत है।

(ख) कथन सही नहीं है, कारण सही है।

(ग) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण उसकी सही व्याख्या नहीं करता।

(घ) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

प्रश्न 7. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए- 4x2=8

(क) 'सबसे तेज बौछारें गई, भादो गया' के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है, उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। 3

(ख) सिद्ध कीजिए कि 'उषा' कविता गांव की सुबह का गतिशील चित्रण है। 3

(ग) रस का अक्षय पात्र कहकर कवि ने रचना-कर्म की किन-किन विशेषताओं को इंगित किया है? 3

प्रश्न 8. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए- 2x2=4

(क) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में 'पर्दे पर वक़्त की क़ीमत है' कहकर कवि ने किस पर व्यंग्य किया है? 2

(ख) कवि ने कविता और बच्चों में क्या-क्या समानता बताई है? 2

(ग) 'बादल राग' कविता में निराला ने 'अट्टालिका नहीं है रे, आतंक-भवन' कहकर पूँजीपतियों की किस मानसिकता को दर्शाया है? 2

प्रश्न 9. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों केसमुचित विकल्प चुनकर लिखिए:- 1x5=5

जाड़े का दिन। अमावस्या की रात- ठंडी और काली। मलेरिया और हैज़े से पीड़ित गाँव भयार्त्त शिशु की तरह थर-थर काँप रहा था। पुरानी और उजड़ी बाँस-फूस की झोंपड़ियों में अंधकार और सन्नाटे का सम्मिलित साम्राज्य! अँधेरा और निस्तब्धता !

अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।

(i) जाड़े के दिनों में लोग किस बीमारी से पीड़ित थे? 1

(क) कोरोना से (ख) मलेरिया-हैज़े से (ग) चेचक से (घ) निमोनिया

(ii) पुरानी और उजड़ी बाँस-फूस की झोंपड़ियों में क्या दिखाई दे रहा था? 1

(क) अंधकार (ख) सन्नाटा (ग) निस्तब्धता (घ) ये सभी

(iii) बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टाकौन कर रहा था/ रही थी? 1

(क) आहें (ख) निस्तब्धता (ग) सिसकियाँ (घ) करुणा

(iv) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनिए- 1

कथन-पूर्णिमा की चाँदनी रात की घटना बताई है।

कारण-गाँव में तपेदिक और चेचक की बीमारी फैली थी।

(क) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन ग़लत है, लेकिन कारण सही है।

(ग) कथन तथा कारण दोनों ग़लत हैं।

(घ) कथन सही है, लेकिन कारण उसकी ग़लत व्याख्या करता है।

(v) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और बताइए की कौन-सा विकल्प सही है? **1**

1. लेखक ने चाँदनी रात की घटना का वर्णन किया है।
2. हैज़ा और मलेरिया की बीमारी फैली हुई थी।
3. निस्तब्धता करुण सिसकियों को दबाने की चेष्टा कर रही थी।

(क) (1) और (2) (ख) (2) और (3) (ग) केवल (1) (घ) केवल (3)

प्रश्न 10. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए- **2x3=6**

(क) 'बाज़ार दर्शन' पाठ के लेखक ने किस प्रकार के बाज़ार को मानवता के लिए विडम्बना कहा है? 3

(ख) 'काले मेघा पानी दे' पाठ के आधार पर जीजी के मतानुसार परिभाषित त्याग और दान का उल्लेख कीजिए। 3

(ग) 'श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा' पाठ के अनुसार जाति-प्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे डॉ. आंबेडकर के क्या तर्क हैं? 3

प्रश्न 11. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए- **2x2= 4**

(क) "भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं" लेखिका के इस कथन की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए? 2

(ख) 'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' शीर्षक के अनुसार, लेखक ने आदर्श समाज के लिए किन तीन तत्वों को आवश्यक माना है? 2

(ग) 'शिरीष के फूल' पाठ के अनुसार, लेखक ने शिरीष के माध्यम से अनासक्ति योग का पाठ कैसे पढ़ाया है? 2

प्रश्न 12. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए- **2x5=10**

(क) "किशनदा यशोधर बाबू के आदर्श थे।" इसी कथन के आधार पर किशनदा की जीवन-शैली की चर्चा कीजिए। 5

(ख) कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारणा में क्या बदलाव आया? 5

(ग) टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों का भी दस्तावेज़ होते हैं- इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए। 5

उत्तर/ उत्तरसंकेत

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र -1

(खंड 'क' अपठित बोध- 18 अंक)

1. गद्यांश (i) ब (ii) स (iii) स

(iv) सुख-दुख से भरे जीवन से संतुष्ट होना और दूसरों को देखकर खुश होना।

(v) जीवन में नकारात्मक भावों को स्थान देना; जो उपलब्ध है उस पर ध्यान न देकर अभावों के विषय में सोचना।

(vi) दो भिन्न-भिन्न स्वभाव और प्रकृति वाले व्यक्तित्व द्वारा परस्पर मिलकर रचनात्मक ऊर्जा से जीवन को नया आयाम देना। दूसरों पर अपने विचार थोपने की जगह सहयोग करना।

(vii) प्रकृति का पल-पल परिवर्तित होना। **संदेश:**गतिशील जीवन में दुख-दर्द का स्थायी न होना।

2. काव्यांश (i) अ (ii) द (iii) ब

(iv) किसे:शोषक वर्ग को।**चेतावनी:**अत्याचार रूपी अंधकार का अंत करने के लिए शोषित व्यक्ति का ही शक्ति रूपी सवेरा बनकर आना।

(v) शोषित व्यक्ति की शक्ति और सामर्थ्य को कम नहीं आँकना। विरोध का पहला स्वर ही शोषण के अंत की शुरुआत है, जैसे एक छोटी सी चिंगारी पूरे वन को जला देती है।

(vi) मानव का, शोषण के अंत के बहुत निकट होना। जीवन की कठिनाइयों का अंत करके आदर्श समाज की स्थापना के करीब पहुँचना।

खंड 'ख' (अभिव्यक्ति और माध्यम पर आधारित प्रश्न- 22 अंक)

3. भाषा- 1 अंक, विषयवस्तु - 4 अंक, प्रस्तुति - 1 अंक, 6

4. (क) पत्रकार मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं:

1. पूर्णकालिक पत्रकार: किसी समाचार संगठन में नियमित वेतन पर काम करने वाले स्थायी कर्मचारी।

2. अंशकालिकपत्रकार: (स्ट्रिंगर): एक निश्चित मानदेय पर सीमित समय के लिए काम करने वाले पत्रकार।

3. फ्रीलांसर (स्वतंत्रपत्रकार:): भुगतान के आधार पर अलग-अलग अखबारों के लिए स्वतंत्र रूप से लिखने वाले।

(ख) • **बीट रिपोर्टिंग:** इसमें पत्रकार अपनी रुचि या ज्ञान के क्षेत्र (जैसे- खेल, अपराध, राजनीति) से जुड़ी केवल सामान्य खबरें और सूचनाएं एकत्र करता है।

• **विशेषीकृत रिपोर्टिंग:** इसमें केवल सामान्य खबरें नहीं दी जातीं, बल्कि विषय (जैसे- आर्थिक, कानूनी, विज्ञान आदि) की गहराई में जाकर उसका गहनअध्ययन,विश्लेषण, व्याख्या और अर्थ स्पष्ट किया जाता है।

(ग) रेडियो श्रव्य माध्यम है, इसलिए इसकी समाचार कॉपी की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

• समाचार कॉपी साफ़-सुथरी और ट्रिपल स्पेस (तिगुनी दूरी) में टाइप की जानी चाहिए।,

• कॉपी के दोनों ओर पर्याप्त मार्जिन छोड़ा जाना चाहिए।

• भाषा सरल हो तथा अंकों को लिखने में विशेष सावधानी बरती जाए (जैसे '११' की जगह 'ग्यारह' लिखा जाए) और संक्षिप्ताक्षरोंसे बचा जाए।

(घ) कहानी का संबंध मुख्य रूप से 'पठन' और 'श्रवण' से है, जिसे पढ़ा या सुना जाता है, जबकि नाटक का संबंध 'मंचन' और 'दर्शन' से है, जिसे रंगमंच पर देखा जाता है। कहानी में लेखक स्वयं घटनाओं का वर्णन करता है, जबकि नाटक में पूरी कहानी पात्रों के अभिनय, संवाद और दृश्यों के माध्यम से आगे बढ़ती है।

(ड.) फ्रीलांसर पत्रकार को 'स्वतंत्र पत्रकार' भी कहते हैं। ये किसी एक विशेष समाचार पत्र या मीडिया संगठन के नियमित कर्मचारी नहीं होते हैं। ये अपनी इच्छा और सुविधा के अनुसार अलग-अलग समाचार पत्रों को भुगतान (अनुबंध) के आधार पर अपनी खबरें या लेख बेचते हैं।

5. (क) वर्तमान में विशेष लेखन का दायरा बहुत व्यापक हो चुका है। आज के दौर में केवल राजनीति या अपराध ही नहीं, बल्कि **आर्थिक (बिजनेस), खेल, विज्ञान और प्रौद्योगिकी (टेक्नोलॉजी), कृषि, स्वास्थ्य, पर्यावरण, शिक्षा, कानून तथा फैशन व जीवन-शैली (लाइफस्टाइल)** जैसे विषयों को बहुत अधिक महत्त्व मिल रहा है। इन क्षेत्रों में हो रहे नित नए बदलावों और उनके आम जनजीवन पर पड़ने वाले प्रभावों के कारण मीडिया में इनके लिए विशेष स्थान और 'स्पेशल डेस्क' निर्धारित किए जाते हैं।

(ख) **अभिप्राय:**- फ़ीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है, जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देने के साथ-साथ उनका मनोरंजन करना है।

अंतर: समाचार 'उलटा पिरामिड शैली' में वस्तुनिष्ठता के साथ लिखे जाते हैं, जबकि फ़ीचर की कोई निश्चित शैली नहीं होती और यह कथात्मक होता है। समाचार में रिपोर्टर अपने विचार या 'मैं' शैली का प्रयोग नहीं कर सकता, जबकि फ़ीचर में लेखक की निजी राय और भावनाएँ शामिल हो सकती हैं। समाचारों पर 'डेडलाइन' का दबाव होता है, फ़ीचर पर नहीं।

(ग) **तकनीक:** इसकी कोई निश्चित यांत्रिक तकनीक नहीं होती क्योंकि यह पूरी तरह मौलिक और रचनात्मक लेखन है. फिर भी, विषय मिलते ही लिखने के बजाय 2-3 मिनट ठहरकर एक स्पष्ट 'कोण' चुनना और विचारों को सिलसिलेवार रूपरेखा देना ही इसकी तकनीक है. इसमें 'मैं' शैली का प्रयोग किया जा सकता है।

सावधानियाँ: लेखन में सुसंबद्धता और सुसंगति होनी चाहिए. एक ही लेख में अपनी ही बातों का खंडन करना (विरोधाभास) इसका सबसे बड़ा और अक्षम्य दोष है, जिससे बचना अनिवार्य है।

खंड-ग' (पाठ्यपुस्तक 'आरोह और वितान' पर आधरित प्रश्न 40 अंक)

6. (i) (ग) (ii) (ग) (iii) (घ) (iv) (घ) (v) (ख)

7. **(क)** भादो मास और मूसलधार बारिश के बीतने पर शरद ऋतु का आगमन होता है। प्रकृति में चारों ओर तेज़ धूप के कारण चमकीली सुबह दिखाई देती है, हवाओं में सुहानी ठंडक और ताजगी आ जाती है, तथा वातावरण पतंगबाज़ी के लिए अनुकूल व साफ़ हो जाता है।

(ख) 'उषा' कविता में शमशेर बहादुर सिंह ने नीले शंख, राख से लिपे चौके, काली सिल पर पिसी केसर और स्लेट पर खड़िया मलते बच्चों के उपमानों (बिंबों) के माध्यम से गाँव की सुबह के पल-पल बदलते रूप का जादुई और गतिशील चित्रण प्रस्तुत किया है।

(ग) 'रस का अक्षयपात्र' कहकर कवि ने रचना-कर्म की इस विशेषता को इंगित किया है कि भौतिक पात्र का रस तो समाप्त हो जाता है, परंतु कविता रूपी पात्र का सौंदर्य और रस शाश्वत (अमर) रहता है; इसे जितने भी पाठक पढ़ते हैं, यह कभी कम नहीं होता।

8. **(क)** 'पर्दे पर वक़्त की क़ीमत है' कहकर कवि ने दूरदर्शन और मीडिया की व्यावसायिक मानसिकता पर गहरा व्यंग्य किया है। मीडिया संचालक किसी अपाहिज की पीड़ा को अपने कार्यक्रम की सफलता के लिए बेचना चाहते हैं। उनके लिए व्यक्ति की भावना से अधिक कीमती कार्यक्रम का निर्धारित समय और उससे होने वाला मुनाफा है।

(ख) कवि ने कविता और बच्चों में समानता बताई है कि कविता और बच्चे दोनों ही ऊँच-नीच, छोटे-बड़े, अपने-पराए, जात-पात आदि का भेदभाव नहीं जानते। ये दोनों सभी के हृदय में प्रेम-स्वरूप समान रूप से प्रभावित करते हैं। कविता के भाव और बालकों के खेल अपनी ओर सभी को आकर्षित कर लेते हैं।

(ग) इस पंक्ति के माध्यम से निराला ने पूँजीपतियों की शोषक मानसिकता को दर्शाया है। उनके अनुसार, अमीरों के ऊँचे-ऊँचे महल गरीबों के शोषण की नींव पर खड़े हैं। इसलिए ये केवल इमारतें नहीं, बल्कि गरीबों के लिए भय और आतंक के केंद्र हैं, जो उन्हें निरंतर उनकी विवशता का स्मरण कराते हैं।

9. (i) (ख) मलेरिया-हैज़े से(ii) (घ) ये सभी (iii) (ख) निस्तब्धता
(iv) (ग) कथन (अ)तथा कारण (R) दोनों ग़लत हैं। (v) (ख) (2) और (3)

10. **(क)** 'बाज़ार दर्शन' पाठ के लेखक जैनेंद्र कुमार ने उस बाज़ार को मानवता के लिए विडम्बना कहा है, जहाँ छल-कपट, धूर्तता और शोषण की प्रधानता होती है। जब बाज़ार का उद्देश्य परस्पर सद्भाव और आवश्यकताओं की पूर्ति न रहकर केवल ग्राहकों को ठगना और लूटकर लाभ कमाना बन जाता है, तब वह मानवता के लिए कलंक हो जाता है।

ऐसे बाज़ार में विक्रेता और क्रेता के बीच भाईचारे या सद्भाव का रिश्ता समाप्त हो जाता है और वे एक-दूसरे को केवल ठगने की ताक में रहते हैं। लेखक के अनुसार, जहाँ केवल 'परचेजिंग पावर' (क्रय शक्ति) का अहंकार और गैर-ज़रूरी वस्तुओं का अंधाधुंध प्रदर्शन होता है, वह बाज़ार का रूप विनाशक होता है। ऐसा बाज़ार इंसानों के बीच ईर्ष्या, लालच और असंतोष पैदा करता है, जो मानवता के लिए एक बड़ी विडम्बना है।

(ख) जीजी के अनुसार, अपनी प्रचुरता (अधिकता) में से कुछ देना सच्चा दान नहीं है। वास्तविक त्याग और दान वह है, जब आपके पास स्वयं किसी वस्तु की भारी कमी हो, फिर भी आप लोक-कल्याण की उदात्त भावना से अपनी उस प्रिय वस्तु को सहर्ष दूसरों को दे दें।

(ग) आंबेडकर जी के अनुसार, जाति-प्रथा केवल श्रम का नहीं, बल्कि श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन है। यह मनुष्य की रुचि या क्षमता पर आधारित न होकर जन्म से ही जबरन थोपी जाती है, जो व्यक्ति को उसकी इच्छा के विरुद्ध जीवनभर के लिए एक ही पेशे में बाँध देती है।

11. **(क)** लेखिका महादेवी वर्मा के अनुसार भक्तिन पूर्णतः दोषरहित नहीं थी। उसमें कुछ दुर्गुण थे; जैसे- वह इधर-उधर पड़े पैसों को भंडार-घर की मटकी में छिपाकर रख देती थी और अपनी बातोंको शास्त्रसम्मत सिद्ध करने के लिए झूठ भी बोल देती थी।

(ख) लेखक डॉ. आंबेडकर ने अपनी कल्पना के आदर्श समाज के लिए निम्नलिखित तीन तत्त्वों को अनिवार्य और आवश्यक माना है:

- स्वतंत्रता (प्रत्येक व्यक्ति को अपना पेशा चुनने की आज़ादी)
- समता (सभी के साथ समान व्यवहार)
- भ्रातृता (आपसी भाईचारा और सामंजस्य)

(ग) लेखक ने शिरीष को एक 'अवधूत' (सच्चा संन्यासी) माना है। जैसे एक योगी हर परिस्थिति में शांत रहता है, वैसे ही शिरीष भीषण गर्मी, लू और भयंकर सूखे में भी बिना विचलित हुए, लहलहाता हुआ ऊँचे और सरस फूलों से लदा रहता है।

12. **(क)**'सिल्वर वैडिंग' कहानी में किशनदा यशोधर बाबू के मार्गदर्शक और आदर्श थे। किशनदा की जीवन-शैली पूरी तरह से पारंपरिक, सरल, मानवीय मूल्यों से भरपूर और कुँवारेपन पर आधारित थी। वे दिल्ली में रहकर भी अपनी पहाड़ी संस्कृति और लोक-परंपराओं से जुड़े रहे। उन्होंने कई पहाड़ी लड़कों को अपने क्वार्टर में आश्रय दिया और उन्हें आत्मनिर्भर बनाया। वे 'समहाउ इम्प्रापर' कहकर आधुनिक पाश्चात्य संस्कृति और दिखावे का विरोध करते थे। उनकी दिनचर्या में सुबह की सैर, अपनों की सुख-दुख में मदद करना और सादगी से जीना शामिल था, जिसे यशोधर बाबू ने आजीवन अपनाया।

(ख) 'जूझ' कहानी के अनुसार, कविता के प्रति लगाव से पहले लेखक (आनंदा) को खेतों में अकेले काम करना, ढोर चराना या पानी लगाना एक बहुत ही उबाऊ और कष्टदायक काम लगता था। उन्हें अकेलापन सालता था और वे हमेशा किसी का साथ ढूँढ़ते थे।

परंतु, मास्टर सौंदलगेकर के संपर्क में आकर जब लेखक का झुकाव कविता की ओर हुआ, तब उनके लिए यह अकेलापन एक वरदान बन गया। अब वे अकेले होने पर खुलकर गा सकते थे, अभिनय कर सकते थे, भैंस की पीठ पर तुकबंदी लिख सकते थे और नाच सकते थे। कविता ने उनके अकेलेपन को रचनात्मकता और आनंद में बदल दिया।

(ग) 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर इस कथन का भाव यह है कि सिंधु घाटी सभ्यता (मुअनजो-दड़ो) के खंडहर केवल पुरानी ईंटों या वास्तुकला के निर्जीव अवशेष नहीं हैं। वे वहाँ कभी रहने वाले इंसानों के रहन-सहन, उनकी दैनिक गतिविधियों और सामाजिक व्यवस्था को भी बयां करते हैं। इन खंडहरों की रसोई की खिड़की, कमरों की बनावट और बैलगाड़ियों के पहियों के निशान देखकर ऐसा महसूस होता है कि मानो आज भी वहाँ गृहस्थी की धड़कन मौजूद है। ये खंडहर इतिहास के साथ-साथ प्राचीन मनुष्यों के सुख-दुख और उनके समय के अनछुए पलों को जीवंत कर देते हैं।

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र -2

विषय - हिंदी (आधार) विषय कोड - (302)

कक्षा - बारहवीं

निर्धारित समयः 03 घंटे **अधिकतम अंक: 80**

खंड - क (अपठित बोध) (18)

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए: 10

परिश्रम कल्पवृक्ष है। जीवन की कोई भी अभिलाषा परिश्रम रूपी कल्पवृक्ष से पूर्ण हो सकती है। परिश्रम जीवन का आधार, उज्ज्वल भविष्य का जनक और सफलता की कुंजी है। सृष्टि के आदि से अद्यतन काल तक विकसित सभ्यता और सर्वत्र उन्नति परिश्रम का परिणाम है। आज से लगभग 100 साल पहले कौन कल्पना कर सकता था कि मनुष्य एक दिन चाँद पर कदम रखेगा या अंतरिक्ष में विचरण करेगा। पर निरंतर श्रम की बदौलत मनुष्य ने उन कल्पनाओं एवं संभावनाओं को साकार कर दिखाया है। मात्र हाथ पर हाथ धरकर बैठे रहने से कदापि संभव नहीं होता। किसी देश, राष्ट्र अथवा जाति को उस देश के भौतिक संसाधन तब तक समृद्ध नहीं बना सकते जब तक कि वहाँ के निवासी उन संसाधनों का दोहन करने के लिए अथक परिश्रम नहीं करते। किसी भूभाग की मिट्टी कितनी भी उपजाऊ क्यों न हो जब तक विधिवत परिश्रमपूर्वक उसमें जुताई, बुवाई, सिंचाई, निराई-

गुड़ाई नहीं होगी; अच्छी फसल प्राप्त नहीं हो सकती। किसी किसान को कृषि संबंधी अत्यधिक कितनी ही सुविधा उपलब्ध करवा दीजिए, यदि उसके उपयोग में लाने के लिए समुचित श्रम नहीं होगा तो उत्पादन क्षमता में वृद्धि संभव नहीं है। परिश्रम से रेगिस्तान भी अन्न उगलने लगते हैं। हमारे देश की स्वतंत्रता के पश्चात हमारी प्रगति की द्रुतगति भी हमारे श्रम का ही फल है। भाखड़ा नांगल का विशाल बाँध हो या श्रीहरिकोटा का रॉकेट प्रक्षेपण केंद्र, हरित क्रांति की सफलता हो या कोविड-19 की रोकथाम के लिए टीका तैयार करना; प्रत्येक सफलता हमारे श्रम का परिणाम है तथा प्रमाण भी है। जीवन में सुख की अभिलाषा सभी को रहती है। बिना श्रम किए भौतिक साधनों को जुटाकर जो सुख प्राप्त करने के फेर में है वह अंधकार में है। उसे वास्तविक और स्थायी शांति नहीं मिलती। ऐसी सफलता मन को शांति देने की जगह उसे व्यथित करेगी। हवाई किले तो सहज ही बन जाते हैं लेकिन वे हवा के एक हल्के से झोंके से ढह जाते हैं। मन में मधुर कल्पनाओं को संजोने मात्र से किसी कार्य की सिद्धि नहीं होती। कार्य सिद्धि के लिए उद्यम और सतत उद्यम आवश्यक है।

(क) गद्यांश में परिश्रम को कल्पवृक्ष के समान बताया गया है, क्योंकि 1

(अ) यह मनुष्य की इच्छाओं की पूर्ण पूर्ति करता है (ब)इससे इच्छा-दमन की शक्ति मिलती है

(स)यह परोपकार की भावना को जागृत करता है (द) इससे केवल भोजन प्राप्त होता है

(ख) भारत के परिश्रम के प्रमाण गद्यांश में कौन-कौन से बताए गए हैं? 1

(अ) वृक्षारोपण, कोविड-19 टीका, प्रक्षेपण केंद्र (ब) बाँध, कोविड-19 टीका, प्रक्षेपण केंद्र

(स) कोविड-19 टीका, प्रक्षेपण केंद्र, हवाई पट्टी (द) कोविड-19 टीका, प्रक्षेपण केंद्र, रेगिस्तान

(ग) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए: 1

कथन: परिश्रम से रेगिस्तान भी अन्न उगलने लगते हैं।

कारण: विधिवत जुताई, बुवाई, सिंचाई और निराई-गुड़ाई के बिना अच्छी फसल नहीं हो सकती।

(अ) कथन और कारण दोनों सही हैं, और कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(ब) कथन सही है, पर कारण ग़लत है।

(स) कथन ग़लत है, पर कारण सही है।

(द) कथन और कारण दोनों सही हैं, कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(घ) किस अवस्था में प्राप्त सफलता मन को व्यथित कर देगी? 1

(ङ) केवल भौतिक साधन जुटाने से वास्तविक शांति क्यों नहीं मिलती? 2

(च) 'हवाई किले' कहकर लेखक क्या समझाना चाहता है? 2

(छ) गद्यांश का मुख्य संदेश क्या है? 2

प्रश्न 2. दिए गए काव्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :- 08

टेक्नोलॉजी का युग आया, हर हाथ में फोन है,
कौशल की बात करते, पर फिर भी सब बौना सा होने लगे हैं।
स्मार्टफोन की स्क्रीन पर, घंटों बिताते वक्त,
पर असली जीवन की चुनौतियों से, सब रहते हैं बेखबर जैसे बौखलाए बौद्धिक।
कहते हैं, "कौशल सीखो!" पर कौन करेगा मेहनत?
डिजिटल दुनिया में खो गए, बिना किसी पसीने के एक पल के।
गूगल से सब जवाब मिलते, हर सवाल का है हल,

लेकिन असली ज़िंदगी में जब पूछें, तो सबकी ज़ुबान पर है चुप्पी का जाल।
ऑनलाइन कोर्स की बाढ़ आई, बस क्लिक करो और सीखो,
पर जब ट्रैकिंग की बात आए, तो सबकी तैयारी ढीली।
वीडियो देखना आसान है, लेकिन प्रैक्टिकल में फेल,
कौशल की इस दुनिया में, बस खुद को दिखाना है सेल्फी में खेल।
कहते हैं, "आधुनिकता का ये दौर, हर चीज़ में हो नया",
पर असली ज्ञान तो तब होगा, जब खुद से कुछ कर दिखाए बिना जज्बा।
21वीं सदी में जीने का ये है एक नया मापदंड,
बिना मेहनत के बस आराम से जीना, ये है सबका पसंदीदा फंड।

(क) कविता में "गूगल से सब जवाब मिलते" का क्या अर्थ है? 1

(अ) ऑनलाइन रिसर्च करना (ब) असली ज्ञान प्राप्त करना
(स) समस्या से भागना और आसान जवाब ढूंढना (द) विशेषज्ञ से सलाह लेना

(ख) कविता का मुख्य उद्देश्य क्या है? 1

(अ) 21वीं सदी में कौशल के महत्त्व पर व्यंग्य करना (ब) तकनीकी कौशल की प्रशंसा करना
(स) विद्यार्थियों को पढ़ाई के लिए प्रेरित करना (द) असली ज्ञान की आवश्यकता को बताना

(ग) कविता में किस बात पर आलोचना की गई है? 1

(अ) लोगों का ऑनलाइन गेम खेलना (ब) तकनीक का पूरी तरह त्याग
(स) डिजिटल दुनिया में खो जाना और मेहनत न करना (द) केवल फोन का उपयोग करना

(घ) इस कविता में 21वीं सदी के कौशल के बारे में क्या कहा गया है? 1

(ङ) "डिजिटल दुनिया में खो गए" वाक्य का संदर्भ क्या है? 2

(च) "बिना मेहनत के बस आराम से जीना, ये है सबका पसंदीदा फंड" का क्या संदेश है? 2

'खंड-ख' (पाठ्यपुस्तक 'अभिव्यक्ति और माध्यम' पर आधारित) 22 अंक

प्रश्न 3. दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए- 1x6=6

(क) जंक फूड का बढ़ता चलन
(ख) अचानक अतिथि-सेवा का अवसर
(ग) "सोशल मीडिया: संवाद या एकाकीपन",

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए- 4x2=8

(क) एंकर बाइट क्या है? इसका क्या महत्त्व है? 2
(ख) फ़ीचर और समाचार में दो अंतर लिखिए। 2
(ग) कहानी के नाट्य रूपांतरण में दृश्य विभाजन कैसे किया जाता है? 2
(घ) 'मैं' शैली पर प्रकाश डालिए। 2
(ङ) अप्रत्याशित विषयों पर लेखन को प्राथमिकता क्यों दी जाती है? 2

प्रश्न 5. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए- 2x4=8

(क) विशेष रिपोर्ट किसे कहते हैं? विशेष रिपोर्ट के प्रकारों को स्पष्ट कीजिए। 4

(ख) बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में अंतर स्पष्ट कीजिए। 4

(ग) रेडियो नाटक की कहानी में किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? 4

खंड-ग' (पाठ्यपुस्तक 'आरोह और वितान' पर आधरित प्रश्न) 40 अंक

प्रश्न 6. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के समुचित विकल्प चुनकर लिखिए:- 5x1=

प्रभु प्रलाप सुनि कान विकल भए बानर निकर
आइ गयउ हनुमान जिमि करुना महं बीर रस।।
हरषि राम भेंटेउ हनुमाना।अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना।
तुरत बैद तव किन्हीं उपाई।उठ बैठे लछिमन हरषाई।
हृदय लाई प्रभु भेंटेउ भ्राता।हरषे सकल भालु कपि ब्राता।।
कपि पुनि बैद तहां पहुँचावा।जेहि विधि तबहिं ताहि लइ आवा।।

(क) प्रस्तुत काव्यांश में किसके विलाप का मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है? 1

(अ) विभीषण (ब) रावण (स)राम (द) लक्ष्मण

(ख) हनुमान के आ जाने से किस रस का आविर्भाव हुआ? 1

(अ) करुण रस (ब) वीर रस (स)शांत रस (द) रौद्र रस

(ग) लक्ष्मण की मूर्च्छा हटाने के लिए बैद कहाँ से लाया गया? 1

(अ) अयोध्या (ब) हिमालय (स) लंका (द) किष्किन्धा

(घ) काव्यांश किस भाषा में लिखा गया है? 1

(अ) ब्रज (ब) संस्कृत (स) अवधि (द) मराठी

(ङ) कथन और कारण को पढ़कर सही विकल्प चुनें : 1

कथन- हनुमान के आने से चारों ओर खुशी छा जाती है।

कारण- हनुमानजी जब संजीवनी बूटी लेकर आते हैं तो वीर रस का आविर्भाव होता है।

(अ) कथन सही है तथा कारण ग़लत है।

(ब) कथन ग़लत है तथा कारण सही है।

(स) कथन तथा कारण दोनों सही हैं लेकिन कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता।

(घ) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

प्रश्न 7. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए- 2x3=6

(क) संसार में विभिन्न कष्टों और दुःखों से घिरकर भी अपने आस-पास खुशी और मस्ती का माहौल कैसे पैदा किया जा सकता है? 'आत्म परिचय' कविता के आधार पर बताइए।

(ख) 'पतंग' कविता में कवि ने बाल मनोविज्ञान को किस प्रकार चित्रित किया है?

(ग)कवि बादल का आहवान किस रूप में कर रहा है और क्यों? 'बादल राग' कविता के संदर्भ में लिखिए।

प्रश्न 8. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए- 2x2=4

(क) फूलों के खिलने से कविता का क्या संबंध है? 'कविता के बहाने' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(ख) "कैमरे में बंद अपाहिज' कविता हर ऐसे व्यक्ति की ओर इशारा करती है, जो दुख-दर्द, यातना-वेदना को बेचना चाहता है।" कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

(ग) 'रस का अक्षयपात्र कहकर कवि ने रचना-कर्म की किन-किन विशेषताओं को इंगित किया है?

प्रश्न 9. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के समुचित विकल्प चुनकर लिखिए:- 5×1=5

पर शिरीष भी क्या बुरा है! डाल इसकी अपेक्षाकृत कमजोर ज़रूर होती है, पर उसमें झूलनेवालियों का वज़न भी तो बहुत ज़्यादा नहीं होता।कवियों की यही तो बुरी आदत है कि वज़न का एकदम ख्याल नहीं करते।मैं तुंदिल नरपतियों की बात नहीं कह रहा हूँ, वे चाहे तो लोहे का पेड़ बनवा लें।शिरीष का फूल संस्कृत-साहित्य में बहुत कोमल माना गया है।मेरा अनुमान है कि कालिदास ने यह बात शुरू-शुरू मे प्रचार की होगी।उनका इस पुष्प पर कुछ पक्षपात था (मेरा भी है) कह गए हैं, शिरीष पुष्प केवल भौंरों के पदों का कोमल दबाव सहन कर सकता है, पक्षियों का बिलकुल नहीं- 'पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीष-पुष्पं न पुनः पतत्त्रिणाम्।'

(क) इस गद्यांश का मुख्य विचार क्या है? 1

(अ) शिरीष की डालियों की मजबूती (ब) शिरीष पुष्प की कोमलता और कवियों का दृष्टिकोण
(स) झूला लगाने की परंपरा (द) तुंदिल नरपतियों की रुचि

(ख) कॉलम 1 को कॉलम 2 से सुमेलित कीजिए- 1

कॉलम A	**कॉलम B**
(i) शिरीष की डाल	(अ) भौंरों के पदाघात का दबाव सहन करने वाला
(ii) कवि	(ब) अपेक्षाकृत कमज़ोर
(iii) शिरीष पुष्प	(स) वजन की परवाह नहीं करते
(iv) कालिदास	(द) पुष्प की कोमलता का प्रचार करने वाले

(अ) (i-स), (ii-अ), (iii-ब), (iv-द) (ब) (i-ब), (ii-अ), (iii-स), (iv-द)
(स) (i-ब), (ii-स), (iii-अ), (iv-द) (द) (i-ब), (ii-स), (iii-द), (iv-अ)

(ग) गद्यांश में 'पतत्त्रिणाम्' का अर्थ है- 1

(अ) भंवरा (ब) कोमल (स) पुष्प (द) पक्षी

(घ) निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए: 1

कथन (A): शिरीष पुष्प को संस्कृत साहित्य में अत्यन्त कोमल माना गया है।

कारण (R):वह केवल भौंरों के कोमल पदाघात का ही दबाव सह सकता है।

(अ)A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A का सही कारण है।

(ब) A और R दोनों सत्य हैं परन्तु R, A का सही कारण नहीं है।

(स) A सत्य है परन्तु R असत्य है।

(द) A असत्य है परन्तु R सत्य है।

(ङ) कालिदास के प्रति लेखक की भावना क्या है? 1

(अ) विरोध की (ब) पक्षपात और स्नेह की (ग) उपेक्षा की (घ) तटस्थता की

प्रश्न 10. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए: 2×3=6

(क) डॉ. आंबेडकर द्वारा परिकल्पित आदर्श समाज की संकल्पना का विस्तार से वर्णन कीजिए। 3

(ख) इंदर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय क्यों बोलती थी?भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश में नदियों का क्या महत्त्व है? 3

(ग) पहलवानों को राजा एवं लोगों द्वारा पहले विशेष सम्मान दिया जाता था, जबकि अब ऐसा नहीं है क्यों? कुश्ती को लोकप्रिय खेल बनाने के लिए आप अपने सुझाव दीजिए। 3

प्रश्न 11. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 40 शब्दों में लिखिए- 2×2=4

(क) 'भक्तिन' के चरित्र में कौन-सी बातें उसे महादेवी वर्मा से अलग करती हैं, फिर भी वह उनका साथ नहीं छोड़ना चाहती? 2

(ख) 'बाज़ार दर्शन' पाठ के अनुसार 'बाज़ार का जादू' क्या है? यह कब हम पर हावी होता है?2

(ग) जाति प्रथा को श्रम विभाजन का एक रूप न मानने के पीछे डॉ. भीम राव अंबेडकर ने क्या तर्क दिए हैं? 2

प्रश्न 12. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए- 2×5=10

(क) “सिल्वर-वैडिंग” कहानी का प्रमुख पात्र वर्तमान में रहता है, किन्तु अतीत को आदर्श मानता है। इससे उसके व्यवहार में क्या-क्या विरोधाभास दिखाई पड़ते हैं? सोदाहरण उल्लेख कीजिए। 5

(ख) जूझ कहानी प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष करने की प्रेरक कथा है स्पष्ट कीजिए। 5

(ग) सिन्धु घाटी सभ्यता की खूबी उसका सौन्दर्य बोध है, जो राजपोषित या धर्म पोषित न होकर समाज पोषित था।ऐसा क्यों कहा गया? 5

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र- 2

1. गद्यांश (क) (ब) (ख) (अ) (ग) (द)

(घ) जब सफलता बिना परिश्रम के केवल भौतिक साधनों को जुटाकर प्राप्त की जाती है, तब वह सफलता मन को शांति देने के स्थान पर उसे व्यथित कर देती है।

(ङ) बिना परिश्रम के जुटाए साधन स्थायी सुख नहीं देते। ऐसी सफलता मन को व्यथित करती है और वास्तविक शांति के स्थान पर अशांति देती है।

(च) लेखक यह बताना चाहता है कि केवल कल्पनाएँ स्थायी नहीं होतीं। बिना परिश्रम के सफलता नहीं मिलती और कल्पनाएँ हल्की हवा से ही ढह जाती हैं।

(छ) गद्यांश का मुख्य संदेश है कि परिश्रम ही सफलता की कुंजी है। जीवन में वास्तविक सुख, शांति और प्रगति परिश्रम से ही संभव होती है।

2. काव्यांश (क) (स) (ख) (अ) (ग) (स)

(घ) लोग तकनीकी कौशल पर निर्भर हो गए हैं,बिना मेहनत के आराम से जीने की कला को पसंद करने लगे हैं।

(ङ) यह वाक्य उस स्थिति को दर्शाता है जिसमें लोग तकनीकी उपकरणों, खासकर स्मार्टफोन और इंटरनेट, में इतने अधिक डूब गए हैं कि वे वास्तविक जीवन की चुनौतियों से अनजान हो गए हैं।

(च) 'यह संदेश देता है कि लोग मेहनत करने से भागते हैं और बिना प्रयास किए सफलता और सुख प्राप्त करने की उम्मीद रखते हैं, जो कि एक नकारात्मक प्रवृत्ति है।

3. भाषा- 1 अंक, विषयवस्तु - 4 अंक, समापन- 1 अंक

4. अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक पर आधारित प्रश्न लगभग 40 शब्दों में उत्तर-

(क) एंकर-बाइट → बाइट का अर्थ है-कथन। एंकर खबर पढ़ने और दृश्य दिखाने के साथ-साथ घटना से जुड़े व्यक्तियों के कथन दिखाता व सुनाता है। एंकर-बाइट की आवश्यकता/महत्त्व खबर को प्रामाणिकता प्रदान करने के लिए की जाती है।

(ख) फ़ीचर- उद्देश्य मनोरंजन, सीधा पिरामिड शैली में लिखा जाता है, लेखक अपने विचार लिख सकता है

समाचार- उद्देश्य सूचना देना, उलटा पिरामिड शैली, लेखक अपने विचार नहीं लिख सकता

(ग) कहानी के नाट्य रूपांतरण में दृश्य विभाजन- कहानी को स्थान और समय के आधार पर विभाजित करना, हर भाग से दृश्य बनाना, हर दृश्य का आरम्भ मध्य व अंत होना, एक दृश्य के अंत से दूसरे दृश्य का आरम्भ जोड़ना।

(घ) अप्रत्याशित विषयों पर सृजनात्मक लेखन के लिए "मैं" शैली का प्रयोग किया जाता है जिसमें लेखक अपने निजी विचारों, घटनाओं और प्रसंगों को लिखते हुए विषय को आगे बढ़ाता है। इसमें लेखक खुद के लिए "मैं" शब्द का इस्तेमाल कर लेख लिखता है।

(ङ) अप्रत्याशित विषयों पर लेखन को प्राथमिकता देने के कारण :

1. इससे मनुष्य दूसरे पर निर्भर नहीं रहता। 2. इससे विचारों की मौलिकता बढ़ जाती है।
3. इससे सोचने की ताकत तेज हो जाती है। 4. इससे लेखन कौशल का अभ्यास हो पाता है।

5. अभिव्यक्तिऔरमाध्यमपुस्तकपरआधारित प्रश्न लगभग 60 शब्दों में उत्तर

(क) अख़बारों और पत्रिकाओं में गहरी छानबीन, विश्लेषण व व्याख्या के आधार पर प्रकाशित रिपोर्ट विशेष रिपोर्ट कहलाती है।विशेष रिपोर्ट के प्रकार :

(i) खोजी रिपोर्ट- जब रिपोर्टर मौलिक खोज कर छिपे तथ्य सबके सामने लाता है जो पहले से सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध नहीं।

(ii) इन-डेप्थ रिपोर्ट- जब रिपोर्टर सार्वजनिक रूप से उपलब्ध तथ्यों की गहरी छानबीन कर उन्हें सबके सामने लाता है।

(iii) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट- इसमें किसी घटना के तथ्यों का विश्लेषण व व्याख्या की जाती है।

(iv) विवरणात्मक रिपोर्ट- इसमें किसी घटना का बारीक विवरण दिया जाता है।

(ख) बीट रिपोर्टिंग- संवाददाता को क्षेत्र की सामान्य जानकारी हो, बीट से जुड़ी सामान्य खबरें लिखनी होती है, भाषा-शैली सामान्य हो।

विशेषीकृत रिपोर्टिंग- संवाददाता को क्षेत्र की गहरी समझ हो, मुद्दों का बारीक विश्लेषण कर सके, भाषा शैली विशेष हो।

(ग) रेडियो नाटक की कहानी में ध्यान रखने योग्य बातें-

1. **कहानी केवल घटना-प्रधान न हो-** रेडियो नाटक की कहानी में यदि केवल एक्शन अधिक होगा तो वह उबाऊ बन जाएगी।जैसे- अपराधी के पीछे पुलिस भागकर उसे पकड़ती है, तो उस दृश्य को हम अधिक देर तक नहीं सुन पाएँगे।
2. **अवधि ज़्यादा न हो-** रेडियो नाटक की अवधि सामान्यतः 15 से 30 मिनट होती है।यदि कहानी लंबी हो तो उसे 15-30 मिनट के एपिसोड में बाँटना चाहिए।अवधि अधिक होने पर श्रोता ऊब जाते हैं और सुन नहीं पाते।
3. **पात्र ज़्यादा न हों-** रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या सीमित होनी चाहिए, ताकि श्रोता उन्हें आसानी से पहचान सकें। जैसे- 15 मिनट के लिए 5 से 6 पात्र

6. (क) (स) (ख) (ब) (ग) (स) (घ) (स) (ङ) (घ)

7. (क) आत्मपरिचय' कविता के अनुसार, संसार के कष्टों और दुखों के बीच भी अपने मन के अनुकूल जीवन जीकर खुशी का माहौल बनाया जा सकता है। मनुष्य को दुनिया के व्यंग्य और झंझटों की परवाह किए बिना अपने दिल की सुननी चाहिए। सुख-दुख दोनों ही परिस्थितियों को समभाव (समान रूप से) से स्वीकार करके, जीवन में प्रेम और मस्ती का संचार कर हर पल का आनंद लिया जा सकता है।

(ख) पतंग' कविता में बाल सुलभ चेष्टाओं, उमंग और निडरता का सजीव चित्रण हुआ है। पतंग उड़ाते समय बच्चे अत्यधिक रोमांचित और एकाग्र होते हैं; उनका मन पतंग की ऊँचाइयों के साथ उड़ान भरता है। वे छतों के खतरनाक कोनों की परवाह नहीं करते और गिरने के बाद और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं, जो उनके असीम उत्साह को दर्शाता है।

(ग) कवि बादलों का आह्वान 'क्रांति के दूत' या 'विप्लव के वीर' के रूप में कर रहा है। वह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि समाज में पूँजीपतियों द्वारा शोषित और वंचित वर्ग (मजदूर व किसान) अत्यधिक त्रस्त है। बादलों की गर्जना और मूसलाधार वर्षा शोषकों के गढ़ को नष्ट कर देती है, जिससे शोषितों को उनका अधिकार मिलता है और समाज में नए जीवन का निर्माण होता है।

8. (क) कविता और फूल दोनों का स्वभाव खिलना और आनंद देना है। फूल प्रकृति में रंग-रूप के साथ खिलता है और कविता में मानवीय भाव खिलते हैं। परंतु फूल के खिलने की सीमा है, वह एक दिन मुरझा जाता है, जबकि कविता बिना मुरझाए अनंत काल तक अपनी वैचारिक सुगंध बिखेरती रहती है।

(ख) यह कविता मीडिया के उन व्यवसायियों और लोगों की ओर इशारा करती है जो मानवीय संवेदनाओं, लाचारी और पीड़ा को व्यावसायिक लाभ या टीआरपी बढ़ाने का साधन बनाते हैं। वे पीड़ित व्यक्ति के प्रति सहानुभूति रखने के बजाय उसके दुख-दर्द का क्रूर और संवेदनहीन प्रदर्शन करते हैं ।

(ग) **अमर और कालजयी**: भौतिक खेत की फसल एक न एक दिन समाप्त हो जाती है, परंतु साहित्य के पन्नों से मिलने वाला रस कभी समाप्त नहीं होता।

शाश्वत तृप्ति: इस रस-पात्र को जितना अधिक बाँटा या पढ़ा जाता है, इसका आनंद उतना ही बढ़ता जाता है, यह हमेशा भरा रहता है।

9. (क) (अ) (ख) (स) (ग) (द) (घ) (अ) (ङ) (ब)

10. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए 2×3=6

(क) डॉ. भीमराव आंबेडकर द्वारा परिकल्पित आदर्श समाज मुख्य रूप से स्वतंत्रता, समता और भ्रातृता (भाईचारे) पर आधारित है। उनकी संकल्पना के अनुसार, समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए कि कोई भी वांछित परिवर्तन एक छोर से दूसरे छोर तक आसानी से प्रसारित हो सके। इस समाज में सभी को अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार पेशा चुनने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। लोकतंत्र केवल शासन की पद्धति नहीं, बल्कि सामूहिक जीवनचर्या और एक-दूसरे के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव है।

(ख) 'काले मेघा पानी दे' पाठ में इंदर सेना पानी की गुहार लगाने से पहले 'गंगा मैया की जय' बोलती थी, क्योंकि भारतीय समाज में गंगा को केवल एक नदी नहीं, बल्कि परम पवित्र और जीवनदायिनी माँ माना गया है। भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में नदियों का अत्यधिक धार्मिक महत्त्व है; इन्हें लोक-संस्कृति, कृषि, और समृद्धि का आधार माना जाता है। नदियाँ हमारी आस्था, संस्कारों और त्योहारों से जुड़ी हुई हैं, इसलिए किसी भी शुभ या सामूहिक कार्य में सबसे पहले नदियों का जयकारा लगाकर उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जाती है।

(ग) प्राचीन काल में राजा-महाराजा मनोरंजन, राजकीय प्रतिष्ठा और अपनी सेना के पराक्रम के लिए पहलवानों को राज्याश्रय और विशेष सम्मान देते थे। आधुनिक युग में राजा-रजवाड़े समाप्त होने, पाश्चात्य खेलों (जैसे क्रिकेट) के बढ़ते आकर्षण और व्यावसायिकता के कारण कुश्ती को वह सम्मान नहीं मिल पाता।सुझाव- कुश्ती को दोबारा लोकप्रिय बनाने के लिए इसे विद्यालय स्तर पर अनिवार्य खेल बनाया जाए, पहलवानों के लिए आधुनिक बुनियादी ढाँचा (मैट और आधुनिक अखाड़े) तैयार किए जाएँ, उन्हें उचित मासिक वजीफा/सरकारी नौकरियाँ दी जाएँ और बड़े स्तर पर लीग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाए।

11. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 40 शब्दों मेंलिखिए2×2=4

(क) "भक्तिन देहाती, अनपढ़ और व्यवहारकुशल है, जबकि महादेवी शहरी, विदुषी और बौद्धिक। यह विषमता उन्हें अलग करती है। इसके बावजूद, भक्तिन लेखिका को मालिक नहीं, बल्कि पुत्री जैसा मानती है और उनके प्रति निष्ठा और अटूट प्रेम रखती है। यही गहरा स्नेह बंधन है जिसके कारण वह उनका साथ नहीं छोड़ना चाहती।

(ख) बाज़ार का जादू वह आकर्षण है जो अनावश्यक चीज़ों को भी ज़रूरी दिखाकर मनुष्य को मोहपाश में बाँध लेता है। यह जादू तब हम पर हावी होता है जब हमारा मन खाली होता है और हम बाज़ार में अपनी ज़रूरत को भूलकर उसकी चकाचौंध को देखते हैं। यह जादू केवल क्रय-शक्ति को जगाता है, संतोष को नहीं।

(ग) डॉ. आंबेडकर के अनुसार, जाति प्रथा को श्रम विभाजन का रूप नहीं माना जा सकता क्योंकि यह रुचि, योग्यता या कुशलता पर आधारित नहीं है, बल्कि जन्म पर आधारित है। यह विभाजन श्रमिकों का भी विभाजन करता है। दूसरा तर्क यह है कि यह विपरीत परिस्थितियों में व्यक्ति को अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता नहीं देती, जो किसी भी सभ्य समाज के लिए घातक है।

12. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए- 2×5=10

(क) 'सिल्वर वैडिंग' के मुख्य पात्र यशोधर बाबू के व्यक्तित्व में वर्तमान और अतीत के द्वंद्व के कारण गहरा विरोधाभास दिखाई देता है। वे आधुनिक युग में जी रहे हैं, परंतु उनके संस्कार और आदर्श पूरी तरह 'किशनदा' (अतीत) से जुड़े हैं।

व्यवहार में विरोधाभास के प्रमुख उदाहरण: **सिल्वर वैडिंग उत्सव:** वे अपनी शादी की पच्चीसवीं सालगिरह की पार्टी को 'समहाउ इमप्रॉपर' (कुछ-कुछ अनुचित) मानते हैं, फिर भी बच्चों के दबाव में केक काटने और उपहार लेने के लिए तैयार हो जाते हैं।

वेशभूषा और जीवन शैली: वे आधुनिकता का विरोध करते हैं, लेकिन जब उनका बेटा उनके लिए महँगा गाउन लाता है, तो वे उसे पहन लेते हैं। बस विरोधाभास यह है कि गाउन पहनकर भी वे दूध लाने जैसी पुरानी दिनचर्या ही निभाते हैं।

पारिवारिक संबंध: वे अपनी पत्नी और बच्चों के आधुनिक पहनावे और विचारों की आलोचना करते हैं, लेकिन मन ही मन उनके आत्मनिर्भर होने और आर्थिक तरक्की से खुश भी होते हैं। यह स्थिति उन्हें 'अधकचरा' और एकाकी बना देती है।

(ख) 'जूझ' कहानी आनंद (लेखक) के जीवन के कड़े संघर्ष और जुझारू प्रवृत्ति को दर्शाती है, जो हर विपरीत परिस्थिति से लड़कर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। लेखक पढ़ना चाहता है, परंतु उसके पिता (दादा) अत्यंत स्वार्थी और कामचोर हैं, जो उसे स्कूल भेजने के बजाय खेत के कठिन कामों में झोंक देते हैं।

संघर्ष और प्रेरणा के बिंदु: शिक्षा के प्रति ललक: आनंद हार नहीं मानता। वह अपनी माँ के साथ मिलकर गाँव के प्रभावशाली व्यक्ति दत्ता जी राव की मदद लेता है और अपने पिता को स्कूल भेजने के लिए राजी करता है।

कठिन दिनचर्या: स्कूल जाने के लिए वह सुबह-शाम खेतों में पानी लगाने, ढोर चराने और कड़ा श्रम करने की शर्त को भी सहर्ष स्वीकार करता है।

अभावों में निखार: स्कूल में शरारती लड़कों की खिंचाई और अध्यापकों की डाँट सहने के बाद भी वह मराठी शिक्षक सौंदलगेकर जी की प्रेरणा से कविताएँ लिखना सीखता है। वह भैंस की पीठ पर और पत्थरों पर चाक से कविताएँ रचता है। यह कहानी सिखाती है कि दृढ़ इच्छा शक्ति हो तो बाधाएँ भी मार्ग का पत्थर नहीं बन सकतीं।

(ग) 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर सिंधु घाटी सभ्यता (मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा) के पुरातात्विक अवशेषों को देखकर यह स्पष्ट होता है कि वहाँ की भव्यता किसी राजा के अहंकार या धार्मिक पाखंड पर टिकी नहीं थी।

समाज पोषित होने के कारण:- लोकोपयोगी निर्माण: यहाँ मिस्र या मेसोपोटामिया की तरह विशाल राजमहल, भव्य मंदिर, राजाओं की ममी या समाधियाँ नहीं मिली हैं। इसके विपरीत, यहाँ सुनियोजित नगर-नियोजन, सड़कें, वैज्ञानिक ढकी हुई नालियाँ, सामूहिक स्नानागार और अन्न भंडार मिले हैं, जो आम जनता की सुविधा के लिए थे।

कला और सौन्दर्य: यहाँ की कला में प्रभुत्व प्रदर्शन के बजाय सुरुचि और उपयोगिता को महत्त्व दिया गया था। छोटी मूर्तियाँ, मिट्टी के बर्तन, उन पर बने चित्र और मुहरें गवाह हैं कि वहाँ का सौन्दर्य बोध दैनिक जीवन से जुड़ा था।

अनुशासन: यहाँ कोई सैन्य बल या भव्य राजचिह्न नहीं मिले हैं। यह सभ्यता किसी राजा या धर्मगुरु के डर (पोषण) से नहीं, बल्कि नागरिक चेतना और आपसी सामाजिक अनुशासन से संचालित होती थी, इसलिए इसे 'समाज-पोषित' कहा गया है।

अभ्यास प्रश्नपत्र

विषय - हिंदी (आधार) विषय कोड - (302)

कक्षा - बारहवीं

निर्धारित समयः 03 घंटे **अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश-

- दिए गए निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर पालन कीजिए-
- प्रश्न-पत्र तीन खंडों- खंड- 'क', 'ख' और 'ग' में विभाजित है।
- 'खंड-क' में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- 'खंड-ख' में 'अभिव्यक्ति और माध्यम' पाठ्यपुस्तक पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- 'खंड-ग' में 'आरोह और वितान' पाठ्यपुस्तकों पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- यथासंभव प्रश्नों के उत्तर क्रमानुसार दीजिए।

खंड - क (अपठित बोध) **(18)**

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (सी.बी.एस.ई.2026) **10**

लेखक और प्रकाशक एक-दूसरे के पूरक होते हैं। यदि प्रकाशक नहीं हों, तो लेखकों की कृतियों को लोक-लोचन के सम्मुख प्रस्तुत कौन करेगा और यदि लेखक नहीं हों, तो प्रकाशन के व्यवसाय की शुरुआत कैसे हो, प्रकाशक का जन्म ही कहाँ से हो?

यह सत्य है कि मूल लेखक है और प्रकाशक उसका तना है, लेकिन तने के विस्तार को सब लोग देखते हैं और मूल की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। वह तो अधिकतर भूमिष्ठ ही रहता है। प्रकाशक की अट्टालिका, मोटर, शान-शौकत अब सभी प्रमुख नगरों में हम देख सकते हैं। पर बेचारे लेखक को हम ढूँढने से ही पा सकते हैं।

इस स्वाभाविक स्थिति की विषमता लेखक और प्रकाशक के पारस्परिक सम्बन्धों में तनाव पैदा करती है। मूल और तने के बीच का तनाव कभी सुफल नहीं ला सकता। इस विषम स्थिति से निकलने के लिए दोनों को यह सोचना होगा कि सामंजस्य कैसे स्थापित हो?

सोचना इसलिए भी ज़रूरी है कि कुछ लोग इस तनाव को बढ़ाने की ही दिशा में काम करते नज़र आ रहे हैं। वे लेखक से कहते हैं, देखो, तुम्हारा कितना शोषण हो रहा है, ये प्रकाशक जोंक हैं जोंक। इनसे बचो। और प्रकाशक से कहा जाता है, अजी साहब, इस लेखक को जानता कौन था? यह तो आप हैं, जिसने इसे आसमान पर चढ़ाया!

तनाव बढ़ता जा रहा है। दोनों की हानि हो रही है। यह तनाव दोनों को चौपट कर सकता है। अत: इस पर चिंतन करना अनिवार्य है।

(i) लेखक और प्रकाशक के बीच परस्पर कैसा संबंध है? **1**

(अ) फूल और पत्ते जैसा (ब) मूल और तने जैसा (स) फल और शाखा जैसा (द) कली और फूल जैसा

(ii) प्रस्तुत गद्यांश में लेखक और प्रकाशक के बीच किस प्रकार का संबंध बताया गया है? 1

(अ) परस्पर सहयोग का (ब) पारस्परिक प्रतिस्पर्धा का

(स) पारस्परिक प्रेम का (द) पारस्परिक तनाव का

(iii) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनिए: 1

कथन: प्रकाशक की स्थिति लेखक से अधिक स्पष्ट है।

कारण: लेखक को ढूँढना कठिन है जबकि प्रकाशक की भौतिक समृद्धि आसानी से दिखती है।

(अ) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

(ब)कथन और कारण दोनों सही हैं, लेकिन कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता।

(स) कथन सही है, कारण ग़लत है।

(द) कथन ग़लत है, कारण सही है।

(iv) गद्यांश के अनुसार 'वह तो अधिकतर भूमिष्ठ ही रहता है'- कौन भूमिष्ठ रहता है और क्यों?1

(v) लेखक और प्रकाशक दोनों कैसे एक-दूसरे के पूरक हैं? किन्हीं दो तर्कों द्वारा पुष्टि कीजिए- 2

(vi) लेखक और प्रकाशक के बीच संबंधों में सुधार किस प्रकार आ सकता है? किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख कीजिए। 2

(vii) लेखक और प्रकाशक के संबंधों में दूरी बढ़ने के क्या कारण हैं? इस दूरी के बढ़ने से क्या हानि हो रही है? 2

2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (सी.बी.एस.ई. 2026) 8

दुनिया का सबसे बड़ा अधम- हाँ,हाँ, दुनिया का सबसे बड़ा अधम नर वही था जिसकी ज़बान से यह निकला था पहले-पहल- भूमि यह मेरी है! "भूमि यह मेरी है?" झूठा, मक्कार था! असत्य, अन्याय का अवतार था! दुनिया का सबसे बड़ा अधम!! नीचे की धरती और ऊपर का आसमान, पानी और पवन- प्रकृति की देन हैं ये जीवमात्र के लिए, इन पर है सबका अधिकार; सबका समान अधिकार हवा को क्या बाँटोगे? पानी को बाँटोगे?	बाँटोगे नीले आसमान को? बाँट भी सकोगे क्या? धरती बेचारी बेबस थी- पैरों के नीचे अचल पड़ी थी, निरीह; कह दिया- "भूमि यह मेरी है-" बाँट लिया टुकड़ों में, एक मुट्ठी लोगों ने, मानो माता के आँचल को दाँतों से चीरकर बाँट लिया कुछ शैतान बच्चों ने; टुकुरटुकुर ताकते रह गए शरीफ़- रोती रही दुखिया बेचारी माँ ! दुनिया का सबसे बड़ा अधम !

(i) इस काव्यांश का केंद्रीय भाव है: 1

(अ) प्राकृतिक संसाधनों का सृजन (ब) भूमि का वैज्ञानिक वितरण

(स) भूमि पर सबका समान अधिकार (द) भूमि के इतिहास का वर्णन

(ii) “प्रकृति की देन हैं ये जीव मात्र के लिए" इस पंक्ति से कवि का अभिप्राय है : 1

(अ) व्यक्तिगत अधिकार (ब) जातीय विभाजन (स) धार्मिक आस्था (द) सामूहिक स्वामित्व

(iii) “माता के आँचल को दाँतों से चीरना" इस पंक्ति का आज के संदर्भ में सटीक अर्थ क्या है? 1

(अ) जैविक खेती को प्रोत्साहन (ब) वनों की अंधाधुंध कटाई

(स) हरित ऊर्जा का विकास (द) जल संरक्षण योजनाएँ

(iv) यदि 'भूमि यह मेरी है' की भावना समाज में व्याप्त नहीं होगी तो दुनिया की संरचना कैसी होगी? 1

(v) 'दुनिया का सबसे बड़ा अधम' किसे कहा गया है और क्यों? 2

(vi) 'टुकुर-टुकुर ताकते रह गए शरीफ़' पंक्ति में किन लोगों पर व्यंग्य किया गया है और क्यों? 2

खंड-'ख' (अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक पर आधारित प्रश्न) अंक (22)

3. दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए: 1x6=6

1. अगर मैं फिल्म बनाता
2. डिप्रेशन में डूबते बच्चे
3. लोकतंत्र पर ग़लत सूचना का प्रभाव

4. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर लिखिए- 4x2=8

(i) 'रेडियो ध्वनि, स्वर व शब्दों का खेल है'- कैसे? स्पष्ट कीजिए। **2**

(ii) 'एंकर विज़ुअल' का क्या अभिप्राय है? **2**

(iii) 'नेट साउंड' किसे कहते हैं? दूरदर्शन के संदर्भ में समझाइए। **2**

(iv) समाचार लेखन की मानक शैली कौन-सी है? इसकी विशेषताएँ बताइए। **2**

(v) समाचार पत्र-पत्रिकाओं में विशेषलेखन के लिए अलग डेस्क क्यों होती है? **2**

5. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 80 शब्दों में उत्तर लिखिए- 2x4=8

(i) नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए उल्लेख कीजिए कि अभिव्यक्ति के अधिकार में लेखन किस प्रकार सहायक है? **4**

(ii) कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? **4**

(iii) रेडियो नाटकों में संवादों पर विशेष ध्यान देना क्यों आवश्यक है? तर्क सहित लिखिए। **4**

खंड 'ग' (पाठ्यपुस्तक आरोह एवं वितान पर आधारित प्रश्न) अंक (40)

6. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के समुचित विकल्प चुनकरलिखिए- 5x1=5

तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया-
जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया-
यह तेरी रण-तरी
भरी आकांक्षाओं से,
घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर

उर में पृथ्वी के, आशाओं से
नवजीवन की, ऊँचा कर सिर,
ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल!

(i) पृथ्वी में सोए हुए अंकुरों पर किसका प्रभाव पड़ता है?

(अ) बादलों के गरजने का (ब) बिजली के कड़कने का

(स) पृथ्वी की आशाओं का (द) झरनों के गिरने का

(ii) प्रस्तुत काव्यांश में कवि बादलों के विप्लवकारी रूप का आह्वान क्यों कर रहा है?

(अ) वातावरण को ठंडक देने के लिए (ब) क्रांति लाने के लिए

(स) वर्षा करने के लिए (द) बादलों को देखने के लिए

(iii) 'सुप्त अंकुर' का प्रयोग किस भावना/प्रक्रिया को प्रकट करता है?

(अ) आलस्य और निराशा (ब) सोई हुई आशाएँ व संभावनाएँ

(स) बीज के समाप्त होने की प्रक्रिया (द) अंकुरित बीज के न बढ़ने की प्रक्रिया

(iv) 'प्लावित माया' को किस संदर्भ में प्रयुक्त किया गया है?

(अ) शोषक वर्ग की धन-संपत्ति के रूप में (ब) जल प्रलय के वर्णन के रूप में

(स) वर्षा के कारण आप्लावित नदी के रूप में (द) शोषण रूपी अग्नि के रूप में

(v) 'घन, भेरी-गर्जन' से कवि ने किसका बोध कराया है?

(अ) आकाश में बादलों का मधुर संगीत (ब) युद्ध व क्रांति के लिए प्रेरित करने वाली गर्जना

(स) समुद्र की लहरों का संगीत (द) युद्ध में बजने वाले नगाड़ों की आवाज

7. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए:- 2x3=6

(क) 'कैमरे में बंद अपाहिज' करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है-विचार कीजिए। 3

(ख) 'शमशेर की कविता गाँव की सुबह का जीवंत चित्रण है।'-पुष्टि कीजिए। 3

(ग) "बात सीधी थी पर" कविता के आधार पर 'बात की चूड़ी मर जाने' और 'भाषा को सहूलियत से बरतने' का आशय स्पष्ट कीजिए। 3

8. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर लिखिए:- 2x2=4

(क) पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है- तुलसी का यह काव्य-सत्य क्या इस समय का भी युग-सत्य है? तर्क संगत उत्तर दीजिए। 2

(ख) पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं- बच्चों का उड़ान से कैसा संबंध बनता हैं? 2

(ग) "बीज गल गया निःशेष" से कवि का क्या तात्पर्य है? कवि ने ऐसा क्यों कहा है? 'छोटा मेरा खेत' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 2

9. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के समुचित विकल्प चुनकर लिखिए: 5x1=5

पिता का उस पर अगाध प्रेम होने के कारण स्वभावत: ईर्ष्यालु और संपत्ति की रक्षा में सतर्क विमाता ने उनके मरणांतक रोग का समाचार तब भेजा, जब वह मृत्यु की सूचना भी बन चुका था। रोने-पीटने के अपशकुन से बचने के लिए सास ने भी उसे कुछ न बताया। बहुत दिन से नैहर नहीं गई, सो जाकर देख आवे, यही कहकर और पहना-उढ़ाकर सास ने उसे विदा कर दिया। इस अप्रत्याशित अनुग्रह ने उसके पैरों में जो पंख लगा दिए थे, वे गाँव की सीमा में पहुँचते ही झड़ गए। हाय लछमिन अब आई की अस्पष्ट पुनरावृत्तियाँ और स्पष्ट सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियाँ उसे घर तक ठेल

ले गई। पर वहाँ न पिता का चिह्न शेष था, न विमाता के व्यवहार में शिष्टाचार का लेश था। दुख से शिथिल और अपमान से जलती हुई वह उस घर में पानी भी बिना पिए उलटे पैरों ससुराल लौट पड़ी। सास को खरी-खोटी सुनाकर उसने विमाता पर आया हुआ क्रोध शांत किया और पति के ऊपर गहने फेंक-फेंककर उसने पिता के चिर विछोह की मर्मव्यथा व्यक्त की।

(क) लेखिका ने 'अस्पष्ट पुनरावृत्तियाँ किसे कहा है? 1

(अ) लछमिन के देर से आने की बातों को (ब) लोगों की सहानुभूति की बातों को

(स) सास द्वारा उसे मायके भेजने को (द) लछमिन के मायके आने को

(ख)निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कीजिए : 1

कथन : लछमिन को बहुत दिन बाद ससुराल से नैहर भेजा गया।

कारण : सास ने रोने-पीटने के अपशकुन से बचने के लिए उसे कुछ नहीं बताया।

(अ) केवल कथन सही है

(ब) केवल कारण सही है

(स) दोनों सही हैं और कथन का कारण सही है

(द) दोनों सही हैं, लेकिन कथनका कारण सही नहीं है

(ग) सास ने लछमिन को क्या कह कर मायके भेजा? 1

(अ) बहुत दिनों से मायके नहीं गई। (ब) संपत्ति में हिस्सा ले आ

(स) पिता की मृत्यु हो गई है (द) उसे घर से निकाल दिया

(घ) 'पैरों में पंख लगना' मुहावरे का क्या अर्थ है? 1

(अ) उड़ने में सक्षम होना (ब) बहुत तेज चलना

(स) पैरों में पंख निकल आना (द) बहुत प्रसन्न होना

(ङ) भक्तिन ने पिता की मृत्यु का शोक कैसे किया? 1

(अ) जोर-जोर से रोकर (ब) विमाता को खरी-खोटी सुनाकर

(स) सास को बुरा-भला कहकर (द) पति के ऊपर गहने फेंक कर

10. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए: 2x3=6

(क) डॉ० भीमराव की कल्पना के आदर्श-समाज की आधारभूत बातें संक्षेप में समझाइए। आदर्श समाज की स्थापना में आंबेडकर के विचारों की सार्थकता पर अपने विचार प्रकट कीजिए। 3

(ख) पहलवान की ढोलक की आवाज़ ग्रामवासियों में संजीवनी शक्ति का संचार कैसे करती है? 3

(ग) बाज़ार का जादू क्या है? उसके चढ़ने-उतरने का मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है? 'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए। 3

11. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए:- 2x2=4

(क) 'बाज़ारूपन' से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं? 2

(ख) हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी-कभी ज़रूरी हो जाती है- 'शिरीष के फूल' के आधार पर स्पष्ट करें। 2

(ग) दिन-दिन गहराते पानी के संकट से निपटने के लिए क्या आज का युवा वर्ग कैसे 'काले मेघा पानी दे' की इंदर सेना की तर्ज पर कोई सामूहिक आंदोलन प्रारंभ कर सकता है? 2

12. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 100 शब्दों में उत्तर दीजिए:- 2x5=10

(क) कहानी के आधार पर सिद्ध कीजिए कि यशोधर बाबू का व्यक्तित्व किशनदा के पूर्ण प्रभाव में विकसित हुआ था जबकि उनकी पत्नी का व्यक्तित्व स्वतंत्र था। 5

(ख) 'सिंधु-सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य-बोध है जो राज-पोषित या धर्म-पोषित न होकर समाज-पोषित था।' ऐसा क्यों कहा गया? 5

(ग) 'जूझ' शीर्षक लेखक की किस चारित्रिक विशेषता को दर्शाता है? स्पष्ट कीजिए। 5

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा निर्धारित वार्षिक परीक्षा हेतु अंक-विभाजन

क्र. सं.	खंड	विवरण	कुल अंक
1.	खंड 'क'	अपठित बोध अपठित गद्यांश और काव्यांश	10+8 = 18
2.	खंड 'ख'	अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्य पुस्तक के निर्धारित पाठों पर आधारित प्रश्न-उत्तर	22
3.	खंड 'ग'	आरोह भाग-2 और वितान भाग-2 के पाठों पर आधारित अनुच्छेद व प्रश्न-उत्तर	30+10 = 40
4.	श्रवण तथा वाचन कौशल परीक्षण एवं परियोजना कार्य		10+10 = 20
		कुल अंक	100

<u>आभार/ सन्दर्भ</u>

1. एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकें

(आरोह भाग-2, वितान भाग-2 तथा अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तकें)

https://ncert.nic.in/textbook.php

2. सीबीएसई शैक्षिक वेबसाईट

https://cbseacademic.nic.in

3. केंद्रीय विद्यालय संगठन (मु.) नई दिल्ली द्वारा प्रसारित विद्यार्थी सहायक सामग्री सत्र 2025-26

4. ओपन ए आई टूल्स

https://chatgpt.com/images/

https://gemini.google.com

https://www.meta.ai/